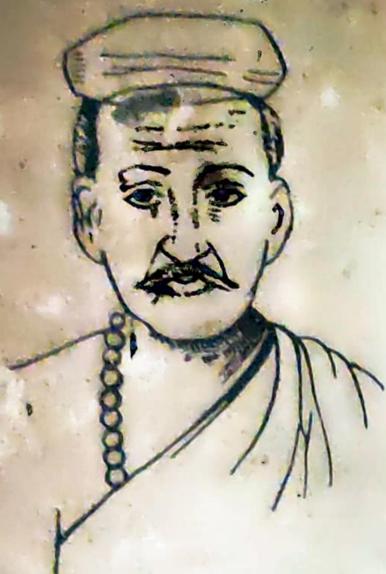


তাপস কবি বিদ্যাপতি

तापस कवि विद्यापति

आचार्य मुनीश्वर झा, एम्० ए०, बि० एल्०, साहित्याचार्य, डि० लिट् (पेरिस)
भूतपूर्व विभागाध्यक्ष (संस्कृत), टी० एन्० बि० कालेज, भागलपुर,
भागलपुर विश्वविद्यालय (बिहार)
सम्प्रति, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (भाषाशास्त्र),
राजकीय संस्कृत कालेज, कलिकाता
तथा
सदस्य (शिक्षण-गवेषणा), स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
कलिकाता विश्वविद्यालय, कलिकाता



मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
६ बी, कैलाश साहा लेन, कलकत्ता-७

प्रकाशक :
मिथिला सांस्कृतिक परिषद्
६-बी, कैलाश साहा लेन,
कलकत्ता-७

•

•

मुद्रक :
किशोरीकान्त मिश्र
अरुण प्रिंटिङ्ग प्रेस
६-बी, सिकदरपाड़ा स्ट्रीट,
कलकत्ता-७०

मूल्य : एगारह टाका मात्र
प्रथम संस्करण : ११०० प्रति
प्रकाशन तिथि : कार्तिक धवल त्रयोदशी,
विक्रमाब्द : २०३३ वर्ष, ख्रीष्टाब्द : १९७६ ई०

समर्पण

॥ तमसो मा ज्योतिर्गमय ॥

इदं नमः ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः
पूर्वेभ्यः पथकृद्भ्यः ॥ ऋग्वेद-१०-१४-१५

लोककृतः पथिकृतो यजामहे
ये देवानां हुतभाग इह स्थ ॥ अथर्ववेद १८-३-२५

× × ×

विष्णुं केऽपि निवेदयन्ति गिरिजानाथं च केचित्तथा
ब्रह्माणं प्रभुमुल्लपन्ति भुवने नाम्नेव भिन्नं महः ।
निर्णीतं मुनिभिः सतर्कमतिभिश्चेद् विश्वमेकेश्वरं
तच्चिन्तापरमानसे त्वयि पुनर्भिन्ना कुतो भावना ॥

—पुरुषपरीक्षा चतुर्थ परिच्छेद

एतदर्थ तत्त्वद्रष्टा, धर्मोपदेशक, सर्वधर्मसमन्वयकर्त्ता
तापस कवि विद्यापति कें
श्रद्धा ओ पूजाक सङ्ग
समर्पित ।

प्रकाशकीय

मिथिला सांस्कृतिक परिषद् अपन स्थापना कालहिं सँ कतेको सांस्कृतिक आ सामाजिक कार्यक्रमक सङ्ग प्रत्येक वर्ष विद्यापति-स्मृति-समारोहक अवसर पर एकटा नीक पोथीक प्रकाशन करैत आबि रहल अछि। एकर प्रत्येक पोथी मैथिली साहित्य-जगतक कीर्तिस्तम्भ थीक। जनसाधारण सँ विद्वन्मण्डलो पर्य्यन्तक प्रशंसोपलब्धि परिषदक प्रकाशन कें भेटैत रहलैक अछि। ध्यातव्य जे मात्र परिषदे एहन मैथिली सेवी संस्था थीक जकरा द्वारा प्रकाशित पोथी कें राष्ट्रीय साहित्य अकादमी सेहो पुरस्कृत कएने अछि।

एहि वर्ष अपन प्रकाशन-माला मे जे नवोत्कृष्ट पुस्तक-पुष्प परिषद् गंथलक अछि तकर नाम थीक **तापसकवि विद्यापति**। एकर लेखक छथि देशक सुविख्यात भाषाशास्त्री आ विद्यापति-साहित्य-मर्मज्ञ आचार्य डा० मुनीश्वर झा। सौभाग्यवश, अध्ययन-अध्यापनक व्यस्ततम जीवन व्यतीत कएलाक उपरान्तो एहन उद्भट विद्वानक सक्रिय सहयोग परिषद् कें प्रारम्भहिं सँ भेटैत रहलैक अछि।

प्रस्तुत पोथी मे लेखक 'गागर मे सागर' भरबाक कहबी कें चरितार्थ कए देलनि अछि। एहि पोथी मे महाकविक मूल्याङ्कन आ हुनक साहित्यिक विश्लेषण सर्वथा नवीन एवं मौलिक रूपें कएल गेल अछि। वस्तुतः ई लेखकक नामानुरूप साधना, गवेषणात्मक प्रवृत्ति, प्रखर-बुद्धि आ मातृभाषा-प्रेमक प्रतिफल थीक। एहि सँ पूर्व प्रकाशित विद्यापति सम्बन्धी पोथीक मध्य ई पोथी (तापसकवि विद्यापति) मीलक पाथर जकाँ अजर-अमर रहत।

एहि अमूल्य सेवाक हेतु लेखकक प्रति आभार प्रदर्शन करैत परिषद् पूर्ण विश्वास रखैछ जे ओ प्रयोजनानुकूल एकरा अपन सेवा अहिना प्रदान करैत रहताह।

आशा अछि जे परिषद्क अन्य प्रकाशन जकाँ एकरो पाठकगण समादृत अवश्य करताह आ परिषद् एहिना चिरकाल धरि माँ मैथिलीक कोर कें भरैत रहत।

तुलानन्द मिश्र

मन्त्री,

मिथिला सांस्कृतिक परिषद्

प्राक्कथन

॥ श्री ॥

डक्टर मुनीश्वर झा, एम्० ए०, बि० एल्०, साहित्याचार्य, डि० लिट् (प्यारिस) एक जन प्रख्यात भाषातत्त्वविद्। कलिकाता संस्कृत कलेज ओ कलिकाता विश्वविद्यालयेर कृती अध्यापक। मिथिला सांस्कृतिक परिषदेर तिनि विशिष्ट सदस्य। परिषदेर उद्‌योगे तिनि इतिपूर्वे विद्यापति वाङ्मय ओ भूपरिक्रमण नामे दुइ खानि मूल्यवान् ग्रन्थ मैथिली ओ संस्कृत भाषाय प्रकाश करियाछेन। सम्प्रति तिनि तापस कवि विद्यापति नामे आर एक खानि ग्रन्थ रचना करियाछेन। विद्यापति शुधु मिथिलार कवि नन, तिनि बाङालीरओ बड़ आदरेर कवि। विद्यापतिर पदावली बाङाली वैष्णव भक्तजनेर निकट चिर आदृत। डक्टर झा ताँहार एइ ग्रन्थे विद्यापतिर संस्कृत ग्रन्थगुलिर विवरण प्रस्तुत करियाछेन। धर्मसम्बन्धे विद्यापतिर अद्वैतभावनार विशेष उल्लेख करिया तिनि कविर लोकसीमातिशायित्व प्रदर्शन करियाछेन। ग्रन्थेर अन्तिम परिच्छेदे पदावली-साहित्येर विचक्षण समीक्षण ग्रन्थकारेर मनीषार सुस्पष्ट साक्ष्य वहन करितेछे।

आमि एइ ग्रन्थखानिर उपादेयतार प्रशंसा करि एवं आशा राखि तिनि भविष्यते ए जातीय ग्रन्थरचनाय निजेके व्यापृत राखिया सहृदय समाजेर उपकार साधन करिबेन।

मैथिली-रूपान्तरण

[डॉक्टर मुनीश्वर झा, एम्०ए०, बि०एल्०, साहित्याचार्य, डि०लिट् (पेरिस) एक प्रख्यात भाषातत्त्वविद् छथि। कलिकाता संस्कृत कॉलेज एवं कलिकाता विश्वविद्यालयक यशस्वी अध्यापक छथि। ओ मिथिला सांस्कृतिक परिषद्‌क विशिष्ट सदस्य छथि। परिषद्‌क उद्योग एवं योजना लय एहि सँ पूर्व हुनक विद्यापति-वाङ्मय तथा भू-परिक्रमण नामक दूइ गोट मूल्यवान् ग्रन्थ मैथिली ओ संस्कृत भाषा मे प्रकाशित भेल अछि। सम्प्रति ओ तापस कवि विद्यापति नामक एक गोट आओर ग्रन्थक रचना कयलन्हि अछि। विद्यापति मात्र मिथिलाक कवि नहि, अपितु ओ बङ्गालीसभक अत्यादरक कवि छथि। विद्यापति पदावली बंगाली वैष्णवभक्त-सम्प्रदायक समक्ष चिर आदृत अछि। डॉ० झा अपन एहि ग्रन्थ मे विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थ सभक विवरण प्रस्तुत कयने छथि। धर्मसम्बन्धक प्रसङ्ग विद्यापतिक अद्वैत भावनाक विशेष उल्लेख कय ओ कवि लोकसीमातिशायित्वक प्रदर्शन कयलन्हि अछि। ग्रन्थक अन्तिम परिच्छेद मे पदावली साहित्यक विचक्षण समीक्षण ग्रन्थकारक मनीषाक सुस्पष्ट साक्ष्य वहन करैछ।

हम एहि ग्रन्थक उपादेयताक प्रशंसा करैत छी एवं आश्वस्त छी जे ओ भविष्य मे एहि कोटिक ग्रन्थरचना मे अपना कें व्यापृत राखि सहृदय समाजक उपकार करताह।]

डॉ० गौरीनाथ शास्त्री,
भूतपूर्व कुलपति, वाराणसेय संस्कृत
विश्वविद्यालय, वाराणसी

१४-११-७६
२२४, श्यामनगर रोड, कलिकाता-५५

आभार-ज्ञापन

आभार-प्रकाशन लय हमर किछु विशेष धारणा रहल अछि। एकरा हम शाब्दिक अभिव्यक्ति नहि बुझि आत्मानुभूतिक विषय मानैत आबि रहल छलहुँ। मुदा कलिकातास्थ मिथिला सांस्कृतिक परिषद्क जे प्रेरणा अथवा प्रोत्साहन हमरा मातृभाषाक सेवा मे प्राप्त भेल अछि, ओहि लय उक्त परिषद्क संग एक गोट एहन मनोमय संपृक्ति भय गेल अछि जकर प्रकाशन करब कर्त्तव्य भय गेल अछि। ओना तऽ विगत पञ्चदशवर्षक वंगवास मे कलिकाताक विभिन्न मैथिल ओ मैथिलीक संस्था सभ सँ सम्पर्क स्थापित होयबाक सुयोग उपलब्ध भेल अछि। तथापि मिथिला सांस्कृतिक परिषद्क गौरवपूर्ण परम्परा ओ सारवत्ताक संग संयुक्त भय हमरा एक गोट अनुपम आत्मबोध होइत अछि। एतदर्थं एहि प्रतिष्ठानक प्रति कृतज्ञताक सङ्ग श्रद्धाभाव सुरक्षित भेल अछि।

वस्तुतः मिथिला सांस्कृतिक परिषद्क सौभाग्य रहल अछि जे एकर मण्डल एक सँ एक सुधी कर्मठ निष्ठावान्, विद्यानुरागी अध्यक्ष, मन्त्री ओ अन्यान्य अधिकारी पद कें सुशोभित करैत आबि रहल छथि। भूतपूर्व अध्यक्ष पं० चन्द्रकान्त मिश्र ओ पं० हरिश्चन्द्र मिश्र आ' वर्त्तमान अध्यक्ष श्री राजकुमार मल्लिकक शालीनता सँ मिथिला सांस्कृतिक परिषद् महिमामण्डित भेल अछि। तीनू अध्यक्षक संरक्षण सँ क्रमशः विद्यापति-वाङ्मय, भूपरिक्रमण ओ तापसकवि विद्यापतिक प्रकाशन संभव भेल अछि। एतदर्थं तीनूक प्रति हम अपन आभार ज्ञापन करैत छी। एकहि वर्ष मे भूपरिक्रमणक रूपत्रय (संस्कृत, मैथिली ओ संस्कृत-मैथिली) ओ सम्प्रति तापस-कवि विद्यापति, एवंप्रकारें चारि गोट पोथीक प्रकाशन कोनहुँ संस्था अथवा लेखकक लेऽ गौरवक विषय अछि। एहि लय परिषद्क मन्त्री लोकनि समान रूपें साधुवादक पात्र थीकाह। भूतपूर्व मन्त्री अध्यापक कालीकान्त झा, एम्० ए०, बि० एड् ओ साम्प्रतिक मन्त्री अध्यापक तुलानन्द मिश्र बि० ए० (आनर्स), बि० एड्० दुहू कर्मनिष्ठ ओ उत्साही शिक्षकमन्त्री प्रकाशनकार्य मे मनोयोग पूर्वक संलग्न रहलाह अछि। तें हम हृदय सँ दुहूक आभारी छियैन्हि। सुरुचिपूर्ण प्रकाशन ओ यथासम्भव निर्दोष मुद्रणक लेल पं० किशोरीकान्त मिश्र विशेषरूपें धन्यवादक पात्र थीकाह जनिक सहयोग सँ एतेक अल्पकाल मे एकाधिक पोथीक मुद्रणकार्य सम्भव भेल अछि।

आचार्य डाॅ० गौरीनाथ शास्त्री, भूतपूर्व कुलपति, वाराणसेय संस्कृत विश्व-विद्यालय, वाराणसीक प्रति मात्र धन्यवाद ज्ञापन औपचारिक होयत। शास्त्री महाशय सँ हमरा कलिकातावास मे सतत आलोक ओ प्रेरणा प्राप्त भेल अछि। हुनक संरक्षणहि मे हमर डि०लिट्क फ्रान्सीसी भाषा मे लिखित मूल शोधप्रबन्धक

बङ्गरैजी रूपान्तरण 'पश्चिम बङ्ग सरकार शोध ओ उच्चतर प्रकाशन'क अन्तर्गत तथा ह्विटनेक संस्कृत व्याकरणक हिन्दी रूपान्तर (दुइ खण्ड) केन्द्रीय सरकारक शिक्षा मन्त्रालयक योजनान्तर्गत प्रकाशित भेल अछि। एही क्रमे भूपरिक्रमणक विमोचन कय हमर उत्साह कें डॉ० शास्त्री आओर बढ़ौलन्हि। तापसकवि विद्यापतिक प्राक्कथन तपस्वी साधक विद्वान् डॉ० गौरीनाथ शास्त्रीक हमरा प्रति स्नेहसूचक अछि; सङ्गहि, पुस्तक ओ प्रतिपाद्य-विषयक औचित्य निर्वाह भेल अछि। एतदर्थ डॉ० गौरीनाथ शास्त्रीक प्रति हम अपन प्रणिपात ज्ञापित करैत छी।

लेखक ओ मिथिला सांस्कृतिक परिषद् दुहूक लेल ई परम प्रसन्नता ओ प्रतिष्ठाक विषय जे डॉ० (श्रीमती) रमा चौधरी एम्०ए०,डि०फिल० (ऑक्सफोर्ड) एफ० आर० ए० एस०, भूतपूर्व कुलपति, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय 'तापसकवि विद्यापति' पोथीक विमोचन करबाक वचन दयलीह अछि। डॉ० रमा चौधरी परम विदुषी, तापसी ओ दर्शन पारङ्गता छथि जनिक हाथें विमोचन महाकविक धर्ममय व्यक्तित्वक अनुरूप अछि। एतदर्थं डॉ० चौधरीक प्रति हम आभारी छियैन्हि।

सभक अन्त मे, मुदा कनिको कम नहि। अपन पत्नी श्रीमती रञ्जना झा एम्०ए० (मैथिली) उल्लेख्य थीकीह जनिक सहयोग हम ग्रन्थक ऐतिहासिक ओ भाषिक तथ्य, भाषाक परिमार्जन ओ सन्तुलन, प्रुफ संशोधन प्रभृति लय विशेष भावें प्राप्त कयने छी। मुदा हुनका धन्यवाद देब अपना कें धन्यबाद देब होयत।

—डॉ० मुनीश्वर झा

विषयानुक्रमण

उपस्थापन	१
कविपति विद्यापति मतिमान	६
शास्त्र	४१
आख्यान	७४
काव्य	११२

उपस्थापन

वपुर्याति श्रियो यान्ति यान्ति सर्वेऽपि बान्धवाः ।
कथासारे हि संसारे कीर्त्तिरेव स्थिरा भवेत् ।।

—पुरुषपरीक्षा, ३०-१५

शरीर विनष्ट भय जाइछ, श्री-सम्पत्ति चलि जाइत अछि, सब बन्धु छोड़ि चलि जाइत छथि । मुदा एहि कथासार संसार मे कीर्तिमात्र स्थिर रहैछ ।

रससिद्ध कविपति विद्यापतिक व्यक्तित्व एहने एक गोट कीर्तिकथाक विषय थीक जकर संस्पर्श सं भारतीय साहित्य समृद्ध भेल अछि । हुनक वाग्वैभव मात्र मैथिली साहित्यक लेल नहि, अपितु समग्र भारतीय साहित्यक लेल वरदान-स्वरूप अछि । हुनक आविर्भाव सं पूर्व भारतीय नव्य-साहित्य मे ओ समृद्धि प्राप्त नहि छल जे विश्वक तात्कालिक समृद्ध साहित्य मे भेटैत छल । जर्मनीक काव्य-कानन मे हूगो आउस माउन्टफूट, ओलबाल्ड आउस फाल्कस्टाइन सदृश गीतकार लोकनिक भक्तिगीतक राग गुञ्जित भय रहल छल; संगहि हान्श साश सन् नाटक-कार, फ्रेडरिक स्पी तथा पाल गेरहार्ट सदृश कवि ओतए भेल छलाह । फ्रांसीसी साहित्य संसार कें रोंसार ओ मोंतान्य सन् दार्शनिक कवि आलोकित कय देने छलाह । ओहिठाम गार्निए ओ लातीभ्ये सन् कवि लोकनिक काव्य लोकप्रिय छल । पूर्वी जगत् मे आराकीदा, मोरीताको सन् कवि आओर सारुगादू सदृश नाटककार अपन प्रतिभा सं जापानी साहित्य कें विश्वक प्रथमकोटिक साहित्यक समक्ष उपस्थित कयने छलाह । मुदा भारतीय साहित्य कें एहन सौभाग्य नहि भेटल छल । प्राचीन काव्यक परम्परा विस्मृत भय गेल छल । चर्यापद मे लोकभाव राखल गेल छल, किन्तु ओहि मे लोक-स्वर नहि आयल छल । हिन्दीक बीसलदेव रासो, पृथ्वीराज रासो आदि वीरगाथा काव्य मे पराक्रम आओर प्रतापक गान 'पीटल-पाटल' मार्ग पर भेल छल । मुदा जीवनक मधुरभाव कें, ओकर विषय परिस्थिति कें, मानव हृदयक विविध भाव कें, लोकजीवनक स्पन्दन कें काव्य मे सप्राण कोनहुँ भारतीय कवि नहि कयने छलाह । एहि अभावक पूर्ति हमर महाकवि विद्यापति सं होइत अछि । तें ओ महान् छथि ।

ई सर्वमान्य तथ्य थीक जे भाषाक अस्तित्व वक्ता ओ चिन्तक सं पृथक् नहि होइछ । भाषा तऽ जनसामान्यक मानस-मधुकोष थीक । जीवित भाषा सतत प्रवाहयुक्त सरिता थीक जाहि मे वहनशक्ति जन-जीवनक शक्ति थीक । लोकप्रिय भाषामात्र मे जन-जीवनक अजय ओ सहज शक्ति विद्यमान रहैछ । विद्यापति

भाषाविद् छलाह; भाषाक उपर्युक्त परम तथ्यक साक्षात्कार कवि कें भेल छल। 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' कहि कवि जनवाणीक प्रतिष्ठा मध्ययुग मे कयलन्हि। पाश्चात्यजगत् मे 'भलगैरिया एलोक्वेन्सिया' जनवाणीक जयघोष मध्ययुगक जर्मन मनीषी दान्ते द्वारा भेल, तऽ भारतीय जगत् मे ई कार्य्य हमर महाकवि विद्यापति सम्पादित कयलन्हि।

स्पष्टतः भाषानीति लय विद्यापति 'कान्तदर्शी' छलाह। हुनक मान्यता छल जे जनसामान्यक लेल भाषा सुगम, सुबोध ओ सशक्त होयबाक चाही। शास्त्रीय सिद्धांतक लेल हुनक विशेष अभिरुचि नहि छल। ओ तऽ भाषाक उपयुक्तताक पोषक छलाह। तदर्थ तात्कालिक पण्डित समाज मे हुनक सम्मान नहि भेल। तकर मुख्य कारण जे हुनक युगक पण्डित लोकनि भाषानीति लय उदार नहि छलाह। गङ्गाधर, वाचस्पति मिश्र, पक्षधर मिश्र सब गोटे नितांत शास्त्रपोषक एवं श्रेण्यवादी व्यक्ति छलाह। ओ लोकनि विद्यापति कें 'भाषाकवि' कहि खूब उपहास कयलन्हि। मुदा विद्यापति 'देसिल बयना' लय जनमानसक सम्राट् भय गेलाह। जतेक ओ पण्डित समाज मे अनादृत भेलाह, ततेक जनता द्वारा पूजित भेलाह। पण्डित लोकनि कें प्रत्युत्तर स्वरूप कहलन्हि :

सुअण पसंसइ कब्ब मभु दुज्जन बोलइ मंद।
अबसओ बिसहर विस बमइ अमिअ विमुक्कइ चद॥

संगहि—

बालचन्द विज्जावइ भासा, दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा।
ओ परमेसर हर सिर सोहइ, ई णिच्चइ नाअर मन मोहइ॥

महाकवि विद्यापतिक अक्षय्य कीर्त्ति हुनक पदावली-काव्य थीक। पदावली एहि महाकविक पीयूषवर्षण थीक। ई भारतीय काव्य-महासागरक एकान्त सुन्दर मणिद्वीप थीक। काव्योद्यानक एक गोट एहन सुमन थीक जकर सुवास सीमित नहि। पदावली भारतीय काव्य-गगन मे एहि प्रकारक इन्द्रधनुषी सौन्दर्यक सृष्टि करैछ, जे सद्यः रमणीय थीक। क्षणं क्षणं यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः। हुनक शब्द मे, "सोइ रूप अपरूप बखानिअ, तिलतिल नूतन होय।" वैदिक ऋषि लोकनिक कल्पित रश्मिपुत्री उषा जकाँ नित नवीन अछि। कारण एहिठाम छन्दोबद्ध वाणी मे जनमानसक चिरन्तन रसमय अनुभूति कें काव्यात्मक परिधान प्राप्त भेल अछि। पदावली कविक सम्पूर्ण जीवनक साधना थीक।

विद्यापति छलाह मैथिली काव्य-भाषाक महान् शिल्पी। हुनक शिल्पकारिता छल अपन मातृभाषा कें महिमान्वित करब। पदावली सँ अधिक लोभनीय ओ

महनीय काव्य आओर की होयत ? मैथिली काव्य-गगन मे ई शरत् शशिक शुभ्र हास थीक। कविक नायिका जकाँ ई "जातकि केतकि नव पदुमिनि" थीक। बुझू, सौन्दर्य-सरिता मे प्रस्फुटित प्रफुल्लित एक गोट पद्मिनी। समस्त-सृष्टि एतए काव्यमय दृष्टिगोचर होइछ। एहि सृष्टिक प्रत्येक पद, बुझू, काव्याकाशक नक्षत्र थीक, जाहि ठाम कवि-व्यक्तित्वक आकर्षण सर्वोपरि प्रकाशमान अछि। सर्वत्र काव्यधर्मी विद्यापतिक आन्तरिक रूप विद्यमान अछि। तें पदावलीक भाषा कें चिन्हबा मे कोनो प्रकारक तारतम्य नहि होइत अछि। मध्ययुगक अन्य कवि लोकनिक कविता भणिताक अभाव मे एकरूप बुझना जाइत अछि। मुदा विद्यापतिक कविता स्वतः साक्ष्य अछि। पदावली मे विभिन्न भाषाक रङ्ग चढ़लहुँ सन्ता मूलरूप सुरक्षित अछि। उदाहरणस्वरूप :

नयनक नोर चरणतल गेल। थलहुक कमल अम्बोरुह भेल।
अधर अरुनिमा लखि नहि होए। सिसिरे किसलय छाड़ु जनि धोए॥
माधव जतनहुँ राखए गोए। ससिमुख नोर ओल नहि होए।
तुअ अनुराग शिथिल जानि। अउलिउ विसरलि मनसिज बानि॥

—विद्यापति-गीतसंग्रह, सं० डा० सुभद्र झा, पृ० ११५

आओर एक पद द्रष्टव्य :

हरि हरि मधुर बाट के आस। कत दिन लोचन पड़त उपास॥
हमर सपथ दए पूछिहह तन्हो। जिवइतें दरसन होएत की नहीं॥
लागु दुराश चित्तं अतिखेद। होहओ कि जाओ पड़ओ परिछेद॥
पुरत को मन नहि संसय पाए। कण्ठहिं डोरा जीव खेलाए॥

—कलकत्ता विश्वविद्यालयक शोधपत्रिका 'संकल्प' सँ उद्धृत, पृ० १७२; लेखकक निबन्ध 'कविपति विद्यापति'।

ई निश्चित रूप मे कहब कठिन जे महाकवि विद्यापतिक 'देसिल बयना' कवि-काल मे समस्त पूर्वाञ्चल ओ नेपाल मे सर्वजनसाधारणक लेल सुबोध आओर सुगम छल। मुदा हमरा दृष्टिएं ई कहब दुराग्रह नहि होयत जे हुनक मैथिली-पदावलीक भाषा एहन मर्यादित, संगहि आकर्षक छल जाहि सँ ओहि काव्यक रसास्वादन करबा मे तत्कालिक शिक्षित ओ सुसंस्कृत समाज समर्थ छल। एहि प्रसङ्ग डा० विमान विहारी मजुमदारक मन्तव्य अछि : "पूर्वभारत मे काव्यरसिक समाज जाहि रूपक कविता सुनबाक उत्सुकता रखैत छल, तदनुरूप विद्यापति तत्कालिक बङ्गला, हिन्दी, उड़िया तथा असमिया भाषा सभक संग विशेष सादृश्य युक्त भाषा मे लिखलन्हि"। विद्यापति सचेतन भावें ओहि रूपक मैथिली लिखलन्हि वा नहि, एहि लय मतैक्य संभव नहि। मुदा ई निर्विवाद थीक जे पदावलीक कृष्ण-

काव्य-भाव लय उपर्युक्त भाषा-भाषी सम्प्रदाय सभ मे आग्रह अत्यधिक छल। पदावली परवर्त्ती तीन शतकक काव्य कें अपन भाव, भाषा ओ अभिव्यक्तिभंगिमा लय सभ कें प्रभावित कयलक अछि। तें हुनक पदावली काल आओर देशक सीमा कें अतिक्रमण कय विभिन्न भाषाप्रान्त कें अभिभूत कयलक। अध्यापक शंकरी प्रसाद बसुक निर्णय युक्तियुक्त अछि—"विद्यापति सचेतन भावे बाङ्ला, उड़िया, आसामेर बोधगम्य मैथिली भाषाये कविता लिखिया छिलेन कि ना, जानि ना; किन्तु ताहार मैथिली पदावली जे प्रदेश गुलि अतिक्रमण करिया छिल ताहा सकलइ जाना आछे"—(चण्डीदास ओ विद्यापति, पृ० ११५)।

फलतः कविगुरु विद्यापति अज्ञात रूपे एकगोट विशिष्ट काव्यभाषाक प्रवर्त्तक कालक्रमे प्रमाणित भेलाह। हुनक पदावलीक शब्दलालित्य ओ भाव-सौन्दर्य सं अभिभूत भय परवर्त्ती युगक वैष्णव कविगण वैष्णव भक्तिकाव्यक एकटा अभिनव भाषाक सृष्टि बङ्ग, असम, उत्कल ओ नेपालक निम्न प्रदेश मे कयलन्हि। ई भाषा ब्रजबुली अथवा ब्रजबोली सं अभिहित अछि। वस्तुतः एहि कृत्रिम एवं परिनिष्ठित भाषाक आधार विद्यापतिक मैथिली-पदावली थीक। वैष्णव-भाव सं युक्त करबाक लेल एकर नाम ब्रजबोली अर्थात् ब्रजक भाषा राखल गेल। ब्रजभाषा सं कोनो प्रकारक भाषिक आधार मूलतया एहि बोली मे स्थापित करब संगत नहि। एहि रूपक भाषिक विलक्षणता भारतीय भाषाक इतिहास मे कोनो नवीन नहि। एहो रूपक भाषिक मिश्रण पूर्वहुँ पालीभाषा मे भेटैछ। निष्कर्ष, ब्रजबोली विद्यापतिक भाषाक अनुकरण पर मैथिलीक एकगोट साहित्यिक विभाषा—कुन्ट स्प्राख—थीक। जाहि भावावेश, तन्मयता, संगहि कलात्मक ताटस्थ्य लय महाकवि पदावलीक पीयूषवर्षण कयलन्हि, तकर भाव-सौन्दर्य ओ भावशिल्पक अनुकरण कय परवर्ती वैष्णव कवि लोकनि एकगोट नवीन भाषा बनौलन्हि। भाषा एवं काव्यक इतिहास मे ई एकगोट अनुपम उत्कर्ष थीक। एकर प्रभावे लगभग तीन सए वर्ष धरि अबाध गति सं भारतक विशाल भू-भाग मे कवि लोकनि अपन काव्य सं जन-मानस कें रससिक्त कयलन्हि।

भाषासृजन ओ भाषासंवर्धन लय विद्यापति मे अपार शक्ति छल। अपन 'देसिल बयना' कें व्यापक फलक पर उपस्थित करबाक प्रबल इच्छा हुनका मे छल। एतदर्थ हुनका मे पूर्ण क्षमता छल। हुनक व्यक्तित्वक एहि गरिमा ओ भाषाशिल्प लय अदम्य शक्तिक द्योतक हुनक दुइ गोट रचना कीर्त्तिलता एवं कीर्त्तिपताका अछि। संगहि ई दू पोथी हुनक वैयक्तिक अनुभव ओ निरीक्षणशक्तिक मापदण्ड थीक। अपन जीवन-कालहि मे मिथिलाक 'देसिल बयना' कें मिथिलाक बाहर जनप्रिय ओ बोधविषय बनयबाक लेल विद्यापति अवहट्ठ रचना कयलन्हि। साहित्यिक ओ भाषिक दृष्टिएं हुनक काल मे अपभ्रंश रूढ़ आओर विशुद्ध

परिनिष्ठित भय गेल छल। ओहि मे तत्कालिक जनभाषाक पुट लोकसरसताक लेल अनिवार्य छल। एहि भाषा तत्त्व कें स्पष्ट करैत विद्यापति कहलन्हि :

सक्कय वाणी बुहअन भावइ, पाउअ रस को मम्म न पावइ।
देसिल बअना सब जन मिट्ठा, तें तैसन जम्पओ अवहट्ठा॥

'देसिल बअना' सं मिश्रित रूढ़ साहित्यिक अवहट्ठ भाषा मे इतिवृत्त कें प्रस्तुत करब कविक अभीष्ट छल। कीर्त्तिलता ओ कीर्तिपताका मे मिथिलाक राजवंशक गाथा लिखबाक लेल कविकें एही प्रकारक भाषाश्रयण उपयुक्त बुझना गेल जतए साहित्यिक परम्पराक पालन सम्भव छल। लोकरुचिक संतुष्टि आओर अपन देसिल बअनाक महिमावृद्धिक लेल लोकभाषाक सम्मिश्रण अनिवार्य छल। तें विद्यापतिक अवहट्ठ एकगोट मिश्रित भाषा थीक।

एही प्रकारक भाषामिश्रणक उदाहरण महाकवि विद्यापति विरचित 'गोरक्ष-विजय नाटक' थीक। नेपाल दरबार पुस्तकालय मे सुरक्षित हस्तलेख कें आधार बना एकर प्रकाशन सन् १९६१ ई० मे म० म० डा० उमेश मिश्र ओ डा० जयकान्त मिश्र कयलन्हि अछि। ई पोथी कीर्तनिञाक पूर्वनाटक थीक वा नहि, एकरा मैथिली नाटक कही वा संस्कृत नाटक, आदि प्रश्न लय आधुनिक समीक्षक लोकनिक बीच बड़ मतभेद अछि। डा० जयकान्त मिश्र एकरा मैथिली नाटक ओ कीर्तनिञाक पूर्व नाटक मानैत छथि। (विशेष द्रष्टव्य : विद्यापति-वाङ्मय, गोरक्षविजय-नाटक शीर्षक निबन्ध) एहि स्थापनाक प्रबल खण्डन प्रो० रमानाथ झा अपन निबन्धसंग्रह मे कयने छथि। डा० जयकान्त मिश्रक स्थापना कें स्वीकार कयलहुँ विद्यापतिक भाषात्मक गौरव अखण्डित रहैछ। प्रस्तुत नाटक त्रिभाषिक थीक—संस्कृत, प्राकृत ओ मैथिली मे निबद्ध। मैथिलीक पचीस गोट गीत नाटक मे भाषा संसृष्टिक रूप मे राखल अछि। कविशेखराचार्य ज्योति-रीश्वरक धूर्त्तसमागम मे जे गीत उपलब्ध अछि ओ संस्कृतपद्यसभक अर्थपरक अनुस्थापन मात्र। मुदा गोरक्षविजय नाटकक गीत सब स्वतन्त्र अछि जाहि सं नाटकक प्रेषणीयता बढ़ि जाइत अछि। संगहि ई गीत सभ गेयता लय मनोरंजनक साधन बनल अछि। ओना त गीतसभ मे पदावलीक काव्यमूलक सघन चमत्कारक दर्शन नहि होइछ, किन्तु राग-ताल-लयाश्रित गीतसभक अन्तर्निवेश नाटकीय गुण कें बढ़बैत अछि। मैथिली भाषा-प्रसार मे एहि नाटकक महत्व ऐतिहासिक अछि। नाटकक आरम्भवाक्य सं बुझना जाइछ जे एहि नाटकक प्रणयन महाराज शिवसिंहक आदेश सं भैरवपूजनार्थ कयल गेल। नेपाल मे भैरवपूजाक अधिक प्रचलन होयबाक कारणे ई अनुमान सहज भय सकैछ जे ई नाटक नेपाल मे अभि-नीत भेल हैत। तदनुसार नाटककारक ख्याति देशदेशान्तर मे सिद्ध अछि।

स्पष्ट अछि, भाषानीति लय हमर महाकविक स्थान भारतीय साहित्य ओ भाषाक इतिहास मे अनुपम अछि। मातृभाषाक आकर्षण सर्वोपरि होइछ। आत्म-प्रेम सँ अधिक प्रेम आओर की हैत? 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'। भाषा आत्मप्रकाशनक सर्वाधिक सक्षम आओर ओजस्वी साधना थीक। भाषा आत्मद्रव थीक। सङ्गहि, भाषा एक गोट एहन सेतु थीक जे भाषांतरक सङ्ग मेल उपस्थित करैछ। भाषाविरोध तऽ अज्ञानमात्र थीक। स्वार्थलोलुपी साहित्यकार ओ सत्तान्ध राजनीतिकार लोकनिक दम्भ ओ प्रवञ्चन थीक। 'देसिल बयना'क सङ्ग विभिन्न भाषाक सेवा जाहि तन्मयता सँ विद्यापति कयलन्हि, ओ हमरा लोकनिक लेल आदर्श रूप थीक। वस्तुतः भाषा लय हुनक मानस-विस्तृति भाषिक सङ्कीर्णता सँ रुग्ण आजुक भारतक लेल सञ्जीवनी बूटी थीक।

एतबहि सँ महाकविक भाषाशिल्पचातुर्य लय वक्तव्य शेष नहि होइछ। मैथिली, अवहट्ठ ओ व्रजबोलीक प्रसङ्ग सँ तऽ महाकविविद्यापति 'आधुनिक मे प्रथम' होइत छथि, सङ्गहि संस्कृत भाषाक संरक्षण लय 'प्राचीन मे अन्तिम' सिद्ध छथि। एहि वैशिष्ट्य लय महाकवि विद्यापतिक तुलना महाकवि दान्ते सँ भय सकैत अछि। दांते नव्य कथ्यभाषाक पोषक होइतहुँ श्रेण्य लैतिन भाषा मे अपन चिन्तनक अभिव्यक्ति कयलन्हि। पदावली ओ अवहट्ठग्रन्थद्वयक अतिरिक्त विद्या-पतिक तेरह गोट पोथी संस्कृत भाषा मे लिखल संकेतित अछि। एहि ग्रन्थसभक महत्त्व कविक मनोधर्म बुझबा मे अत्यधिक अछि। कविक व्यक्तित्व एवं पांडित्यक यथार्थ परिचय लेल एहि ग्रन्थ सभक सर्वाङ्गीण अध्ययन अपेक्षित अछि।

विद्यापतिक युग मे संस्कृतभाषाक खूब सम्मान छल। राजनीतिक दृष्टिएँ भारतवर्ष छिन्न-भिन्न भेलहुँ समग्रदेशक सांस्कृतिक ऐक्य संस्कृत भाषा सँ सुरक्षित छल। समग्रदेशक राष्ट्रभाषाक रूप मे, समाज, आचार-विचार, धर्म, शास्त्रचिन्तन ओ दर्शनक भाषा, एकमात्र संस्कृत छल। संस्कृतभाषासाहित्य ओहियुगक उत्कृष्ट साहित्यिक प्रतीक मानल जाइत छल। तेँ समाज आओर राष्ट्रक व्यावहारिक प्रयोजन लय विद्यापति संस्कृत मे अनेकानेक ग्रन्थक प्रणयन कयलन्हि। ओ संस्कृतक बड़ पैघ विद्वान् तथा बड़ पैघ ग्रन्थकार छलाह। स्थानीय प्रयोजन एवं समसामयिक ऐतिहासिक चेतनाक प्रश्रयक हेतु प्राकृतापभ्रंश तथा आत्मतोषार्थ, संगहि जन-सामान्यक मनोरञ्जनार्थ, 'देसिल बयना' हुनक भाषा छल, तऽ सर्वभारतीय प्रयोजन आयामक लेल संस्कृत। विद्यापति वाङ्मयक तथाविध भाषावैविध्य हुनक व्यापक ओ उदार मनोधर्म केँ बुझबा मे सहायक अछि। भाषानीति लय विद्यापति केँ सार्वदेशिक साहित्यकार कही तऽ कोनो अत्युक्ति नहि हैत। हुनक विविध साहित्य-रचनाक आधार पर हुनका युगोतीर्ण सार्वदेशिक साहित्यकार हम कहबन्हि।

तैं विद्यापति-सदृश महाकविक व्यक्तित्व एवं हुनक चिन्तनक गुणानुवाद समग्र भारतवर्षक साहित्यिक अनुष्ठान थीक। हुनक संस्कृतसाहित्य-साधना अखिल भारतीय उद्देश्य लय भेल अछि। एहन महासाधकक चरण मे श्रद्धासुमन समर्पित करब प्रत्येक भारतीय साहित्यसेवीक कर्त्तव्य अछि।

ततःपूत, भाषानिर्माता, युगगुरु ओ युगस्रष्टाक रूप मे महाकवि विद्यापतिक अभिनन्दन आओर स्मरण राष्ट्रीय स्तर पर ओही प्रकारें अपेक्षित अछि जाहि प्रकारें कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुरक जन्मशतवार्षिकी आम्नाय सन् १९६१ ई० मे भेल; अथवा जेना विगत वर्ष महाकवि तुलसीक रामचरितमानसक चतुःशतीक पुण्य पर्व मनाओल गेल। विद्यापतिपर्वक एक गोट तथाविध जातीय आयोजन यदि होयत, तऽ हुनक विविध कर्तृत्व एवं कृतित्वक समीचीन ओ गम्भीर अध्ययन प्रस्तुत होयत। पदावलीक सर्वाङ्गीण विवेचन प्रस्तुत भेला सन्तां मैथिली, हिन्दी एवं तव्य प्राच्य भाषा सभक समृद्धि होयत। सङ्गहि, हुनक अवहट्ठ आओर संस्कृत ग्रन्थ सभक परिशीलन सं समग्र भारतीय साहित्य लाभान्वित होयत।

किन्तु ई मानबाक थीक जे एहि स्मृतिचारणपर्व लय मैथिलीभाषाभाषी लोकनिक विशेष कर्त्तव्य भय जाइछ। मिथिलाक महत्तम विभूतिक स्तवन विशेष रूपें हमरा लोकनि कें करबाक अछि।

श्रुतिवाक्यो अछि :

लोककृतः पथि कृतो यजामहे
ये देवानां हुतभाग इह स्थ। अथर्ववेद १८-३-२५

जे व्यक्ति लोक मङ्गलक लेल अपन साधना सं मार्ग कें प्रशस्त करैत छथि, ओ देवता जकां प्रणम्य होइत छथि। महाकवि साधक विद्यापति मिथिला ओ मैथिली सम्प्रदायक लेल अविस्मरणीय विभूति छथि। हुनक गुणगान लय प्रस्तुत पोथी 'तापस कवि विद्यापति' सुधी समाजक समक्ष अछि।

विद्यापतिक जीवन-वृत्त अधिकांशतः अस्पष्ट ओ विवादग्रस्त रहितहुँ हुनक वाङ्मय हमरा लोकनिक लेल श्रेय-प्रेममयी सृष्टि थीक, कारण एतय भारतीय जीवन दर्शन उपलब्ध अछि। श्रेय ओ प्रेय भारतीय आर्ष जीवनक उभय पक्ष थीक। श्रेयहीन प्रेय ओ प्रेयहीन श्रेयक स्थान भारतीय चिन्तन मे नहि। संस्कृत, अवहट्ठ ओ 'देसिल बयना' मे लिखित हुनक रचना सभ मे दुहूक अद्भुत 'सामरस्य' प्राप्त अछि। एतदर्थ हम हुनका 'तापस-कवि' सँ प्रस्तुत ग्रन्थ मे सम्बोधित कयलहुँ अछि।

इतिपूर्वहुँ विद्यापतिक बिमल व्यक्तित्वक अनुगान विद्यापति वाङ्मयक सम्पाद-कीय ओ भूपरिक्रमणक उपस्थापन मे धार्मिक ओ नैतिक परिप्रेक्ष्य लय करबाक हमर प्रयास रहल अछि। मुदा एहिठाम हम ऐतिहासिक सांस्कृतिक पारम्परिकता ओ सन्दर्भगत आश्लेषक निर्वाहार्थं प्रतिपाद्य विषय विस्तृत फलक पर राखल अछि। कविक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक परिचयार्थं 'कविपति विद्यापति मतिमान' अछि। शास्त्र, आख्यान ओ काव्य कें स्वतन्त्र रूपें विवेचनक विषय बनाय हमर निष्कर्ष भेल अछि जे विद्यापति कविक सङ्ग तापस छलाह।

प्रस्तुत पोथी कलिकातास्थ मिथिला सांस्कृतिक परिषद्क योजनान्तर्गत महाकवि मिथिला-विभूति विद्यापतिक प्रति श्रद्धार्पणक प्रतीक थीक। एहि सँ यदि विद्यापति साहित्यानुरागी विद्वान् ओ पाठक लोकनिक मनस्तुष्टि भय सकल, तऽ हम अपना कें कृतकार्य्य बुझब, कारण कविकुलगुरु कालिदासक शब्द मे—

आ परितोषाद् विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।

●

कविपति विद्यापति मतिमान

जनक, याज्ञवल्क्य, गौतम, कणाद, कुमारिल, मण्डन ओ वाचस्पतिक प्रसविनी भूमि मिथिला अत्यन्त प्राचीन कालहिं सँ संस्कृत विद्याक केन्द्र रहलो अछि। एतहिं गार्गी, मैत्रेयी, भारती सन् विदुषी भेलीह। मिथिलामाहात्म्य मे मिथिला विकल्मषा, ज्ञानशिल्प प्रभृति नाम सँ वर्णित अछि :

मिथिला तीरभुक्तिश्च वैदेही निमिकाननम्।
ज्ञानशिल्पं कृपापीठं स्वर्णलाङ्गलपद्धतिः॥
जनकानां जन्मभूमिः निरपेक्षा विकल्मषा।
रामानन्दकरी विश्वभाविनी नित्यमङ्गला॥

तथाविध मिथिलाक वर्णन महाभारत, देवीभागवत, स्कन्धपुराण प्रभृति प्राचीन ग्रन्थ मे उपलब्ध अछि। 'जनदेव जनक'क सभा विविधशास्त्रवेत्ता तर्कविद् विद्वान् लोकनि सँ मण्डित छल :

जनको जनदेवस्तु मिथिलायां जनाधिपः।
और्ध्वदेहिककर्माणामासीद् युक्तो विचारणे॥
तस्य स्म शतमाचार्या वसन्ति सततं गृहे।
दर्शयन्तः पृथग् धर्मान् नानापाषण्डवादिनः॥

—महाभारत : शान्तिपर्व, अध्याय २११, ३-४

जनकवंशी राजालोकनि जनकसदृश ज्ञानी ओ पण्डित छलाह :

वंशेऽस्मिन् येऽपि राजानस्ते सर्वे जनकास्तथा।
विख्याता ज्ञानिनः सर्वे विदेहाः परिकीर्त्तिताः॥

—देवीभागवत ; ६, १५

जनकक संग याज्ञवल्क्यक सम्बन्ध इतिहासप्रसिद्ध अछि। शतपथ ब्राह्मण मे अनेक जनकयाज्ञवल्क्य-संवाद प्राप्त अछि। याज्ञवल्क्य-स्मृति मे स्पष्टतया हुनक "मिथिलास्थः स योगीन्द्रः' कहि उल्लेख अछि। वैशेषिक दर्शनक प्रवर्त्तक कणाद मैथिल मानल जाइत छथि। न्यायदर्शनक आदिगुरु अक्षपात गौतम कें जन्म देबाक गौरव मिथिले कें प्राप्त अछि।

ऐतिहासिक कालहुँ मे प्राचीन संस्कृत विद्याक प्रतिष्ठा मिथिला मे अक्षुण्ण रहल। मण्डनमिश्रक पाण्डित्य इतिहासप्रसिद्ध अछि। मीमांसक मण्डनक ओतए

'स्वतः प्रामाण्य तथा परतः प्रामाण्य'क प्रसङ्गलय ब्रह्मचारी माणवक सभक कोन कथा ? आश्रमपालित शुक-सारिका शास्त्रवाक्य लय कूजन करैत छल—स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं शुकाङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति। एवं प्रकारे नैयायिक वाचस्पति मिश्रक भामतो (शङ्करभाष्यक टीका) ओ सांख्यतत्त्वकौमुदी संस्कृत वैदुष्यक चरम निदर्शन अछि।

कर्णाटराज्यवंशीय संस्कृतविद्यानुरागी राजा लोकनिक संरक्षण मे अनेको मैथिल स्मार्त्त निबन्धकार यथा ग्रहेश्वर मिश्र, गणेश्वर मिश्र, खौआल वंशी भवशर्मा, पद्मनाभदत्त, स्वामि ठक्कुर, लक्ष्मीधर अनेकानेक आचार सम्बन्धी ग्रन्थ संस्कृत मे लिखलन्हि ओ समाज कें श्रुति-स्मृतिक वाक्य सँ परिचित कराय ऐक्यबद्ध कयलन्हि। ओइनवार कालहुँ मे केशव मिश्र, मिसरू मिश्र, रुद्रधर सन् स्मार्त्त निबन्धक; पक्षधर मिश्र, शंकर मिश्र प्रभृति सन् अभिनिविष्ट नैयायिक; जगद्धर, छत्रकर सन् साहित्यमर्मज्ञ संस्कृत-विद्याक अनुपम विभूति मिथिला कें प्राप्त भेल। तात्पर्य, संस्कृत वाङ्मय मे मिथिलाक चिरन्तन योगदान मानबाक अछि।

आलोच्य महाकवि विद्यापति मिथिलाक विद्यावदात बिसइबार मूलक ओ काश्यप गोत्रीय विमल वंश मे अवतीर्ण भेलाह। हुनक मूलस्थान गढ़बिसफी छल। संस्कृत हुनक वंशविद्या छल। कविवरक पूर्वपुरुष एक सँ एक यशस्वी विद्वान्, चिन्तक ओ गुणसम्पन्न व्यक्ति छलाह। ओ लोकनि कर्णाट राजवंशीय शासनक स्तम्भरूप छलाह।

वंशधर विष्णुशर्मा संस्कृतज्ञ छलाह। हुनक पुत्र हरादित्य छलाह। हरादित्यक पुत्र कर्मादित्य छलाह। हाबिडीह शिलालेख सँ प्रमाणित अछि जे कर्मादित्य तिलकेश्वर शिवधामक सुमन्त्री छलाह :

अब्दे नेत्रशशाङ्क पक्षगदिते श्रीलक्ष्मणक्ष्मापते-
र्मासिश्रावणसंज्ञके मुनितिथौ स्वात्यां गुरौ शोभने।
हावीपत्तनसंज्ञके सुविदिते हैहट्टदेवी शिवा
कर्मादित्यसुमन्त्रिणेह विहिता सौभाग्यदेव्याज्ञया॥

कर्मादित्यक पुत्र देवादित्य कर्णाट महाराजाक 'सन्धिविग्रहिक'क पद कें सुशोभित कयलाह। ओ सिद्धपुरुष छलाह; सरस्वती आओर लक्ष्मी दुहूक कृपा-पात्र छलाह। ओ कर्ण जकाँ महादानी छलाह। 'सद्यःजङ्गमपारिजात' उपाधि सँ विभूषित छलाह। हुनक पुत्र वीरेश्वर प्रथमतः 'पाण्डागारिक' छलाह, तदनन्तर 'सन्धिविग्रहिक' बनलाह। वीरेश्वरक पुत्र स्वनामधन्य चण्डेश्वर 'सन्धिविग्रहिक'क सङ्ग महासामन्ताधिपति-पद कें सुशोभित कयलन्हि। चण्डेश्वर संस्कृतक उच्च-कोटिक विद्वान् छलाह। हुनक लिखल शैवमानसोल्लास, भावभूषण, दानवाक्यावली,

शिववाक्यावली, सर्वोपरि स्मृतिरत्नाकर प्रभृति अनेको संस्कृत ग्रन्थ उपलब्ध अछि जे हुनक प्रगाढ़ पाण्डित्य ओ विलक्षण नीति-नैपुण्यक परिचायक थीक। देवादित्यक द्वितीय पुत्र धीरेश्वर ठाकुर छलथिन्ह। ओना तऽ हुनक कोनहु ग्रन्थ उपलब्ध नहि अछि। मुदा ओ विद्वान् छलाह, ताहि मे सन्देह नहि रहैछ। हुनका मे राज-संचालनक क्षमता छल, जाहि सं ओ अपन पूर्वपुरुष लोकनिक परम्परा कें सुरक्षित रखलन्हि आओर मन्त्रि-पद पर आसीन रहलाह। धीरेश्वर कें दू टा पुत्र छलथिन्ह जयदत्त ठाकुर ओ कीर्त्तिदत्त ठाकुर। जयदत्त कें दू पुत्र भयलन्हि गौरीपति ओ गणपति। गणपति ठाकुर शास्त्रज्ञ ओ संस्कृतक विशिष्ट विद्वान् छलाह। हुनक लिखल सुगति-सोपान उपलब्ध अछि। संभवतः ओ मैथिली पदक रचयिता सेहो छलाह। हुनक एक गोट पद 'सुनपति गनपति भाने, रसल बसल जन पुनि धरथि धेआने' गनपति भणिता सं उद्धृत पाओल जाइत अछि। गणपति ठाकुरक विवाह 'बुधवाल' मूलक श्रीकरक कन्या गङ्गादेवी सं भेल। हुनकर पुत्र भेलाह कवि शिरोमणि लोकनायक विद्यापति ठाकुर।

कृतीवंशक कृतीपुत्र विद्यापति छलाह। संभवतः अपन वंश परम्पराक गुणधर्म रखला कारणें 'पुरुषपरीक्षा'क निम्नवाक्य हुनक आत्मविरुद रहल होयत।

अनुरूपेण पुत्रेण कुलं तिष्ठति सीमनि।
पूजितं पूजितेन स्याद् विरूपेण विनश्यति॥

पुत्र यदि अनुरूप भेल तं कुल अपन प्रतिष्ठा पर रहैछ। सम्मानित पुत्र सँ कुल सम्मानित होइछ। यदि पुत्र विरूप भेल, तं कुल विनष्ट भय जाइछ।

संस्कृतविद्याक अध्ययन विद्यापतिक आनुवंशिक वृत्ति छल। हुनक विद्यारम्भ अपन पिताक निर्देश मे भेल। प्रसिद्ध नैयायिक पक्षधर मिश्र हुनक सहपाठी छल-थिन्ह। पक्षधर मिश्रक पितृव्य महामहोपाध्याय हरिमिश्र हुनक वैधानिक गुरु भयलथिन्ह। ओ शैशवावस्थहि मे नाना काव्य, तन्त्र ओ पुराणसभक अध्ययन कयलन्हि। स्मृति, पुराण, तंत्र, काव्य आदि विद्या सब हुनका लेल हस्तामलक भय गेल। काव्यक लेल हुनका मे नैसर्गिको प्रतिभा छल। स्मृति पुराणादि संस्कृतविद्याक सहस्राधिक वर्षक परम्परा कें अनुगमन छात्रावस्था मे कयलन्हि। रूढ़ ओ परम्परागत भावहुँ कें नूतन ओ स्फूर्तिमय कय देबाक क्षमता आरम्भिक रचना सभ मे सेहो देखना जाइछ। एकर प्रमाण हुनक प्रथम संस्कृत रचनाक निम्न वाक्य अछि—

पुराणानि च तन्त्राणि काव्यानि विमनीषया
विलोक्य राजप्रबन्धानि नवरत्नकृतानि च ॥
देवसिंहस्य रुचये विद्यापतिः कविर्महान् ।
वक्तुमारब्धवान् कथाः नाना प्रस्थानसंयुताः
—भूपरिक्रमण, पृ० १

संगहि ई स्वीकार्य अछि जे विद्यापति अपन विद्वत्ता कें लोक सं पृथक् अथवा वैयक्तिक बनयबाक पक्षपाती नहि छलाह। ओ मूलतः लोकविद्याविद् छलाह। हुनक मान्यता छल जे वेदादि शास्त्रविद्या थोक तँ चित्र, गीत ओ कविता उप-विद्या। लोकसिद्धिक लेल उपविद्या अधिक उपयुक्त होइछ। तें कविता करब हुनक धर्म छल।

इतालियन काव्यशास्त्री बेनेदेत्तो क्रोचेक अभिमत अछि जे हमरा लोकनि कवि सं कोनहु प्रकारक तत्त्वविषयक उपदेशक अपेक्षा नहि करैत छी, आओर ने अत्यधिक कल्पनाक कामना। कवि सं एहन भावाभिव्यञ्जक व्यक्तित्व अपेक्षित अछि जकर संस्पर्श सँ श्रोता अथवा पाठकक चित्त प्राणमय भय जाय। एही रूपक मन्तव्य वक्रोक्तिकार कुन्तकक छल : काव्य मे लौकिक वस्तु तं पाषाणखण्डवत् अछि जे कविक प्रतिभा, कौशल ओ वाक्-चातुर्य्यक सान पर परिष्कृत मणि-प्रतिभा जकाँ आलोकयुक्त भय जाइछ—कविचेतसि प्रथमं च प्रतिभासमानघटितपाषाण-शकलकल्यमणिप्रख्यमेव वस्तु विदग्धविरचितवक्रवाक्योपारूढं शाणोल्लीढमणिमनो-हरतया तद्विदाह्लादकारि काव्यत्वमधिरोहति (वक्रोक्तिजीवित-प्रथम उन्मेष, पृ०२३)।

महाकवि विद्यापति श्रीमद्भागवत, कालिदास-काव्य, अमरुक-शतक, गीतगोविन्द, सदुक्तिकर्णामृत आदि सरस साहित्य एवं प्राकृत ओ अपभ्रंशक मुक्तककाव्यग्रन्थक पर्याप्त अध्ययन कय अपन प्रतिभा ओ लोकवृत्तिक प्रसार सँ परम्परागत काव्य-वैभव कें स्फूर्तिमय बनौलन्हि। हमर महाकवि तं भ्रमर जकाँ विविध पुष्प सँ रससञ्चय कयलन्हि आओर अपन शक्ति सँ ओकरा मधुरूप मे परिणत कयलन्हि। फलतः पदावली मे प्राचीन अमरवाणीक मधुरूप प्राप्त अछि। पदावलीक मधुरवाणी सँ मिथिलाक जनमानस उल्लसित ओ तृप्त भेल ; संगहि, एकर माध्यम सं मिथिलाक जनवाणी अन्य प्रान्तहुँ मे लोकप्रिय भय गेल। संस्कृत-प्राकृत काव्यवैभव सं संवलित रहला कारणे पदावलीक भाव चिर-परिचित छल।

विद्यापतिक व्यक्तित्वक अपर पक्ष हुनक अभिज्ञता ओ लोक सञ्चालन लय अछि। एकर परिचायक हुनक अवहट्ठ ग्रन्थ ओ विशेष रूपें संस्कृत ग्रन्थ अछि।

महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्रीक सुचिन्तित निर्णय अछि : ये गाने ताँहार ख्याति, ये गाने ताँहार प्रतिपत्ति, ये गाने तिनि जगत् मुग्ध करिया राखिया छेन, तिनि ताहार एकटी गानओ ना लिखितेन, केवल पण्डितेर मतो स्मृति, पुराण, तीर्थ ओ गजेटियर प्रभृति संस्कृतग्रन्थ लिखियाइ क्षान्त थाकितेन, ताहा हइलेओ बलिते हइत, ताँहार प्रतिभा उज्ज्वल ओ सर्वतोमुखी। तबे एइ सकल संस्कृत पुस्तक लिखिवार ताँहार आर एक उद्देश्य छिल। तिनि ये वंशे जन्मिया छिलेन, ये समये जन्मिया छिलेन, ये समाजे जन्मिया छिलेन, ताहाते तिनि शुधु गान लिखिया कखनइ क्षान्त थाकिते पारितेन ना। वंशोचित, समयोचित एवं समाजोचित कार्य ताहाके करितेइ हइत। (हरप्रसादरचनावली, विद्यापति, पृ० २२२)।

जाहि गीत सँ हुनक ख्याति अछि, जाहि गीत लय हुनक प्रतिष्ठा अछि, जाहि गान द्वारा ओ संसार कें मुग्ध कय रखलन्हि, ओहि गीत सभ मे सँ एकटा गीत ओ नहि लिखतथि; केवल पण्डित रूप मे स्मृति, पुराण, तीर्थ आओर स्थान-गजेटिअर प्रभृति संस्कृतग्रन्थ लिखि संतुष्ट रहितथि, तत् सत्तो कहल जाइत जे हुनक प्रतिभा उज्ज्वल ओ सर्वोन्मुखी छल। ओ जाहि बंश मे जन्म ग्रहण कयलन्हि, जाहि समाज मे उत्पन्न भयलाह, जाहि समय मे अवतीर्ण भयल छलाह, ओहि ठाम शुद्ध गीत लिखि ओ कखनहुँ शान्त संतुष्ट नहि रहतथि। वंशोचित, समयोचित एवं समाजोचित कार्य हुनका करब छल।

तरुण विद्यापतिक काल मे राजनीतिक, सांस्कृतिक आओर धार्मिक संघर्ष भारत मे चलि रहल छल। हिन्दू नरेश लोकनि अपना मे लड़ि झगड़ि अपन शक्तिक अपचय करैत छलाह। भारतवर्षक अन्य भू-भाग जकाँ मिथिला सेहो यवन द्वारा आक्रान्त छलीह। ऊपर सँ बङ्गालक नरेश मिथिला कें गिड़बा लेल मुँह बौने छलाह। ल० सं० २१५ तदनुसार १३६१ मे दिल्लीक सुलतान फिरोजशाहक शासनकाल मे राज्यलोभी यवन सरदार असलान तिरहुतक राजा गणेश्वर कें धोखा दय बध कय दयलक। तत्पश्चात् मिथिला मे घोर अराजकता व्याप्त भय गेल। समाजक सभ व्यवस्था छिन्न-भिन्न भय गेल।

विद्यापतिक शब्द मे—

ठाकुर ठक भए गेल चोरें चप्परि घर लिज्झिअ।
दास गोसाञुनि गहिअ धम्म गए धन्ध निमज्जिअ॥

खले सज्जन परिभविअ कोइ नहिं होइ विचारक।
जाति अजाति विवाह अधम उत्तम काँ पारक॥

अक्खर रस बुज्झनिहार नहि कइ कुल भमि भिक्खरि भउं।
तिरहुति तिरोहित सब्ब गुणे रा गणेस जबे सग्ग गउं॥

एहन विषम परिस्थिति मे देशक मार्गनिर्देशक कर्मनिष्ठ विद्यापति बनलाह। ओ मानलन्हि जे ओहि समय शास्त्र सँ अधिक महत्व शस्त्रक छल, कारण शस्त्र-रक्षित राष्ट्रहि मे शास्त्र चिन्तन सम्भव होइछ :

स्वभावात् शस्त्रविद्यायाः शास्त्रविद्या कनीयसी।
शस्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिन्ता प्रवर्त्तते॥

—पुरुषपरीक्षा:

तेँ जनता मे बलक सञ्चार आवश्यक छल। वीरपूजनक लेल हुनक समक्ष ओइनवार वंशीय राजालोकनि आदर्शवीर छलाह, सङ्गहि—

ओइनी वंस पसिद्ध जगको तसु करइ ण सेव।
दुहु एकत्थ न पाविअइ भुअवै अरु भूदेव॥

—कीर्त्तिलता, प्रथम पल्लव, पृ० ३१

तथाविध राजालोकनिक रक्षित राष्ट्र मे विद्यापति सन् लोकगुरुक कर्त्तव्य छल जे राजसिंहासन लग आसन पर बैसि युगवासी लोकनिक संस्कार कें अपन शास्त्रीय निर्देशन सँ परिस्कृत करथि। विद्यापति अपन युग ओ समाजक व्यवस्थापक भेलाह। हुनका मे प्रतिभा छल, विद्वत्ता छल, सर्वोपरि विमल व्यक्तित्व छल। तत्कालिक मिथिलाक सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक ओ धार्मिक जीवन कें अपन ज्ञान ओ तप सँ परिचालित कयलन्हि। ओना तँ हुनक युगक मैथिल संस्कृत विद्वान् लोकनि अपन-अपन स्मृति-निबन्ध ग्रन्थ सँ जनजीवन कें व्यवस्थित कयलन्हि। मुदा विद्यापतिक योगदान एहि दिशा मे सर्वोपरि रहल। जेना कि म० म० हरप्रसाद शास्त्रीक निर्णय अछि : 'मैथिल पण्डितेरा नाना ग्रन्थरचना करिया आबार हिन्दू समाज कें पुनर्गठित करिबार चेष्टा करेन। विद्यापति एइ सकल पण्डितदिगेर मध्ये एकजन प्रधान' (हरप्रसाद शास्त्री रचनावली विद्यापति, पृ० १२२)।

विद्यापतिक समकालिक पण्डितलोकनि मे शास्त्रीय रूढ़िनिबन्धनक लेल अधिक आग्रह छल। मुदा विद्यापतिक वाणी मे लोकजीवनक आलोक ओ चेतना लय सौंदर्य एवं मङ्गलक परिधान प्राप्त भेल अछि। तेँ संस्कृत रचना सभ मे विद्यापतिक व्यक्तित्व युगक सङ्ग एकाकार लय समष्टिगत आत्मप्रकाश कें उपस्थित करैछ। सामाजिकता लय ओ कतेक प्रबुद्ध आओर कतेक उन्नत छलाह, तकर प्रमाण हुनक विपुल संस्कृत साहित्य अछि। 'देसिल बअना'क अनन्य उपासक रहितहुँ ओ बुझलन्हि जे 'लोकनायकक उत्तरदायित्वक निर्वाह संस्कृत रचना मात्र सँ संभव, कारण तत्कालिक नव्य भारतीय आर्य-भाषा मे एतदर्थ क्षमता नहि आयल छल आओर ओहि लेल मात्र संस्कृतभाषा उपयुक्त छल। फलतः समाज एवं राष्ट्रक

व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक प्रयोजनक सम्पादनक हेतु विद्यापति संस्कृत रचना कयलन्हि ।

धर्मनीति, लोकनीति एवं पुरुषनीति लय लिखल संस्कृत ग्रन्थरत्न सभ मे जीवनोचित वैविध्य ओ उष्णता अछि । भूपरिक्रमण कवि विद्यापतिक भौगोलिक संस्मरण थीक । पुरुषपरीक्षा नीतिविषयक ग्रंथ अछि । लिखनावली मे तत्कालिक सामाजिक व्यवस्थाक जीवन्त चित्र पत्रलेखनकलाक माध्यमे उपस्थित भयल अछि । विभागसार मे दायविषयक विवेचन अछि । वर्षकृत्य, गयापत्तलक ओ दानवाक्यावली धर्माचरणक ग्रन्थ थीक । शैवसर्वस्वसार, शैवसर्वस्वप्रमाणभूतसंग्रह, गङ्गावाक्यावली, व्याडिभक्तितरङ्गिणी ओ दुर्गाभक्तितरङ्गिणी पूजन तथा आराधन लय धर्मकृति थीक । मणिमञ्जरी मे काव्यानन्दक सङ्ग सम्भ्रान्त राजपरिवारक ललितप्रेमव्यापारक नाटकीकरण प्रस्तुत अछि ।

स्पष्ट अछि जे हुनक संस्कृतवाङ्मय मानवसमाजक सत्संस्कार सभक आयतन थीक । साहित्यक महत्त्व एही लय होइछ जे ओहि मे युगधर्मक मान्यता ओ अपेक्षता कें स्वीकार कय चिरन्तन तत्त्वक ग्रहण कयल जाय, जाहि सं ओ देश-कालक संकीर्ण सीमाक अतिक्रमण कय समस्त मानव-सम्प्रदायक अध्ययन एवं मननक विषय बनि जाय । साहित्य समाजक दर्पण थीक, ई कथन प्रायः लोकोक्ति बनि गेल अछि । मुदा ई वाक्य अव्याप्ति विषयक अछि । साहित्य समाजक प्रतिविम्ब मात्र नहि होइछ । साहित्यक सार्थकता समाजक हृत्तलक अभिव्यक्ति पर निर्भर करैछ जतए समग्र मानवक नित्य ओ अनित्य, आगत ओ अनागत, स्थूल ओ सूक्ष्म, प्रकृत ओ संभाव्य तत्त्वसभक संगम भय सकय । विद्यापतिक संस्कृत वाङ्मय तदनुरूप अछि । ओ सत्साहित्य अछि जाहि मे 'सर्वहित'क कामना प्रधान अछि । हुनक तथाविध उद्घोष दुर्गाभक्तितरङ्गिणीक प्रस्तावना-वाक्य मे उपलब्ध अछि :

विश्वेषां हितकाम्यया नृपवरो विज्ञाप्य विद्यापतिः ।
श्रीदुर्गोत्सवपद्धतिं स तनुते दृष्ट्वा निबन्धस्थितिम् ।।

—दुर्गाभक्तितरङ्गिणी, पृ० २

विश्व अथवा समग्रक मङ्गलकामना विद्यापतिक समग्र संस्कृत साहित्य मे निहित अछि । कहबाक अछि जे हुनक संस्कृतरचना जनसाहित्य थीक । पदावलीक सदृश एहि साहित्य मे व्यक्तिमूलक भावानुरक्ति काम्य नहि रहल अछि । ई रचना सब विचारमूलक अछि । एहि मे वस्तुमूलक निर्देशविधान अधिक अछि । वस्तुनिष्ठता लय एहि साहित्यक सौष्ठव आओर आकर्षण अछि । एहि ठाम सौंदर्यमूलक मनःप्रसादनक अपेक्षा वैयक्तिक ओ सामाजिक संस्कारक उन्नयन अधिक होइत अछि ।

विषय वस्तुक दृष्टिएँ विद्यापतिक संस्कृत रचना सभ कें हमरा लोकनि निम्न चारि कोटि मे राखि सकैत छी :

(क) नीति-कथा विषयक :

१. भूपरिक्रमण

२. पुरुषपरीक्षा

(ख) लोकाचार विषयक :

३. लिखनावली

४. विभागसार

(ग) धर्मविषयक :

५. शैवसर्वस्वसार

६. शैवसर्वस्वप्रमाणभूतसंग्रह

७. गङ्गावाक्यावली

८. दानवाक्यावली

९. गयापत्तलक

१०. वर्षकृत्य

११. व्याडिभक्तितरङ्गिणी

१२. दुर्गाभक्तितरङ्गिणी

(घ) काव्य विषयक :

१३. मणिमञ्जरी

उपर्युक्त तेरह गोट संस्कृत ग्रन्थ विद्यापतिविरचित ज्ञात अछि। संभावना ई अछि जे आओर अन्य रचना प्रकाश मे आओत। हमर मित्र, प्राध्यापक, इतिहास-विद् ओ पुराणशास्त्री श्री राधाकृष्ण चौधरीक वैयक्तिक पुस्तकनिधि मे 'द्वैत निर्णय'क एक गोट हस्तलिपि अछि जाहि मे 'इति महामहोपाध्याय ठक्कुर श्री विद्यापतिविरचिते द्वैतनिर्णये पुरश्चरणद्वैतनिर्णयः' समापन वाक्य लिखित अछि। मुदा बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक हस्तलेखसूची मे 'द्वैतनिर्णय' हस्त-लेखक (हस्तलेख सं० ३६९९) उल्लेख अछि। एहि हस्तलेख मे स्पष्टतः कथन अछि जे ग्रन्थक रचयिता तन्त्रविद वाचस्पति (मिश्र) छथि आओर एहि ग्रन्थक रचना महाराज भैरवसिंहक विदुषी महिषी जयाक आदेश सँ भेल अछि :

श्री भैरवेन्द्रधरणीपति धर्मपत्नी राजाधिराजपुरुषोत्तमदेवमाता।
वाचस्पतिं निखिलतन्त्रविदं नियोज्य द्वैतेयनिर्णयविधिं विधिवत्तनोति॥

—द्वैतनिर्णय, पत्र संख्या १

ध्यातव्य थीक जे आलोच्य वाचस्पति मिश्र हमर महाकवि विद्यापतिक सम-कालिक छलाह। जखन विद्यापति वृद्ध भय गेल छलाह, तखन वाचस्पति तरुण प्रतिभाशील स्मृतिकार रूपें अनेकानेक ग्रन्थक रचना कय रहल छलाह। फलतः जाधरि विद्यापति विरचित द्वैतनिर्णयप्रकाश मे नहि आयल अछि, ताधरि एहि विषयक निर्धारीकरण कठिन अछि।

एक गोट आओर हस्तलेखक प्रतिलिपि हमर मेधावी शिष्य श्री विश्वनाथ ठाकुर, व्याकरणाचार्य, एम० ए०, द्वारा हमरा उपलब्ध अछि। एकर नाम 'प्रश्नोत्तरमालिका' अछि, आओर समापनवाक्य मे 'या विद्यापति रचिता प्रश्नोत्तर-मालिका सेयम्' लिखल अछि। श्री ठाकुर कें एहि हस्तलेखक प्राप्ति कवि विद्यापतिक सौराठ निवासी वंशजक परिवार सँ भयल अछि। समापन वाक्य मे 'या' ओ 'सा' क प्रयोग सँ तथा रचनाक चौदहो प्रश्नोत्तरक भाषाशैलीक परीक्षण सँ विश्वास नहि होइछ जे रचना हमर आलोच्य महाकवि विद्यापति द्वारा भेल। भाषा मे ओ प्रसाद गुण आओर सहजताक दर्शन नहि होइत अछि जे हुनक अन्य संस्कृतरचनाक निजी वैशिष्ट्य अछि। अस्तु, 'प्रश्नोत्तरमालिका'क महत्त्व अपन विषयवस्तु लय अछि। एहि मे विद्यापतिक अनुकरण अछि। प्रत्येक पद नीतिविद्याक अनुपम रत्न अछि। भय सकैछ जे 'प्रश्नोत्तरमालिका'क रचना परवर्त्ती कोनो विद्यापति नामक विद्वान् द्वारा कयल गेल हो।

अस्तु। विद्यापतिक समस्त संस्कृतरचना मध्ययुगीन भारतक अवदान थीक। एहि मङ्गल अवदानक सम्यक् आकलन आवश्यक अछि जाहि सँ मध्ययुगीन भारतीय इतिहासक साहित्य, धर्म, दर्शन प्रभृति क्षेत्र मे मिथिलाक योगदान स्पष्ट भय सकय।

लोकनीति लय विद्यापतिक संस्कृतरचना 'पुरुषपरीक्षा' वस्तुतः जीवनक प्रबन्ध थीक। जाहि रूपें कालिदासक नामस्मरण 'रघुकार' सँ (क इह रघुकारे न रमते) भय जाइछ, तहिना पण्डित विद्यापतिक नामस्मरण 'पुरुषपरीक्षाकार' सँ होइत अछि। पुरुषपरीक्षाक प्रत्येक कथा जीवन-विटपक सशक्त वृन्त थीक, जतए जीवनक सत्य ओ आदर्श कें संरक्षण भेटैछ। एहिठाम रचनाकार नैतिक अनुरोध सँ उदाहरण एवं प्रत्युदाहरण रूप मे कथासभ कें प्रबन्धात्मक पद्धति मे रखलन्हि अछि। छोट पैघ सब मिलि चौवालीस गोट कथा आयल अछि जतए नेना भुट-काक लेल नीतिवचन, कलावती पौर स्त्रीलोकनिक मनोरंजनक लेल काव्यकला, सुसंस्कृत सभक लेल नृत्य-गीत-कामकला आदि ललित भावविषयक कथाप्रसंग, वाग्वैदग्ध्यप्रिय व्यक्तिलोकनिक लेल शास्त्रवाक्य, पुरुषार्थीलोकनिक लेल पुरुष-

विद्या, राजनयपरायण पाठक लोकनिक लेल दण्डनीति विषय ग्रन्थिल ग्रन्थ, इतिहासक जिज्ञासुक लेल चाणक्य, चन्द्रगुप्त, शकटार, राक्षस, मुहम्मद गोरी, जयचन्द्र प्रभृति ऐतिहासिक, विक्रमादित्य सन् अर्द्ध ऐतिहासिक, संगहि बोधि, कृष्ण, चैतन्य सदृश अनुश्रुतिक व्यक्ति सभक जीवन वृत्तक निरूपण भयल अछि।

विद्यापति अपन प्रथम संस्कृत रचना भूपरिक्रमण निमिषारण्यवासी महाराज देवसिंहक निदेश सँ अरण्यवास कय ओतहि कयलन्हि। ल० सं० २९३ अर्थात् शकाब्द १३२४ मे देवसिंहक देहावसान भेल—

अनलरन्ध्रकरलक्खण नरवइ सक समुद्द कर अगिनि ससी।
चैत कारि छठि जेठा मिलिओ बार बेहप्पइ जाउ लसी॥

तदुत्तर कविक प्रिय बन्धु देवसिंहसुत शिवसिंह राजा भयलाह। एहि वीरपुरुषक भाग्योदयक संग कविक भाग्योदय भेल। राज्याभिषेकक समय कवि कें बिसफी ग्राम दानस्वरूप भेटल, आओर महाकवि 'अभिनव जयदेव'क उपाधि सँ सम्मानित भयलाह ओ शिवसिंहक 'राजकवि' तथा अपन युगक 'लोकगुरु' बनलाह। राजकविक रूप मे कवि अपन आश्रयदाताक यशोगान अवहट्ठ भाषा मे कीर्त्तिपताका पोथी लिखि कयलन्हि। मुदा समाज कें परिचालित करबाक लेल पुरुषार्थक परीक्षणार्थ पुरुषपरीक्षा नामक अनुपम संस्कृत ग्रन्थ लिखलन्हि। स्वस्थसमाजक लेल परीक्षित पुरुषक होयब प्रथम कल्प थीक। सुपुरुषक लक्षण-निर्धारण भूपरिक्रमणक प्रस्तावना ओ पदावलीक अनेक पद मे विद्यापति कयने छलाह।

वीरः सुधीः सविद्यश्च पुरुषः पुरुषार्थवान्।
तदन्न्ये पुरुषाकाराः पशवः प्रच्छवर्जिताः॥

—भूपरिक्रमण, पृ० ४

पुरुष ओएह थीकाह जे वीर, सुधी ओ विद्यावान् होथि। एहि सँ विपरीत जे छथि से तँ पुरुषाकार छथि आओर ओ पुच्छविहीन पशुए थीकाह।

तहिना कीर्त्तिलता मे कथन अछि: पुरुषत्व मात्र सँ पुरुष होइछ। जलदानहि सँ जलद जलद होइत अछि, धूमक पुञ्ज जलद नहि। पुरुष ओएह थीकाह जिनका सम्मान छन्हि, अर्जन करबाक शक्ति छन्हि; इतर व्यक्ति तँ पुच्छविहीन पशु छथि।

पुरिसत्तणेन पुरिसओ नहि पुरिसओ जम्ममत्तेन।
जलदानेन हु जलओ नहु जलओ पुञ्जिओ धूमो॥

—कीर्त्तिलता, प्रथम पल्लव, पृ० ३०

गुणहि सँ ऊँच ओ नीचक परिचय होइछ--गुनहि बुझिअ ऊँच नीच रे। पुरुषक धर्म साहस थीक—बिनु साहसे सिधि आस नहि पूर। सुपुरुषक वचन अकाट्य होइछ पाथर परक रेखा जकाँ—सुपुरुष वचन पसानक रेख। सुपुरुष विपत्ति मे अपन विवेक नहि त्याग करैछ :

कत न जीवन संकट परए
कत न मीलए निधी।
उत्तिम तैंअओ सत्ता न छाड़ए
भल मन्द कर विधी॥

उपर्युक्त जीवननीति विषयक उपदेश सभ कें कथा ओ उपकथा मे गुम्फित कय कलात्मकता संग 'पुरुषपरीक्षाग्रन्थक प्रणयन महाकवि कयलन्हि :

नयानुरोधेन गुणेन वाचां कथारसस्याऽपि कुतूहलेन
बुधोऽपि वैदग्ध्यविशुद्धचेताः प्रबन्धमाकर्णयिता न किं मे॥

—(पुरुषपरीक्षा, प्रथम परिच्छेद, पृ० २ ; संगहि भूपरिक्रमण, पृ० ३) : स्पष्टतः ई पुरुषार्थक प्रवचन कविक समग्र साहित्यिक साधनाक मूल मन्त्र छल। तैं प्रथम रचना भूपरिक्रमणक प्रस्तावना एहो पुरुषार्थगान मे भयल अछि।

'पुरुषपरीक्षा' ग्रन्थ चारि परिच्छेद मे विभक्त अछि। ई चारि परिच्छेद पुरुषत्वक मूलभूत चारि लक्षण पर आधृत अछि। परिच्छेदक नामकरण क्रमशः वीरपरिचायक, बुद्धिपरिचायक, सविद्यपरिचायक ओ पुरुषार्थपरिचायक अछि। शौर्य, बुद्धि, विवेक आओर पुरुषार्थं लय मानव-जीवनक सार्थकता होइछ। प्रथम परिच्छेद मे दानवीर, दयावीर, युद्धवीर, सत्यवीर, चौर, भीरु, कृपण ओ अलसक आठ गोट कथा राखल अछि। प्रथम चारि मे चारि प्रकारक वीरक परिचय अछि ; अन्तिम चारि प्रत्युदाहरण रूप मे अछि। द्वितीय परिच्छेद मे सात गोट कथा अछि। प्रथम तीन सप्रतिभ, मेधावी ओ सुबुद्धि बुद्धिपरिचायक कथा थीक, आओर अन्तिम चारि वञ्चक, पिशुन, जन्मबर्बर ओ संसर्ग-बर्बर बुद्धिक प्रत्युदाहरण। तृतीय परिच्छेद मे सविद्यक परिचयार्थ शस्त्रविद्य, शास्त्रविद्य, वेदविद्य, लोकविद्य, उभयविद्य, चित्रविद्य, गीतविद्य, नृत्यविद्य, इन्द्रजालविद्य ओ पूजितविद्य दस गोट उदाहरणस्वरूप एवं अवसन्नविद्य, अविद्य, खण्डितविद्य आओर हासविद्य प्रत्युदाहरणस्वरूप—सब मिलाय चौदह गोट कथा भेटैछ। अन्तिम परिच्छेद पुरुषार्थं चतुष्टयविषयक अछि। तात्त्विक, तामस, अनुशायी तीन कथा धर्ममूलक, महेच्छ, मूढ़, बह्वाश, सावधान चारिटा अर्थमूलक, अनुकूल, दक्षिण, विदग्ध, धूर्त, घस्मर

पाँचटा काममूलक ओ निर्बन्धी, निःस्पृह, लब्धसिद्धि तीनिटा मोक्षमूलक-एवं प्रकारें पन्द्रहगोट कथा राखल अछि।

स्पष्टतः पुरुषपरीक्षाक साहित्यिक महत्त्व बड़ पैघ अछि। एतए कथासाहित्य एवं प्रबन्धसाहित्य दुहूक चमत्कार दर्शनीय अछि। 'कथानां प्रस्तावं विरचयति विद्यापतिः कविः'—कहि महाकवि अपन रचना कें कथाक संज्ञा दयलन्हि। पञ्चतन्त्र जकाँ एहूठाम कथा चम्पूपद्धति सं गद्य-पद्य मे निबद्ध अछि। नीति-विषयक पद्य कलात्मकताक संग गद्याख्यान मे पुष्पक माला जकाँ राखल गेल अछि। भाषा पञ्चतन्त्रशैलीक प्रासादिकता ओ सहजता लय अछि। किन्तु पुरुषपरीक्षाक कथासभक पात्र पञ्चतन्त्रक पात्र जकाँ पशुपक्षी नहि, अपितु मानवीय अछि जतए जीवनक यथार्थता ओ संभाव्यताक अभिनिवेश विशेष आकर्षक भयल अछि।

कथाक सङ्ग-सङ्ग एहि रचना कें विद्यापति प्रकारान्तर सं प्रबन्ध सेहो कहलन्हि—प्रबन्धमाकर्णयिता न किं मे। वस्तुतः पुरुषपरीक्षाक प्रबन्धात्मकता ओहि मे वस्तुनिरूपण आओर जीवनसन्देश लय अछि। प्रबन्धक शिल्पविधान तँ गौण होइछ। महाभारतकार जेना अपन ग्रन्थक विषय मे कहलन्हि :

धर्मे अर्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ।
यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्॥

तहिना पुरुषपरीक्षाग्रन्थक विषय मे कहल जा सकैछ।

जतेक दुष्कर्म मनुष्य करैछ ओकर मूल वासना थीक। मनुष्य कें जहिए धर्म मे बुद्धि होयत तहिए शुभ दिन आरम्भ होयत—

जन्म जन्म मनुष्याणां कामात्पापानि कुर्वताम्।
यदा धर्मे भवेद् बुद्धिस्तदेव दिवसं शुभम्॥

—पु० प०, अनुशायि कथा, श्लोक १२

जे सज्जन परार्ध संख्या धरि धनसञ्चय कयलन्हि, वैराग्यक सीमा धरि कामक सेवन कयलन्हि, मनोरथपर्यन्त याचक लोकनि कें मन पुरौलन्हि, एहि सँ अधिक पौरुष आओर की भय सकैछ—

आपरार्द्धमपि सञ्चितं धनं चाविरक्ति मदनः सुसेवितः।
आमनोरथमिहार्थिनोऽर्चिताः पौरुषं च किमितः परं सताम्॥

—पु० प०, महेच्छ कथा, श्लोक १०

एहि सँ अधिक स्वस्थ जीवन-दर्शन की हयत ? पुरुषपरीक्षा कें जीवन-स्मृति-ग्रन्थक संज्ञा दी, तँ कोनो अत्युक्ति नहि होयत।

प्रकाशित रचनासभ मे सर्वाधिक लोकप्रिय पुरुषपरीक्षा अछि। एकर कतिपय सुन्दर संस्करण समक्ष आयल अछि। सर्वप्रथम एकर संस्करण १८१५ ई० मे बङ्गला रूपान्तरक सङ्ग हरप्रसाद राय द्वारा श्रीरामपुर मिसिनरी प्रेस सँ प्रकाशित भेल। १८३० ई० मे लार्ड बिशप टर्नरक आदेश सँ कालीकृष्ण बहादुर अंग्रेजी अनुवादक सङ्ग एकर प्रकाशन कयलन्हि। शाके सं० १८१० अर्थात् १८८८ ई० मे आधुनिक मैथिलीकाव्यक जनक कवीश्वर चन्दा झा गद्य-पद्य मैथिली अनुवादक सङ्ग एकर सुबोध संस्करण प्रस्तुत कयलन्हि। हिन्दी मे सेहो एकर सुन्दर संस्करण पं० चन्द्रकान्त पाठक द्वारा अविकल गद्यपद्य अनुवादक संग शाके १८४९ क एक संस्करण क्षेमराज प्रेस, बम्बई सँ मुद्रित भेल ओ दोसर संस्करण पं० जनार्दन झा द्वारा पुस्तक भण्डार लहेरियासराय सँ प्रकाशित अछि। मूलपाठक सङ्ग अंग्रेजी संस्करण 'टेस्ट आफ मैन'क नाम सँ डा० ग्रियर्सन द्वारा प्रस्तुत कायल गेल जकर प्रकाशन डा० गङ्गानाथ झा द्वारा इलाहाबाद सँ सन् १९११ ई० मे भेल। पटना विश्वविद्यालयक मैथिली विकास-कोषक सहयोग सँ दरभङ्गा-ग्रन्थमालाक प्रथम पुष्पक रूप मे मैथिली गद्य-रूपान्तरक संग एक गोट सुन्दर संस्करण सन् १९६० ई० मे प्रो० रमानाथ झा सुसम्पादित कयलन्हि। इम्हर सन् १९७० ई० मे मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ कवि ओ संस्कृत भाषासाहित्य मर्मज्ञ विद्वान् पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन' मैथिली मन्दिर दरभंगा सँ एहि पोथीक सुचिन्तित संस्करण उपस्थित कयलन्हि अछि। मान्य विद्वान् विभिन्न हस्तलेख ओ प्रकाशित संस्करण सभ कें आधार बनाय मूलपाठक संरक्षण कयने छथि। संगहि, हिनक द्वारा प्रस्तुत मैथिली अनुवाद मे मूल ग्रन्थक रसास्वाद होइछ, कारण 'सुमन'जी कें उच्चकोटिक कविहृदय प्राप्त अछि।

धर्मविषयक ग्रन्थसभ मे गङ्गावाक्यावली, दानवाक्यावली ओ दुर्गाभक्तितरङ्गिणी तीन गोट रचना प्रकाशित अछि।

गङ्गावाक्यावलीक एक गोट सुन्दर आलोचनात्मक संस्करण सन् १९४० ई० मे डा० यतीन्द्रनाथ विमल चौधरी द्वारा कलकत्ता सँ प्रकाश मे आयल। देश-विदेशक हस्तलेखागार मे प्राप्त ९ गोट हस्तलेखक परीक्षण कय विद्वान् सम्पादक बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक हस्तलेख कें मूलाधार बनौलन्हि। 'संस्कृतसाहित्य मे नारीलोकनिक योगदान'—कन्ट्रीब्यूशन आफ वोमेन टु संस्कृत लिटरेचर—शीर्षक सँ खण्ड ३ आओर ४ मे क्रमशः बीनाबायीक द्वारकापत्तलम् ओ विश्वास-देवीक गङ्गावाक्यावली कें राखि डा० चौधरी गङ्गावाक्यावली पोथी कें विश्वासदेवी

विरचित मानलन्हि। पुस्तकक समापनवाक्यक आधार पर डा० चौधरीक मान्यता भेल जे विश्वासदेवी कें विद्यापति मात्र किछु साहाय्य पुस्तकक परिशोधन लय कयलन्हि।

कियन्निबन्धमालोक्यश्री विद्यापतिसूरिणा।
गङ्गावाक्यावली देव्याः प्रमाणैर्बिमलीकृता ।।

किन्तु वास्तविकता तँ ई जे एहि ग्रन्थक रचयिता महाकवि विद्यापति छलाह तथा रानीक आश्रित रहला कारणें ग्रंथ लिखि रानी विश्वास देवी कें अर्पित कयलन्हि। ईहो सत्य जे विश्वासदेवी स्वयं विदुषी छलीह आओर ग्रन्थप्रणयन मे हुनक वैयक्तिक रुचि छलन्हि। तदर्थ विद्यापति हुनक नाम सँ रचना कें प्रसिद्ध कयलन्हि।

यावद् गङ्गा विभाति त्रिपुरहर-जटा-मण्डलं मण्डयन्ती
मल्लीमाला सुमेरोः शिरसि सितमहावैजयन्ती जयन्ती।
यावत् पाताल-मूलं स्फुरदमलरुचिः शेष-निर्मोकवल्ली
तावद् विश्वासदेव्या जगति विजयतां गाङ्ग-वाक्यावलीयम् ।।

उपर्युक्त धारणाक पोषण प्राप्त नो हस्तलेख मे सँ दू टाक समापनवाक्य सँ होइछ—

इति विद्यापति-विरचिता गंगावाक्यावली समाप्ता।

(कलकत्ता संस्कृत कालेज हस्तलेख, खण्ड २, १८६४, पृ० ५०८ ; संस्कृत हस्तलेख सभक टिप्पण, राजेन्द्रलाल मित्र, खण्ड ३, पृ० २३४, सं० १२५१) पुनः गोविन्दानन्द कविकङ्कणाचार्य 'गंगावलीकार' (पुल्लिंग पद) क प्रयोग सँ विद्यापति कें रचयिताक रूप मे निर्देश कयलन्हि। संगहि, मैथिल स्मृतिकार गणपति अपन ग्रंथ 'गंगाभक्तितरंगिणी' मे स्पष्टतः विद्यापति कें गंगावाक्यावलीक रचयिता कहि उद्धृत कयलन्हि अछि—इति विद्यापत्युपाध्यायै गंगावाक्यावल्यां लिखितम्। गणपतिक समय ख्रिष्टीय पन्द्रहम शतकक अन्त अथवा सोलहमक आरम्भ छल। तैं एहि मे कोनो प्रकारक सन्देह नहि जे हुनका परम्परा सँ ज्ञात छल जे विद्यापति गंगावाक्यावलीक प्रणेता छलाह।

गंगावाक्यावली मे गंगाक माहात्म्य वर्णित अछि। कहल अछि जे गंगाक दर्शन, स्पर्शन, नामकीर्त्तन अथवा स्मरण सँ पापक विमोचन होइछ—

दर्शनात् स्पर्शनात् पानात् तथा गङ्गेति कीर्त्तनात्।
स्मरणादेव गङ्गायाः सद्यः पापात् प्रमुच्यते ।।

गंगाक प्रति भक्ति ओ श्रद्धा सँ सकल कामनाक सिद्धि होइत अछि। सहस्र योजन दूर रहितहुँ यदि भक्त गंगानामस्मरण करैछ तँ ओ पाप सँ मुक्त भय जाइछ—

सहस्रयोजनस्थाश्च गङ्गां भक्त्या स्मरन्ति ये।
गङ्गा गङ्गेति ये ब्रूयुर्मुच्यन्ते तेऽपि पातकैः॥

पोथीक उनतीस अध्याय मे गंगा-भक्तिक उनतीस प्रकार स्मृति, पुराणादिक वाक्य सँ प्रमाणीकृत विवेचित अछि। उनतीस प्रकार अछि : स्मरण, कीर्तन, यात्रा, श्रवण, गति, वीक्षण, नमस्कार, स्पर्शन, श्राद्ध, अभय, सर्व-बन्धु-प्रतिकृति, क्षेत्र, अवगाहन, स्नान, तर्पण, मृत्तिका, जप, दान, पिण्ड, जल, तोयपान, आश्रय, प्रायश्चित्त, कृतकृत्य, मृत्यु, अस्थि-स्थिति, प्रयाग-मुण्डन, विघ्न ओ प्रतिषिद्ध। प्रथमतः नवधा भक्तिक संकल्प राखल अछि। पर्व विशेष लय गंगास्नानक ओ गंगातीरस्थ तीर्थसभ मे कयल श्राद्धक, दानादिक संकल्प वाक्य भिन्न-भिन्न कहल अछि। एहि सभक प्रामाण्य लय वाक्य विभिन्न स्रोत सँ उद्धृत अछि।

प्रमाण मे स्मृति पुराणादि धर्मग्रन्थ सँ सहस्राधिक वचन विद्वान् लेखक उद्धृत कयने छथि। रामायण ओ महाभारत सँ सेहो प्रमाण-वाक्य एतए राखल अछि। संग्रहि, कल्पतरु, मिताक्षरा, पारिजात, भोजराज, गणेश्वर मिश्र, गौड़ीयस्मृति, श्रीदत्तोपाध्यायक छन्दोगाह्निक प्रभृति स्मृतिकार ओ स्मृतिग्रन्थ उल्लिखित अछि। उदाहरणस्वरूप, यात्राप्रकरण मे विद्यापति अपन मतस्थापनक पश्चात् गणेश्वरमिश्रक मतक उल्लेख एहि रूपेँ कयने छथि—एवन्तु कुर्वतस्तस्य तीर्थाद् यदुक्तं फलं तत् स्यान्नात्र सन्देहोऽस्ति। सुसंयत इति पूर्वदिनकृतैकभक्तादिनियमकः। तदुत्तरदिने कृतोपवासः गणेशं ग्रहानिष्ट-देवताश्च संपूज्य पार्वणञ्च कृत्वा ब्राह्मणान् पूजयेत्। इदञ्च पार्वणं घृत-प्रचुरकम्।

"गच्छन् देशान्तरं यस्तु श्राद्धं कुर्वीत सर्पिषा।
यात्रार्थमिति तत् प्रोक्तं प्रवेशे च न संशयः॥

इति भविष्य-पुराण-वचनात्। इदमाभ्युदायिकमिति केचित्। तन्न; प्रकृतित्वेन उपस्थितेरारब्धत्वात् प्राप्ते पार्वणे विशेषानभिधानात्। गणेश्वरमिश्रादयोऽप्येवम् (— गङ्गावाक्यावली, पृ० ११६)।

पुनः जलमातृक भारतदेश मे गङ्गा सन् नदीक माहात्म्य सिद्ध अछि। भारतक सिद्धपीठ अथवा गङ्गातट स्थित तीर्थस्थान सभक वर्णन मे जाहि रागात्मकताक

परिचय विद्यापति दयने छथि, ओ हुनक भौगोलिक ज्ञानक संग देशप्रेमक परिचायक अछि।

उत्तरेण प्रतिष्ठानाद भागीरथ्याश्च पूर्वतः।
हंसप्रतपनं नाम त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्॥ पृ० २८
यामुने चोत्तरे कूले प्रयागस्य तु दक्षिणे।
ऋणमोचनकं नाम तीर्थं तु परमं ततः॥ पृ० २९०
गङ्गाद्वारे दशावर्ते विन्ध्ये च नीलपर्वते।
तीर्थे कनखले स्नात्वा धूतपापो दिवं व्रजेत्॥ पृ० २९४

आदि आदि।

दोसर प्रकाशित धर्मग्रन्थ दानवाक्यावली अछि। एकर प्रकाशन शाके १८०५ अर्थात् सन् १८८३ ई० मे विक्टोरिया प्रेस काशी सँ बनैली राजा पद्मानन्दसिंहक माता रानी पार्वती देवीक प्रेरणा पाबि पण्डित फणीमिश्र कयलन्हि। मुदा ई प्रकाशित पोथी आब दुष्प्राप्य भय गेल।

एहि ग्रन्थक सात गोट हस्तलेख प्राप्त अछि—१. हरप्रसाद शास्त्री द्वारा सूचित हस्तलेख जे बंगाल एशियाटिक सोसाइटी मे सुरक्षित अछि; हस्तलेख सं० ५५४५; २. शास्त्री, नेपाल हस्तलेख सूची ग्रन्थ (लक्ष्मणाब्द ३९५ अर्थात् १५१४ ई०); ३. मित्र, बीकानेर हस्तलेख सं० ८०८ (ओतय दू प्रति हस्तलेखक अछि); ४. मिथिला हस्तलेख सूची, खण्ड १, हस्तलेख सं० १९२; ५. मित्र टिप्पण, पृ० १३७; ६. सरस्वती भवन हस्तलेख सूची, खण्ड ३, हस्तलेख सं० ११९६७; ७. डेक्कन कालेज, हस्तलेख सं० ३९८। बीकानेरक हस्तलेख सर्वाधिक सुरक्षित अछि। डा० सुभद्र झा अपन 'विद्यापतिक गीत' सोंग्स आफ विद्यापति पुस्तक मे लिखैत छथि जे ल० स० ३४१ अर्थात् १४५० ई० मे कृष्णार्चनचन्द्रिकाक लेखक रत्नपाणि केँ दानवाक्यावलीक एक गोट प्रति अर्पित कयल गेल। एहि सभक आधार पर एक गोट नवीन संस्करण प्रकाशन बड़ उपादेय होयत, कारण पं० फणीमिश्र द्वारा सम्पादित पुस्तक मे कतेको अशुद्धि छपल छल।

गङ्गावाक्यावली जकाँ एक गोट दानवाक्यावली रचनाक श्रेय महाराज नरसिंह देव 'दर्पनारायण'क पत्नी रानी धीरमति केँ कहल गेल।

विज्ञाऽनुज्ञाप्य विद्यापतिमतिकृतिनं सप्रमाणामुदारा।
राज्ञी पुण्यावलोका विरचयति नवां दानवाक्यावलीं सा॥

—ग्रन्थक प्रस्तावना-वाक्यः, बंगाल ए० हस्तलेख।

हस्तलेखक समापनवाक्य मे स्पष्टतः उल्लेख अछि जे ई महादेवीश्री धीरमतिदेवीविरचित रचना थीक—इति महादेवीश्री धीरमतिदेवीविरचिता दानवाक्यावली समाप्ता। मुदा हस्तलेखक समाप्तिश्लोक गङ्गावाक्यावलीक वाक्य जकाँ विद्यापतिक द्वारा प्रत्यर्पण होयबाक प्रमाण अछि—

निबन्धान् सम्यगालोक्य श्रीविद्यापतिसूरिणा।
दानवाक्यावली देव्याः प्रमाणैर्विमलीकृता॥

मुदा बीकानेर हस्तलेखक समापनवाक्य सँ स्पष्टतः सिद्ध अछि जे ई विद्यापति रचित थीक :

इति विद्यापतिकृता दानवाक्यावली समाप्ता।

विद्यापतिक युग मे जतेक प्रकारक दान प्रचलित छल ओहि सभक लेल पुराण-स्मृतिक वाक्य सँ प्रमाण उद्धृत कय दानवाक्यावलीक रचना भयल अछि। ग्रन्थारम्भ सँ बुझना जाइछ जे हिरण्यदान, रजतदान, अलङ्कारदान, तैजसदान प्रभृति विविधदानक उल्लेख अछि। दान तँ काम्य कर्म थीक। मुदा दान मे की दातव्य थीक, दानक पात्र के, दानक उद्देश्य की, आदि अनेक प्रश्न उठैछ। पुनः दातव्य वस्तुक देवता होइछ। तैं संकल्पवाक्य मे दाता, दानक पात्र, वस्तु, वस्तुक देवता, दानक फल विविध विषयक उल्लेख आवश्यक होइत अछि। एवंप्रकारें दानक विधान, संकल्प वाक्यादि लय सहस्रो श्लोक प्रस्तुत ग्रन्थ मे उद्धृत अछि। सर्वत्र विद्यापतिक पाण्डित्य दर्शनीय अछि। लिखबाक समय चण्डेश्वर ठाकुरक दानरत्नाकर आदर्श ग्रन्थ रहल। मुदा विद्यापति बल्लाल सेनक दानसागर, लक्ष्मीधरक कृत्यकल्पतरु स्मृतिग्रन्थक दानकाण्ड, ओ अन्य नवीन ग्रन्थ सभक उपयोग कय अपन रचना कें अधिक आकर्षक बनौलन्हि अछि।

चित्तक शुद्धि आत्मत्याग सँ होइछ। दानादि कर्म सँ आसक्तिभाव कम भय जाइत अछि। तैं भारतीय संस्कृति मे दानक महत्व अछि। फलक इच्छा लय दान नैमित्तिक ओ फलक इच्छाक बिना दान अनैमित्तिक, दुहू दान सँ मानवीय मनोभावक विस्तार होइछ। मध्ययुग मे दानक की रूप छल, ओकर की विधान छल, दान मे कोन वस्तु देल जाइत छल, कोन अवसर मे कोन फलकामना सँ दान होइत छल, आदि सभक विवेचन लेल दानवाक्यावली अत्यन्त उपादेय अछि। एहि सँ तत्कालिक संस्कृतिक सम्यक् परिचय संभव अछि।

तेसर धर्मविषयक प्रकाशित रचना दुर्गाभक्तितरङ्गिणी अछि। एकर प्रथम प्रकाशन दड़िभङ्गा महाराजाक प्रेरणा सँ सन् १९०२ ई० मे भेल। एहि मे

सम्पादक ओ प्रकाशकक नामोल्लेख नहि अछि। ई सम्प्रति दुष्प्राप्य भयल अछि। मुदा दुर्गाभक्तितरङ्गिणीक एक गोट सुन्दर संस्करण बंगलानुवादक संग शकाब्द १८५६ अर्थात् सन् १९३४ ई० मे पं० ईशानचन्द्र भट्टाचार्य विद्याविनोद द्वारा सिलहट (सम्प्रति बंगलादेशक) श्रीहट्ट गिरीशयन्त्रालय सं भयल। ईहो पोथी आब दुष्प्राप्य भयल अछि। पोथीक दू गोट सुन्दर हस्तलेख—एक बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक आओर दोसर कलकत्ता संस्कृत कालेजक हस्तलेखागार मे सुरक्षित अछि।

दुर्गाभक्तितरङ्गिणी कें ग्रन्थारम्भ मे दुर्गोत्सवपद्धतिक नाम सं अभिहित कयल गेल अछि। मुदा प्रमाणभागक समाप्ति मे ओ रचनाक समापनवाक्य मे दुर्गाभक्ति-तरङ्गिणी कहल अछि: इति श्री दुर्गाभक्तितरङ्गिण्याः प्रथमः प्रमाणतरङ्गः पृ० १२१। पुनः 'श्रीसमस्तप्रक्रियाविराजमानमहाराजाधिराजशिवभक्तिपरायण-श्रीदर्पनारायणदेवात्मजसमस्तप्रक्रियालंकृतनृपतिवीरश्रीधीरसिंहदेवानां समरविजयिनां कृतौ श्रीदुर्गाभक्तितरङ्गिणी समाप्ता, पृ० २१२। अतः ई प्रमाणित भय जाइछ जे पोथीक नाम दुर्गाभक्तितरङ्गिणी अछि।

दुर्गाभक्तितरङ्गिणी स्मृतिकार विद्यापतिविरचित अन्तिम पूजनग्रन्थ थीक। एहि ग्रन्थक रचना ओ महाराज नरसिंहक पुत्र महाराज धीरसिंहक कहला सं कयलन्हि। एहि मे धीरसिंहक अन्य दू भाय भैरवसिंह आओर चन्द्रसिंहक नामोल्लेख सेहो अछि। ग्रन्थारम्भ मे महाराज नरसिंहक गुणानुवाद वर्त्तमानकालिक क्रियापद मे भेला कारणें अनुमान सहज होइछ जे जखन विद्यापति एहि ग्रंथक प्रणयन प्रारम्भ कयलन्हि, तखन नरसिंह जीवित छलाह। ग्रंथारम्भ मे कहल अछि: श्रीनरसिंहदेव मिथिलाभूमण्डलक आखण्डल अर्थात् इन्द्र छथि। हिनक पादांगुष्ठ राजालोकनिक मुकुटरत्ननिकर सं पूजित होइत अछि। पूर्व, पश्चिम, दक्षिण ओ उत्तर दिशक गिरि-प्रदेश सं आगत याचक लोकनि कें मनोवाञ्छा सं अधिक स्वर्ण, भूमि ओ मणि दय कर्ण ओ कल्पतरु कें जीतने छथि:

अस्ति श्रीनरसिंहदेवमिथिलाभूमण्डलाखण्डलो
भूभृन्मौलिकिरीटरत्ननिकरप्रत्यर्चिताङ्घ्रिद्वयः।
आपूर्वापरदक्षिणोत्तरगिरिप्राप्तार्थिवाञ्छाधिक-
स्वर्णक्षौणिमणिप्रदानविजितश्रीकर्णकल्पद्रुमः॥

एहि महादानी ओ महाप्रतापी महाराजा नरसिंहदेवक पुत्र पृथ्वीभरिक विख्यात नीतिनिपुण, प्रभूत प्रतापशाली, युद्धक्षेत्र मे शत्रुगणक ऊपर विजयी,

सुयश लय तीनू लोक मे विश्वासी, न्यायक आधार, अत्यन्त विनयशील, अतिशय प्रज्ञावान् ओ अमोघ क्रियाशील विजयी श्रीमान् धीरसिंह नृपति विराजमान छथि। जिनक अनुज छथि नरपति श्रीमान् भैरवसिंह जे अपन वीरत्व लय पञ्चगौड़ाधिप कें वीरत्व मे पराजित कयलन्हि अछि आओर पञ्चगौड़ाधिप शरणापन्न भय जिनक स्तवन ओ तैल-मर्दन कयने छलाह। सूर्य्य-चन्द्र स्थितकाल पर्य्यन्त अखण्डित कीर्तिमान् श्रीरूपनारायणक जय होय। ओ राजा धीरसिंह देवीक प्रति भक्ति मे परायण आओर वेदविहित कर्मानुष्ठान मे अत्यन्त तत्पर छथि; युद्ध मे प्रत्यक्ष नारायण छथि जाहि रूपें शत्रुराज कंसक दलन कयने छलाह, ओ विद्यापति नामक पण्डित कें नियुक्त कय निबन्धादि दृष्टि सँ एहि दुर्गोत्सवपद्धतिक प्रणयन समग्रविश्वक कल्याणक लेल करबैत छथि :

विख्याताततनयस्तदीयतनयः प्रौढप्रतापोदयः
संग्रामाङ्गनलब्धवैरिविजयः कीर्त्याप्तलोकत्रयः।
मर्यादानिलयः प्रकामविनयः प्रज्ञाप्रकर्षाश्रयः
श्रीमद्‌भूपतिधीरसिंह विजयी राजत्यमोघक्रियः॥

शौर्य्यार्वर्जितपञ्चगौडधरणीनाथोपनम्रीकृता
लोकाभ्यङ्गतुरङ्गसङ्गतसितच्छत्राभिरामोदयः।
श्रीमद्‌भैरवसिंहदेवनृपतिर्यस्यानुजन्मा जयत्या-
चन्द्रार्कमखण्डकीर्त्तिसहितः श्रीरूपनारायणः॥

देवीभक्तिपरायणः श्रुतिमुखप्रारब्धपारायणः
संग्रामे रिपुराजकंसदलने प्रत्यक्षनारायणः।
विश्वेषां हितकाम्यया नृपवरो विज्ञाप्या विद्यापतिः
श्रीदुर्गोत्सवपद्धतिं स तनुते दृष्ट्वा निबन्धस्थितिम्॥

दुर्गापूजन लय स्मृतिग्रन्थ सभ मे दुर्गाभक्तितरङ्गिणी सर्वाधिक महत्वपूर्ण अछि। ओना तँ दुर्गोपासना लय देवीपुराण, भविष्यपुराण, मार्कण्डेयपुराण, ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, श्रीमद्‌भागवत प्रभृति प्राचीन ग्रन्थ सभ मे देवीपूजनक माहात्म्य वर्णिते छल। मुदा विद्यापतिक ग्रन्थक विलक्षणता एहि लय जे अन्य पूजन ग्रन्थ सँ भिन्न एहि ठाम दुर्गापूजनक लेल प्रमाण आओर प्रयोग दुइ स्वतन्त्र विवेचन उपस्थापित कयल गेल अछि। प्रथमार्द्ध मे प्रमाणवाक्य श्रुतिस्मृति, पुराणादि धर्मग्रन्थ सभ सँ सहस्राधिक संख्या मे उद्‌धृत कय राखल अछि। उत्तरार्द्ध मे प्रयोग-

वाक्य लोकव्यवहारानुरूप प्राप्त अछि। एहि सभ उद्धरणवाक्य कें देखि सहजे अनुमान कयल जा सकैछ जे विद्यापति कतेक पैघ अधिकारी पण्डित छलाह।

विद्यापति सं पूर्वहुँ स्मृतिकार लोकनि दुर्गापूजन लय लिखने छलाह। द्वादश शतक मे बङ्गालक सूत्रपाणि दुर्गापूजनक विधान लय 'दुर्गोत्सवविवेक' नामक ग्रन्थ लिखने छलाह। एहि दुर्गापूजनक आधार पुराणमात्र छल। प्रथमतः विद्यापति तन्त्रसंमत कय पूजनक विधान कयलन्हि अछि। हिनकहिं ग्रन्थ सं प्रेरणा प्राप्त कय परवर्ती गौड़स्मृतिकार पौराणिक तन्त्रवाद कें लोकप्रिय बनौलन्हि।

फलतः दुर्गाभक्तितरङ्गिणीक महत्त्व मात्र अपन प्रदेश मे सीमित नहि रहल। मिथिला सं बाहर बङ्गाल ओ कामरूप मे एकर अनुसरण होइत अछि। पूर्वी बङ्गाल (सम्प्रति बङ्गलादेश) ओ कामरूप मे दुर्गाभक्तितरङ्गिणी दुर्गापूजनक एकमात्र आदर्श ग्रंथ अछिए; पश्चिम बङ्गालहुक भाटपारा अञ्चल मे मैथिल पूजन-विधान प्रचलित अछि। पश्चिम बङ्गाल मे साधारणतया स्मार्त्त रघुनन्दन भट्टाचार्यक दुर्गोत्सवतत्त्व आओर दुर्गापूजनतत्त्वक अनुरूप दुर्गापूजाक प्रचार अछि। रघुनन्दन स्थल-स्थल पर दुर्गाभक्तितरङ्गिणी मे उल्लिखित प्रयोगक ऊपर दोषारोपण कय स्वमत स्थापित कयने छथि। तथापि ओ अधिकांश प्रयोग मे दुर्गाभक्तितरङ्गिणीक वाक्य सं प्रभावित छथि। मात्र किछु भेद देखना जाइछ, जे स्थानिक रंग थीक। यथा बङ्गाल मे दुर्गादेवीक पूजन लक्ष्मी, सरस्वती ओ अन्य देवीक सङ्ग होइत अछि। पुनः बंगालक दुर्गापूजनक वैशिष्ट्य सन्धिपूजन लय अछि, जाहि सं अष्टमी आओर नवमीक सन्धि-काल मे देवीक पूजन विहित अछि। प्रतिमाक महास्नान मधु, दधि, अथवा अन्य तरल वस्तु सं अष्टमी तिथि मे होइत अछि, जतए पूजन वृहन्नन्दिकेश्वर पुराणक अनुरूप होइत अछि। ओतए ई महास्नान सप्तमी तिथि मे प्रचलित अछि। विद्यापति कें नवमी तिथि मे ई कल्प होयब मान्य अछि। वर्षक्रियाकौमुदीक ग्रन्थकार गोविन्दानन्दक मतानुसारें ई गौड़ीय लोकनिक देशाचार थीक। एहि सँ विद्यापतिक मौलिकता अक्षुण्ण रहैछ। त्रिशूलिनीदुर्गापूजा, मातृचक्रपूजा, कुमारीपूजा, रेवन्तादिपूजा आदिक विधान दुर्गाभक्तितरङ्गिणी मे प्राप्त अछि जे मिथिलाक दुर्गापूजनक निजी वैशिष्ट्य अछि। दुर्गाभक्तितरङ्गिणी मे उल्लिखित अपराजितापूजाक प्रवेश बंगाल मे रघुनन्दनक समय मे भेल। निष्कर्ष, मानबाक अछि जे बंगाल मे प्रचलित दुर्गापूजन मे विद्यापतिक एहि कृतिक प्रभाव इतिहाससिद्ध अछि।

एहि पोथीक नवसंस्करण नितांत आवश्यक अछि।

शैवसर्वस्वसार ओ शैवसर्वस्वप्रमाणभूतसंग्रह शिवपूजन लय लिखित अछि। मिथिला मे शिवपूजन अत्यन्त प्राचीन कालहिं सँ प्रचलित छल तैं पूजनक विधान मे विभिन्न प्रयोजन लय विभिन्न संकल्पवाक्य ओ विभिन्न पद्धति एहि

ग्रन्थद्वय मे राखल अछि; संगहि एहि सभक प्रमाणक लेल अन्य धर्मग्रन्थ सभ सं वाक्य उद्‌धृत कयल गेल अछि।

गङ्गावाक्यावलीक सदृश शैवसर्वस्वसार महारानी विश्वासदेवीक रचनाक रूप मे अभिकथित अछि :

विज्ञानुज्ञाप्य विद्यापतिकृतिनमसौ विश्वविश्वासकीर्त्तिः।
श्रीमद्‌विश्वासदेवी विरचयति शिवं शैवसर्वस्वसारम् ॥

प्रस्तावनाक समापनवाक्य सँ बुझना जाइछ जे गङ्गावाक्यावली एवं दानवाक्यावलीक आनुरूप्य लय पोथीक नामकरण शम्भुवाक्यावली सँ सेहो भेल अछि :

प्रमाणमूला नवपल्लवाढ्या सुपुष्पिकारम्यफलोपपन्ना।
अभीष्टसिद्धयै विबुधैरुपेया वाक्यावली कल्पलतेव शम्भोः॥

शैवसर्वस्वसार मे २५०७ श्लोक भेटैछ जतए शिवमाहात्म्यकीर्त्तन, हरिहराद्वैतकीर्त्तन, शिवभक्तलक्षण, शिवभक्तिनिरूपण, शिवदर्शनार्थयात्राफलकथन, शिवदर्शनमाहात्म्यकथन, शिवालयसम्मार्जनमाहात्म्यकीर्त्तन, शिवलिङ्गनिर्माणविधि, पार्थिवादिशिवलिङ्गपूजन, दधिदुग्धघृतोदकादिस्नानफल, हैमादिघटद्वारास्नानफल, मुखवाद्यफल, शिवव्रतफल, शिवरात्रिमाहात्म्य, रुद्राक्षधारण, शिवनामजपफल आदि धार्मिक कृत्यक वाक्य सप्रमाण संकलित अछि। फलतः एहि पोथी मे शिवपूजन लय विधि ओ माहात्म्य एकत्र वर्णित अछि।

शैवसर्वस्वप्रमाणभूतसंग्रह मे शैवसर्वस्वसार सँ प्रमाणांश निकालि राखल गेल अछि। ई अधिक विश्वसनीय लगैछ जे शैवसर्वस्वसारक रचना सँ पूर्वहि विद्यापति शिवपूजन लय प्रमाणवाक्य संकलित कयने छलाह। तत्पश्चात् महारानी विश्वासदेवीक प्रेरणा पाबि एहि वाक्य-संकलन कें अन्य विषय सँ पल्लवित कय शैवसर्वस्वसार नाम सँ प्रस्तुत कयलन्हि।

प्राचीनधर्मग्रन्थ, स्मृति, पुराण, उपपुराण, आगम, तन्त्र, रामायण, महाभारतादि मे सँ शिवार्चन सम्बन्धी वाक्यसभ कें उद्‌धृत कय पण्डित विद्यापति अपन ग्रन्थद्वय कें प्रमाणप्रमित ओ पुष्ट कयलन्हि। शैवसर्वस्वसार मे शिवलिंगनिर्माणक लेल नीलमणि, स्वर्ण, रजत, मुक्ता, माणिक्य, मृत्तिकादि उपयुक्त मानल गेल अछि। नीलमणिमाणिक्यादिक उल्लेख सँ स्पष्ट अछि जे ऐश्वर्यवान् समृद्धिशाली व्यक्ति शिवलिंग पूजन करैत छलाह। संगहि, सामान्य लोक तँ माटिक शिवलिंग बनाय पूजन करैत छलाह। स्पष्टतः शिवपूजन सार्वजनीन आजुक जकाँ विद्यापतिकाल मे छल।

शैवसर्वस्वसारक प्रारम्भिक श्लोक मे ओइनबार राजा लोकनिक विषय लय कतिपय सूचना भेटैत अछि जकर महत्व ऐतिहासिक एवं साहित्यिक अछि। एहि

ग्रन्थ मे राजा भवसिंह ओ हुनक उत्तराधिकारी महाराजा लोकनिक उल्लेख अछि। कहल गेल अछि जे सकल पृथ्वीक अवनिपति सभक मौलिमण्डलमणिरूप भवसिंह भूपति भेल छलाह। हुनक पुत्र दयादानदक्ष देवसिंह भेलाह जे हस्तिरथादिक महादानक संग स्वर्णतुलापुरुषदान कयने छलाह। हुनकहि सँ सकुरीमण्डलान्तर्गत समुद्र सं तुलनीय एक गोट क्रीड़ातड़ाग खुनाओल गेल। हुनक पुत्र अतुलपराक्रमी शिवसिंह छलाह जे गौड़ ओ गज्जनक महीपाल कें संग्राम मे परास्त कयलन्हि। शिवसिंहक पश्चात् हुनक अनुज पद्मसिंह राजा भेलाह जे याचक लोकनिक लेल कल्पवृक्ष छलाह। पद्मसिंहक परोक्ष भेला पर हुनक पत्नी विश्वासदेवी रानी भेलीह। ओ विदुषी आओर गुणग्राहिणी छलीह। महाकवि कें शास्त्रप्रणयनक लेल विदुषी विश्वासदेवी सँ प्रेरणा भेटल छल। रानी प्रत्यहः चन्द्रचूड़शिवक भक्ति मे परायण छलीह। हुनक आदेश सं कवि विद्यापति शैवसर्वस्वसार लिखलन्हि। तें ग्रन्थारम्भ मे महारानी विश्वासदेवीक वर्णन कवि काव्यात्मक शैली मे कयलन्हि। उदाहरणार्थ निम्न पद द्रष्टव्य अछि :

पत्युः सिंहासनास्था पृथुमिथिलामहीमण्डले पालयन्ती—
श्रीमद्विश्वासदेवी जगति विजयते चर्य्ययारुन्धतीव।
इन्द्रस्येव शची समुज्ज्वलगुणा गौरीव गौरीपतेः
कामस्येव रतिः स्वभावमधुरा सीतेव रामस्य या॥
विष्णोः श्रीरिव पद्मसिंहनृपतेरेषा परा प्रेयसी
विश्वख्यातनया द्विजेन्द्रतनया जागर्त्ति भूमण्डले॥

ग्रन्थद्वयक महत्त्व शिवपूजन ओ इतिहास-काव्य लय तऽ अछिए; संगहि एहि ठाम ई स्पष्ट अछि जे विद्यापति कें अपन वंश-विद्याक अनुगमन पर्याप्त छल। पूर्वपुरुष सन्धिविग्रहिक स्वनामधन्य चण्डेश्वरक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'शैवमानसोल्लास'क प्रभाव विषयविवरण मे आओर पिता गणपतिठाकुरक गङ्गाभक्तितरङ्गिणीक प्रभाव प्रतिपादन-शैली मे स्पष्ट अछि।

एहि दुहूक कतिपय सुन्दर हस्तलेख उपलब्ध अछि। कामेश्वरसिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक ग्रन्थागार मे ई दुनू सुरक्षित अछि। शैवसर्वस्वसारक प्रति तालपत्र पर लिखित अछि जे प्रायः चारि सए वर्ष पुरान अछि। एहि मे आदि, मध्य एवं अन्त खण्डित अछि, अवशिष्ट जीर्ण शीर्ण होइतहुँ पाठ्य अछि। शैवसर्वस्वप्रमाणभूत संग्रहक प्रति देशी कागज पर लिखल अछि। एहि मे ४८ पात अछि, आओर लिपिकार ओ लिपिकालक नामोल्लेख अछि—लेखक जमाहिर दास, फाल्गुनकृष्णाष्टम्यां सन् १३०३ साल। ई हस्तलेख नवीन होइतहुँ मसीलेप ओ मसीलोपक कारणें यत्र तत्र

खण्डिताक्षर भय गेल अछि। शैवसर्वस्वसारक एक गोट सम्पूर्ण प्रति नेपाल दरबारक पुस्तकालय मे भेटैछ। राजेन्द्रलाल मित्र द्वारा प्रस्तुत हस्तलेखसूची (ग्रन्थ छए)क अनुसारें शैवसर्वस्वसारक हस्तलेखक एकटा प्रति बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक हस्तलेखागार मे छल, मुदा सम्प्रति ओ अनुपलब्ध अछि।

सन् १३०४ साल मे यूनियन प्रेस दड़िभङ्गा सँ पं० भाग्यवान् विद्यालङ्कार कृत बंगानुवादक सङ्ग शैवसर्वस्वसारक प्रकाशन भेल छल, किन्तु प्रकाशित ग्रन्थ प्राप्त हस्तलेख सभ सँ सर्वथा भिन्न अछि। फलतः एहि दुहू ग्रन्थरत्नक प्रामाणिक संस्करणक नितान्त आवश्यकता बनले अछि।

विशुद्ध काव्य दृष्टि सँ संस्कृत मे लिखल कविवरक रचना मणिमञ्जरी नाटिका अछि। ओकर एकमात्र हस्तलेख पटना विश्वविद्यालयक पुस्तकालय मे छल जे दिल्ली मे आयोजित मैथिली पुस्तकक प्रदर्शनी मे मङनी गेल तऽ ओतहि सँ चोरि भय गेल। ओहि हस्तलेखक फोटोस्टैट कापी बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक विद्यापति विभाग मे अछि। संगहि, एक गोट फोटो कापी हमरो सङ्ग अछि।

चारि अङ्कक ई नाटिका कविक प्रथम वयसक रचना बुझना जाइत अछि। एहि मे महाकविक आत्मसंवेदन नहि, लोकजीवनक दर्शन नहि; एकमात्र लक्षण-ग्रन्थक अनुरूप नाट्य रचना करबाक प्रयास एहि ठाम प्राप्त अछि। सामन्तयुगक संस्कारानुरूप राजभवन ओ राजप्राङ्गणक विलासमय प्रणयलीलाक ललितवर्णन उपलब्ध अछि। एहि ठाम पदावली मे वर्णित उदात्त ओ संगहि, गहन प्रेमक दर्शन नहि होइत अछि। लगैछ प्रस्तुत नाटिका मे तरुण विद्यापति संस्कृत रूपक-साहित्यक ज्ञानक प्रदर्शनार्थं अधिक प्रयत्नशील छलाह। तैं कालिदासक मालविकाग्नि-मित्र, विशेषरूपें हर्षक प्रियदर्शिका एवं रत्नावली नाटिकाद्वयक प्रभाव एहि मे सर्वत्र देखना जाइछ।

नाटिकाक नायक चन्द्रसेन नामक राजा छथि; नायिका चन्द्रकान्त नामक एक गोट वणिकक कन्या मणिमञ्जरी। दुहूक प्रेम स्वप्नदर्शन मे होइछ। राजा मणिमञ्जरी कें मङबाय अपन प्रमदवन मे रहबाक व्यवस्था करैत छथि, आ' दुहूक मध्य गुप्त प्रणय चलैत अछि। रानी पद्मावती कें जखन रहस्यक पता लगैत छन्हि, तँ हुनक मान ओ कोप एक संगहि उत्पन्न होइत अछि। इम्हर रानी पद्मा-वतीक पार्वतीव्रत समाप्त होइछ ओ तखन पतिसुखक प्राप्तिक लेल प्रणयकोप असम्भव भय जाइछ। तत्पश्चात् ई हल्ला होइत अछि जे एक गोट प्रचण्ड महिसा प्रमदवन कें नष्ट कय रहल अछि। राजा महिसा कें मारबाक लेल जाइत छथि। मणिमञ्जरी डर सँ राजाक करपाश मे आबद्ध भय जाइत छथि। ई देखि पति-मिलनक अभिलाषिणी पद्मावती स्वयं मणिमञ्जरी कें राजाक संग परिणयक

अधिकारिणी बनबैत छथि। दुहू सौतिनि राजाक प्रणय पाबि प्रसन्न भय जाइत छथि।

मणिमञ्जरी नाटिकाक वस्तुविन्यास मे शैथिल्य अछि। घटनाचक्र मे सक्रियताक अभाव अछि, नायकक पतंगवृतिक कारणें प्रेम मे पावनता नहि अछि। हँ यत्र-तत्र काव्यक निर्भरिणी अवश्य बहल अछि। ई निर्भ्रान्त अछि जे प्रथम कोटिक कवि एहि ठाम मध्यम कोटिक रूपककार बनल छथि। तँ सम्भवतः विद्यापतिकें एहि रचना सँ स्वयं सन्तुष्टि नहि भेल। संगहि, ई हुनका बुझना गेल जे युगानुकूल लोकमानस कें स्पन्दित करबाक कल्प मे मणिमञ्जरी सन् कृतिक उपयोगिता नहि। तदर्थ आचारप्रवण साहित्यक लेल स्मृति, पुराण एवं लोकाचार सँ सम्मित भाव ओ विचारक रूपायन आवश्यक छल।

पण्डित कवि विद्यापति अपन संस्कृतसाधनाक आरम्भ दुइ भिन्न मान्यता लय कयने छलाह—एक तऽ मणिमञ्जरी नाटिका मे शुद्ध काव्यत्व लय, दोसर 'पुराण-तन्त्र ओ काव्य'क समन्वय लय। ओ देखलन्हि जे पुराणादि शास्त्र कें आधार बनाय सामयिक समस्या सभक समाधान प्रस्तुत करबाक लेल आचार-प्रवण धर्ममय जीवनक आवश्यकता अछि। तदर्थ आचारमूलक व्याख्यान कें अपन संस्कृत रचना सभक विषय बनौलन्हि। वस्तुतः विद्यापति-संस्कृतवाङ्मय मध्ययुगीन भारतीय समाज, संस्कृति एवं धर्मदर्शनक लेल एक गोट बड़ पैघ अवदान अछि। एतदर्थ हुनक उद्घोष ध्यातव्य अछि :

श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यो मन्तव्यश्चोपपत्तिभिः।
मत्वा च सततं ध्येया एते दर्शनहेतवः॥

वेदवाक्य सँ सुनी, उपपत्ति सँ मनन करी, मनन कय सतत ध्यान करी—इयह दर्शनक उपाय थीक।

लोकाचार विषय लय दुइ गोट पोथी लिखनावली तथा विभागसार अछि। एहि मे लिखनावली तऽ प्रकाशित भेल अछि मुदा विभागसार अद्यावधि अप्रकाशित अछि।

लिखनावलीक प्रथम मुद्रण दड़िभङ्गाक युनियन प्रेस सँ सन् १९०१ ई० मे श्रीकान्तबिहारी मिश्र द्वारा कयल गेल। एहि मे सम्पादक ओ प्रकाशकक नाम नहि भेटैछ। इम्हर सन् १९६९ ई० मे एकर प्रामाणिक संस्करण पटना विश्वविद्यालयक मैथिली व्याख्याता डा० इन्द्रकान्त झा द्वारा भेल अछि।

ई इतिहाससिद्ध अछि जे अपन प्रिय मित्र शिवसिंहक रणभूमि सँ तिरोधान भयला उपरान्त महाकवि नेपाल तराइक सप्तरी परगन्नाक रजाबनौली स्थित

द्रोणवार राजा सर्वादित्यक पुत्र राजा पुरादित्य 'गिरिनारायण'क आश्रय मे गेलाह। ओतहि आश्रयदाताक आदेश सँ लक्ष्मणाब्द २९९ मे सज्जनक प्रीत्यर्थ, बहुश्रुत व्यक्तिक विनोदार्थ ओ अल्पश्रुतक शिक्षणार्थ महाकवि पण्डित विद्यापति लिखनावलीक रचना कयलन्हि :

सर्वादित्यतनूजस्य द्रोणवारमहीपतेः।
गिरिनारायणस्याज्ञां पुरादित्यस्य पालयन्॥
अल्पश्रुतोपदेशाय कौतुकाय बहुश्रुताम्।
विद्यापतिस्सतां प्रीत्यै करोति लिखनावलीम्॥

लिखनावली पत्रलेखन शैली मे रचित अछि। एहिठाम चारि प्रकारक पत्र प्राप्त अछि—(१) उच्च कक्षक हेतु—उच्चैःकक्षलिखनानि; १८ गोट पत्र, (२) निम्नकक्षक हेतु—अधःकक्षलिखनानि, २८ गोट पत्र, (३) समकक्ष पत्र—समकक्षलिखनानि, ७ गोट पत्र ओ (४) व्यवहार पत्र—व्यवहारलिखनानि, ३१ गोट पत्र—सभ मिला कय ८४ पत्र एहि मे अछि।

एहि पुस्तकक उपादेयता तत्कालीन मिथिलाक सामाजिक इतिहासलेखनक लेल अत्यधिक अछि। समाजक प्रत्येक वर्गक सजीव चित्रण पत्रसभ मे भेल अछि। एहि ग्रन्थ मे लेखक अपन युगक समाज, शासन, आचार-व्यवहार, अर्थव्यवस्था, न्यायव्यवस्था आदिक विविध रूप ओ तत्सम्बन्धी अद्भुत ओ विलक्षण सामग्री जे रखलन्हि अछि, ओ अन्यत्र दुर्लभ अछि।

विभागसार ग्रन्थक चारि गोट हस्तलेख उपलब्ध अछि। एक प्रति बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना, मे सुरक्षित अछि। दोसर बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक विद्यापतिविभाग मे अछि। तेसर पटना विश्वविद्यालयक हस्तलेख-विभाग मे प्राप्त अछि। चारिम प्रति पटना विश्वविद्यालयक मैथिली व्याख्याता डा० इन्द्रकान्त झाक वैयक्तिक ग्रन्थनिधि मे राखल अछि। एहि चारू प्रति मे यत्किञ्चित् पाठ-भेद देखना जाइछ जकरा लिपिकारक भ्रमजनित मानल जा सकैत अछि। तथापि एहि सभक मूलपाठ विकृत नहि भेल अछि। परिणामतः मूलग्रन्थक वर्ण्यवस्तु मे तात्त्विक परिवर्त्तन नहि आयल अछि।

विभागसार वृद्धविद्यापतिक रचना थीक। रचनाकाल धरि हुनक आयु लगभग अस्सी वर्ष भय गेल छल। ओहिकाल राजाक सभासद हरिपति ठाकुर भय गेलाह। मुदा युगगुरु ओ आचारनियामकक रूप मे विद्यापतिक सम्मान

राजदरबार मे सर्वोपरि छल। तें राजा भवेशसिंहक पौत्र ओ हरिसिंहक पुत्र राजा दर्पनारायण 'नरसिंह'क कहला सँ लोकगुरु विद्यापति व्यवहार विषयक ग्रन्थ 'विभागसार' लिखलन्हि :

राज्ञो भवेशाद् हरिसिंह आसीत् तत्सूनना दर्पनारायणेन।
राज्ञो नियुक्तोऽत्र विभागसारं विचार्य विद्यापतिरातनोति॥

ग्रन्थारम्भक मंगल श्लोक मे हरिहराद्वैत कथन अछि। (तुलनीय पदावलीक पंक्ति 'ये नारायण से शूलपाणि, नगेन्द्र गुप्त, पृ० ६)। एहि प्रसंग दुहूक मध्य एक गोट विवाद विद्यापति द्वारा सोद्देश्य उपस्थापित अछि। गङ्गाक लेल दुनू देव झगड़ा आरम्भ कय दैत छथि! महादेवक कथन गङ्गा हमर थिकीह। विष्णु कहलन्हि : गङ्गा तऽ हमर थिकीह, कारण ई वैष्णवी नाम सँ प्रसिद्ध छथि। महादेव कहलन्हि—नाम सँ की? ई तऽ हमरा अधिकार मे छथि। विष्णु कहलन्हि—अहाँक अधिकार मे रहथु, मुदा हमरा अहाँ मे अभेद रहला कारणे ई विवाद व्यर्थ अछि। अभेदक साक्ष्य लेल ब्रह्मा अबैत छथि। जखन दुहू देव कें अभेदत्वक विवेक अबैछ, तऽ विवाद शान्त भय जाइछ।

एहि उपस्थापनक पश्चात् विभागसारग्रन्थक प्रतिपाद्य विषय राखल गेल अछि—सम्पत्तिक विभागीकरण। विभागसार, जेना कि नाम सँ स्पष्ट अछि, दायविभाग विषयक ग्रन्थ थीक। एहि ठाम विचारपति विद्यापति धनविभाग लय विभिन्न विद्वान् लोकनिक मतक संग अपन निर्णय दयलन्हि अछि। एहि ग्रन्थक मुख्य विषय अछि : दायलक्षण, विभागस्वरूप, मातृपितृकविभाग, विभाग-व्यवस्था, भागानर्हं, विभाज्यस्वरूपनिरूपण, अविभाज्यनिर्णय, स्त्रीधन, स्त्रीधनविभागकथन, गुप्तधनविभागकथन, वर्णसमवाये विभागकथन, विभक्त-विभागकथन, द्वादशपुत्रलक्षणादि, अपुत्रधनाधिकारिनिरूपण, संसृष्टधनविभाग-निरूपण एवं विभाग-निर्णय।

स्पष्ट अछि जे 'विभागसार'क विषयवस्तुक चयनक आधार चण्डेश्वर ठाकुरक प्रसिद्ध ग्रन्थ 'विवादरत्नाकर'क 'दायविभाग' अंश रहल अछि। विषयवस्तुक वैविध्य तऽ विवादरत्नाकर मे बेशी छल, एहि मे सन्देह नहि। मुदा विषयविवेचन मे विद्यापतिक मौलिकता सेहो असन्दिग्ध अछि। चण्डेश्वर ठाकुरक पोथी मे पांडित्यक आग्रह अधिक अछि, तऽ विद्यापतिक विभागसार मे समन्वय-स्थापनक दिश प्रयास प्रमुख रहल अछि। मनु, याज्ञवल्क्य, नारद, देवल, वृहस्पति प्रभृति स्मृतिकार लोकनिक मत-मतान्तर कें उपस्थापित कय अपन तर्क द्वारा एकता स्थापन करबाक चेष्टा हमर विद्यापति कयलन्हि अछि।

अर्थव्यवस्था समाजक एक गोट चिरन्तन समस्या रहल अछि। एकर समाधानक लेल अति प्राचीन कालहि सँ स्मृतिकार लोकनि अपन विचार प्रस्तुत कयलन्हि अछि। देश, काल ओ सम्प्रदायक आग्रह लय धर्मशास्त्र सभक नव व्याख्यान भयल अछि। परिणामतः जीमूतवाहन, शूलपाणि, रघुनन्दन, श्रीकृष्ण तर्कालङ्कार प्रभृति स्मृतिकार लोकनिक व्याख्यान सँ जेना एक गोट विशिष्ट दाय-भाग बङ्गाल मे प्रस्तुत भयल अछि, तहिना ग्रहेश्वर मिश्र, लक्ष्मीधर, चण्डेश्वर, विद्यापति, वाचस्पति, मिसरु मिश्र प्रभृति द्वारा कयल व्याख्यान सँ मिथिला मे विशिष्ट दायनिबन्धन प्रतिष्ठित भेल। जकरा सामान्यतः मिताक्षरक संज्ञा दयल जाइछ। उपर्युक्त मैथिल निबन्धकार लोकनि मे चण्डेश्वर ठाकुर प्रथम छलाह जे मिथिला मे प्रचलित दायविभाजन कें गौड़ीय दायभाग सँ भिन्न स्वरूप दयलन्हि। परवर्त्तीकाल मे एहि विशिष्टीकरण मे विद्यापतिक विभागसारक योगदान सेहो भेल। जेना कि ऊपर कहल अछि, विभागसार विवादरत्नाकरक अनुसरण करितहुँ एक गोट विशिष्ट निबन्ध-ग्रन्थ थीक। विषयप्रतिपादन शैली ओ विशिष्ट विषयक निर्देश लय एहि मे विद्यापतिक मौलिकताक दर्शन होइछ। राज्य वितरणक प्रसङ्ग चण्डेश्वरक ग्रंथ मे अप्राप्य अछि। विद्यापति एहि विषय लय मौलिक निबन्धन कयलन्हि अछि। नारद-वचन कें प्रमाण बनाय हुनक निर्णय भयल अछि जे राज्य विभाजन मे सामान्य दायविभागक नियम नहि लगैछ। एहि मे राजाक सभ पुत्र कें अधिकार नहि, अपि तु ज्येष्ठपुत्र मात्र एकर अधिकारी होथु ; अन्य पुत्र सभ कें भोजनवस्त्रादिक लेल किछु दयल जाय। एकर पोषण विभागसार मे एकाधिक तर्क एवं प्रमाण द्वारा भयल अछि। संगहि, स्त्रीधन लय विभागसारक निरूपण सर्वाधिक प्रामाणिक ओ पूर्ण अछि।

फलतः विद्यापतिक एहि ग्रन्थरत्नक महत्व बड़ पैघ अछि। अर्थविभाजन लय मिथिला मे विद्यापतिक विभागसार, वाचस्पतिक विवादचिन्तामणि एवं मिसरु मिश्रक विवादचन्द्र आदर्श ग्रन्थ बनल अछि। सन् १९५६ ई० मे भारतीय संसद् द्वारा भारतीय उत्तराधिकार नियमक स्वीकृति होयबाक पूर्व दायविवाद लय उपर्युक्त ग्रन्थ प्रमाणरूप गृहीत छल।

वैयक्तिक एवं सामाजिक कृत्य लय स्मृतिशास्त्र लिखबाक परम्परा मिथिला मे प्राचीन कालहि सँ आबि रहल अछि। आवश्यक कृत्य सभक विधि ओ विधानक लेल स्मार्त्त लोकनि प्राचीन धर्मशास्त्रादि ग्रन्थ सँ वाक्य उद्धृत कय लोकाचारक अनुरूप ओकरा सिद्ध कयलन्हि अछि। एहि प्रसंग श्रीदत्तोपाध्यायक आचारादर्श, गणेश्वर ठाकुरक सुगतिसोपान एवं आह्निकोद्धार, चण्डेश्वर ठाकुरक गृहस्थरत्नाकर, व्यवहाररत्नाकर एवं कृत्यचिन्तामणि तथाविध ग्रंथ प्राग्विद्यापतियुग मे प्राप्त छल।

विद्यापतिक दूइ गोट संस्कृतरचना—वर्षकृत्य एवं गयापत्तलक उपर्युक्त कोटिक थोक। प्राचीन काम्य कृत्य सभक रक्षणार्थ विद्यापति समय-समय पर अपन मतक सङ्ग प्राचीन वाक्य कें टिपैत गेलाह। धर्मगुरुक रूप मे हुनका मिथिलाक कर्मकाण्डीय संस्कार कें निबन्धित करबाक छल।

वर्षकृत्यक एक गोट हस्तलेख एगारह गोट देशी कागज पर लिखल स्व० प्रो० रमानाथ झाक सङ्ग छल। ओकर प्रतिलिपि हमरो सङ्ग सुरक्षित अछि। ओहि मे ने मंगलाचरण अछि, ने कोनहु राजाक उल्लेख अछि। पोथीक कोन मे, 'विद्यापति-ठक्कुरकृतवर्षकृत्यमिदम्,' लिखल अछि। स्पष्टतः एहि सँ विद्यापतिक रचना प्रमाणित होइछ। पुनः बंगालक रघुनन्दनाचार्य अपन पोथी सभ मे (मलमास तत्त्व, पृ० १०३, एकादशीतत्व, पृ० १००, दुर्गापूजातत्त्व, पृ० ४६) प्रमाणस्वरूप विद्यापति कें 'वर्षकृत्य'कार कहि उद्धृत कयने छथि। मलमासतत्त्व मे कहल अछि : 'विद्यापति-कृतवर्षकृत्ये कल्पलतायाञ्च गार्ग्यः।'

वर्षकृत्य मे वर्ष भरिक कृत्यसभक विवरण अपेक्षित अछि। मुदा प्रस्तुत पोथी मे मात्र कार्त्तिक, माघ ओ फाल्गुन तीन मासक कृत्य वर्णित अछि। तदनन्तर जन्मदिनकृत्य, षष्ठिकापूजन, गृहवास्तु, विद्यारम्भ, पञ्चपर्वकृत्य, निवारनियतकृत्य, वस्त्रक्षारयोग, आवश्यक श्राद्धकाल, ग्रहणकृत्य, दानवाक्य, वलिकर्म ओ नियतश्राद्ध विवेचित अछि। फाल्गुनक शिवरात्रि, जन्मदिनकृत्य ओ षष्ठिकापूजन कें छोड़ि अन्य कृत्य सब संक्षेपतः वर्णित अछि। विषय सभक विवेचन मे क्रमबद्धताक अभाव अछि।

ओना तऽ मिथिला मे एतदर्थ विद्यापतिक समकालीन रुद्रधरकृत वर्षकृत्य ओ वर्षपद्धति अधिक मान्य अछि। रुद्रधरक वर्षकृत्य अपेक्षाकृत्य अधिक व्यापक एवं प्रसृत अछि। तथापि विद्यापति-विरचित वर्षकृत्यक अपन महत्व अछि। पुत्रोत्पत्तिक लेल तऽ ईश्वरक आराधना प्राचीन कालहु मे होइत छल। वैदिक संहिता मे पुत्रकामना बहुधा अभिव्यक्त अछि। मुदा जन्मदिनकृत्य लय संस्कारक विधान प्रथमतः विद्यापतिक वर्षकृत्य मे साङ्गोपाङ्ग वर्णित अछि। एहि संस्कार लय नवजातक दीर्घायुक कामना कयल जाइत अछि। एहि अवसर मे मत्स्यमोक्षण होइत अछि :

अभयं भवतामस्तु गच्छ मत्स्य यथासुखम्।

जले भव यथास्वस्थो मत्प्रसादात् सुखी भव॥

तव मोक्षप्रदानेनास्तु मे चिरञ्जीविता।—वाक्योच्चारणक संग माछ कें जल मे मुक्त करबाक कल्प उल्लिखित अछि। ध्यातव्य जे आइयो-काल्हि ई

मत्स्यमोक्षण बंगाल ओ मिथिलाक किछु भाग मे प्रचलित अछि। विद्यापतिक अनन्तर वाचस्पति ओ रुद्रधर दुहू स्मार्त्त अपन ग्रन्थ मे मत्स्यमोक्षणक प्रसंग जन्मदिनकृत्य मे रखलन्हि।

तथापि सम्पूर्ण हस्तलेखक अवलोकन कयला सँ ई धारणा सहज बनैत अछि जे वर्षकृत्यक रचना विद्यापति स्वतन्त्रग्रन्थक रूप मे नहि कयलन्हि। ओ तँ कृत्यविशेषक अवसर मे टिप्पण-स्वरूप अपन मत प्रकीर्ण रूपें समय-समय पर अभिव्यक्त कयलन्हि।

भारतीय संस्कृति मे जीवनकृत्यक परिणमन पितृऋण सँ उद्धारक भावना मे मानल अछि। तर्पण एवं श्राद्धादिकर्म एहि प्रसंग मे अतिशय महत्त्व रखैछ। स्वर्गलोकक प्राप्तिक लेल एवं प्रेतत्व सँ विमुक्तिक लेल मृत मातापिता एवं पूर्वजक पिण्डदान विहित अछि। एहि लय मिथिला मे गया मे पिण्डदान करबाक महत्त्व बड़ विशेष कहल गेल। तदर्थं विद्यापति 'गयापत्तलक' रचना प्रस्तुत कयलन्हि।

गयापत्तलक ग्रन्थक एक गोट खण्डित हस्तलेख मिथिला हस्तलेखसूची-विवरण (पृ० ९२) सँ सूचित अछि जाहि ठाम समापन वाक्य मे 'इति महामहोपाध्याय श्री विद्यापतिकृतं गयापत्तलकं समाप्तम्' लिखल अछि। एहिठाम गयाक सिद्धपीठक वर्णन अछि, संगहि गया मे प्रदत्त पिण्डक महत्त्व उल्लिखित अछि :

कीकटेषु गया पुण्या पुण्यं राजगृहं वनम्,
च्यवनस्याश्रमं पुण्यं नदी पुण्या पुनः पुनः।

स्पष्टतः ई धारणा होइछ जे गयापत्तलक वर्षकृत्य जकाँ स्वतन्त्र ग्रन्थ नहि अछि। एहू मे ने कोनो मंगलाचरण अछि, जे कोनहुँ प्रेरक राजाक अनुशंसन। लगैछ विद्यापति अपन जीवनक शेषचरण मे गयाश्राद्ध एवं तर्पण लय प्रकीर्णरूपें अपन मन्तव्य लिखलन्हि। हुनक मन्तव्य परवर्ती कालक स्मार्त्तलोकनिक लेल आधार प्रमाणित भेल। हुनक जीवनकालहि मे वाचस्पति मिश्र अपन ग्रन्थ 'तीर्थचिन्तामणि' मे एहि विषय लय विस्तृत विवेचन उपस्थित कयलन्हि। तीर्थचिन्तामणिक तृतीय अध्याय, जकरा प्रकाश कहल गेल, गयाप्रकाश नाम सँ अभिहित अछि। गयापद्धति एवं गयाप्रवेश स्वतन्त्र ग्रन्थ होइतहुँ गयाप्रकाशक रूपान्तर मात्र थीक। विद्यापतिक गयापत्तलकक शैली मे वाचस्पति गयापत्तलको-द्धार लिखलन्हि। पुनः गयाश्राद्धपद्धति एवं गयाविधि तीर्थचिन्तामणिक अंश मात्र अछि। एवंप्रकारें वाचस्पतिक शिष्य नवीन वर्धमानक लिखल दुइ गोट ग्रन्थ

गयाविधिविवेक ओ गयापद्धति तथाविध रचना थीक। सर्वत्र विद्यापतिक प्रभाव परिलक्षित अछि।

विद्यापति कें पौराणिक दर्शनक अनुरूप लोककर्मक स्थापना करब छल। पुराणसभ मे प्रतिपादित अछि जे ईश्वर एक छथि। नाम रूप हुनक उपाधिमात्र थीक। शैव, शाक्त, वैष्णव, सौर ओ गाणपत्य समान रूप सँ समाज मे मान्य सम्प्रदाय छल। मुदा आगम, तन्त्रादि वाक्य द्वारा विविध देवी ओ देव-पूजन सेहो लोक मे 'प्रशस्त' ओ विहित छल। पञ्चदेवोपासनाक प्राधान्य तऽ शिक्षित समाज मे छल, मुदा जनसामान्य मे मनोवृत्ति, परिस्थिति ओ रुचिक विभिन्नता लय पूजनक अन्य विधि सेहो प्रचलित छल। तन्त्रसम्मत अथवा वेदविरोधित धर्माचरण कें पौराणिकताक रंग दय लोकमान्य करब मध्ययुगीन स्मार्तलोकनिक कर्त्तव्य छल। विद्यापति सँ पूर्व चण्डेश्वर अपन कृत्यरत्नाकर मे दुर्गापूजा, खञ्जन-दर्शन ओ काममहोत्सव आदिक प्रसंग मे शैवागम ओ आगमान्तरक वाक्य सँ प्रामाण्य निर्धारित कयने छलाह।

मिथिला मे नागपूजनक प्रचलन अति प्राचीनकाल सँ आबि रहल छल। तें सर्पपूजनक पद्धतिक निर्धारणक लेलविद्यापति एक गोट रचना व्याडिभक्तितरङ्गिणी नाम सँ कयलन्हि।

व्याडिभक्तितरङ्गिणीक एकमात्र हस्तलेख ढाका विश्वविद्यालयक हस्तलेख विभाग मे अछि। एकर सर्वप्रथम सूचना डा० सुकुमार सेन सन् १९६० ई०क मिथिलादर्शनक विशेषाङ्क मे दयलन्हि। ईहो पोथी अद्यावधि अप्रकाशिते अछि।

ग्रंथारम्भ सँ बुझना जाइछ जे विद्यापति महाराजा दर्पनारायणक आदेश सँ एहि ग्रन्थक रचना आरम्भ कयलन्हि। हस्तलेख सँ ईहो बुझना जाइछ जे भूपरिक्रमण जकाँ ई पोथी अपूर्ण रहल। किछुए वर्ष बाद दर्पनारायण 'नरसिंह'क पुत्र धीरसिंहक निर्देश सँ दुर्गाभक्तितरङ्गिणी सन् विशिष्टतर पोथीक प्रणयन करए पड़लन्हि। फलतः व्याडिभक्तितरङ्गिणी अपूर्ण रहि गेल, कारण किछु विधानक लेल ग्रन्थकार दुर्गाभक्तितरङ्गिणी कें देखबाक लेल आग्रह एहिठाम कयने छथि।

व्याडिभक्तितरंगिणीक महत्त्व एहि लय अछि जे स्मार्त्त विद्यापति वेद ओ पुराणक वाक्यक प्रमाण दय सर्पपूजन कें पञ्चदेवोपासना जकाँ महिमान्वित कयने छथि। सर्पपूजन मे प्रथमतः 'स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवा' वेदमन्त्रक पाठ करबाक निर्देश अछि ; तदनन्तर धूप, दीप, नैवेद्य आदिक अर्पण सँ सर्पपूजनक विधान कयलन्हि। एहि सँ विद्यापतिक लोक सामञ्जस्य भावना एवं दूरदर्शिता स्पष्ट अछि। ध्यातव्य अछि जे मिथिला मे एखनहुँ सर्पपूजनक विधान अछि जकरा नागपञ्चमी ओ विषहरा पूजा कहल जाइछ। नागपञ्चमी सधवा स्त्रीक सौभाग्यार्थ मनाओल

जाइत अछि। विषहराक पूजन समाजक निम्नवर्ग मे प्रचलित अछि जकर मुख्य उद्देश्य सामुदायिक मङ्गल अछि।

उपर्युक्त संस्कृत रचना सभ मे विषयवैविध्य लोकजीवनक विभिन्न पक्ष लय राखल अछि। एहि मे मध्ययुगीन संस्कृतिक जीवन्त चित्रण उपलब्ध होइत अछि।

एतबहि सँ विद्यापतिक वैदुष्य ओ अभिज्ञता पर्य्यवसित नहि होइछ। ग्रन्थकारक अतिरिक्त हुनक विमल व्यक्तित्वक दोसर रूप अध्यापक अर्थात् उपाध्यक रूप अछि, ओ आदर्श आचार्य छलाह। एकर कतेको प्रत्यक्ष प्रमाण अछि जे सदुपाध्याय विद्यापति काव्य, अलङ्कार, स्मृति-पुराणादि शास्त्रक अध्यापन सुदीर्घकाल धरि कयलन्हि। शिवसिंहक राज्यकाल मे ल० सं० २९१ मे हुनक आदेश सँ देव शर्मा ओ प्रभाकर श्रीधरठक्कुर विरचित प्राचीन काव्यप्रकाश-विवेक नामक टीका कें पुनः लिपिबद्ध कयलन्हि : इति तर्काचार्य्यठक्कुरश्रीधर-विरचिते काव्यप्रकाशविवेके दशम उल्लासः। समस्तविरुदावलीविराजमानमहा-राजाधिराजश्रीमच्छिवसिंहदेवसम्भुज्यमानतीरभुक्तौ श्रीगजरथपुरनगरे सुप्रतिष्ठसदु-पाध्यायठक्कुरश्रीविद्यापतीनामाज्ञया खौआल सं० श्रीदेवशर्म बलियास सं० श्रीप्रभाकराभ्यां लिखितैषा हस्ताभ्याम्। ल० सं० २९१ कार्तिक बदि १० स्पष्टतः विद्यापतिक आचार्यत्व 'सुप्रतिष्ठित' अपन काल मे छल। ३०९ ल० सं० मे राजाबनौली मे पण्डित साधक विद्यापति स्वयं श्रीमद्भागवतक प्रतिलिपि प्रस्तुत कयलन्हि जे दड़िभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालयक हस्तलेखविभाग मे सुरक्षित अछि। एहि रूपें ल० सं० ३४१ हुनक रूपधर नामक शिष्य ब्राह्मणसर्वस्वक एक गोट हस्तलेखक प्रतिलिपि कयलन्हि : ल० सं० ३४१ मुड़िआरग्रामे सप्रक्रियसदुपाध्याय-निजकुलकुमुदिनीचन्द्रवादिमतेभसिंहसच्चरित्रपवित्रश्रीविद्यापतिमहाशयेभ्यः पठता छात्रश्रीरूपधरेण लिखितमिदं पुस्तकम्। एहि मे कोनहुँ संदेह नहि जे प्रस्तुत वाक्य मे उल्लिखित विद्यापति हमर सभक आलोच्यकवि ओ आचार्य छथि। एहि ठाम 'ठक्कुर' शब्दक अभाव लय डा० सुभद्र झा कें एकर प्रामाणिकता मे शङ्का भेल छन्हि। (द्रष्टव्य : विद्यापति-गीत-संग्रह, भूमिका, पृ० २५) मुदा विद्यापति ओहि काल धरि विद्यापति नाम मात्र सँ चिरस्मरणीय भय गेल छलाह। पुनः सप्रक्रिय ओ सदुपाध्याय उपर्य्युक्त प्रथम उद्धरणक समरूपके जकाँ प्रयुक्त भेल अछि। 'सप्रक्रिय' शिलालेख मे प्राप्त हुनक उपाधि सभ मे सँ एक थीक। तेँ ई मानबाक थीक जे विद्यापति मात्र कवि ओ ग्रन्थकार नहि छलाह, अध्यापक रूप मे सेहो प्रणम्य पण्डित छलाह।

उपर्युक्त विवेचन सँ स्पष्ट अछि जे विद्यापतिक सारस्वत साधना व्यक्तिगत साधनाक सङ्ग लोकसाधना अछि। एहन महान् पंडित एवं ज्ञानी कें पाबि कोनहु जाति, समाज ओ देश गौरवक बोध कय सकैछ। ओ केलिकोकिलक रूप मे नहि, जनवाणीक स्वरकारक रूप मे हमरा लोकनिक समक्ष आदर्श बनल छथि। जन-जीवनक प्रति आदरभाव हुनक समग्र संस्कृतसाधना मे विद्यमान अछि। एहिठाम लोकजीवन कें सौन्दर्य ओ मङ्गल परिधान प्राप्त अछि। फलतः हुनक साहित्य हमरा लोकनिक लेल अवदान बनल अछि।

शास्त्र

शास्त्रविद् विद्यापति कें पाबि संस्कृतसुरसरिक एक गोट एहन पावन ओ परिपुष्ट धारा प्रवहमान भेल जाहि सँ मध्ययुगीन संस्कृति ओ चिन्तन कें नवजीवन भेटल। जाहि समय मिथिलाक अधिकांश महामहोपाध्याय लोकनि नव्यन्याय मे एकाधिकार प्राप्त करबाक लेल अश्रान्त प्रयास करैत छलाह, हमर विद्यापति लोक ओ समाजक व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक प्रयोजन लय अपन सारस्वत साधना मे निरत रहलाह।

पण्डित विद्यापति द्वारा रचित संस्कृतग्रन्थसभ कें पढ़लाक बाद ई धारणा होइत अछि जे युगद्रष्टाक रूपें हुनका युगजीवनक अमित अभिज्ञता प्राप्त छल। विद्वान रूपें स्मृति पुराण, तीर्थ, धर्म, लोक ओ गजेटियर प्रभृति विषयक जे संस्कृत ग्रन्थरत्न ओ हमरा लोकनि कें दयलन्हि अछि, ओहि सभ मे हुनक उज्ज्वल ओ सर्वतोन्मुखी प्रतिभाक दर्शन होइछ। कतिधा कहल अछि जे विद्यापति कें लोक-नायक ओ युगद्रष्टाक रूप मे देखबाक लेल हुनक संस्कृत रचनासभक परिचय आवश्यक अछि।

विद्यापतिक स्वकीय साहित्यवैभव, दार्शनिक चिन्तन, लोक परिचालन एवं धार्मिक मतक संग हुनक विमल व्यक्तित्वक अनुपम अवदानक आकलन हुनक संस्कृत-साहित्य सँ सम्भव। ओ अपन अप्रतिम प्रतिभाक बलें अपन संस्कृत रचना सँ अपन युगक हिन्दूसमाज कें पुनर्गठित कयलन्हि। हुनका साहित्यरचनाक प्रेरणा युगक जनसामान्यक सामान्य अनुभव यथा प्रेम, संयोग, वियोग, संघर्ष, काल-नियति, प्रवञ्चना प्रभृति सँ प्राप्त भेल। स्पष्टतः हुनक साहित्यक मूल आग्रह युगधर्म रहल अछि, संगहि ओहि मे हुनक स्वभाव ओ व्यक्तित्वक सम्मिलन देखना जाइछ। तें संस्कृत-वाङ्मय लय ओ मध्ययुगक लोकगुरु बनल छथि।

तरुण पण्डितकवि देखलन्हि जे महाराज गणेश्वरक हत्याक उपरान्त मिथिलाक— संगहि समान रूप सँ, समग्र उत्तर भारतवर्षक—'धर्मलुप्त भय गेल ओ सभक धन्धा डुबि गेल'—**धम्म गए धन्ध निमिज्जिअ**। वेद, पुराण, धर्मशास्त्रादिक महिमा विनष्ट भय गेल। हिन्दूधर्मक विभिन्न सम्प्रदाय मे परस्पर विरोध छल। एहन विषम परिस्थिति मे शास्त्र, लोक ओ काव्यक पारङ्गत पण्डित विद्यापति हिन्दू समाज कें पुनः संगठित करबाक लेल समाज मे नवजीवनक सञ्चारक लेल, धर्माचरण तथा लोकनीति लय शास्त्रीय साधना आजीवन करैत रहलाह। हुनका

जन्मना कवि-हृदय प्राप्त छल, लोकक सूक्ष्म अवेक्षण, शास्त्रक तत्त्वाभिनिवेशी अध्ययन तथा जीवनक व्यापक अनुभव छल। तें कविरूपें पदावलीक पीयूषवर्षण सँ जनमानस कें रससिक्त कय लोकद्रष्टा ओ शास्त्रकार बनि ओ अपन संस्कृतक शास्त्रादिग्रन्थक निदेशन सं ओकरा परिष्कृत तथा स्फूर्त्त करैत रहलाह।

जकरा आइ-काल्हि 'हिन्दु सोलिडैरिती'—हिन्दू ऐक्यभाव—कहल जाइछ, ताहि मे मध्ययुगक मैथिल-स्मृति निबन्धनकार लोकनिक योगदान यथेष्ट रहल अछि। एहि प्रसङ्ग विद्यापतिक सेवा सर्वोपरि अछि। विद्यापति मध्ययुगक परस्पर विरोधी धर्मवादसभ कें श्रुतिनिगमागमपुराणाप्तवाक्य सँ एक सूत्र मे गूँथि सर्वसम्मत पथ प्रस्तुत कयलन्हि।

पुरुषपरीक्षाक चतुर्थपरिच्छेद मे मुनिक माध्यम सं विद्यापतिक मन्तव्य अछि जे पुरुष पुरुषार्थवान् होइछ। पुरुषार्थ जीवनक लक्ष्य थीक। धर्म, अर्थ, काम ओ मोक्ष—चारि गोट पुरुषार्थ भारतीय दर्शन मे चतुर्वर्ग मानल गेल अछि। एहि मे धर्मक स्थान प्रथम अछि। किन्तु धर्म लय विविध मत प्राचीनकाल मे छल, ओ विद्यापतिकाल मे विविध मतावलम्बी सेहो छलाह। ओहि युग मे बौद्धचार्वाक कतेको पाषण्डी छलाह, कतेको नैयायिक भट्टप्रभाकर प्रभृति तीर्थिक अथवा वेदपोषक छलाह।

सन्त्यनेके बौद्धचार्वाकप्रभृतयः पाषण्डाः,
सन्ति नैयायिकभट्टप्रभाकरप्रभृतयो बहवश्च तीर्थिकाः।

(पुरुषपरीक्षा, चतुर्थ परिच्छेद, पृ० ११०)।

मुदा विद्यापति देखलन्हि जे हुनका लोकनिक मतविरोधें धर्मविषय लय संशय उत्पन्न भय जाइछ। अन्य मतक खण्डन सं आओर स्वमतक मण्डन सँ वचनसंघर्ष चलैत जाहि सं बुद्धिमानहुक मति भसिया जाइछ। विद्यापति वेदबोधित मार्ग कें उज्ज्वल बुझलन्हि अवश्य, किन्तु तीर्थिक लोकनिक बीच मतभेद हुनका मान्य नहि छल। कथन अछि—केओ विष्णुक प्रति निवेदन करैछ, तऽ केओ गिरिजापति शिवक अर्चन करैछ। केओ ब्रह्मा कें अपन प्रभु कहैछ। वस्तुतः 'एकम्सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' (ऋग्वेद १-१६४-४६) सभक मूल मे एक, अद्वितीय, सर्वव्यापक, समर्थ परमात्मशक्तिक सत्ता वेद द्वारा स्वीकृत अछि। तर्कमति मुनिलोकनि जखन एकहि ईश्वरक सत्ता सिद्ध करैत छथि तखन भिन्नत्वक भावना उचित नहि—

विष्णुं केऽपि निवेदयन्ति गिरिजानाथं च केचित्तथा
ब्रह्माणं प्रभुमुल्लपन्ति भुवने नाम्नैव भिन्नं महः।

निर्णीतं मुनिभिः सतर्कमतिभिश्चेद् विश्वमेकेश्वरं
तच्चिन्तापरमानसे त्वयि पुनर्भिन्ना कुतो भावना ॥

(पु० प० चतुर्थ परिच्छेद पृ० १११)

ईश्वर ओ जीव मे भेद अछि। जीवक मोक्षसाधनक लेल भारतीय धर्मदर्शन मे कर्म, ज्ञान ओ भक्तिक सामञ्जस्य उपस्थापित अछि। मुक्तात्मा ब्रह्मस्वरूप भय जाइछ।

यस्मादाविर्भवति भुवनं लीयते यत्र भूयः
पाथस्तेजोऽम्बरवसुमतीवायवो यद्विकाराः।
यस्मात्किञ्चिन्न परममपरं नास्ति किञ्चिच्च यस्मात्
साक्षात्कारस्थितिपरिचयं तस्य जातोऽन्तरात्मा॥

(पुरुषपरीक्षा, लब्धसिद्धिकथा पृ० १६६)

तैं उपवास, व्रत, पूजन, ध्यानादि सँ ओही एक ईश्वरक आराधन धर्म थीक। उपवासादि कर्मसभक प्रयोजन पापक्षय आओर चित्तशुद्धि अछि।

तत उपवासव्रतपूजाध्ययनादिभिस्तदाराधनमेव धर्मः (तत्रैव, पृ० ११२)।

स्पष्टतः उपर्युक्त समन्वय-भावना लय विद्यापति वेदबोधित धर्म कें लोक-मंगलानुरूप अभिव्यक्ति अपन धर्माचरणविषयक संस्कृतग्रन्थ सभ मे दयलन्हि अछि। ओना तऽ ई वेदबोधित धर्म हुनक 'कुलक्रमागतधर्म' छल, तथापि जातिगत संस्कार, जीवनक विविध मार्मिक अनुभूति, तद्युगीन परिस्थिति एवं पुराणादिक अध्ययनक प्रेरणास्वरूप आगमादि-धर्मदर्शनक समर्थन सेहो हुनका द्वारा भेल।

वश्याकर्षकविद्यादि प्रत्यक्षफलसाक्षिकम्।
यत्राऽस्त्यागमशास्त्रं च शस्त्रं सन्देहभेदकम्॥

(पुरुषपरीक्षा, पृ० १११)

एहि प्रसंग लय श्रीदत्तोपाध्याय, चण्डेश्वर ठाकुर प्रभृति पूर्ववर्त्ती मैथिल स्मार्त्तलोकनिक निबन्धनादि वाक्य सँ हुनका प्रेरणा अवश्य भेटल छल। मुदा विद्यापति एहि दिशा मे सर्वाधिक प्रगतिशील प्रमाणित भेलाह अछि। प्राचीन धर्मशास्त्र कें युगक आवश्यकता एवं लोकरुचिक अनुरूप कय नवधर्मक स्थापना जाहि निष्ठाक सङ्ग आजीवन ओ करैत रहलाह, तकरा देखि ई कहल जा सकैछ जे मध्ययुगक स्मार्त्तपण्डितवर्ग मे हुनक स्थान मूर्धन्य अछि।

अभ्युदय ओ निःश्रेयसक हेतु कें प्राचीन कालहि स धर्म कहल गेल अछि। लौकिक ओ पारलौकिक जीवन मे जीवक अभ्युत्थान सँ सम्बन्ध रखनिहार सब विधि-निषेध एकर परिधिक अन्तर्गत अछि। धर्मक अभिव्यक्ति सदाचार ओ सद्-वृत्ति मे होइछ। तैत्तिरीय आरण्यक मे कहल अछि—सम्पूर्ण जगतक प्रतिष्ठा धर्महिं पर आधृत अछि। समग्र प्राणी धर्महिं सँ जीबैछ। धर्म सं पाप ओ दुष्कर्मक क्षय होइछ। 'धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा। लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्ति। धर्मेण पापमपनुदन्ति, धर्मं सर्वं प्रतिष्ठितं, तस्माद् धर्मं परमं वदन्ति' (तै० आ० १०-६३-७)। तैं विद्यापति प्राचीन परम्पराक रक्षणार्थ धर्म ओ सत्कर्म कें अपन रचना सभक विषय बनौलन्हि।

जाधरि धर्म कर्म ओ जीवन मे अवतरित नहि होइछ, ताधरि धर्मोपदेशकक धर्मवाणीक सार्थकता नहि होइछ। धर्मप्रचारक विद्यापति भूपरिक्रमण, पुरुष-परीक्षा, लिखनावली, दानवाक्यावली, विभागसार विभिन्न पोथी मे लोकसुधारक बनि धर्माचरणक उद्घोष कयलन्हि अछि।

कर्मानुसार फलभोगक सिद्धान्त मानल गेल अछि। कर्त्तव्यकर्मक आचरण सँ आत्मकल्याण संभव अछि। धर्मगुरु ओ आचारनीतिक उपदेष्टा बनि विद्यापति धर्माचरण, पुरुषार्थनिरूपण आओर समाज-नियमन सम्बन्ध सभक तत्त्वालोचन लय पुरुषपरीक्षा, दानवाक्यावली, लिखनावली, वर्षकृत्य प्रभृति ग्रन्थ सभक प्रणयन कयलन्हि अछि। लोककृत्य एवं धर्मकृत्य लय एहि ग्रन्थ सभ मे लोकनीति, पुरुष-नीति ओ धर्मनीतिक निरूपण प्राप्त अछि। एहि साहित्यक आधार पर विद्यापति कें युगोत्तीर्ण साहित्यकार कही तऽ कोनहु अत्युक्ति नहि।

विद्यापतिक धर्मदर्शन वस्तुतः लोकदर्शनक स्वस्थ रूपायन थीक। एहि ठाम एक गोट एहन नीतिदर्शन उपलब्ध अछि जकरा हम विवृत्त नीतिमान कहि सकैत छी; एहि मे संवृत्तिक स्थान नहि। हुनक दृष्टिकोण लोकवादी रहल अछि। लोकवाददर्शन लय हुनक रचनासभ मे सामुदायिक ओ वैयक्तिक पोषण आओर उन्नयनक लेल दिङ्‌निर्देश अछि।

उपर्युक्त विवृत्त लोकदर्शनक लेल क्रान्तदर्शी कवि विद्यापति काव्यक संग पुराण ओ तन्त्र कें राखि समन्वयात्मक मनोवृत्तिक उद्घोष अपन प्रथम संस्कृत-रचनाक प्रस्तावना मे कयलन्हि।

पुराणानि च तन्त्राणि काव्यानि श्रीमनीषया।
विलोक्य राजप्रबन्धानि नवरत्नकृतानि च॥
(भूपरिक्रमण पृ० १)

पुराणक प्रतिपाद्यविषय ओ प्रतिपादनशैली दुहूक अनुसरण हुनक समग्र संस्कृतरचना मे भेल अछि। पौराणिक धर्मभाव कें सुगठित करबाक मनोवृत्ति प्रबल कारण अछि। पुराण तऽ भारतीयविचारधाराक विश्वकोष थीक। मुदा एहि प्रसंग ई वक्तव्य जे पौराणिकता मध्ययुगीन हिन्दूधर्म ओ संस्कृतिक समन्वय-भावनाक प्रेरक तत्त्व अछि। इस्लाम ओ पाषण्डी सम्प्रदायसभक समक्ष अपन अस्तित्व आओर आकर्षण कें सुरक्षित रखबाक लेल हिन्दूसमाज मे विभिन्न मतवादक समन्वय ओ सामञ्जस्य आवश्यक छल।

ओना तऽ जेना ऊपर कहल गेल अछि जे प्राक्-विद्यापतिकालहिं मे विविध धर्मवाद मे समन्वयक प्रयास आरम्भ भेल छल। चण्डेश्वर ठाकुर अपन कृत्यरत्नाकरक प्रस्तावना मे कहलन्हि :

नानाश्रुतिस्मृतिकदम्बपुराणराशि—
गौडेतिहासनिकुरुम्बमहागमानाम्।
तं तं विरोधमवधूय बुधेन कृत्य—
रत्नाकरोऽयममुना विहितो हिताय।

तहिना व्यासस्मृतिक प्रसिद्ध वाक्य 'अतः स परमो धर्मो य वेदादवगम्यते, अवरः स तु विज्ञेयो यः पुराणादिषु स्थितः' म० म० चण्डेश्वर द्वारा 'अपरः स तु विज्ञेयो यः पुराणादिषु स्थितः' पठित भेल (द्र० कृत्यरत्नाकर, पृ० ३९)। स्पष्टतः वेदबोधितधर्म ओ पुराणस्मृत्यादिसम्मतधर्मक प्रति समान श्रद्धा एहि ठाम निरूपित भेल अछि।

चण्डेश्वरक पश्चात् इस्लामक प्रवेशक सङ्ग मिथिला मे शास्त्रचिन्तन लय आलोड़न-विलोड़नक काल उपस्थित भय गेल। विद्यापति सन् महान् चिन्तक, शास्त्रविद् ओ लोकनायक धर्मगुरु कें बुझना गेल जे हिन्दू धर्मक विभिन्न सम्प्रदायक परस्पर विरोध शान्त नहि हैत तऽ हिन्दू धर्मक ऐक्यभाव स्थिर नहि रहत। तदर्थ पुराण ओ तन्त्रक मणिकांचनसंयोग सँ सनातनधर्मदर्शन कें नवीन रूप मे विद्यापति अक्षुण्ण रखलन्हि ; युगक समस्त अनुभूति ओ क्रियाप्रणाली कें एक दोसरक सङ्ग प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप सँ सम्पृक्त करबाक लेल पुराणतत्त्व आओर तन्त्रतत्त्व कें सम्मिलित कयलन्हि। परिणामतः पूर्वाचार्य द्वारा प्रस्तुत पुराणतन्त्रागम कें श्रुतिसम्मतधर्मक अविभाज्य अङ्ग बनाय युगानुकूल धर्मवाद कें सुप्रतिष्ठित कयलन्हि ; लोक मे प्रचलित शैव, शाक्त, वैष्णव, गाणपत्य, सौर प्रभृति सम्प्रदायक आराध्य देवतासभ मे समन्वय स्थापित कय एकहि परमात्माक स्वरूप श्रुति, स्मृति ओ पुराणागमक सहस्राधिक वाक्य द्वारा लोकग्राह्य बनौलन्हि।

विद्यापतिक समग्र संस्कृतरचना एहि समन्वयभावना सँ अनुप्राणित अछि। स्मार्त्तपञ्चदेवोपासनाक अनुरूप प्रथम संस्कृतरचनाक मंगलाचरण मे गणेश, शिव, विष्णु, सूर्य ओ अम्बिकाक प्रार्थना अछि—

नत्वा गणपतिं साम्बं श्रीविष्णुं रविमम्बिकाम्।
भूपरिक्रमणग्रन्थो लिख्यते भुवि नैमिषे।

(भूपरिक्रमण, पृ० १)

पुरुषपरीक्षाक प्रारम्भ मे आदिशक्ति अम्बिका कें शिवक पूज्या, विष्णुक ध्यानविषया ओ ब्रह्माक प्रणम्या कहि विद्यापति अपन प्रणतिज्ञापन करैत छथि—

ब्रह्मापि यां नौति नुतः सुराणां यामर्चितोऽप्यर्चयतीन्दुमौलिः।
यां ध्यायति ध्यानगतोपि विष्णुस्तामादिशक्तिं शिरसा प्रपद्ये॥

लिखनावली मे लक्ष्य सिद्धिक लेल लम्बोदर गणेशक वन्दना प्रस्तुत अछि—

भूत्यर्थिनान्नम्रसुरासुराणामुत्तंसरत्नाश्रितपादपद्मम्।
तन्नौमि लम्बोदरमाप्रसादं यस्मिन् प्रसन्ने सकलार्थसिद्धिः॥

एवं प्रकारें दुर्गाभक्तितरङ्गिणी मे दुर्गाक, दानवाक्यावली मे विष्णुक तथा शैवसर्वस्वसार मे शिवक माहात्म्य वर्णित अछि। गङ्गाक पूजन लय गङ्गावाक्यावली नामक एक गोट स्वतन्त्र विशाल धर्मग्रन्थक रचना विद्यापति कयलन्हि।

उपर्युक्त विवेचन सँ ई सिद्ध होइत अछि जे हुनक हृदय मे हठधर्मक कोनहुँ स्थान नहि छल। समान श्रद्धा सँ ओ सभ देवी-देवताक उपासना कें लोक-जीवनक आदर्श बनौलन्हि। ओ शिव, विष्णु, गणेश प्रभृति देव कें एक परमात्माक शक्तिविशेषक रूप मे स्वीकार कयलन्हि। विभागसारक मंगलवाक्य मे हरि ओ हर दुहू कें एक मानि हरिहरक स्तुति कयल गेल अछि। एवंप्रकारें शैवसर्वस्व-सारक आरम्भिक मंगलश्लोक मे हरिहराद्वैतकथन अभिहित भेल अछि।

किन्तु श्रुतिवाक्य मात्र सँ तद्युगीन समाजक उद्धार संभव नहि छल। वैदिक संस्कृति अपन प्राणवत्ता ओ आलोक मे प्रागैतिहासिककालक हरप्पा, मोहनजोदड़ो आदि स्थान मे उपलब्ध सिन्धुघाटी संस्कृति कें आत्मसात कयलक; सिकन्दरक आक्रमणक पश्चात् आगत यूनानीप्रभाव कें स्वीकार कयलक, पारसी; शक, कुषाण, हूण आदि बर्बर जातिसभ कें अपन संस्कृतिमन्दाकिनीक विमल धारा मे अवगाहन कराय पवित्र कय देलक। भारतीय संस्कृतिक समन्वयात्मक सत्ता मे विरोधी संस्कृतिसभक विलयन मधुर भाव सँ भय गेल।

तथापि इस्लामी धर्म ओ संस्कृतिक प्रवेश भारतीय इतिहास मे एक अनुपम घटना घटल। एहि धर्म ओ संस्कृतिक स्वायत्तताक समक्ष श्रुतिसम्मत हिन्दू-संस्कृति हतप्रभ जकाँ भय गेल। वर्णाश्रमधर्मक भित्ति हिलि गेल। चातुर्वर्ण्य सँ बाह्य कतेको वर्ण छल जकर सम्मान समाज मे नहि छल। ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य ओ शूद्र मे शूद्रक स्थिति शोच्य छल। ऊपर सँ शैव, भागवत, सौरक संग चार्वाक, जैन ओ बौद्ध अश्रुतिसम्मत सम्प्रदायो छल। संगहि वैखानस, सात्वत, पाञ्चरात्र, पाशुपत, कालमुख, भैरव, शाक्त, आर्हत प्रभृति सम्प्रदाय सभक संघर्ष समाज मे चलैत छल। एहन स्थिति मे धर्मनिबन्धन कें व्यापक बनायब अनिवार्य छल। आवश्यकता छल पुराण सँ पोषित व्यामिश्र धर्मक प्रतिष्ठा। ई कार्य तन्त्रागमक प्रचार सँ भेल।

मिथिला मे तऽ जनक-याज्ञवल्क्य कालहिं सँ तन्त्रविचार लोकजीवनक अभिन्न अंग भय गेल चल। प्राक्विद्यापतियुगीन मिथिला मे कालिकापुराण ओ देवी-पुराणक लोकप्रियता एकर अविच्छिन्न धारा कें संकेत करैछ। पालवंशक शासन-काल मे तन्त्रभावना बौद्धतन्त्रवाद सँ प्रभावित छल। "तीरभुक्तौ वैशाली-तारा" वाक्य ओहि युगक एक गोट तालपत्रहस्तलेख-छवि मे अङ्कित अछि।

(द्रष्टव्यः एँन्सियेंट ज्योग्रैफी आफ इण्डिया, कन्निंघम, पृ० ७१७), पुनश्च भारतक पुरातत्त्व-विषयक सर्वेक्षणक वार्षिक प्रतिवेदन, १९०० ई०, पृ० ८१) पौराणिकताक प्रसारक संग 'वैशालीतारा'क रूपान्तर विभिन्न प्रदेश मे विभिन्न रूप सँ उपस्थित भेल—

एवं सर्वगता देवी मन्त्रविद्यागमेषु च।
संस्थिता मातृतन्त्रे च ज्येष्ठे तन्त्रे च भैरव॥

देवी पुराण—३९-२४-२५

ओतहिं कहल अछि जे गण्डकीसंगम ओ वैदेह मे परमाराध्या देवीक पूजन भद्रकालिकाक रूप मे होइछ (वैदेहे भद्रकालिका)।

देवीपुराण मे देवीक तन्त्र सम्मति विस्तार सँ उपलब्ध अछि; सङ्गहि एहि ठाम देवी-पूजनक वामाचार मार्गक स्पष्ट निर्देश प्राप्त अछि—

ता विद्याः शतधा भूत्वा कुलधामसदक्षिणाः।
परित्राणाय देवानां मर्त्यलोके नृपादिषु॥
अन्तःस्त्रीषु विशेषेण पुलिन्दशबरादिषु।
लोकान्तरेण मार्गेण वामाचारेण सिद्धिदा॥

(तत्रैव, ३९-१४१-१४२)

स्कन्द, ब्रह्मवैवर्त्त, कालिका, गणेश आदि पुराणहु मे परमशक्ति सम्पन्ना प्रकृति अथवा दुर्गाक पूजन कें प्रोत्साहित करबाक तान्त्रिक सिद्धान्त भेटैछ। फलतः उपर्युक्त पौराणिक विवेचन लय तन्त्र वेदविद्या जकाँ श्रुतिरूप भय गेल। (तु० श्रुतिश्च द्विविधा वैदिकी तान्त्रिका च—हारीतसूत्र—कुल्लूकभट्ट द्वारा उद्धृत मनुस्मृतिक टीका, २.१) तेँ देवीभागवत मे तान्त्रिक यन्त्र ओ तन्त्रबीजक विधान वैदिक पूजनविधि कहल अछि।

ई सत्य जे विद्यापति सँ पूर्व देवीपूजन मिथिला मे स्थायी रूप सँ सार्वजनीन होइत छल। ल० सं० १४७ अर्थात् ई० १२५६क दुर्गामूर्त्तिशिलालेख दरिभंगा मण्डलान्तर्गत खोजपुर ग्राम मे प्राप्त भेल अछि। विशेष द्रष्टव्य, बिहार रिसर्च सोसाइटीक जर्नल, खण्ड ३७ अङ्क ३-४, पृ० १०-१३) पुनः श्री दत्तोपाध्यायक समयप्रदीप ओ चण्डेश्वर ठक्कुरक कृत्यरत्नाकर एकर विशेष प्रमाण अछि। ओना तऽ तैत्तिरीय श्रुति मे दुर्गापूजन लय उल्लेख उपलब्ध अछि—ताम् अग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये सुतरसि तरसे नमः। तथापि देवीपूजन मे पौराणिक एवं तान्त्रिक भाव कें समाविष्ट करबाक श्रेय मैथिल स्मार्त्त लोकनि कें रहल अछि, ई इतिहाससिद्ध। दुर्गाक शरत्पूजा मिथिलाक प्रचलन थीक जाहि मे पौराणिकता ओ तान्त्रिकता अछि।

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः॥
सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः॥

श्रीदत्तोपाध्यायक समयप्रदीप मे दुर्गापूजनक विधि तन्त्रागमक आधार पर उल्लिखित अछि। श्री दत्तोपाध्याय ओ चण्डेश्वर ठक्कुर दुहूक मत सँ दुर्गापूजन शौर्यव्रत थीक जाहि सँ शौर्य्य एवं बलक प्राप्ति होइछ। तदनुरूप एहि मे बलिदान, रेवन्तपूजा, बलनीराजन प्रभृति विधानक समर्थन दुहू स्मार्त्त सँ भेल अछि। तुलनीय—कृत्यरत्नाकर, पृ० ३४४।

तथापि दुर्गापूजन लय विद्यापतिक दुर्गाभक्तितरङ्गिणी एक गोट एहन प्रामाणिक ग्रन्थ थीक जतए पौराणिक-तान्त्रिक देवीपूजनक सर्वाङ्गीण प्रतिपादन कयल गेल अछि।

जाहि आदिशक्तिक पूजा स्वयं शिव करथि, जे विष्णुक ध्यानक विषय छथि, जे ब्रह्माक प्रणम्या छथि, जनिक पूजन देवतालोकनिओ करथि, ओहि भगवती-शक्तिक रूपायन दुर्गा द्वारा विद्यापति दुर्गाभक्तितरङ्गिणी मे कयलन्हि अछि।

भक्तिभाव सँ प्रणत सुरराजक शिरोमुकुटक अग्रभाग मे स्थित माणिक्यक द्युति-पुञ्ज सं रञ्जित भय जनिक चरणयुगल कमलक शोभा धारण करैछ, ओहि देवीक 'जखन कोनहु दानवक उपद्रव होयत तखनहि ओकर दलन करब' एहि रूपक-प्रतिज्ञा सं पुलकित देवगणक स्वर्ग-राज्य प्रतिभू विश्व व्याप्त गम्भीर दृष्टि सभक रक्षा करथु :

भक्त्यानम्रसुरेन्द्रमौलिमुकुट-प्राग्भावतारस्फुरन्
माणिक्यद्युतिपुञ्जरञ्जितपदद्वन्द्वारविन्दश्रियः।
देवास्तत्क्षणदैत्यदर्पदलनेसन्वितप्रहृष्टामर-
स्वाराज्यप्रतिभूतवियुक्तकरणा गम्भीरदृक् पातु वः॥

(दुर्गाभक्तितरङ्गिणी; पृ० १)

एहि शक्ति-देवी दुर्गाक पूजन विभिन्न काल ओ विभिन्न रूपलय प्रचलित छल। कतहुँ वासन्ती पूजा होइत छल तऽ कतहुँ शारदीया। कतहुँ मृन्मयी कात्यायनी दुर्गा पूजित होइत छलीह तऽ कतहुँ स्वर्णमयी, धातुमयी, ताम्रमयी, शैलमयी। पुनः देवीपुराण, भविष्यपुराण, ब्रह्मवैवर्त्तपुराण, श्रीमद्भागवत, मार्कण्डेय, स्कन्द, कालिका, विष्णु आदि पुराण सभ मे बहुविध व्रत ओ पूजनक व्यवस्था उल्लिखित छल। विद्यापति पूर्वोक्त सभ विवरण कें अपन प्रतिभा ओ विलक्षण समन्वयवादी बुद्धि सं देखि दुर्गोत्सवक प्रामाणिक पद्धति दुर्गाभक्तितरङ्गिणी मे रखलन्हि। ग्रन्थारम्भ मे हुनक कथन अछि—

विश्वेषां हितकाम्यया नृपवरो विज्ञाप्य विद्यापतिं
श्री दुर्गोत्सवपद्धतिं स तनुते दृष्ट्वा निबन्धस्थितिम्॥

(दुर्गाभक्तितरङ्गिणी पृ० २)

पौराणिक वाक्य कें प्रमाणरूप उद्धृत कय पूजनविधि मे तन्त्रक प्रसार सर्वत्र कयल गेल अछि, जाहि सं लोक प्रवृत्तिक परितुष्टि सहज प्राप्त भेल। देवीपुराणक विधि सं कालिकापुराणोक्त चतुःषष्टियोगिनीक पूजा विस्तार सं उल्लिखित कयल गेल (द्रष्टव्य दुर्गाभक्तिरङ्गिणी, पृ० ७६-८८); संगहि मातृचक्र-पूजा, त्रिशूलिनीपूजा, अपराजितापूजा, कुमारिकापूजा आदिक कल्प मे बलिदान, नीराजन, रेवन्त, छत्र कुन्तध्वजादिपूजन मे तान्त्रिक मतक समर्थन भेल अछि। बलनीराजन ओ रेवन्त पूजाद्वय मे तत्कालिक राजनीतिक अस्थिरता लय युद्ध मे

जयप्राप्तिक ओ शान्तिक मंगलकामना निहित अछि। रेवन्त कें अञ्जलि निम्न श्लोक सं विहित अछि :

सूर्यपुत्र महाबाहो छायाहृदयनन्दन ।
शान्तिं कुरु तुरङ्गाणां रेवन्ताय नमोऽस्तुते ।।

(दुर्गाभक्तितरङ्गिणी पृ० २०५)

विसर्जनकालक कामना अछि :

विक्रतं यदि गच्छेथाः युद्धेऽध्वनि तुरङ्गम ।
रिपून् विजित्य समरे सह भर्त्रा सुखी भव ।।

(तत्रैव, पृ० २०६)

विजयादशमीक देवी प्रयाणक अनन्तर अपराजिता पूजाक प्रयोजन जयप्राप्ति ओ पराजय-परिहार अछि :

जयभद्रा महामाया शिवभावितचेतसा ।
विजया च महाभागा ददातु विजयं मम ।।
हारेण सुविचित्रेण भास्वत्कनकमेखला ।
अपराजिता रुद्रलता करोतु विजयं मम ।।

(तत्रैव पृ० २०९)

वस्तुतः विद्यापति द्वारा उपर्युक्त रेवन्त ओ अपराजिता पूजन-विधान मैथिली दुर्गापूजनक पूर्व परम्पराक निरूपण थीक। एहि दुहूक तथाविध उल्लेख चण्डेश्वर ठाकुर अपने ग्रन्थ कृत्यरत्नाकर मे कयने छलाह। (तुलनीय : अथ शिष्टाचारपरि-प्राप्ता दशम्यपराजिता ; कृ० र०, पृ० ३६५) लोकहितैषी विद्यापति बुझलन्हि जे मिथिलाक राजनीतिक संप्रभुताक संरक्षणक लेल शौर्यव्रतक परम्परा कें आओर जीवित करब आवश्यक अछि। तैं कहल गेल जे शत्रुमर्दनक लेल महाष्टमीक अर्ध-रात्रि मे राजा देवीपूजन करथि ; शत्रुक पिष्टमयी मूर्ति बनाय शिरच्छेदन करथि। (द्रष्टव्य : दुर्गाभक्तितरङ्गिणी, पृ० ९७) फलतः सिद्ध अछि जे दुर्गा शक्ति थीकीह । शक्तिहीनता अकर्मण्यताक दोसर नाम थीक। एहि कारणें दुर्गापूजन व्यक्ति ओ समाज दुहूक लेल काम्य अछि।

शक्तिक उन्मेष शिवत्व थीक। तैं शिवत्व ओ शक्तितत्त्वक पृथक् कल्पना भारतीय साधना मे नहि। शिव शक्ति सं युक्त भेलहि प्रभविष्णु होइत छथि।

न शिवेन विना शक्तिर्न च शक्त्या विना शिवः ; (शिवपुराण, अ० ४) देवी भागवत मे देवीक स्थान सर्वोपरि राखल गेल अछि। ओतहि कहल अछि जे देवी-विनिन्दक, शिवद्रोही ओ विष्णुद्रोही समान रूप सँ नरक गामी तऽ होइते छथि ; संगहि एहू लोक मे हुनक पतन निश्चित अछि :

ये शिवद्रोहिणः सन्ति तथा देवीविनिन्दकाः।
ये विष्णुद्रोहिणः सन्ति पतन्त्यत्रैव ते मुने।

(देवीभागवत, ११-३७)

ब्रह्मपुराण, देवीभागवत, कालिकापुराण आदि धर्मग्रन्थ सँ स्पष्ट अछि जे प्राचीन रुद्रशिवपूजन तन्त्र ओ आगमक प्रवेश सँ युगानुकूल महेश्वर शिवपूजन मे परिणत भय गेल, जाहि मे ज्ञान, योग ओ चर्याक दर्शन एक संग होइत अछि। शिवाराधन सँ जीवन मे चैतन्य प्राप्त होइछ ; चैतन्य प्राप्त कय सृष्टि अथवा जीवनलीलाक प्रति योग होइत अछि ; सद्वृत्तिक आचरण सँ निष्कलुषता प्राप्त होइछ।

शैवभावना लय मिथिला अतिप्राचीनकाल सँ प्रसिद्ध अछि। मुदा पुराण ओ तन्त्रोक्त शिवपूजन लय पाशुपत शैवसम्प्रदाय मिथिला मे अष्टम ओ नवम शतक सँ प्रचलित छल, तकर पुष्ट प्रमाण भेटैछ। भागलपुर मण्डलान्तर्गत कहलगाँव रेलवे स्टेशनक समीप प्राप्त अष्टम शतकक वटेश्वरस्थान प्रस्तरशिलालेख ओ नवम शताब्दीक नारायणपाल द्वारा कयल 'मकुतिका' ग्रामदानक ताम्रलेख, दुहू सँ उपर्युक्त तथ्यक अनुमोदन होइछ। ताम्रलेखक निम्न प्रसंगगत वाक्य द्रष्टव्य अछि :

(श्री मु)द्गगिरिसमावासितश्रीमज्जयस्कन्धावारात् .... परमभट्टारको महाराजाधिराजः श्रीमन्नारायणपालदेवः कुशली तीरभुक्तौ कक्षवैषयिक-स्वसम्बद्धाविच्छिन्नतलो........ बोधयति समादिशति च मतमस्तु भवतां कलशपोते महाराजाधिराज-श्रीनारायणपालदेवेन स्वयंकारितसहस्रायतनस्य तत्र प्रतिष्ठापितस्य भगवतः शिवभट्टारकस्य पाशुपत-आचार्यपरिषदश्च यथार्हं पूजाबलिचरुसत्रनवकर्म्माद्यर्थम् यथोपरिलिखित-मकुतिकाग्रामः भगवन्तं शिवभट्टारकमुद्दिश्य शासनीकृत्य प्रदत्तः।

तीरभुक्तिक कक्षविषय मे स्थित मकुतिकाग्राम शब्दादि स्पष्ट अछि ; ओ पूजा, बलि, चरु, सत्र, नव कर्मादिक लेल पाशुपत आचार्यपरिषत् कें ग्रामदान कयल जाइछ। पुनः मिथिला मे कर्णाट क्षत्रियवंशक स्थापनाक पश्चात् शैव एक गोट

सामान्यधर्म भय गेल। नरसिंहदेव, रामसिंहदेव, शक्तिसिंह ओ हरसिंह देवक राज्यकाल मे शैवधर्म कें संरक्षण भेटल। तत्कालीन मन्त्री लोकनि मे क्रमादित्य, चण्डेश्वर, धीरेश्वर, प्रभृति धर्माधिकरणिकक पद पर आसीन भय शैवमतक समर्थन कयलन्हि। कर्णाटकालहि मे चण्डेश्वर द्वारा शिवार्चन सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण पोथी लिखल गेल।

एहि मे सन्देह नहि जे मिथिलाक शैवधर्म प्रारम्भ मे बहुत काल धरि कुमारिल, मण्डन, वाचस्पति, उदयन प्रभृति मीमांसक दार्शनिक लोकनिक प्रभाव सं श्रुतिस्मृतिसम्मत मात्र शिवपूजन रहल। कुमारिल पाशुवत कें वेदबाह्य कहि अस्वीकार कयलन्हि। बाह्यग्रन्थानामप्रामाण्यनिरूपणम्। तत्कालीन स्मृति-निबन्धकार ग्रहेश्वर मिश्र ओ गणेश्वर मिश्रक कोनहुं ग्रन्थ अद्यावधि प्रकाश मे नहि आयल अछि। तें निश्चित रूप सं एहि विषय मे सामान्यीकरण निरापद नहि। तथापि तीर्थिक शैव मे आगम ओ तन्त्रक प्रवेश स्वाभाविक छल, कारण बौद्धतन्त्रवादक 'प्रज्ञा' योगसाधना, धारणा, ध्यान, समाधि, महामुद्रा, आदि रहस्यात्मक क्रिया मे अभिव्यक्त भय जनमानसक प्रबल आकर्षण ओहिकाल मे बनि गेल छल। तें मिथिलाक दार्शनिक अपन बौद्धिक तर्क सं बौद्धमत पर प्रहार तऽ करबे कयलन्हि, किन्तु एहि क्षेत्र मे कालिकापुराण ओ शिवपुराणक तत्कालीन योगदान विशेष रहल। पुराणद्वय द्वारा शैवागम कें लोकप्रियता भेटल। मिथिलाक सामाजिक एवं धार्मिक जीवन कें प्राणवन्त करबाक लेल 'वेदबाह्य' पाशुपत आगम तत्त्वक ग्रहण स्पृहणीय छल। मैथिली उदारस्मृतिनिबन्धकार एकर पोषण कय अपन प्रगतिशीलताक परिचय दयलन्हि। श्रीदत्तोपाध्याय अपन समय-प्रदीप ओ कृत्याचार मे पाञ्चरात्र आगमक समर्थन कय नव्य तन्त्रवाद कें स्वीकार कयलन्हि। परवर्त्तीकाल मे चण्डेश्वर ठाकुर स्पष्टतः पाशुपतक पाञ्चरात्र प्रभृति तन्त्रागम कें धर्मप्रमाण ग्रन्थक रूप मे प्रतिष्ठित कयलन्हि। हुनक कृत्यरत्नाकर मे प्रमाणस्वरूप पारिजातक मत उद्धृत भेल अछि :

पाञ्चरात्रपाशुपतादीन्यपि शास्त्राणि
वेदाविरुद्धभागे प्रमाणमेवेति पारिजाताः

(द्रष्टव्यः कृत्यरत्नाकर पृ० ३१)।

एहि सिद्धान्तक पालन चण्डेश्वर शिवार्चन विषयक 'शैवमानसोल्लास' ओ 'कृत्यरत्नाकरक' विविध शैवव्रत ओ पर्वक निरूपण मे कयलन्हि।

ओइनवार वंशक (१३४० ई०-१५२५ ई०) काल मे मिथिलाक शैवभावना कें सर्वाधिक पोषण भेटल। ओहिकाल मे राजवंश शैव छल, ओ धर्माधिकरणिक लोकनिओ शैव छलाह। (द्रष्टव्य : डा० सुकुमार सेन, विद्यापति गोष्ठी, पृ० २४) शैवभावापन्न राजवंशक परितुष्टि एवं शिवभक्तिपरायण प्रजालोकनिक मार्ग-निर्देशनक लेल शिवाराधन-विषयक 'शैवसर्वस्वसार' ओ 'शैवसर्वस्वसार-प्रमाणभूतसंग्रह' नामक दुइ गोट ग्रन्थ विद्यापति द्वारा रचित अछि। एहि मे शिवपूजनविधान विस्तार सँ प्रमाणवाक्य द्वारा उपस्थापित कयल गेल अछि।

विद्यापति द्वारा निरूपित शिवपूजन सार्ववर्णिक अछि। युगक आवश्यकताक अनुरूप एहि मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ओ शूद्र चारू वर्ण सँ भिन्न वर्णसभक कल्याणक भावना निहित अछि। शिवपूजाधिकार लय विद्यापतिक अभिमत अछि :

तदेतद्वाक्यजातपर्य्यालोचनया सर्ववर्णानां
सर्ववर्णस्त्रीणां सर्वश्रमिणाञ्च शिवपूजायमधिकारोऽवसीयते ॥
(शैवसर्वस्वसार, पृ० ४)

शिवधर्मोत्तर सं बुझना जाइछ जे आगमशैव मे 'बहुजनहिताय, बहुजनसुखाय'क भावना लय 'महावैद्य-समन्विता आरोग्यशाला', 'अनाथमण्डप', 'औषधिदान' आदि सामुदायिक मङ्गलकृत्यक विधान देल अछि। शैवसर्वस्वसार मे शिवभक्त-लोकनिक हेतु शिवायतनकरण, शिवालयसम्मार्जन, अन्न-भूमि-रत्न-मौक्तिक-गोवृषभादिदानादिक व्यवस्था अछि।

शिवपूजन त्रिकालसम्भव मानल गेल अछि। पूजनक विधानहु सरल कहल गेल अछि—स्मरण, कीर्तन, दर्शन, स्पर्शन, स्नपन, पञ्चकृत्यक विधान अछि। संगहि व्रत, उपवास ओ उत्सवक माहात्म्य वर्णित अछि। त्रिसन्ध्यापूजनक अवसर मे नृत्यक विधान सेहो अछि। पूजनक सामग्री बिल्वपत्र-धूपदीपनैवेद्यानु-लेपन, सिद्धान्नताम्बूलादिक अर्पण शिवनिमित्त कहल गेल अछि। संगहि एहि वस्तुजातक दानक फलक विवरण विस्तार मे राखल गेल अछि।

मिथिला मे प्रचलित शिवपूजन लय शिवप्रतिमा सं अधिक महत्त्व शिवलिङ्ग कें अति प्राचीनकाल सँ रहल अछि। साक्षात्-शिव लिङ्ग थीकाह, लिङ्ग हुनक कोनहु बाह्य चिह्न नहि। सच्चिदानन्द अद्वितीय परमब्रह्मक पर्याय शिवतत्त्व थीक, जकरा स्थल कहल जाइछ। महत् आदि परमब्रह्म अथवा शिव तत्त्व मे स्थित अछि, संगहि ओही मे लीन भय जाइत अछि। प्रकृति एवं पुरुष सँ

समुद्भूत विश्व सर्वप्रथम एही मे स्थित रहैछ, ओ सर्वशेष लय भय जाइछ। तैं एकरा स्थल कहल जाइछ। 'स्था' स्थानवाचक अछि ओ, उत्तरार्धं 'ल' लयवाचक। फलतः स्थल समस्त चराचर-जगतक आधार थीक। ई परम पद थीक। शक्ति मे क्षोभ उत्पन्न भयला सन्तां स्थल द्विधा विभक्त भय जाइत अछि: एक लिङ्गस्थल ओ अपर अङ्गस्थल। एक भाग शिव पर आश्रित अछि, एकरा कला कहल जाइछ; दोसर भाग जीवात्मा पर, जकरा भक्ति कहल जाइछ। शक्ति सँ अद्वय शिव पूज्य छथि, ओ भक्ति सँ जीव पूजक। निष्कर्ष, शक्ति लिङ्ग अथवा शिव मे स्थित अछि, तऽ भक्ति अङ्ग अथवा जीवात्मा मे। भक्तिक द्वारा जीव आओर शिवक संयोग होइछ। तैं लिङ्गोपासना शिवपूजन थीक।

विद्यापति शैवसर्वस्वसारप्रमाणभूतसंग्रहक आरम्भ मे लिङ्गमहात्म्यलय लिङ्ग-पुराण कृष्णवाक्य कें उद्धृत कयलन्हि:

यदाद्यमैश्वरं तेजस्तल्लिङ्गं प्रथमं स्मृतम्
कल्पान्ते तस्य लिङ्गस्य लीयन्ते सर्वदेवताः।
दक्षिणे लीयते ब्रह्मा वामतश्चाप्यहं प्रभो।
हृदये चैव गायत्री सर्ववेदोत्तमोत्तमा॥
लीयन्ते वै मुखे वेदाः षडङ्गपदक्रमाः
जठरे लीयते सर्वं जगत् स्थावरजङ्गमम्॥
पुनरुत्पद्यते तस्माद् ब्रह्माण्डं स चराचरम्॥

दिक्कालादि सँ अनवछिन्न अनन्त आकाश लिङ्ग भेल, ओ विपुला पृथ्वी ओकर पीठिका। सचराचर प्राणीसभक आलय ओ थीक। एहि दिव्य परम सत् कें लपनार्थं लिङ्ग कहल जाइछ। एतदर्थं विद्यापति भविष्य पुराण सँ निम्न वाक्य प्रमाणस्वरूप उद्धृत कयलन्हि:

आकाशं लिङ्गमित्याहुः पृथिवी तस्य पीठिका
आलयः सर्वभूतानां लपनाल्लिङ्गमुच्यते॥

(तत्रैव पृ० १)

शैवसर्वस्वसार मे लिङ्गस्थापनक विधान वर्णित अछि। विभिन्न प्रकारक धातु ओ द्रव्यादि सँ शिवलिङ्ग निर्मित भय सकैछ—मृत्तिका, प्रस्तर, स्वर्ण, रजत, इन्द्रनील, ताम्र, घृत, शर्करा, विल्वपत्रादि शिवलिङ्गक उल्लेख ओतए अछि।

माटिक शिवलिङ्गक प्रशस्ति सर्वाधिक अछि। एहि मे उपयुक्त सामग्रीक प्राप्ति ओ सब समय सभ सँ सब ठाम एहि पूजनक विधान सुलभ अछि तकर संकेत निहित अछि। एहि पूजन मे कोनहु विशेष आडम्बर नहि अछि। स्वयं शिव आशुतोष छथि। शिवलिङ्गपूजनक फल संख्या लय भिन्न-भिन्न होइछ। सहस्र शिवलिङ्गक पूजन सँ रुद्रलोकक प्राप्ति होइछ, लक्ष लिङ्गक पूजन सँ शिवत्व, ओ कोटि शिवलिङ्गक पूजक कें सशरीर शिवपुरीक लाभ होइत छन्हि। तात्पर्य, आजीवन शिवपूजन सँ एही जीवन मे मोक्षक प्राप्ति भय जाइत अछि।

उपर्युक्त शाक्त अथवा शैव भाव लय विद्यापति मे कोनहु संकीर्ण साम्प्रदायिकता दृष्टिगोचर नहि होइछ। तापस शास्त्रकारक लेल **'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'** धर्मदर्शन छल। नाममात्र लय भेद होइछ, तत्त्व लय नहि। पुराणकर्ता वादरायणक मतें विष्णु, रुद्र प्रभृति मे वास्तविक भेद नहि अछि; लीलाविग्रहमात्रक भेद अछि। वेदान्तक दृष्टि सं मायोपहित अखण्ड अद्वितीय चैतन्यहिं ईश्वर थीक जे सत्त्वगुण सं उपहित भय विष्णु, रजोगुण सँ उपहित भय ब्रह्मा ओ तमोगुण सँ उपहित भय रुद्र कहबैत छथि। ओएह विभिन्न पुराण मे हरि हर आदि विभिन्न नाम सं अभिहित छथि। तें हुनका सभ मे कोनहु विरोध नहि। विरोध तऽ संकीर्ण साम्प्रदायिकताक प्रतिफलन थीक। शैव ओ भागवत दुहूक मिथ्या विरोध कें ध्यान मे राखि मार्कण्डेयक प्रार्थना अछि : हे देव, अपनेक प्रसाद सं लोकसभक मङ्गल लेल ओ मत सभक वाद-विवादक शमनार्थं, संगहि भागवत ओ शैवक संघर्षक उन्मूलनक लेल हमर मनःकामना एहि पवित्र पुरुषोत्तम-क्षेत्र मे एकगोट विशिष्ट शिवायतनक निर्माण करबाक अछि, जाहि पवित्र पीठ मे हरि-ईश्वरक एकमूर्त्तिक ज्ञान होयत :

एवमेवाहं नाथ इच्छेयं त्वत्प्रसादतः
लोकानां च हितार्थाय नानाभावप्रशान्तये।
शैव-भागवतानाञ्च वादार्थप्रतिषेधकम्
अस्मिन्क्षेत्रवरे पुण्ये निर्मले पुरुषोत्तमे॥
शिवायतनं देव करोमि परमं महत्
प्रतिष्ठेय तथा तत्र तव स्थाने च शङ्करम्
ततो ज्ञास्यन्ति लोकोऽस्मिन्नेकमूर्त्तौ हरीश्वरौ॥

(ब्रह्मपुराण, ५६; ६३-६६)

लोक-मनोवृत्ति ओ लोक मंगलहि पर स्थित उपर्युक्त धर्मबोधक दर्शन तापस शास्त्रकार विद्यापतिक रचना सभ मे होइछ। श्रीदत्तोपाध्याय, चण्डेश्वर ठाकुर, विद्यापति सन् उदार स्मार्त निबन्धकारक निर्देशनक परिणामस्वरूप शैव, शाक्त, भागवत, गाणपत्य प्रभृति मे साम्प्रदायिक कटुता लय मिथिला मे कखनहुँ प्रतिद्वन्द्विता नहि आयल। एहि मे विद्यापतिक योगदान सर्वोपरि रहल। मार्कण्डेयक प्रार्थनानुरूप विद्यापति हरि ओ हरक बीच अभेदान्वयक स्थापन अपन विभिन्न ग्रन्थ मे कयलन्हि। गङ्गावाक्यावलीक मंगलाचरण मे हरि ओ हरक स्तुति एकमूर्तिक रूप मे भेल अछि :

स्वस्त्यस्तु वस्तुहिनरश्मि-भृतः प्रसादादेकं वपुःश्रितवतो हरिणा समेत्य।
तन्नाभि-पङ्कज-सहोत्थमृणाललीलामाविष्करोति हृदि यस्य भुजङ्गराजः॥
(गङ्गावाक्यावली, पृ० १)

एहि भावना कें विद्यापति विभागसारक भूमिका मे रखलन्हि अछि (विशेष द्रष्टव्य : प्रस्तुत पुस्तक, पृ० ३४)। पदावलीक प्रसिद्ध पंक्ति "भल हरि भल हर भल तुअ कला, खन पितवसन खन बघछला" एहि प्रसंग ध्यातव्य अछि।

वस्तुतः विद्यापति बुझलन्हि जे राजनैतिक स्वतन्त्रता तऽ विनष्टे भय गेल। तखन रहल धार्मिक स्वतन्त्रता। ओकर रक्षण एकमात्र तन्त्र बल सँ संभव। एतदर्थं शास्त्रक प्रयोजन धर्मचिन्तन लय समन्वयस्थापन करब छल। तेँ शैव, गाणपत्य, शाक्त, वैष्णव प्रभृति धर्मभाव मे एकत्व लेल युगधर्मक अनुरूप शास्त्र-निबन्धनक आवश्यकताक पूर्ति हुनक धर्मविषयक ग्रन्थ द्वारा भेल। कुलक्रमागत वर्णाश्रमक पोषक होइतहुँ विद्यापति व्यामिश्रधर्मक पोषण कयलन्हि। हुनक धारणा छल जे श्रुतिविरोधी सम्प्रदायहुँ कें वेदार्थस्मरण द्वारा श्रुतिसम्मत करब युगधर्म थीक। तेँ ओ लोक-प्रचलित विभिन्न देवी-देवताक पूजन कें श्रुति-आगम-वाक्य सँ प्रमाणित कय लोकग्राह्य बनौलन्हि। नागपूजन हुनक युग मे वर्ग विशेषक मान्यता छल। विद्यापति अपन रचना 'व्याडिभक्तितरङ्गिणी' मे पञ्चोपासना जकाँ नागपूजन कें पवित्र कहलन्हि। किन्तु एकरा श्रुतिसम्मत करबाक लेल हुनक निर्देश छल जे पूजनक आरम्भ वैदिक मन्त्र 'स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा' सँ होयबाक चाही। गणेशपूजन स्पष्टतः वेदवाध्य छल। किन्तु गणेशव्रतक पालन विद्यापतिक पूर्ववर्ती मैथिल नैबन्धिक लोकनिक ग्रन्थ मे उल्लिखित छल। गणेशक पूजन पञ्चोपासनाक अन्तर्गत छल। (द्रष्टव्य देवीभागवत, १०-३७-३६)। विद्यापति अपन ग्रन्थ वर्षकृत्य मे अनेक धर्मकृत्यक विधान गणेशपूजन लय कयलन्हि। एहिठाम

'गणानांत्वा गणपतिम्' वैदिक मन्त्र द्वारा 'वेदार्थस्मरण' कय विद्यापति अपन तत्त्वाभिनिवेशिनी शास्त्रीयताक परिचय दयलन्हि। एवंप्रकारें ओ विभिन्न विरोधी धर्मसम्प्रदायक मध्य सहिष्णुताक भाव सृष्टि कय हिन्दू धर्म कें ऐक्यबद्ध कयलन्हि अछि।

मध्ययुगक हिन्दू भक्तिभावना कें उपवृंहण ओ पोषण करबा मे विद्यापति द्वारा देल तीर्थमाहात्म्यक महत्त्व अपन अछि। **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'** वैदिक काल सं भूमि ओ नदीक प्रति भक्तिभाव देखना जाइछ। पुराणादि ग्रन्थहुं मे तथाविध वर्णन स्वतन्त्ररूप सं भेल अछि। तथापि मध्ययुगक ऐतिहासिक ओ राजनैतिक विषम परिस्थिति लय बुझना गेल जे गया, काशी, कनखल आदिक माहात्म्य लुप्त भय जायत। तखन विद्यापति विविध प्रकारक रचना कय अनेक तीर्थक पुनस्स्थापन कय हिन्दू धर्मक ऐक्यभाव कें रूपायित कयलन्हि। एतदर्थ हिन्दूसमाज हुनक ऋणी बनल रहत।

हुनक प्रथम संस्कृतरचना भूपरिक्रमण मे देशविवृत्तिक प्रसङ्ग अनेक तीर्थस्थान वर्णित अछि। नैमिषारण्य सन् पुण्यस्थान सं एहि ग्रन्थक प्रणयन रचयिताक धर्मप्रवणता ओ धर्मभावक संकेत अछि। ई ओ स्थान थीक जे धर्मप्राण भारत-वर्षक एकावन गोट पीठस्थान मे विशिष्ट स्थान रखैछ। प्राचीन आर्य ऋषि-लोकनि पुराणादि धर्मग्रन्थक रचना एतहि कयलन्हि। स्थानवर्णन एतहि सं आरंभ भय क्रमशः नेमिदेश, वृहद्ब्रह्मावर्त्त, लघुब्रह्मावर्त्त, यज्ञभूमि, काशीक्षेत्र, सिद्धदेश, नृसिंहदेश, पाटलिदेश ओ जनकदेश तक भेल अछि। एहि भूखण्ड मे प्राप्त तीर्थ सभक रमणीय चित्राङ्कन कयल गेल अछि।

नेमिदेशक शातनीपुर मे त्रिदशेश्वरी भैरवीक पवित्र मन्दिर प्राप्त अछि। ओतहिं वेणुपुर मे योगीसभक उपास्यदेव नाथक निवास अछि। वृहद्ब्रह्मावर्त्त मे नालिकानदीक तट पर स्थित कालेश्वरगुहा मे कालेश्वरदेवक निवास विख्यात अछि। ओतहिं वाल्मीकडिच अछि। सटले पोलू नामक गहनवन अछि जाहि ठाम सीताप्रसवस्थान अछि जे लोक मे सौरि नाम सं प्रसिद्ध अछि। ओतहिं पञ्चक्रोश-भूमि अछि जे महापातक कें नाश करैछ। वृहद्ब्रह्मावर्त्तहिं मे आमोदकानन आओर कामकाननक मध्य सरस्वतीकुण्ड अछि, जतए प्राचीनकाल मे स्वायम्भुव मनुक स्थान छल।

ब्रह्मावर्त्तक अनन्तर यज्ञभूमि अबैछ। ओतहिं प्रयागभूमिक दर्शन होइछ। प्रयाग तीर्थराज नाम सं प्रख्यात अछि। तीर्थराजक महाक्षेत्र नदीत्रय सं समन्वित अछि। श्वेत, कृष्ण ओ रक्त धारा एहिठाम वेणी रूप सं सुशोभित अछि। तें एहि क्षेत्र कें वेणीक्षेत्र सेहो कहल जाइछ। एहि महाक्षेत्र मे पञ्चक्रोश प्राप्त

अछि जे कलियुग मे सकल कामना कें पूर्ण करैछ। एतहि सोमेश्वर, दशाश्वमेध ओ शूलेश तीर्थ-स्थान प्राप्त अछि। किछुए दूर भारद्वाज मुनिक आश्रम अछि।

महाप्रयागक उपान्त वेणीपुर अछि। वेणीपुर सँ आगू गंगाक दर्शन होइत अछि। सुकर्मभूमि कें पार कयला पर कैवल्यभूमि भेटैछ जे चतुर्मुक्तिप्रदायिनी अछि। ई पञ्चक्रोशान्विता मही थीकीह, जतए देवगण सानन्द बास करैत छथि। वरणा ओ असी दूइ नदीक बीच तीनि कोस धरि व्याप्त वाराणसी प्राणीसभक लेल साक्षात् मोक्षदायिनी पुरी अछि। एतए तीर्थयात्री पञ्चक्रोशक परिक्रमा करैत छथि। नातिदूर कपिल मुनिक तीर्थ अछि। वरणा नदीक तट पर बलदेव द्वारा स्थापित शिवलिङ्गक दर्शन होइछ। ओतहि आदिकेशवक पवित्रधाम सेहो अछि।

काशीक्षेत्रक अनन्तर स्वर्गभूमि भेटैछ। कारुष प्रदेश मे ताड़कावनक बीच रामरेखाक पवित्र स्थान अछि। ओतहि सिद्धाश्रम अछि जे पञ्चक्रोशक योगी लोकनिक लेल सिद्धिदायक पीठ अछि। गंगाक उत्तर दर्दुरक्षेत्र मे भार्गव मुनिक सुस्थान अछि जे मुक्तिदायक अछि। ओकर समीपहि त्रिविक्रम-मूर्त्तिक स्थान सेहो अछि जतए श्रावण शुक्ल पञ्चदशी मे विष्णुक वामनावतार भेल। नृसिंहदेश मे नृसिंहतीर्थ अछि जतए नृसिंहदेव प्रत्यक्ष भेलाह। एहि ठाम गङ्गा ओ शोणक सङ्गम अछि। एहि सङ्गमक स्नानक माहात्म्य बड़ पैघ अछि। माघ मासक उषःकाल मे एतए जे केओ स्नान करैछ ओ निष्पाप भय जाइछ। पाटलिदेश मे पहुँचला पर पाटलि नगर मे पाटलि देवीक दर्शन होइछ। पाटलि नगर सँ गंगा कें पार कयला पर गंगा-गण्डकी-सङ्गम भेटैत अछि। एहि सङ्गम मे स्नान ओ तर्पण बड़ पवित्र मानल जाइछ।

पवित्र जनकदेश मे अनेक तीर्थ प्राप्त अछि। सर्वाधिक पवित्र स्थान जनकपुरधाम अछि जतए राजा जनकक निवाससौध विद्यमान अछि। सटले गिरिजा स्थान अछि। भैरवस्थान मे भैरव-पूजा होइत अछि। तदन्तर सीता-मण्डपभूमि अछि जतए सीताजीक ग्रन्थिबन्धन भेल छल। सीताकुण्डक दक्षिण भाग मे चण्डीस्थान अछि जतए चण्डिका देवी जागरण करैत छथि। गौतम-कुण्डक समीप अहल्यावट स्थान अछि जे पूजास्थल बनल अछि। एहिठाम गौतमक धर्मपत्नीक एक गोट विशाल पाषाणकाय प्राप्त अछि। जनकपुर सँ दक्षिण पाँच कोस दूर विशोर नामक देवस्थान अछि जतए 'विसहरा'क पूजन होइछ। समीपहि जलेश्वर-स्थान अछि जतए जलेश्वर महादेवक निवास अछि। जलेश्वर महादेव सदिखन जलशयन करैत छथि। विशिष्ट पर्व मे मन्त्र सँ आहूत भय ओ जलशयनक परित्याग कय जलान्तर मे प्रवेश करैत छथि। पश्चात् पुनः मन्दिर मे हुनक निमीलन होइछ।

उपर्युक्त तीर्थ सभक माहात्म्य मध्ययुगक विभिन्न धर्मभावना कें समन्वित करबा मे सहायक अछि। शिव, शक्ति, विष्णु प्रभृति प्रमुख देवक संग अन्य देवक पवित्र धामक वर्णन समान श्रद्धा ओ उपासनाभाव लय भेल अछि। (विशेष द्रष्टव्य : भूपरिक्रमण प्राक्कथन, पृ० ११-१६) भूपरिक्रमण मे सम्पूर्ण भारतवर्षक तीर्थसभक वर्णन पौराणिकताक परिवेष्टन मे राखब काम्य छल। मुदा राजनैतिक परिस्थिति लय ई योजना सफल नहि भय सकल। तथापि भारतक हृदयवर्ती प्रदेशसभक तीर्थ-विवरण उपस्थित कय हिन्दूधर्मक जे सेवा हुनका द्वारा भेल, ओ कम नहि।

तीर्थमाहात्म्य लय हुनक एक गोट आओर पूजनग्रन्थ 'गङ्गावाक्यावली' अछि जतए गंगाक माहात्म्य बड़ विस्तार सँ वर्णित अछि। हरिद्वार सँ लय गंगासागर धरि तीर्थ सभक विशद वर्णन एहि ठाम उपलब्ध अछि। गङ्गास्तवनक प्रसंग नैमिष, कनखल, कुरुक्षेत्र, विन्ध्य, मुक्तिक्षेत्र, महाप्रयाग, कामिक तीर्थ, धेनुक, सप्तग्राम, गंगासागरसङ्गमक उल्लेख आयल अछि। एहि ठाम रामायण, महाभारत, पद्म, मार्कण्डेय, भविष्य, मत्स्य, नन्दी पुराणादिक वाक्य प्रमाणस्वरूप उद्धृत कयल गेल अछि। गंगा सर्वतीर्थमयी थीकीह। शिववाक्य अछि :तीनहुँ लोक मे जे कोनो तीर्थ अछि, पुण्यधाम अछि, जतेको पावन पर्वत अछि, पुण्यक्षेत्र अछि ; जे धर्म, सर्ववेद, यज्ञ वा तपस् अछि ; सर्वशक्तिसम्पन्न जे ब्रह्मा, शिव वा विष्णु छथि अथवा जे अठारह कोटि देव छथि, सब सूक्ष्म रूप सँ गङ्गा मे संस्थित छथि।

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि पुण्यान्यायतनानि च
पार्वतानि च पुण्यानि पुण्यक्षेत्रानि यानि च।
धर्मश्च सर्ववेदाश्च सर्वयज्ञस्तपांसि च।
अहं ब्रह्मा च विष्णुश्च सर्वशक्तिसमन्वितः।
अष्टाविंशतिकोट्यश्च देवतानाञ्च सर्वदा।
गङ्गायां सर्व एवैते सूक्ष्मरूपेण संस्थिताः॥

(गंगावाक्यावली, पृ० १२६ मे उद्धृत)

तें गङ्गाक दर्शन, स्पर्शन, पान, नामकीर्त्तन अथवा नामस्मरण सँ पापक नाश होइछ।

दर्शनात् स्पर्शनात् पानात् तथा गङ्गेति कीर्त्तनात्।
स्मरणादेव गङ्गायाः सद्यः पापात् प्रमुच्यते॥

भारत मे कतेको नदी, कतेको पर्वत आ कतेको स्थल पुण्य मानल अछि। एहि सभक निर्देश गङ्गावाक्यावली मे कयल गेल अछि। पवित्र नदीसभ मे सरयू, गण्डकी, सिन्धु, चन्द्रभागा, कौशिकी, ताप्ती, गोदावरी, भीमा, पयोष्णी, कृतवेणिका, कावेरी, तुङ्गभद्रा आदि पद्मपुराण मे उल्लिखित अछि जतए स्नान कय मनुष्य निष्कलुष भय जाइछ। (द्रष्टव्य : गङ्गावाक्यावली, पृ० २५२)

तथापि गंगाक महिमा सर्वोपरि। ई वैष्णवी थीकीह। ई शिवरूपा थीकीह। मत्स्यपुराणक वाक्य अछि—

सर्वोत्तमां महादेवीं सर्वोत्कृष्टां वरप्रदाम्।
अन्यतीर्थसमां कुर्युस्ते वै निरयगामिनः॥

नैमिष, पुष्कर, गोतीर्थ, सिन्धुसागर, गया, अम्बा, धेनुक, कनखल, प्रयाग, काशी, चम्पक, हंसप्रतपम, ऋणमोचक प्रभृति तीर्थसभ मे सँ अधिकांश गंगाक तट पर अवस्थित अछि। ई तीर्थ सब मुक्तिक्षेत्रान्तर्गत मानल गेल अछि। गंगाद्वार ओ दशावर्त्त मे गंगास्नान सँ छए विश्वजित यज्ञ करबाक फल प्राप्त होइछ। कनखलक गोविन्द ओ रुद्रक पूजन गंगास्नानोपरान्त फलवान् होइत अछि। कनखलक समीप पश्चिमवाहिनी गङ्गा मे स्नान शिवसन्निधान थीक। एवंप्रकारें प्रयाग, काशी ओ चम्पकतीर्थक उत्तरवाहिनी गङ्गा मुक्तिदायिनी थीकीह। गङ्गा ओ यमुनाक सङ्गम कामिक तीर्थ कहल जाइछ। गङ्गा ओ गण्डकीक संयोग मे चम्पक तीर्थ अछि जे महापातकनाशी अछि। गङ्गाद्वार, प्रयाग अथवा गङ्गासागर कोनहु गाङ्गतीर्थक सेवन सँ ब्रह्मा, विष्णु ओ शिवक सायुज्य उपलब्ध होइछ।

तीर्थ माहात्म्यक प्रसंग सर्वत्र विद्यापति अपन पौराणिकताक निर्वाह कयलन्हि अछि। उपर कहल गेल अछि जे पुराण हुनक प्रधान उत्तमर्ण छल। गंगामाहात्म्य-निरूपण मे विभिन्न पुराणसभक शब्दार्थग्रहण एकर प्रबल प्रमाण अछि। भूपरिक्रमण जकाँ एहिठाम विद्यापतिक मौलिकताक दर्शन तऽ नहि होइत अछि; मुदा जाहि चमत्कारक संग ओ पुराणोक्तवाक्य सभ कें एक सूत्र मे गुम्फित कयलन्हि, ओहि सँ प्रतिपाद्य विषय आओर प्रयोजन मे विशेष आकर्षण देखना जाइछ। पुराणसभ मे प्राप्त असंहत ओ विकीर्ण वाक्य सभक बीच संश्लेषण उपस्थित कय अपन समन्वयवादी शास्त्र-प्रवृत्ति ओ प्रतिभाक परिचय विद्यापति दयलन्हि अछि। वस्तुतः कोनहु तीर्थक माहात्म्य लय एतेक विस्तृत ओ स्वतन्त्र निरूपण ने भेल छल, ने होयत।

गयापत्तलक तथाविध धर्मशास्त्रीय निबन्धग्रन्थ थीक जाहि मे श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदानादि पितृकृत्यसभक वर्णनक संग गयातीर्थक माहात्म्य सप्रमाण राखल गेल अछि। एहिठाम प्रेतशिला, विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद, कश्यपपद आदि तीर्थ-स्थानक परिचय भेटैछ। श्राद्धकृत्य मे गदाधर कें प्रधान तीर्थ मानल गेल अछि। तें पोथीक आरम्भ 'ॐ गदाधराय नमः' वाक्य सँ कयल गेल अछि। एहि ग्रन्थ मे फल्गुक माहात्म्य बड़ अछि, कारण पापक्षय लेल ओ पितरादिक तर्पणक लेल फल्गुस्नान विहित अछि।

कर्त्तव्य कर्मक सम्पादन मे भक्ति ओ श्रद्धा होयब आवश्यक अछि। तकरे धर्माचरण सेहो कहल जा सकैछ। एहि सँ विशेष अभ्युदय ओ निःश्रेयस दुहूक सिद्धि होइछ। विद्यापतिक मन्तव्य अछि : भक्तिश्रद्धापुरःसरमेव सर्वं कर्म विशेषमापादयति, अतो भक्तिश्रद्धे अवश्यमेव कर्त्तव्ये कर्मणि कर्त्तव्ये। (द्रष्टव्य : गंगावाक्यावली पृ० १०८) विधिरूप श्रद्धा अछि, ओकर आचरणप्रवृत्ति श्रद्धा। निषेधरूप वैराग्य अथवा अनासक्ति अछि। श्रद्धा ओ भक्तिक कल्पहि मे अनासक्ति निहित रहैछ। श्रद्धा एवं भक्तिक सम्पादन सँ सदाचरण सम्भव होइत अछि। कर्त्तव्य कर्मक अकरण भेल अधर्म ओ पाप। ओ सर्वथा त्याज्य अछि। कर्त्तव्य कर्म जीवनादर्श अछि। यान्यनवद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि नो इतराणि। (तैत्तिरीयोपनिषत्, १-११-४) एहि जन्म मे पाप विषय सँ निवृत्त भय पुण्याचरण करणीय अछि। पुण्य की थीक तकर स्पष्टीकरण पुरुषपरीक्षाक अनुशयी कथा मे मुनि द्वारा कयल गेल। "दोसराक द्रव्य कें हरण नहि करब, परहिंसा सँ विरत रहब आदि निवृत्ति, तथा दया, दान, रक्षण, यजन आदि प्रवृत्ति जे वेदबोधित अर्थात् धर्म-सम्मत अछि, तकरे फल पुण्य थीक।

(द्रष्टव्य : पुरुषपरीक्षा, पृ० ११६)

फलतः पुण्याचरण धर्माचरण थीक। पुण्यहिं सँ त्रिवर्गक—अर्थ, काम ओ मोक्षक-सिद्धि होइछ। जाहि प्रकारें औषधि सँ व्याधिक शमन होइत अछि, तहिना पुण्य सँ पापक नाश होइछ।

भेषजेन यथा व्याधिरपगच्छति रोगिणः।
पुण्येनापि तथा मन्ये पापं नश्यति पापिनः॥

(पुरुषपरीक्षा, पृ० १२०)

एहिवर्गक मूल धर्म थीक ; कारण धर्महि सँ अर्थ ओ कामक सिद्धि होइछ। धर्मपरक अर्थ ओ धर्मपरक काम मात्र मंगलप्रद होइत अछि। अर्थ ओ काम

तऽ स्वतन्त्र रूपें पुरुषार्थ अवश्य थीक। मुदा दुहूक मूल धर्मंहि मानल जाइछ। लौकिक एवं पारलौकिक जीवन मे जीवक अभ्युदान सँ सम्बद्ध विधि ओ निषेध एकर परिधिक अन्तर्गते अछि। तैं अर्थ ओ कर्मक धर्ममूलकता अखण्डित रहबाक अछि। अर्थप्राप्तिक अनन्तर यज्ञ, देवायतननिर्माण, दानादिकृत्य सँ वैयक्तिक ओ सामुदायिक मंगल होइछ। एहि लेल शैवसर्वस्वसार (अथवा शम्भु-वाक्यावली), गंगावाक्यावली, दानवाक्यावली, दुर्गाभक्तितरंगिणी प्रभृति धर्मग्रन्थ मे यज्ञदानादिक विधान अनिवार्य रूपें कथित अछि। धनलाभक फलभाजन केओ तखने होइछ, जखन ओ धर्मबोधित सुखक अनुभव करैत अछि।

एवंप्रकारें पुरुषार्थरूप काम धर्मसम्मते होइछ। काम एक गोट मानसिक सहज वृत्ति थीक; ई सुखोपभोगक प्रेरक थीक। मनोविद्याक शब्दावली मे एकरा आकर्षण ओ चेतनाक आत्मविस्तृतिक समस्त क्रियाकलापक मूलाधारक रूप कहि सकैत छी। सामान्य शब्दावली मे काम शृङ्गार मे प्राप्त सुखक पर्यायरूप गृहीत अछि। विद्यापति द्वारा कामक विभिन्नरूपक अभिव्यक्ति स्थान-स्थान मे भेल अछि। मुदा प्रस्तुत प्रसंग मे काम शृङ्गारपरक अर्थ मे राखल गेल अछि। धर्म ओ अर्थ दुहूक फल कामहि मानल गेल अछि।

> शृङ्गारः स रसः प्रोक्तः कामः शृङ्गारजं सुखम्।

तत्पश्चात् वाक्य अछि—

> त्रिवर्गेषु परः कामः फलं धर्मार्थयोरपि॥

(पुरुषपरीक्षा, पृ० १३०)

ओना तऽ एहि संकुचित अर्थ मे प्रयुक्त कामीक पाँच गोट प्रकार पुरुषपरीक्षा मे कथापञ्चक द्वारा निरूपित अछि। तथापि विद्यापति अनुकूल, दक्षिण, विदग्ध, धूर्त्त ओ कस्मर पाँचहु मे अनुकूल कें सर्वाधिक अनुकूल मानलन्हि। एहि प्रकारक नायक धर्मशृङ्गारी होइछ, ओ तथाविध प्रेम सीता ओ रामक धर्मशृंगार सँ युक्त होइत छथि।

> भूयादेकमुखं प्रेम यूनोर्जन्मनि।
> धर्मशृङ्गारसंयुक्तं सीताराघवयोरिव॥

(पुरुषपरीक्षा, अनुकूलकथा, पृ० १२१)

तथाविध मन्तव्य अन्य ग्रन्थहु मे विद्यापति रखलन्हि। तुलनीय—

धम्म सहित सिंगार रस कव्व कला बहुरंग, कीर्तिपताका, पृ० २

सुपुरुष पेम सुधनि अनुराग, पदावली, ७।

पुरुषार्थचतुष्टय मे मोक्ष कें भारतीय दर्शन परमपुरुषार्थ मानलक अछि। मोक्षस्वरूप लय दार्शनिक लोकनिक बीच मतभेद देखना जाइछ। "केओ कहैत छथि जे मोक्ष नित्य ओ आत्यन्तिक सुखोदय थीक। दोसर कहैत छथि जे मोक्ष दुःखाभाव थीक, मुमुक्षु एकरे इच्छा करैत छथि। काशी मे शरीर-त्याग सँ, आत्माक साक्षात्कार सँ तथा त्रैलोक्यनाथक भक्ति सँ तत्त्ववेत्ता लोकनि कें मोक्ष सिद्ध होइछ।"

मोक्षं तावद् वदन्त्येके नित्यात्यन्तसुखोदयम्।
दुःखाभावं परे ब्रूयुर्मुमुक्षुर्यस्तमिच्छति ॥
काश्यां तनुपरित्यागात् साक्षात्कारेण चात्मनः।
भक्त्या त्रैलोक्यनाथस्य मोक्षः सिद्धयति तद्विदाम् ॥

(पुरुषपरीक्षा, पृ० १५५)

वस्तुतः मोक्ष भौतिक दुःखक आत्यन्तिक अपाय थीक; ई संसार सँ निःसरण थीक। पुराण मे जीव ओ ब्रह्मक एकता कें मुक्ति कहल गेल अछि। भागवत-पुराणक वाक्य अछि: मुक्तिर्हि त्वान्यथारूपं स्वरूपेण व्यवस्थितिः (भा० पु० २-१०-६)। अज्ञानकल्पित कर्तृत्व, भोक्तृत्व आदि अनात्मभावक परित्याग कय अपन वास्तविक स्वरूप परमात्मा मे स्थित होयबे मोक्षभाव थीक। वेदान्ती लोकनि अज्ञानग्रन्थिक नाश कें परमात्मा मे जीवात्माक लय कें मोक्ष कहलन्हि अछि—अज्ञानमयग्रन्थेर्भेदो यस्तं विदुर्मोक्षम्। वासना सँ बद्ध होयब बन्धन भेल; ओहि सँ मुक्त होयब मुक्ति। जखन साधना मे भोगविषय सँ विराग उत्पन्न होइछ, जखन विवेकज्ञानक उदय सँ इन्द्रिय निष्क्रिय भय जाइछ, तखने पारमार्थिकताक प्राप्ति होइत अछि। मन कें विषयरहित कयलहुँ, तऽ मुक्तिक पथ सुगम भेल। इन्द्रियगम्य विषयक ग्रहण मे असमर्थता मोक्ष नहि। मुमुक्षु कें यम-नियम, प्राणायाम-प्रत्याहार, ध्यान-धारण, आसन-समाधि आठहुँ अंग सँ सम्पन्न योगक सेवन करबाक चाही। एहि प्रसंग पुरुषपरीक्षा मे कहल अछि: चिन्त्यमाने ह्यात्मनि यदा विषयव्यावृत्तं मनो निश्चलतां याति तदात्मनः प्रत्यक्षं भवति, इति मुक्तेरुपायः। (पुरुषपरीक्षा, पृ० १५८) आत्मचिन्तन लय जखन मन विषय सँ हटि निश्चलता कें प्राप्त करैछ, तखन आत्मसाक्षात्कार होइछ, ई मोक्षक उपाय थीक। एकर समर्थन मे ओतहि निम्न उपनिषद्वाक्य उद्धृत अछि:

निरस्तविषयासङ्गं संनिरुद्धं मनो हृदि।
यदा यात्यमलीभावं तदा तत्परमं पदम्।

मोक्ष-प्राप्ति ज्ञान अथवा भक्ति द्वारा होइछ। पुरुषपरीक्षाक चतुर्थ परिच्छेद मे विद्वान् विद्यापति निर्बन्धी, निःस्पृह एवं लब्धसिद्धि कथात्रय द्वारा प्रतिपादित कयलन्हि अछि जे मोक्ष-प्राप्तिक साधन ज्ञान थीक। ज्ञानार्जन कय विषयवस्तुक सान्निध्यहु मे जनिक हृदय विकृत नहि होइछ, ओ जीवन्मुक्त कहबैत छथि। जीवितहुं एहन व्यक्ति निर्बन्धी भऽ जाइत छथि। लब्धसिद्धि परमात्माक ज्योतिः-स्वरूप शरोर मे लीन रहैत छथि। तखन हुनका सायुज्यरूप मुक्ति उपलब्ध होइछ। भक्ति तऽ अनुरागविषय थोक। एकर पर्याय उपासना थीक। एहि ठाम उपास्य-परमात्मा द्वारा आत्मा वरणोय भय जाइछ। फलस्वरूप भक्तिक साध्य ओ ज्ञानक साध्य एकहिं अछि। भक्तहुँ भक्ति द्वारा परमपदक अधिकारी बनैत छथि। गंगावाक्यावली मे कहल अछि : उपास्यतानिश्चयो भक्तिः क्वचिदुपासनाऽ-प्युच्यते, पृ० १०८; देश, काल, व्यक्ति आदिक भेद सं भक्तिक विभिन्न रूप देखना जाइछ। श्रवण, दर्शन, कीर्तन, स्मरणादि सं भक्ति साध्यरूपा भय देवत्व प्राप्ति मे पर्यवसित होइछ। गंगावाक्यावली, शैवसर्वस्वसार, दुर्गाभक्तितरंगिणी प्रभृति अर्चनविषयक ग्रन्थ मे श्रुतिपुराणादि वाक्य द्वारा प्रमाणित कयल गेल अछि जे भक्ति सं परमपदक प्राप्ति होइत अछि।

किन्तु लोकविद् लोकगुरु विद्यापतिक दृष्टि मे तऽ बुद्धिमत्ता लोकद्वय-साधनी चातुरी थीक—पुरुषार्थचतुष्टयक सार्थकता लोकसाधना सँ होइछ। शास्त्र-चिन्तनक साध्य मात्र वैयक्तिक उत्थान नहि, सामुदायिक जीवनक उन्नयनो अछि। एतदर्थ स्वस्थ एवं सुदृढ़ समाज ओ राष्ट्रक आवश्यकता होइछ। सबल राष्ट्रक लेल शस्त्रविद्या चाही। सबल राष्ट्रहिं मे शास्त्र-चिन्तन सम्भव होइछ। तैं श्रुति-स्मृतिपुराणादिपारंगत पण्डित मानलन्हि जे शस्त्रविद्या स्वभावहिं शास्त्रविद्याक उपर अछि। वैदिक ॠषिक प्रार्थना छल : हे परमात्मन्, अहां तेज थीकहुँ, हमरा तेज दिअ। अहां वीर्यस्वरूप थोकहुँ, हमरा वीर्यवान् बनाउ। अहां बलस्वरूप थीकहुँ, हमरा बलवान् कय दिअ। 'तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि। बलमसि बलं मयि धेहि। (यजुर्वेद १९-९)

विद्यापति बुझलन्हि जे मात्र बौद्धिक चिन्तन सं जीवनक उत्थान सम्भव नहि। एकरा लेल तेज, वीर्य ओ बलक नितान्त आवश्यकता अछि। लोकसिद्धिक सर्वाधिक प्रभावशाली साधन अदम्य शक्ति थीक। तदर्थ भूपरिक्रमण एवं पुरुषपरीक्षाक ग्रन्थावतरण मे पुरुषत्वक तीनि गुण वीरत्व, बुद्धि ओ विद्या मे प्रथम स्थान वीरत्व कें देल गेल।

वीरः सुधी सविद्यश्च पुरुषः पुरुषार्थवान्।
तदन्ये पुरुषाकाराः पशवः पुच्छवर्जिताः॥

वीरपुरुषे पुरुष कहबाक योग्य होइत अछि। एकर विपरीत जे छथि से त' पुरुषाकार छथि। बुझू, ओ पुच्छविहीन पशुए थीकाह। एवं प्रकारें कीर्तिलताक प्रथमपल्लव मे भृंगी भृंग सँ पुछैत अछि—हे भृंग, कहू, संसारक सार की थीक? भृंग उत्तर दैछ : हे मानिनि! मान पूर्वक जीवन-यापन ओ वीरपुरुषक अवतार।

भृङ्गी पुच्छइ भृङ्ग सुनु को संसारहि सार।
मानिनि जीवन मान सञो वीरपुरुष अवतार।

(कीर्तिलता, पृ० ५)

वीरपुरुषक परिचयार्थ विद्यापति मुनिक माध्यमें वीरक लक्षण दयलन्हि : "वीर शौर्य, विवेक ओ उत्साह सँ मण्डित होइत छथि। अपन माता-पिता कें अलंकृत करबाक हेतु ओ त' कोनहुँ कुल मे उत्पन्न होइत छथि। कातरताक त्याग शौर्य्य थीक। हित ओ अहितक विचार विवेक थीक; तथा क्रियाक दिश प्रवृत्त होयबाक नाम थीक उत्साह। एहि तीनू गुण सँ युक्त वीर होइत छथि"। (विशेष द्रष्टव्य : भूपरिक्रमण, पृ० २७)।

स्पष्टतः उपर्युक्त चिन्तन मे पण्डित विद्यापतिक लोकधर्मिता निहित अछि। अपन युगक राजामहाराजा सभक दरबार मे हुनक स्थान दरबारी कवि अथवा दरबारी पण्डित मात्रक नहि छल। राजकीय नीति-निर्धारण ओ राष्ट्र-निर्माण हुनक हाथ छल। सन्धि-विग्रह ओ युद्धसञ्चालन तक हुनक निदेशन सँ होइत छल। तें वीरभावनाक सञ्चारक लेल वर्चस्-गान हुनक सामाजिक एवं सार्वजनीन चेतनाक प्रतिनिधित्व करैछ। देश-रक्षण सेहो हुनक शास्त्रीय चिन्तनक प्रयोजन अछि।

तदर्थ वीरपूजनक उदाहरणस्वरूप विद्यापति अपन कीर्तिलता ओ कीर्त्तिपताका दुइ ग्रन्थक रचना रणविजयी प्रतापशाली सामयिक दुइ शासकक शौर्य्यगान लय कयलन्हि। किन्तु एतबहि सँ हुनका सन्तोष नहि भेल। दुर्गा पूर्वकाल सँ शक्ति-रूपा बनि पूजित छलीह। देवीमाहात्म्य मे कहल छल : त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या— दुर्गा त्रिलोकक शक्ति! बृहद्धर्मपुराण मे देवीपूजनक प्रसङ्ग सेहो कहल छल जे शत्रुक सङ्ग लड़बाक लेल अस्त्रशस्त्रक संग्रह क्षत्रिय कें करबाक चाही। तें हमर विद्यापति अपन दुर्गाभक्तितरङ्गिणी मे शौर्य्य प्राप्तिक लेल शक्तिपूजन कें धार्मिक कृत्यक रूप मे विस्तार सँ रखलन्हि। एतए अपराजितापूजन, रेवन्तपूजन प्रभृति विधान शौर्य्यव्रतक रूपहि मे कथित अछि। मिथिलाक ब्राह्मणवंशी महाराजा द्वारा रेवन्त पूजनक विधान तऽ क्षात्रधर्म नहि रहि राजधर्म बनि गेल। विजय-कामना लय विजया दशमी मे शक्तिक पूजन सभक लेल मानल अछि। किन्तु एहि

उपलक्ष मे नीराजन ओ अपराजितापूजन विशेष रूपेण सैन्यशक्ति लय जयलाभार्थ कथित अछि ।

ॐ जयदे वरदे देवि दशम्यामपराजिते ।
धारयामि भुजे दक्षे जयलाभाभिवृद्धये ॥
बलमाधेहि बलय मयि शत्रो पराजयम् ।
त्वद्धारणाद् भवेयुर्मे धनधान्यसमृद्धयः ॥

(दुर्गाभक्तितरङ्गिणी, पृ० २०६)

राजाक नीराजन मे सैन्यगण द्वारा अस्त्रधारण होयबाक चाही । ततः पर राजा सभक यात्रा कहल अछि । (द्रष्टव्य दुर्गाभक्तितरङ्गिणी, पृ० ११०) एहि अवसर पुण्याह, वेदध्वनि, गीत ओ वाद्यध्वनिक आयोजन सेहो होयबाक चाही । सजि धजि उत्तर अथवा पूर्व दिशाक प्रति यात्रा एहि रूपक होयबाक चाही जेना अश्व आकाश मे उठि गेल, हाथी पृथ्वीक विदारण कय देल ।

स्पष्टतः उपर्युक्त विधान सँ बुझना जाइछ जे विद्यापति द्वारा प्रतिपादित अपराजितापूजन लय बलनीराजन आधुनिक सैन्याभ्यासक (मिलिटरी पैरेड) प्रतिरूप रहल होयत । ई मानबाक थीक जे अपराजितापूजन मैथिल दुर्गापूजनक निजी वैशिष्ट्य थीक । बङ्गाल मे एकर प्रचलन नहि । उल्लेख्य जे चण्डेश्वर ठाकुर सेहो अपराजिता पूजनकें अपन कृत्यरत्नाकर मे शिष्टाचार सँ अनुमोदित कहने छलाह—अथ शिष्टाचारपरिप्राप्ता दशम्यपराजिता (कृत्यरत्नाकर, पृ० ३६५) । ओतहि (पृ० ३४४) रेवन्त-पूजनक अश्व कें मन्त्र द्वारा कहल अछि :

विकृतं यदि गच्छेथाः युद्धेऽध्वनि तुरङ्गम ।
रिपून् विजित्य समरे भर्त्रा सुखी भव ॥

एहि कें आओर परिपुष्ट कय विद्यापति कहलन्हि :

विकृतं यदि गच्छेथा युद्धेऽध्वनि तुरङ्गम ।
रिपून् विजित्य समरे सह भर्त्रा सुखी भव ॥
तुरङ्गम चिरं जीव परशस्त्रैरलक्षितः ।
सदा मां समरे रक्ष स्वामिकार्यं सदा कुरु ॥

दुर्गाभक्तितरङ्गिणी विद्यापतिक अन्तिम कृति थीक। रचनाकाल मे हुनक आयु सत्तरिक लगभग छल। जीवनक शेषचरण मे धर्मगुरु बनि आचारनीतिक उपदेष्टा बनब स्वाभाविके। मुदा लोककृत्य लय पूजनग्रन्थक माध्यमें जनता मे बल सञ्चार करबा मे कतेक पैघ कर्मयोगी ओ जननायक छलाह, तकरो अनुमान सहज कयल जा सकैछ। लगैछ, मध्ययुगक 'धर्मसँमूढ़चेता' मैथिल शासक लोकनि ओ जनशक्ति कें 'गीता'क पाठ पढ़ाय विषम परिस्थिति सँ संघर्ष करबाक लेल आत्मबल हमर कालदर्शी ओ लोकदर्शी महापुरुष विद्यापति आजीवन दैत रहलाह। इएह कारण थीक जे दिल्लीक शासनक अधीन रहितहुँ मिथिला ओहि युग मे बहुत किछु अंश मे स्वतन्त्र रहि अपन संस्कृति, न्याय-व्यवस्था, नियम-धर्म, लोक-संरक्षण आदि करैत रहलीह।

एहि मे सन्देह नहि जे विद्यापतिक संस्कृत मे रचित स्मृति-धर्म-निबन्धनादि ग्रन्थ सभक शास्त्रीय अनुशीलन सँ स्पष्ट अछि जे हमरा लोकनि कें एक गोट एहन महान् शास्त्रज्ञ, तत्त्वदर्शी ओ लोकधर्मी पुरुषक दर्शन होइछ जनिक संस्पर्श सँ मध्ययुगक भारतीय जनजीवन कें विचार ओ चिन्तनक नवशक्ति उपलब्ध भेल छैक। एहि सँ सामुदायिक एवं वैयक्तिक पोषण आओर उन्नयनक लेल नवीन दिङ्निर्देश भेटल छैक।

शास्त्रविद् विद्यापतिक अभिज्ञता ओ पारदर्शिता मात्र शास्त्रीय विचारवैभव अथवा शब्दार्थोन्मेष मे पर्य्यवसित नहि भय जाइछ। विचारक रूपायन अथवा अभिव्यक्ति लय सेहो ओ क्रान्तदर्शी छलाह। भाषा विचारक अभिव्यक्ति थीक, ई त' लोकोक्ति जकाँ भय गेल अछि। लोकनायक विद्यापति भाषामर्मज्ञ छलाह, तैं लोकरुचिक अनुरूप भाषाक उपयुक्तताक पोषक छलाह। हुनक मान्यता छल जे जनसामान्य द्वारा ग्राह्य होयबाक लेल भाषा सुगम, सुबोध ओ सशक्त होयबाक चाही। तैं संस्कृत मे रचित धर्मादिग्रन्थक विचार मे पुराण हुनक उत्तमर्ण छल, ताहि रूपें अभिव्यक्तिओ पौराणिक शैलीक अनुरूप व्यासप्रधान रहल अछि। भाषाशैली लय विद्यापति अर्थोन्मेषक उपर विशेष ध्यान दयलन्हि अछि। फलत: कतहुँ अर्थसंप्रेषण मे दुरूहता अथवा दुर्बोधता नहि आयल अछि। भाषाक सहजता ओ नैसर्गिकता अलङ्करण बनल अछि।

प्रथम दुइ संस्कृत रचना भूपरिक्रमण ओ पुरुषपरीक्षा मे स्थल-स्थल पर काव्यानुरक्ति अवश्य देखना जाइछ। भूपरिक्रमणक भूमिका पौराणिक अछि; पौराणिक परिवेष्टन मे कथावृत्त ओ देशवर्णन कें अनुपम कलात्मकताक संग राखल गेल अछि। पुरुषपरीक्षा मे देशवर्णन कें त्यागि मात्र नीति-राज-पुरुषार्थविषयक कथा-सभक नियोजन भेल अदि। दुहू ठाम कथाशिल्प लय जे गुण अपेक्षित अछि, से

देखबा मे अबैछ। मानव प्रकृतिक सर्वाङ्गीण ओ सूक्ष्म अभिनिवेश, इतिवृत्तता मे कल्पनाक आह्लादकारी पुट, आधिकारिक कथा मे आनुषङ्गिक कथाक अन्तर्निवेश, इतिहास मे काव्यक फोरन दय सम्भाव्यक प्रकल्पन, जीवन-दर्शन लय महत् मंगलकारी सन्देश प्रभृति विद्यमान अछि। फलतः कथावतरण नीतिक अनुरोध, बाणीक गुणवैभव ओ कथारसक चमत्कारपूर्ण प्रदर्शनक संग भेल अछि। कविक कथन अछि :

नयानुरोधेन गुणेन वाचां कथारसस्यापि कुतूहलेन।
बुधोऽपि वैदग्ध्यविशुद्धचेताः प्रपञ्चमाकर्णयिता न किं मे ॥

(भूपरिक्रमण पृ० ३; पुरुषपरीक्षा पृ० २)

तहिना—

तत्र रीत्या हि लोकस्य काव्यरीत्या च भूमिप।
लघ्वीकृत्य पद्यवाक्यं तेने विद्यापतिः कविः ॥

मुदा भाषाशैली कतहुँ श्रमोत्पादित अथवा बुद्धिविलास नहि बनल अछि। जतए जतए कवि विद्यापति भावावेश लय भाषा कें अलङ्कृत कयने छथि, ओतए अर्थसंप्रेषण मे एकटा कलात्मक चमत्कार देखना जाइछ। तथापि कतहुँ व्यर्थ-पाण्डित्यक प्रदर्शन नहि अछि।

अन्य जतेको ग्रन्थ उपलब्ध अछि, सभक मुख्य प्रतिपाद्य पूजन अथवा धर्म-निबन्ध अछि।

सभकें भाषाशैली लय पौराणिक काव्य परम्परा मे राखल जा सकैछ। सर्वत्र कथ्य ओ प्रतिपाद्य विषय सहज एवं प्रसन्न भाषाशैली मे निबद्ध अछि। भाषिक रूढ़िनिबद्धता अथवा अनौदार्य लोकवादी शास्त्रकारक दृष्टि मे अक्षम्य दोष अछि। तैं जाहि भाषिक नीतिक उद्घोष हुनक प्रथम अवहट्ठ-रचना कीर्तिलताक भूमिका मे अवहट्ठक लेल भेल, तकर पालन हुनक संस्कृत रचना सभ मे भेल अछि। लोकाभिव्यक्तिक दृष्टिएँ अपभ्रंश हुनक काल मे रूढ़ ओ विशुद्ध परिनिष्ठित भय गेल छल। ओहिकें सप्राण ओ लोकोपयोगी करबाक लेल विद्यापति ओहि मे तत्कालिक जनभाषाक पुट संप्रेषणक लेल दयलन्हि। एहि भाषा-तत्त्व कें स्पष्ट करैत ओ कहलन्हि :

सक्कय वाणी बुहअन भावइ, पाउअ रस को मम्म न पावइ।
देसिल बअना सब जन मिट्ठा, तैं तैसन जम्पओ अवहट्ठा ॥

विवेक ई जे लोकजीवनक संस्पर्श तथा लोकतत्त्वक समन्वय सँ सम्पृक्त भावबोधक अभिव्यक्ति होयबाक लेल भाषा मे सामयिक संकेत अनिवार्य होइछ। ई विद्यापति कें मान्य छल। तें हुनक भाषा पर प्रादेशिक ओ सामयिक प्रभाव स्वस्थ एवं प्रगतिमूलक प्रवृत्तिक परिचायक थीक।

उपर्युक्त भाषासृजन ओ सम्बर्धन लय विद्यापति मे अपार शक्ति छल। हुनक अवहट्ठग्रन्थद्वय मात्र मे नहि, अपितु पदावली ओ संस्कृत रचना सभ मे एहि आत्म-ओजक जीवन्त निदर्शन उपलब्ध अछि। भाषाविशेष मे भाषान्तरित प्रयोग भाषाविषयक स्वस्थताक प्रतीक अछि। प्रवाहमयता ओ दैनन्दिन जीवनक भावप्रेषणीयता लय लोकभाषाक प्रचलित शब्द ओ विजातीय भाषाक लोकगृहीत शब्द संस्कृत मे ऐश्वर्यवृद्धिक लेल वाञ्छनीय छल। युगद्रष्टा ओ युगचेता विद्वान् विद्यापति एहि भाषिक तत्त्वक आग्रहो छलाह। ओ बुझैत छलाह जे भाषा मे नव्यप्रतीकक संयोजन नव्य जीवनक अभिव्यक्तिक लेल स्वाभाविक कल्प थीक। लोकप्रचलित शब्द अर्थोन्मेषक लेल आवश्यक भय जाइछ। फलतः विद्यापति अपन भाव कें लोकग्राह्य एवं लोकोपयोगी करबाक लेल तद्युगीन लोकजीवनक प्राणस्वरूप शब्द कें संस्कृत रचनासभ मे रखलन्हि अछि। वस्तुतः एहि प्रकारक भाषाशैली हुनक भाषा लय ग्राहिका-शक्तिक द्योतक थीक।

खेपी, खोज, साहनि, आधी, डेढ़ी, चाढ, राउत, साहु, मोला, करेलो, मगही, खारी, महाजन, प्रभृति शब्द मैथिलीक निजी सम्पत्ति थीक। विद्यापति एहि सभक प्रयोग निश्शंक भाव सँ अपन संस्कृत रचना मे कयलन्हि अछि। उदाहरणार्थं दूइ चारि गोट वाक्य एतए राखब सङ्गत होयत :

बिदेश्यपाद् यदितः खोजकरणार्थं मानुषो न गच्छति तदनुचितं क्षन्तव्यम्। सम्प्रति सन्देशत्वेन स्थूलपूगश्लक्ष्णवराटिकासिन्दूरसुगन्धिततैलकुसुम्भ-रक्तवस्त्राणि परिगृहीतव्यानि। (लिखनावली, पृ० २७-२८)।

माय अपन बेटीक पत्र मे लिखैत अछि—विदेश गमन लय यदि एहि ठाम सँ खोज-पुछारि करबाक लेल लोक नहि जाइत अछि, तैं एहि अनुचित कें क्षमा करब। एखन सन्देश रूप मे बड़का सुपारी, विलक्षण कौड़ी, सिन्दूर, सुगन्धित तेल, केसर, लाल पटोर पठा रहल छी, से लय लेब।

उपर्युक्त उद्धरण मे 'खोज'—खोज पुछारि ठेठ मैथिली प्रयोग थीक। पुनः मानुष, सन्देश आदि तत्सम शब्द सभ मे मैथिली भाषापरक अर्थवैशिष्ट्य राखल गेल अछि।

तहिना—

भवतां धान्यखारीदशतयं डेढ़ीव्यवस्थया धान्योत्पतिकटपर्य्यन्तेन मया गृहीतम् ।

हम आहाँ सँ दस खारी धान डेढ़ी व्यवस्था पर धानक फसल होयबाक अवधि पर्य्यन्तक हेतु लेल । खारी ओ डेढ़ी मैथिली भाषाक अपन प्रयोग थीक ।

पुनः कतहुँ कतहुँ मैथिली शब्दक अनुरूप मैथिली शब्दार्थ लय संस्कृत शब्द प्रयुक्त भेल अछि । यथा—

भाविता च महिषी विषज्ञानं प्राप्य नृत्यन्ती बभाषे यत्—हे भूपाल ! त्वयि शासति पृथिवीं मम स्वामी नागः पामरेण व्यापादितः ।

(पुरुषपरीक्षा, पृ० १३३)

भाओ भयला पर रानी विषज्ञान पाबि नाचि खेलाइत बकय लगलीह—हे राजा, तोहरे शासन मे हमर स्वामी नाग कें एक पामर मारि देल ।

एहि ठाम मैथिली भाओक अनुरूप भाविताक प्रयोग भेल अछि ।

पुरुषपरीक्षाक भूमिका मे विद्वान् सम्पादक स्व० प्रो० रमानाथ झा दशाधिक एहन शब्दक उल्लेख कयलन्हि जे संस्कृत व्याकरणक अनुरूप नहि होइत अछि । एहि आधार पर प्रो० झा संस्कृतव्याकरणक ज्ञान लय विद्यापतिक बुद्धिक अपरिपक्वता कें प्रमाणित करक प्रयास कयलन्हि अछि । किन्तु हमर दृष्टिएँ तऽ एहि प्रकारक प्रयोग सब विद्यापतिक स्वस्थ भाषिक मनोवृत्तिक प्रतिफलन थीक ।

विद्यापतिक भाषिक प्रगतिशीलता एतबहि सँ शेष नहि होइछ । भाषा स्थायी नहि होइत अछि; भाषाक एकरूपता तऽ मात्र प्रकल्पना थीक । गतिशीलता भाषाक प्राण अछि । सभ्यताक नवीन विचारक सङ्ग नूतन शब्दक निर्माण अथवा विजातीय शब्दक आत्मसातीकरण भाषाक स्वाभाविक अभिव्यञ्जना ओ स्वस्थताक लेल आवश्यक थीक । दुइ भिन्न भाषाभाषीसम्प्रदायक सम्पर्क मे एक भाषाक दोसर भाषा सँ प्रभावित होयब ओ सङ्गहि, दोसर भाषा कें प्रभावित करब स्वाभाविक कल्प थीक । भाषा मे 'कूपधर्म' कें स्वीकार कयने भाषा शक्तिविहीन ओ कालान्तर मे निष्प्राण भय जाइछ । तेँ संस्कृतभाषाक सजीवता ओ सामयिक आग्रहक लेल भाषाविद् विद्यापति अरबी, फारसी प्रभृति विजातीय भाषा सभक शब्दहुँ कें संस्कृत भाषाक ध्वनि ओ रूपतत्त्वक अनुरूप कय प्रयोग कयलन्हि ।

उदाहरणार्थ, अरबी 'काफिर' शब्दक अर्थ अरबी भाषाभाषीक अनुसार इसलाम सँ भिन्न धर्म कें माननिहार होइत अछि । मुदा विद्यापति 'काफर' शब्दक

प्रयोग मुसलमानक अर्थ मे कयलन्हि। एहि मे भाषिक वैशिष्ट्य ध्वनि, रूप तथा अर्थ लय अछि। पुनः 'सुलतान' फारसी शब्द थीक ; एहि मे ध्वनिगत परिवर्त्तन कय विद्यापति 'सुरत्राण' संस्कृत रूप बनौलन्हि। वर्त्तमानकालार्थ मे अरबी 'हाल', जमीनक लगानक लेल अरबी पोत ओ फारसी फोतक लेल संस्कृत शब्द पोत्र, अरबी शब्द बाकी, फारसी शब्द 'दाम', अरबी 'वजह'क लेल 'ओजेह' प्रभृति कतेको विदेशी शब्द कें निश्शंक भाव सं विद्यापति प्रयुक्त कयलन्हि अछि। उदाहरणस्वरूप—

मोकद्दमश्रीसुरारिकैः रूप्यटङ्कशतचतुष्टयं समानीयनववर्षस्य हालदेयं राउतश्रीकरभूद्वारा पोत्रे प्रवेशितम्। ....विदितमस्तु भवतः राउत-श्रीमदनसिंहमहाशयेषु समानवर्षस्य तदस्य च ओजेहदामं रूप्यटङ्कशतमेकं भवतः पार्श्वेऽवपातं दापितम्। यत्र समानवर्षस्य रुप्यटङ्क—१०० तदेतत्पत्रमनुमत्य जवेन तस्य १ गतसमानवर्षस्य वाकीदामे दास्यथेति। द्र० लिखनावली, (पृ० ५०-५१)।

रैअत श्री सुरारि चारि सए रजतटाका वर्त्तमान वर्षक देय राउतश्रीकरभू द्वारा भाण्डागार मे समर्पित कराओल जाहि दामक समर्पित ४०० रजत टाका जकर सूचना आहाँ कें देल गेल।............आहाँ कें जानबाक अछि जे आहाँक लग राउत श्री मदन सिंह महाशयक वर्त्तमान वर्षक देय द्रव्य एक सए रजत टाका रहि गेल, तें एहि पत्रक अनुसार आहाँ चालू वर्षक ओ हाल सालक १०० रजत टाका दय दियैक। एहि मे चलैत वर्षक बचल दाम सेहो देल जाइन्ह।

मोकद्दम, हाल, राउत, पोत्र, ओजेह, दाम, बाकी प्रभृति संकरशब्द कें संस्कृत शब्द भाण्डार मे स्थान देब संस्कृतभाषाशास्त्रक इतिहास मे एक गोट अभूतपूर्व घटना थीक। जाहि समय देशक प्रशासकीय विभाजन करबा मे आओर शासन-पद्धति, व्यापार-नियम, कराधान, कानूनक्रियाविधि, सैन्यशक्ति आदि कें निर्धारित करबा मे शासक द्वारा फारसी भाषा कें राजकीय मान्यता छल, ओहि समय अरबी, तुर्की, फारसी प्रभृति भाषाक सन्निवेश संस्कृत मे करब 'युगधर्म' छल। विद्यापतिक नीति एहि दृष्टिएँ स्तुत्य अछि।

एही प्रकारें भूपरिक्रमण ओ पुरुषपरीक्षा कथाग्रन्थद्वय मे कतेको मुसलमानी पात्र ओ भाव कें संस्कृत रूप प्रदान करब मे कविवर विद्यापतिक तथाविध चमत्कार दर्शनीय अछि। उदाहरणस्वरूप :

पुरा हस्तिना नाम्नि नगरे महमन्दनामा यवनेश्वरो बभूव। तस्मिन्नासमुद्रं धरणीवलयं शासति तदुत्कर्षासहिष्णुः काफरराजस्तमभियोक्तुं सकलबल-

सहितस्तत्राजगाम। यवनेश्वरस्तु तमायान्तं ज्ञात्वा काम्बोजेरश्वैस्तुरुष्कैश्चाश्ववारैर्बहुभिर्लक्षैः परिवारितः पुराद् बहिर्भूय तेन समं सङ्ग्राममङ्गीचकार। (भूपरिक्रमण, पृ० २७) एहि ठाम महमन्द, काफरराज, तुरुष्क आदि शब्द भाषिक चमत्कार लय प्रयुक्त अछि।

विजातीय शब्द कें संस्कृतीकरणक प्रवृत्ति क्रान्तदर्शी भाषाविद् विद्यापतिक व्यक्तित्वक एक गोट अनुपम वैशिष्ट्य थीक। जाहि युग मे यवनविचार सँ प्रभावित होयब अथवा यवन भाषाक सम्पर्क स्थापित करब पापतुल्य बुझना जाइत छल, ओहि युग मे विद्यापतिक भाषानीति अदम्य साहसक प्रतीक प्रमाणित होइछ। वृहद्धर्मपुराणक (उत्तरखण्ड, २०-१५) निर्णय छल जे यवन-संसर्ग ओ यावनी भाषा त्याज्य अछि, दुहू सुरापान थीक ; यवन सँ देल अन्नक भोजन त' आओर अधिक त्याज्य अछि।

संसर्गो यावनश्चैव भाषा च यावनी तथा।
सुरातुल्यं द्वयं प्रोक्तं यवनान्नं ततोऽधिकम्॥

एहि परिप्रेक्ष्य मे कहब उचित होयत जे विद्यापति भाषा लय अपन युगक अत्यधिक प्रगतिशील ओ सचेतन शास्त्रकार छलाह। प्राचीन भाषा संस्कृत कें युगानुरूप कय संस्कृत भाषाक विकास मे हुनक योगदान ऐतिहासिक अछि। भाषाक लोकोपयोगी प्रयोग हुनक भाषाक अभिनव आकर्षण अछि। पुरुषपरीक्षाक सुधी सम्पादक पं० सुरेन्द्र झा 'सुमन'क अभिमत अछि : "पक्षधर मिश्रक प्रतिभा ओ प्रौढ़पदविन्यास, केशव मिश्रक पाण्डित्य ओ आलङ्कारिक आचार्यत्व हुनका मे नहि ; किन्तु भावभाषाक परिसर मे अभिनव प्रयोगक विलक्षणतें ओ अद्वितीय सिद्ध छथि। कालक अन्तराल मे कतेको ज्योतिष्मान् विद्वान् जतय झिलमिलाइत मिझाइत देखल गेलाह ततय हिनक भावभाषा बालचन्द्र जकाँ साहित्याकाश कें जगमगा रहल अछि"। (पु० परीक्षा भूमिका, पृ० छ।)

निष्कर्ष, विद्यापतिक शास्त्र-रचना सभक आकर्षण भाव ओ भाषा दुहूक चमत्कार लय अछि। दुहू मे जीवनोचित उष्णता अछि। बुधजनक संतुष्टि सँ अधिक महत्त्व हुनक दृष्टिएँ लोकसामान्यक संतुष्टि कें भेटल अछि। तदनुरूप हुनक समग्र साहित्य-रचना उपलब्ध अछि। दुर्भाग्यक विषय जे भाव ओ भाषा लय विद्यापतिक आदर्श प्रतिष्ठित नहि रहल। धर्म ओ लोकनीति लय जे उदार दर्शन विद्यापति द्वारा मध्ययुग मे उपस्थापित भेल, तकर समुचित सम्मान विद्वत्समाज मे ओहूकाल मे नहि भेल। एहि आलोक पुरुष कें युगक अनुदार ओ श्रेण्यवादी पण्डितवर्ग 'लुब्धयाचकभाषाकवि'-लोभी भिक्षुक भाषाकवि कहि उपहास कयलक।

शास्त्रानुशासन लय समानकालिक, किन्तु प्रगतवयस्क स्मार्त नैबन्धिक श्रीदत्त मिश्र हुनक विचारक प्रबल विरोध कयलन्हि। श्रीदत्त मिश्र अपन पिता पण्डितप्रवर नागेश्वर सँ न्याय, वैशेषिक, वेद, व्याकरण, काव्य ओ ज्योतिषशास्त्र सभक शिक्षा प्राप्त कयने छलाह। ओ अपना कें आवस्थिक—श्रौतसूत्रक विधानानुरूप गार्हस्थ्याग्निक दैनिक चयन कयनिहार—घोषित कयने छलाह। एकाग्नि-दान ओ आवस्थ्याधानक प्रयोग सँ वेदबोधित धर्मक समर्थन हुनका सँ भेल। स्पष्टतः हुनका लेल विद्यापति द्वारा समर्थित उदार धर्मदर्शन एवं लोकदर्शन अमान्य छल। अन्य विरोधी इन्द्रपति, इन्द्रपतिक पुत्र प्रेमनिधि ठक्कुर तथा शिष्य लक्ष्मी उपाध्याय छलाह; तीनू गोटे दुर्द्धर्ष मीमांसक छलाह, जाहि कारणें विद्यापतिक विरोध स्वाभाविक छल। ओना तऽ वृद्ध विद्यापतिक काल मे स्मार्त्त रूपें अभिनव वाचस्पतिक कीर्ति सर्वोपरि सिद्ध भेल, आओर अभिनव वाचस्पति अपन स्मृति-निबन्धन ग्रन्थ सभ मे विद्यापतिक विचारवैभवक समर्थन कयलन्हि। तथापि ओ विद्यापतिक भाषिक उदारता कें समर्थन नहि दयलन्हि। शंकर बनि इस्लामी भाव कें प्रच्छन्न रूप सँ आत्मसात् करबाक जे मनोभाव अथवा फारसी, अरबी प्रभृति विदेशी भाषाक प्रति जे आसक्ति-भाव विद्यापति मे देखल गेल, ओहि पर अभिनव वाचस्पति कठोर प्रहार कयलन्हि। ओ अपन कृत्यचिन्तामणि मे निर्णय दयलन्हि—**'म्लेच्छभाषां न शिक्षेत। न वदेत् यावनीं भाषाम्'** 'यवनभाषा जनु बाजी'। एतबहि धरि निषेध नहि छल, यवन भाषा सँ किछु सिखबाक कल्पहुँ नहि रहल।

फलतः मध्ययुगीन मिथिलाक विचारवैभव ओ तदभिव्यक्ति मे जे औदार्य अथवा प्रगतिभाव विद्यापतिक रचना सभ सँ उत्पन्न भेल, ताहि मे गतिरोध आबि गेल। तेँ मैथिल समाजक नव-निर्माणक जे एक गोट महत्त्वपूर्ण सुदृढ़ आधारशिला हमर शास्त्र-निर्माता तापस कर्मनिष्ठ विद्यापति रखलन्हि, ओ परवर्त्ती शतक मे हिलि गेल। ई मिथिलाक दुर्भाग्य जे विद्यापति द्वारा प्रस्तुत विवृत्त सदाचार-धर्म-लोक नीति-दर्शन परवर्त्ती मैथिल स्मार्त्त लोकनिक आदर्श नहि रहल। ओहि दर्शनक पोषण एवं प्रसार मिथिलहिं सँ प्राप्त कय मिथिलाक समीपवर्त्ती प्रान्त कामरूप ओ बंग मे भेल जकर फलस्वरूप विवेकानन्द सन् धर्मनिदेशक ओ रवीन्द्र सन् काव्य-गुरुक आविर्भाव सँ आधुनिक युग मे भारतीय चिन्तनक औदार्य अक्षुण्ण रहल।

अस्तु! विद्यापति अपन युगक तत्त्वद्रष्टा, धर्मोपदेशक, लोकनायक—एतबे नहि, सेनानी शास्त्रचिन्तक छलाह। ई महान् शिल्पी जाहि अभिनिवेश ओ उपासनाभाव सँ भारतीय चिरन्तन विचारवैभव कें युगानुरूप मूर्त्तमान् कयलन्हि अछि, ओ भारतीय इतिहासक अनुपम निधि थीक। एहि अवदानक गुणानुवाद हुनक संस्कृत-रचना सभक अनुशीलन सँ निश्चित, ई हमर निर्भ्रान्त धारणा अछि।

आख्यान

कालदर्शी विद्यापतिक विशाल वाङ्मयक अन्य वैशिष्ट्य लोकाख्यान लय अछि। अपन शास्त्रीय अभिज्ञता कें युगचेतनाक सङ्ग संपृक्त करबाक आग्रह सर्वत्र हुनका मे भेटैछ। बहिर्जगतक सङ्ग सम्बन्ध लय हुनक मन सतत सचेतन छल, एहि मे सन्देह नहि।

कालदर्शी अथवा युगद्रष्टा मात्र कहि विद्यापतिक विमल व्यक्तित्वक परिचय पर्यवसित नहि होइछ। ओ तऽ अपन युगक सङ्ग गुम्फित छथि। कहबाक चाही, युगक उत्थान-पतनक सङ्ग विद्यापतिक उत्थान-पतन संश्लिष्ट अछि। विद्यापतिक जीवनकालक (ल० सं० २४१ सँ प्रायः ल० सं० ३४८) शताधिक वर्ष मे मध्य-युगक प्रायः एक शताब्दक इतिहास जीवित अछि। ख्रीष्टीय सन् १३४० ई० सँ आरम्भ कय १५२६ ई० धरि मिथिलाक इतिहास मे ओइनवार राजवंशक शासन-काल अछि। एहि वंशक प्रायः एक दर्जन राजा-रानीक राजसिंहासन लग युग-गुरुक सम्मान्य आसन पर बैसि विद्यापति हुनका लोकनि कें निदेश करैत रहलाह। ओइनवार राजवंशक 'बन्धु, दार्शनिक ओ निदेशक' रूप सँ ओ अपन वाङ्मय—संस्कृत, अवहट्ठ एवं मैथिली-मे युगानुकूल मनोधर्मिता आओर तथ्यावधारणक परिचय दयलन्हि अछि। एहि मे युगक राजनैतिक तथा सामाजिक घटनाचक्रक यथार्थाङ्कन सतर्क ओ निष्पक्षभावें भेल अछि।

फलतः मध्ययुगक इतिहासक परिचयार्थ विद्यापतिवाङ्मयक अपन महत्त्व अछि। विद्यापति कें दरबारी कहब हुनक व्यक्तित्वक अपमान होयत। हुनका मे दरबारीक चाटुकारिता नहि छल। ई अवश्य जे ओ राजगुरु-रूपें त्रिभुवनरूपी क्षेत्र मे शासक वर्गक कीर्तिलताक प्रसारक लेल काव्यस्तम्भ पर मञ्च स्थापित कयलन्हि :

तिहुअण खेत्तहिं कांइ कित्तिवल्लि पसरेइ।
अक्खर खम्भारम्भ जउ मंचो बंधि न देइ॥

कीर्तिलता, पृ० ५

सङ्गहि, जतए जखन अवसर उचित बुझना गेल, ओतहिं ओ छोट पैघ आश्रयदाता, प्रवीण-अप्रवीण आमात्य, वीर सेनापति, राजा-राउत सभक अनु-कीर्तन कयलन्हि। फलतः सर्वत्र विद्यापतिक इतिहास-चेतना युगजीवनक सङ्ग तरङ्गायित भेल अछि।

ई इतिहास-सिद्ध अछि जे महाकविक आविर्भावकाल मिथिलाक इतिहास मे एक गोट विक्षोभकाल रहल अछि। मिथिलाक चारू कात यवन सेनानी-राज्य मधुमाछीक छत्ता जकाँ बनि गेल छल। कर्णाटकुलक चूड़ामणि तऽ शुरू-शुरू अपन अतुल भुजपराक्रम सँ 'सुरत्राण' सभक वाहिनी कें परास्त कय 'म्लेच्छमहार्णव' सँ नग्न मिथिलाभूमिक उद्धारक अवश्य भेलाह; मिथिलाक भाग्याकाश मे पूर्णचन्द्र जकाँ अपन षोडशकला सँ मिथिलाक कला-कौशल, ज्ञान-विज्ञान, धर्म-संस्कृति कें आलोकित कयलन्हि अवश्य। मुदा भाग्यविपर्यय लय ओ शक संवत् १२४५, तदनुसार १३२३-२४ ई० मे दिल्लीक ग्यास-उद्दीन तुगलक सँ परास्त भय नेपाल मे पलातक वीर बनि शासक भेलाह :

वाणाब्धि-बाहु-शशि-सम्मित-शाकवर्षे
पौषस्य शुक्लदशमी-क्षितिसूनुवारे।
त्यक्त्वा स्वपट्टनपुरीं हरिसिंहदेवो
दुर्दैव-देशित-पथे गिरिमाविवेश॥

(मिथिला मे प्रचलित आनुश्रुतिक श्लोक; डा० उपेन्द्र ठाकुर—मिथिलाक इतिहास, पृ० २८४, सँ उद्धृत)। किछु विद्वान् लोकनिक मतें ग्यास-उद्दीन हरिसिंहदेव द्वारा प्रताड़ित भेल। किन्तु ग्यास-उद्दीनक पुत्र मुहम्मद तुगलक सँ सन् १३२६ ई० मे हरिसिंहदेव परास्त भऽ नेपालक गिरि-गह्वरक शरण प्राप्त कयलन्हि। अस्तु, ई स्वीकार्य अछि जे हरिसिंहदेवक पलायनक पश्चात् मिथिला मे राजनैतिक अस्थिरता आबि गेल। तखन मिथिलाक राजनैतिक सम्प्रभुता समाप्त भऽ गेल, ओ मिथिलाक परवर्त्ती शासक लोकनि दिल्लीक सुल्तानक 'कृपापात्र' बनि दिल्लीक आधिपत्य स्वीकार कयलन्हि। स्पष्टतः कर्णाट वंशक अवसान मिथिलाक सामाजिक एवं राजनैतिक जीवन मे प्रथम मर्माघात प्रमाणित भेल। एहि सँ पूर्व मिथिला मे संस्कृति अथवा चिन्तनक जे धारा प्रवाहित भेल छल, ओहि मे एकटा प्रचण्ड आघात लागल। मिथिलाक भाग्याकाशक दुर्दिन आरम्भ भेल।

जनश्रुति अछि जे पलायन करबाक समय हरिसिंहदेव अपन गुरु सिद्ध कामेश्वर ठाकुर कें मिथिलाक राज्य समर्पित कयलन्हि। ओहि समय कामेश्वर ठाकुर शुकवन (वर्त्तमान सुगौना, मधुबनी मण्डलान्तर्गत राजनगर स्टेशन सँ सटल) मे तपस्या करैत छलाह। दोसर सूत्र सँ बुझना जाइछ जे महामन्त्री चण्डेश्वर ठाकुर, कविशेखर ज्योतिरीश्वर ठाकुर प्रभृति पण्डित लोकनि हरिसिंहदेवक अनुगमन कय

नेपाल चलि गेलाह, राजपण्डित कामेश्वर जे हरिसिंहदेवक सम्मान्य सभासद छलाह, मुसलमानी आधिपत्य कें स्वीकार कय हरिसिंहदेवक विनष्ट राज्यक एक अंश प्राप्त कयलन्हि। प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरीक मन्तव्य अछि जे हरिसिंहदेवक प्रस्थानक पश्चात् मिथिला मे एकाधिक स्थानीय सामान्त सेनानी सभक आंशिक प्रभुता स्थापित भेल। फलतः मिथिला राजनैतिक दृष्टि सँ खण्ड-प्रखण्ड भय गेल। (द्रष्टव्य, प्रो० राधाकृष्ण चौधरी, हिस्ट्री आफ बिहार, पृ० १३६) मुदा डा० उपेन्द्र ठाकुर एहि सँ सहमत नहि छथि। हुनक मतानुसार परवर्त्ती तीन दशक धरि राजनैतिक अशान्ति बनल रहल। ई स्थिति मत्स्यन्यायवत् छल (डा० उपेन्द्र ठाकुर; हिस्ट्री आफ मिथिला, पृ० ३६०)। मुसलमानी स्रोत सँ बुझना जाइछ जे ई० सन् १३४० मे दिल्लीक सुलतान मुहमद तुगलक बङ्गालक आक्रमण प्रसङ्ग प्रत्यावर्त्तन काल मे मिथिलाक शासन कामेश्वर ठाकुर कें दयलक। दोसर दिश कवीश्वर चन्दा झा (पुरुषपरीक्षा भूमिका पृ० ३७२; म० म० मुकुन्द झा बख्शी मिथिला भाषामय इतिहास, पृ० ५०३), म० म० डा० उमेश मिश्र—विद्यापति ठाकुर, पृ० १७) प्रभृति विद्वान् लोकनिक धारणा अछि जे राजगुरु कामेश्वर ठाकुर राज्य ग्रहण नहि कयलन्हि; ओ तऽ सिद्धपुरुष छलाह। तैं कामेश्वर ठाकुर वास्तविक अर्थ मे राजा भेलाह वा नहि, एहू लय विद्वान् सभ मे मतभेद अछि।

दानवाक्यावलीक तेसर प्रारम्भिक श्लोक मे कामेश्वर ठाकुरक परिचय **'श्रीकामेश्वरराजपण्डितकुलालङ्कारः'** वाक्य सँ देल अछि। दोसर दिश एग्गेलिङ् दुर्गाभक्तितरङ्गिणीक वाक्यक आधार पर हुनका राजा मानलन्हि अछि। वर्धमान अपन गङ्गाकृत्यविवेक मे हुनक निर्देश मिथिलाक शासक रूप मे स्पष्टतः कय लन्हि अछि : **कामेशो मिथिलामशासत**। मिथिलाक ऐतिहासिक जनश्रुति सेहो एकर अनुमोदन करैछ। सर्वोपरि, कीर्त्तिलता मे विद्यापति कामेश्वर ठाकुर कें ओइनबार राजवंशक संस्थापक कहलन्हि अछि। तैं एहिवंश कें कामेश्वर वंश सँ सेहो अभिहित कयल जाइछ। एहि प्रसङ्ग कीर्त्तिलताक वाक्य अछि :

ता कुल केरा वड्डपण कहवा कमण उपाए।
जज्जम्मिअ उप्पन्न मति कामेसर सण राए॥

कीर्त्तिलता, पृ० २६-२७

किन्तु कामेश्वर मे राज्य-संचालनक क्षमता संभवतः नहि छल। ओ बूढ़ो भय गेल छलाह। क्षत्रिय राज्यशासनक पश्चात् संभवतः ईहो वैधानिक शङ्का उठल हैत जे ब्राह्मण भेला कारणें ओइनवार लोकनिक राज्याभिषेक कोना होयतन्हि।

तँ कामेश्वर ठाकुर कें लोकहु मे राजाक मान्यता प्राप्त नहि भय सकल। मुदा कामेश्वरक पुत्र भोगीश्वर (भोगीसराअ) भेलाह जे राज्यभोग करबाक लेल इन्द्रक समान छलाह; तेजक कान्ति मे अग्नि, सौन्दर्य मे कामदेव ओ दान देबा मे साक्षात् कल्पतरु ओ बलि मानल जाइत छलाह :

तसु नन्दन भोगीसराअ वर भोग पुरन्दर।
हुअउ हुआसन तेजकन्ति कुसुमाउह सुन्दर।।
जाचक सिद्धि केदार दाने पंचम वलि जानल।।

(कीर्त्तिलता, पृ० २८)

ओतहि ई कहल अछि जे भोगीश्वर कें दिल्लीक सुल्तान फिरोज साह 'प्रिय-सखा' कहि सम्मानित कयलन्हि। **'पिअ सख भणि पिअरोज साह सुरताण समानल'** पृ० २८।

ई घटना सन् १३५३ ई०क थीक। आफिफ द्वारा लिखल 'तारीख-इ-फिरुजशाही' मे उल्लिखित अछि जे बंगालक सुल्तान सम्स-उ-द्दीन इलियास शाहक प्रभुत्व बङ्गाल सँ बाहर तिरहुत, कारुष ओ गोरक्षपुर धरि बनि गेल छल, आओर ई प्रभाव दिल्लीक सुल्तानक लेल सङ्कट छल। तँ १३५३ ई० मिथिलाक सहयोग सँ फिरोजशाह इलियास शाह कें दबौलन्हि। प्रसन्न भय फिरोजशाह भोगीश्वर कें मिथिलाक शासक बनौलन्हि। सम्भवतः एहि मे कामेश्वर उदासीन छलाह, अथवा तुरीयावस्थाक कारणें हुनका मे राज्य सञ्चालनक क्षमता नहि छल। भोगीश्वरक शासन अल्पकालिक रहल। भोगीश्वरक पश्चात् गणेश्वर ओइनवार वंशक प्रधान शासक भेलाह। मिथिलाक एक अंश मे भोगीश्वरक अनुज भवेश वा भवसिंहक पुत्र देवसिंहक शासन सेहो छल, जे अपन राजधानी भवग्राम सँ हटाय अपन नाम पर बसाओल देवकुली (वर्त्तमान देकुली) नगरी कें बनौलन्हि। हिनक शासनकाल भोगीश्वर सँ अपेक्षाकृत दीर्घकालिक रहल। महाराज भवेशक एक आओर पुत्र हरिसिंह सम्भवतः सुगौना मे अपन गढ़ बनाय मिथिलाक एक खण्डक शासक सेहो छलाह : एवं प्रकारें आलोच्यकाल मे ओइनी, देकुली ओ सुगौना तीनि भाग मे ओइनवार वंशीय राज-शासन विभक्त छल। तीनू मे ओइनीक सिंहासन प्रधान छल।

कीर्त्तिलता सँ बुझना जाइछ जे ल० सं० २५२ धरि तऽ मिथिलाक राज-नैतिक शान्ति कुशल बुद्धिमान् प्रशासक लोकनि बनौने रहलाह। दिल्ली सल्तनतक आधिपत्य स्वीकार कय ओ लोकनि कर दय आभ्यन्तरीण स्वायत्तताक रक्षण

करैत रहलाह। दिल्ली शासनक अधीन रहितहुँ आर्थिक, सामाजिक ओ प्राशासनिक व्यवस्थाक निर्धारण मे ओइनवार वंशीय राजा लोकनि स्वतन्त्र छलाह।

मुदा ल० स० २५२ मे ओइनवार वंशक राजशासन पर एक गोट निर्मम बज्रपात भेल। गणेश्वर तऽ 'याचक लोकनि कें प्रसन्न कय दानी छलाह, शत्रुवर्गक दमन करबाक लेल पैघ मानी छलाह, बल मे इन्द्र सन् पराक्रमी छलाह', मुदा भाग्य-विपर्यय लय ल० स० २५२ क मधुमासक प्रथम पक्ष पञ्चमी मे बुद्धि, पराक्रम ओ बल मे हुनकहिं सं हारल, पश्चात् कपट बुद्धि सं विश्वास भाजन बनि, राज्य-लुब्ध शैतान असलान हुनकां मारि देलकन्हि, आओर मिथिलाक सिंहासन पर दखल कय लेलक।

लक्खनसेन नरेस लिहिअ जे पक्ख पंच बे।
तम्महु मासहि पढ़म पक्ख पंचमी कहिअ जे॥
रज्ज लुद्ध असलान बुद्धि बिक्कम बलें हारल।
पास बइसि विसवासि राअ गअनेसल मारल॥

(कीर्त्तिलता, पृ० ३८)

परिणामस्वरूप मिथिला मे पुनः राजनैतिक अराजकता उत्पन्न भऽ गेल। राजनैतिक उथल-पुथल मे मिथिलाक राजवंशक राजा लोकनिक भाग्य चलचित्र जकां परिर्वत्तित होमय लागल। कवि विद्यापतिक भाग्य मिथिलाक राजवंशक उत्थान-पतनक सङ्ग युक्त छल। जनश्रुति अछि जे हुनक पिता गणपति ठाकुर महाराज गणेश्वरक सभासद छलाह, आओर अपन उदीयमान पुत्रक प्रतिभा ओ विद्या-प्रावीण्य कें देखि पिता हुनका राजदरबार मे लऽ जाइत छलथिन्ह। गणेश्वरक निधन सं मिथिलाक कवि, शास्त्रकार ओ पण्डित लोकनिक दुर्दशाक सीमा नहि रहल।

अक्खर बुज्झनिहार नहि कइकुल भमि भिक्खारि भउँ।
तिरहुत्ति तिरोहित सब्ब गुणे रा गणेस जबे सग्ग गउँ॥

(कीर्त्तिलता, पल्लव २-१४-१५, पृ० ४१)

कीर्त्तिलता मे कहल अछि जे गणेश्वर कें मारि किछु कालक बाद असलानक रोष जखन शान्त भेल तऽ ओ मनहिं मन पछताय सोचलक—हम अधलाह काज कयलहुँ। ओ गणेश्वरक वीरपुत्र कीर्त्तिसिंह कें राज्य-समर्पण करबाक इच्छा कयलक। मुदा सिंह सदृश बली मानधनी कीर्त्तिसिंह अनादरपूर्वक प्रस्ताव कें

अस्वीकृत कयलन्हि। माय, मन्त्री, मीत सब गोटे कतेकहु बारण कयलन्हि। मुदा ओ तऽ पितृवधक प्रतिशोधक लेल सिंह छलाह; प्रतिज्ञावाक्यक पूरणक लेल दोसर परशुराम। शत्रु कें मारि अपन राज्यक उद्धार करबाक प्रतिज्ञा कयलन्हि :

बप्प वैर उद्धरओ न उण परिवण्णा चुक्कओ।
संगर साहस करओ ण उण सरणागत मुक्कओ॥

कीर्त्तिसिंह ओ वीरसिंह दुहू भाय जौनपुरक सुल्तान इब्राहिम शाहक ओतए सहायता प्राप्त करबाक लेल प्रस्थान कयलाह। मार्ग मे अनेक कष्ट भेल। बाट पार करैत कतेको दिन, कतेको मास लागल। अन्त मे ओ लोकनि जौनपुर पहुँचलाह।

जौनपुर मे दुहू कुमार ब्राह्मणक ओतए अटकलाह। शुभ मुहूर्तक ताक मे छलाह। तखन मन्त्री लोकनिक प्रस्ताव सँ शुभ लग्न मे ओ दुनू भाय सुन्दर घोड़ा आओर सुन्दर वस्त्र लय बादशाह सँ भेट कयलन्हि, आओर सब बार्त्ता कहलन्हि। सुल्तान प्रसन्न भय कीर्त्तिसिंहक सहायताक लेल वचन देल। फरमान भेल खान ओ उमरा सभ कें—सब गोटे अपन साँठें तैयार होउ; तिरहुतक लेल यात्रा होयत। दरबार मे घोल उठल। साज-सेना तैयार होमय लागल। एहि सँ दुहू कुमार बड़ आनन्दित भेलाह।

मुदा विधिक विधान विचित्र! मनुष्य किछु करैत अछि, किछु आओर भय जाइछ। सेना तऽ पूर्व दिश तिरहुतक लेल तैयार भेल, प्रस्थान विपरीत दिशा पच्छिममे भेल। तत्पश्चात् दुहू राजकुमारक दशा बड़ हृदयद्रावक भय गेल :

रण साहस बहु करिअ, बहुल ठाम फल मूल भक्खिअ।
तुलुक सङ्गे सञ्चार परम कठ्ठे आचार रक्खिअ॥
सम्बर णिविलिअ किरिस तनु अम्बँर भेल पुरान॥
जवण सभावहि निक्करुण तौ न सुमरु सुरुतान॥

(कीर्त्तिलता, पृ० १८६)

एतबहि नहि :

पिअ न पुच्छइ चिन्त णहु मित्त।
नहु भोअन संपजइ, भित्त भाँगि भुक्खे डड्ढिअ।
घोल घास नहु लहइ दिवस दिवस अति दुक्ख बढ्ढिअ॥

(ओतहि, पृ० १८९)

तथापि दुहू राजकुमार साहस नहि छोड़लन्हि। दुहू सहोदर सुल्तानक भेट कयलन्हि। साहस कार्यं फलित भेल।

सुल्तानक फरमान होइतहिं होहल्ला पड़ल। काजो, खोजा ओ मखदुम सब लड़य लागल। बाजा बाजय लागल; सेना साजल जाय लागल। हाथी, घोड़ा ओ पायदा सभक संघट्ट भेल। चतुरङ्गिणी सेनाक आगू स्वयं सुल्तानक तख्तेरवाँ चलल, तऽ पृथ्वी कमलिनीक पात जकाँ काँपि गेलीह। दुहू राजकुमार घोड़ा पर चढ़ल छलाह; लगैत छल जे शत्रु कें नाश कय दूर फेक देताह। सेनाक कोन कथा ?

> निस्सरिअ फौद अणवरत कत तत परिगणना पार के।
> पअ भार कोल अहि भोल कर कुरुम उँलटि करवट्ट दे ॥
> कोटि धनुद्धर धावथि पायक।
> लक्ख संख चलिअउ ढलवाइक ॥
> चलु फरिआइक अङ्गे चंगे।
> चमकु होइ खग्गग्ग तरंगे ॥

सेना तिरहुतक सीमा पर पहुँचल। असलानहुँ पूर्वं सँ तैयार छल। ओ भिन्न-भिन्न स्थान मे अपन सेना कें सुसज्जित कयलक। दुहू दलक हाल सुनि सुल्तानक हुक्म भेल—असलान बड़ समर्थं अछि ? कोन प्रकारें ओकरा हराओल जाय ? तदनन्तर राजा कीर्त्तिसिंह बजलाह—हे प्रभो ! को कुमंत्र सोचैत छी ? की सोचि ई पोच वचन बजैत छी ? शत्रु सेनाक प्रशंसा करब उचित नहि। सब केओ देखैत रहू। हम स्वयं असलान कें पकड़ि दैत छी। ओ यदि लड़त तऽ वैरीक उद्धार करब। यदि ओ अपन प्राण बचा कय पीठ नहि देखाओत, तऽ तिलदानक लेल ओकर रक्तक नदी मे पैर हम राखब। कुमारक ओज भरल वचन सुनि फरमान बाँचल गेल जे कीर्त्तिसिंहक मनोरथ कें पूर्ण करबाक लेल समस्त सेना नदीक पार होय। तखनहि शत्रुसेना कें नाश कयनिहार गौरवान्वित मालिक मुहम्मद इब्राहिम शाह गण्डक नदी कें पार कयलक।

राजधानीक पूर्वी क्षेत्र मे दुपहरिआक समय दुहू सेनाक संघट्ट भेल। भेरी काहल रणवाद्य बाजय लागल। वीर लोकनि हुँकारक सङ्ग आगू बढ़लाह। घमासान युद्ध आरम्भ भेल। चारू कात सेना लड़य लागल। प्रलयवृष्टि जकाँ बाण छुटैत छल। खड्ग सँ खड्ग मिलि आगिक फुलिंग उड़ैत छल। रुण्ड-मुण्ड

बसैत छल। जतए-जतए शत्रुक संग संघर्ष होइत छल, ततए-ततए तरुआरि विद्युल्लता जकाँ चमकैत छल। सर्वशेषहिं, कीर्त्तिसिंह ओ असलानक बीच महाभारतक अर्जुन ओ कर्णक बीच जकाँ युद्ध होमय लागल। जखन असलान देखलक जे वीर कीर्त्तिसिंहक तरुआरिक प्रहार सँ प्राण बचायब सम्भव नहि, तऽ ओ अपन पीठि देखौलक। तखन कीर्त्तिसिंह असलान कें जीवनदान दयलन्हि :

जइ कं जीवसि जीव गए जाहि जाहि असलान।
तिहुअण जग्गइ कित्ति मझु, तुज्झु दिअउ जिवदान।।

(कीर्त्तिलता, पृ० ३११)

एवं प्रकारें कीर्त्तिसिंह 'दुष्ट असलानक दर्प कें चूर्ण कय पितृवधक प्रतिशोध कयलन्हि, ओ प्रबल शत्रुक सेनाक संघट्टन लय पदाघातक कारणें तरल तुरंगक खुर सँ खुन्न वसुन्धराक धूलि सँ उत्पन्न घोर अन्धकारपूर्ण युद्धनिशाक अभिसारिका जयलक्ष्मीक पाणिग्रहण कयलन्हि। विजयक शंखध्वनि होमय लागल। तिरहुतक राज्य पुनः सनाथ भेल। शुभ मुहूर्त मे चारू वेदक मंगलपाठक संग राजाक अभिषेक भेल। बादशाह मलिक इब्राहिमशाह अपन हाथ सँ कीर्त्तिसिंहक राज्य-तिलक कयलन्हि।

'कीर्त्तिलता' काव्यमीमांसाकार राजशेखरक शब्दावली मे एक गोट परिक्रिया थीक ; एहि ठाम नायक विशिष्टक चरित्र लय लौकिक आख्यान राखल अछि। एहि ग्रन्थ कें विद्यापति स्वयं 'पुरिस कहाणी'—पुरुषकथा कहलन्हि अछि। एतए कीर्त्तिसिंहक कीर्त्ति कें प्रोज्ज्वल करबाक लेल कविक कामना अछि :

ईशमस्तकविलासपेशला भूतिभाररमणीयभूषणा।
कीर्त्तिसिंहनृपकीर्त्तिकामिनी यामिनीश्वरकला जिगीषतु।।

मध्ययुगक ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थ सभ मे कीर्त्तिलता एक गोट अनुपम रचना प्रमाणित भेल अछि। एहि वीरत्वगाथा मे वीर कीर्त्तिसिंहक कथा कें काव्य ओ इतिहासक सामञ्जस्यक संग राखल अछि। तथापि एतए कल्पित घटना अथवा कल्पनाविलास लय इतिवृत्तता कतहुँ धूमिल नहि भेल अछि। ल०सं० २५२ अर्थात् सन् १३६१ ई० मे मिथिला मे असलान नामक तुर्क द्वारा प्रभुत्व प्राप्त करब ओ सन् १४०१ वा १४०२ ई० मे जौनपुरक मुसलमान शासक इब्राहिमशाहक सहायता पाबि वीरनायक कीर्त्तिसिंह द्वारा मिथिलाक उद्धार—दुइ ऐतिहासिक तथ्य लय घटना कें यथार्थपरक अभिव्यक्ति देल अछि।

किन्तु ई उल्लेख्य जे असलान ओ इब्राहिमशाह दुहूक निर्धारक मे, संगहि तिथिक अवधारण मे इतिहासवेत्ता लोकनिक मतभेद अछि। एहि लेल कारणहुँ अछि। महाकवि विद्यापति नायक कीर्तिसिंहक गुण-गौरवक रक्षार्थ अथवा विश्वासघाती शत्रुक प्रति अवज्ञाभाव लय यवन-सेनानी कें अज्ञात नाम रखलन्हि। वीरनायकक प्रतिद्वन्द्विता लय असलान (तुर्की शब्द अर्सलान, जकर अर्थ वीर होइछ) मात्र कहि ओकर परिचय देल गेल। एतदर्थ सन् १४०१-२ (ल० सं० २९२-३) सँ पूर्व जौनपुरक शर्की शासकक मिथिलागमन कें असम्भव मानि चालीस वर्षक व्यवधानक कारणें दुइ चारि विद्वान् घटना ओ पात्र मे असंगति देखलन्हि अछि। पुनः लक्ष्मण संवत्‌क आरम्भतिथि अद्यावधि विवादक विषय बनल अछि।

लक्ष्मण संवत् लय सर्वप्रथम राजेन्द्रलाल मित्रक निर्णय भेल जे ईस्वी सन् प्राप्त करबाक लेल ओहि मे ११०६-७ संख्याक योग अपेक्षित अछि। तत्पश्चात् 'अकबरनामे'क आधार लय बेवरिज ११०६क स्थान पर १११९ कयलन्हि। (बेवरिज—दी एरा आफ लक्ष्मण सेन, बंगाल एशियाटिक सोसाइटीक पत्रिका, खण्ड १, पृ० १-७, १८८८ ई०) दुइ वर्ष बाद कीलहार्न प्राचीन हस्तलेखक निर्देशानुरूप लक्ष्मणाब्द कें शकाब्द १०४१क समकाल मानि बेवरिजक मान्यता कें स्वीकृति दयलन्हि। (द्रष्टव्य-दी एपोक आफ द लक्ष्मण सेन एरा, इन्डियन एँटिक्वेरी, खण्ड १९, पृ० ६, १८९० ई०) पश्चात् इतिहासविशेषज्ञ डा० जायसवाल प्रायः डेढ़ दर्जन प्राचीन मैथिल हस्तलेखक परीक्षण कय अपन अभिमत रखलन्हि जे प्रामाणिक तिथिक लेल सन् १५३० ई० सँ पूर्वक लक्ष्मणाब्द मे १११९ ओ परवर्त्ती तिथि मे ११०९ जोड़ब आवश्यक अछि। (जर्नल आफ द विहार ओरियन्टल रिसर्च सोसाइटी, खण्ड २०, पृ० २०) आर० डी० बैनर्जी, एस० कुमार प्रभृति विद्वान् कीलहार्न द्वारा देल वर्ष कें मानलन्हि। हिनका लोकनिक मतें लक्ष्मण संवत् लक्ष्मण सेनक राज्याधिरोहण तिथि ७ अक्टूबर १११९ ई० सँ गृहीत अछि। मैथिल विद्वान् लोकनि मे महामहोपाध्याय डा० उमेश मिश्र ओ डा० जयकान्त मिश्र एहि सम्बन्ध मे प्रायः मौन रहलाह, मुदा लक्ष्मण संवत्‌क समानान्तर जे सन् तिथि ओ लोकनि दयलन्हि अछि तदनुसार १११९ ई० खपैत अछि। डा० सुभद्र झा एहि प्रसंग डा० ग्रियर्सनक मान्यताक समीक्षा करैत अपन टिप्पण दयलन्हि जे प्रारम्भ मे ग्रियर्सन मित्र द्वारा प्रतिपादित मान्यता कें ठीक बुझलन्हि; कालान्तर मे पुरुषपरीक्षाक सम्पादनक समय जायसवाल द्वारा प्रस्तुत संख्या कें शुद्ध घोषित कयलन्हि, किन्तु मतपरिवर्त्तनक लेल कोनहुँ तर्क प्रस्तुत नहि कयलन्हि (द्र० द सौंग्स आफ विद्यापति, पृ० ३८)। मान्य इतिहासशास्त्री डा० उपेन्द्र ठाकुर ओ प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरी दुहू विद्वान् प्रकारान्तर सँ

१११९ ई०क पक्ष मे अपन समर्थन दयलन्हि अछि (द्र० डा० उपेन्द्र ठाकुर : हिस्ट्री आफ मिथिला, पृ० ३०६ ; प्रो० आर० के० चौधरी—हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत, पृ० ६७)। प्रो० रमानाथ झाक अनुमोदन ११०९ ई०क लेल अछि, मुदा १११९ ई० कें सेहो ओ अमान्य नहि बुझैत छथि (द्रष्टव्य : पुरुषपरीक्षाक भूमिका, पृ० १४-१५)। बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् दिश सँ प्रकाशित विद्यापति-पदावलीक मान्य सम्पादकद्वय शशिनाथ झा ओ दिनेश्वरलाल 'आनन्दक' निर्णय सन् ११०९ ई०क पक्ष मे निर्भ्रान्त रूपें रहल अछि (द्रष्टव्य : भूमिका, पृ० १६)।

इम्हर आर० डी० बैनर्जी आओर एस० कुमारक मान्यताक खण्डन डा० एच० सी० रायचौधरी एहि तर्क लय कयलन्हि जे लक्ष्मणसेनक राज्यकाल सन् ११७९ ई० सँ १२०५ ई० धरि प्रायः सर्वमान्य अछि। पुनः लक्ष्मणसेन ओ हुनक पुत्रद्वय विश्वरूपसेन तथा केशवसेन मे सँ किनकहुँ प्रशस्तिशिलालेख मे लक्ष्मणाब्दक उल्लेख नहि अछि ; सर्वत्र कालज्ञापन शासनिक वर्ष सँ उल्लिखित अछि। बङ्गालक जाहि हस्तलेख सभ मे लक्ष्मणाब्द, लक्ष्मणसेन वर्ष, लक्ष्मण संवत् अथवा (कखनहुँ मात्र) ल० सं० सँ तिथिज्ञापन भेल अछि, ओ सब ख्रीष्टीय पन्द्रहम सदीक अछि। स्पष्टतः बंगाल मे लक्ष्मणाब्दक प्रसार मिथिलाक सम्पर्क सँ पञ्चदश शतक मे भेल। कारण ओहि काल मे न्यायशास्त्रक अध्ययन लय मिथिला तथा गौड़क बीच घनिष्ठ योगसूत्र स्थापित भेल छल। डा० राय चौधरीक मतें लक्ष्मणाब्दक प्रचार प्रथमतः बिहार (मगध अञ्चल) मे भेल। बोधगयाक शासक अशोकचल्लक दूइ ओ पीठिक राजा जयसेनक जानीबाग मे प्राप्त एक शिलालेख मे क्रमशः लक्ष्मणाब्द ५१, ७४ ओ ८४ अङ्कित अछि। एहि आधार लय डा० रायचौधरीक निष्कर्ष अछि जे गौड़क सेनवंशीय लक्ष्मणसेन सँ लक्ष्मणसंवत्क सम्बन्ध नहि अछि, अपितु पीठिक स्थानीय सेन राजा सँ अछि। उपर्युक्त तीनहुँ शिलालेख मे 'अतीत' शब्दक प्रयोग वर्षक संग अछि। स्पष्टतः लक्ष्मणाब्दक प्रचलन पीठिक सेन शासनक संस्थापक लक्ष्मणसेनक राज्याधिरोहण सँ भेल अछि। आगू जाय लक्ष्मणाब्द मगध सँ मिथिला मे प्रचलित भेल। नेपाल राजदरबारक पुस्तकालयक हस्तलेखागार मे ५७ पोथी ल० सं० ९१ सँ आरम्भ कय संवत् ५५८ धरिक विभिन्न लक्ष्मणवर्षक उल्लेखक संग उपलब्ध अछि। एहि मे सँ अधिकांश मिथिलाक्षर मे लिखित अछि ; ओ सर्वाधिक प्राचीन ल० सं० ९१ वाला पोथी मिथिलाक्षरे मे अछि।

एकर विपरीत धारणा डा० आर० सी० मजुमदारक अछि। हिनक दृष्टिएं लक्ष्मणाब्दक सम्बन्ध गौड़ेश्वर लक्ष्मणसेन सँ अछि, पीठिक तथाकथित

लक्ष्मणसेन सँ नहि। हिनक मतानुसार मगधक शासक अशोकचल्ल अथवा जयसेन द्वारा अनुमोदित लक्ष्मण संवत्क आरम्भ सम्भवतः सन् १२०० ई० सँ होइछ, जखन मिथिलाक लक्ष्मणाब्दक गणना सन् १११९ ई० सँ। बङ्गाल ओ बिहार मे जखन मुसलमानो संप्रभुता स्थापित भय गेल, तऽ विद्वान् लोकनि 'हिन्दुआनी' भावसंतुष्टिक लेल हिन्दू शासक लक्ष्मणसेनक नाम सँ वर्षगणना आरम्भ कयलन्हि। मगध मे गौड़क हिन्दूराज्यक विनाश सँ, जे सन् १२०० ई०क आसपास भेल छल, वर्षगणना प्रचलित भेल, तऽ मिथिला मे गौड़ेश्वर लक्ष्मणसेनक जन्मवर्ष सन् १११९-११२० ई० लय लक्ष्मणाब्दक प्रयोग होमय लागल।

इम्हर डा० पी० एन० मिश्र विभिन्न स्रोत सँ प्राप्त सामग्रीक समीक्षण कय अपन अभिमत दयलन्हि अछि जे लक्ष्मणाब्दक आरम्भ अनिश्चित ढङ्ग सँ सन् ११०७ ई० सँ लय १११९ ई० धरि मानल गेल अछि। लक्ष्मणाब्द लय विद्वान् सब अपन तर्क उपस्थित कयलन्हि अछि, जाहि सँ मतैक्य सम्भव नहि। तथापि विद्यापतिक ग्रन्थसभ मे उल्लिखित लक्ष्मणाब्दक लेल हुनक निजी पद प्रमाणक अछि, जाहि मे कहल अछि जे लक्ष्मणवर्ष २९३, शाकाब्द १३२४ (तदनुसार सन् १४०२ ई०)क चैत्र मासक कृष्णा षष्ठी ज्येष्ठा नक्षत्र वृहस्पतिदिनक सन्ध्याकाल मे देवसिंह पृथ्वी कें छोड़ि सुरलोकक लेल प्रयाण कयलन्हि :

> अनल रंध्र कर लक्खन नरवए सक्क समुद्द-कर अगिनि ससी।
> चैत कारि छठि जेठा मिलिअओ वार वेहप्पइ जाउ लसी।।
> देवसिंह जउँ पुहवी छड्डइ अद्धासन सुरराअ सरु।
> दुहु सुरतान निदइ अब सोअउ तपनहीन जग तिमिरे भरु।।

निष्कर्षतः ई० सन् प्राप्त करबाक लेल लक्ष्मणाब्द मे ११०९ संख्याक योग तथ्याश्रित अछि।

फलतः विक्रम संवत् २५२ तदनुसार १३६१ ई० मे गणेश्वरक निर्मम हत्या, तकर चालीस वर्षक बाद जौनपुरक इब्राहिम शाहक आनुकल्य लय वीर कीर्तिसिंह द्वारा मिथिलाक राज्यप्राप्ति—ई ऐतिहासिक घटना थीक, जकर तथ्यावलित वर्णन कीर्तिलता मे प्राप्त अछि।

वस्तुतः ख्रीष्टीय चतुर्दशशताब्दक उत्तरार्द्ध मिथिलाक इतिहास मे राष्ट्रसंकट-काल रहल अछि, एकर अनुमोदन इतिहास द्वारा होइछ। शताब्दक शेष चरण मे तऽ दिल्लीक केन्द्रीय शक्ति खण्डित भय गेल छल। केन्द्रीय शक्तिक दुर्बलताक सुयोग पाबि स्थानीय सामन्तगण क्रमशः प्रधान होमय लागल। फिरोज तुगलकक शासनकालक शेषभाग मे प्रायः सम्पूर्ण उत्तरभारत मे राजनैतिक विशृङ्खलता

उत्पन्न भय गेल। यह्या-बिन-अहमद लिखित 'तारिख-इ-मुबारकशाही'क आधार सँ प्रमाणित अछि जे फिरोजक बङ्गालविजयक पश्चात् मगध ओ बिहारक नवाबी दिल्लीक सुल्तान सँ मलिक बीर-अफगान कें भेटल। मलिक बीर-अफगानक उल्लेख चकवार वंशप्रशस्तिहुँ मे प्राप्त अछि। ई ध्यातव्य जे ओहि समय मे मिथिला बिहारक अन्तर्गत नहि छल। तत्कालिक राजनैतिक अराजकताक परिस्थिति मे मिथिलाक उपर बीर अफगानक आक्रमण कोनहुँ अस्वाभाविक कल्प नहि। तैं विद्यापतिक असलान मलिक बीरअफगान भय सकैछ। ओना तऽ प्रो० आर० के० चौधरी अपन प्रथम ग्रन्थ 'हिस्ट्री आफ बिहार' मे असलान कें काल्पनिक पात्र मानि गणेश्वरक हत्याक कारण तत्कालिक मैथिल राजवंशक पारस्परिक संघर्ष कें मानलन्हि, तथापि अपन परवर्त्ती ग्रन्थ 'हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत' मे मलिक बीरअफगान कें असलान मानबाक लेल अपन अभिमत दयलन्हि अछि (द्र० हिस्ट्री आफ बिहार, पृ० १४५ ; हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल, पृ० ६८)।

दोसर ऐतिहासिक पात्र इब्राहिमशाह लय दूइ चारि विद्वान कें भिन्न-भिन्न रूपक विसंगति बुझना गेल। एकर मूलकारण गणेश्वरक हत्या लय उल्लिखित लक्ष्मण संवत् ओ इतिहास-सिद्ध जौनपुर शासक इब्राहिम शाहक संभावित आक्रमण-तिथिक मध्य चालीस वर्षक व्यवधान अछि।

कीर्त्तिलताक वाक्य अछि : **लक्खेन सेन नरेश लिहिअ जवे पक्ख पञ्च वे।** लिहिअक पाठान्तर लिखिअ प्राप्त अछि। म० म० हर प्रसाद शास्त्री एकर बंगला रूपान्तर कयलन्हि—"यखन लक्ष्मण सेन राजाक २५२ वत्सर लेखा हइल"—अर्थात् जखन लक्ष्मण सेन नरेशक २५२ वर्ष लिखित भेल। डा० जायसवाल ऐतिहासिक संगतिक लेल मूल पाठ 'जवे'क अर्थ (ज=५, वे=२) ५२ कयलन्हि, तत्पश्चात् २५२ मे एकर योग कय वर्ष संख्या ल० सं० ३०४ मानलन्हि। तदनुसार हुनक दृष्टिएं असलान-गणेश्वर घटना सन् १४२३ ई०क थीक। (द्रष्टव्य—द जर्नल आफ बिहार एण्ड उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी, खण्ड १३, पृ० २९९)

डा० जायसवालक अर्थप्रस्तुतीकरण मे कतिपय असङ्गति उत्पन्न होइछ। प्रथमतः भाषिक दृष्टिएँ क्रियाविशेषण अव्यय 'जवे' स्पष्टतः एतए कालवाची थीक जकरा वर्षगणनाक लेल संख्यावाचक शब्द बनायब सर्वथा असगत अछि। दोसर आपत्ति ई जे घटना कें ल० सं० ३०४ मानला सन्तां ऐतिहासिक व्याघात होइछ, कारण देवसिंहक स्वर्गारोहण ओ शिवसिंहक राज्याधिरोहणक तिथि लक्ष्मण संवत् २९३ स्वयं कवि विद्यापति द्वारा अभिहित अछि। तथा सति गणेश्वरक जीवनकाल मे शिवसिंहक राजाधिराज होयब असत्य भय जायत।

अनलरन्ध्रकरलक्खण नरवइ सक्क समुद्दकर अगिनि ससी।
………… ………… ………… ………… …………॥

विज्जावइ कविवर एहु गाबए मानव मन आनन्द भएओ।
सिंहासन शिवसिंह बइट्ठुओ उच्छवइ बइरस विसरि गएओ॥

स्पष्टतः कीर्त्तिलता मे देल विक्रम-तिथिक ऐतिहासिकता अखण्डित अछि, तथाविध स्वीकृति इतिहासविद् लोकनि सँ देल गेल अछि।

किन्तु गणेश्वर-असलान घटना ओ जौनपुरक शासक इब्राहिमशाह द्वारा तिरहुत-उद्धारक तिथिक बीच लगभग चालीस वर्षक व्यवधान प्रसिद्ध भाषाशास्त्री एवं विद्यापति-साहित्यक अधिकारी विद्वान् डा० सुभद्र झा कें अस्वाभाविक बुझना गेलन्हि। हुनक दृष्टिएं प्रथम घटना विक्रम संवत् २५२ मे घटल। मुदा दोसर घटनाक प्रसङ्ग डा० झाक उद्‌भावना अछि: "कीर्तिसिंह जौनपुर नहि गेलाह, जोनापुर गैलाह जे लिपिकारक भ्रान्ति सँ जोइनीपुर (सं० योगिनीपुर)क स्थान मे लिखित अछि। डा० जार्ज ग्रियर्सन द्वारा सम्पादित पुरुषपरीक्षा, टेस्ट आफ मैन, कथा सं० २ आओर ४१ मे प्रयुक्त योगिनीपुर, जकरा ग्रियर्सन 'पुरानी दिल्ली' कहलन्हि, कीर्त्तिलता मे प्रयुक्त जोनापुरक शुद्ध रूप अछि" (द्र० विद्यापति-गीत-संग्रह, पृ० ४२)। जखन खूब अन्वेषण कयलहुँ दिल्लीक तुगलक वंश सँ संबद्ध इब्राहिमशाहक ऐतिहासिक सूत्र नहि भेटल, तऽ हुनक कथन भेल जे इब्राहिम शाह संभवतः फिरोज तुगलकक कोनहुँ अप्रसिद्ध सेनापति रहल हैत। एतदर्थं डा० झा कें कीर्त्तिलताक वाक्य प्रमाणस्वरूप भेटलन्हि। **पेक्खिअउ पट्टन चारु मेखल जओन नीर पखारिआ** (कीर्त्तिलता, पल्लव २) डा० झाक देल अनुवाद अछि: नगर जे यमुनाक जल सँ धोयल छल, सुन्दर मेखला जकाँ लगैत छल। स्पष्टतः एहिठाम जओन यमुनाक लेल गृहीत अछि। डा० झा कें अपन मतक समर्थनक लेल यमुनाक पर्यायवाची दूइ रूप जणुन ओ जणुनि पदावलीक नेपाली हस्तलेख मे भेटलन्हि।

प्राकृत मे यमुनाक लेल 'जउणा' प्रयोग विहित अछि। तैं जओन संभाव्य रूप थीक अवश्य, मुदा कीर्त्तिलता मे प्रयुक्त तथाविध प्रयोग एहि सम्भावनाक विपरीत प्रमाणित अछि। अन्यत्र 'की'क लेल कओन तथाविध संघटना लय प्रयुक्त अछि।

फरमान भेल—**'कओन चाहि' 'तिरहुति लेल जान्हि साहि'।** (द्रष्टव्य कीर्त्तिलता, पल्लव ३-१८) (बादशाहक) फरमान भेल—की समाचार अछि?

(कीर्त्तिसिंह कहल) हे जोन्हा शाह, तिरहुत पर कब्जा कय लेलक। एतए कओन स्पष्टतः 'कः पुनः' सँ साधित अछि। तहिना प्रस्तुत प्रसङ्गक जओन शब्दक सोफ अर्थ अछि 'जे'। एकरा 'यः पुनः' सँ विकसित मानबाक अछि,। तँ वाक्यार्थ भेल सुन्दर मेखला सँ घेरल नगर देखल जे (नगर) जल सँ प्रक्षालित छल। मूल रूप 'कः पुनः'क विकास कवन>कमन> कओन व्याख्येय अछि। एहि मे सँ कमन ओ कवन तऽ कीर्त्तिलता मे प्रयुक्त अछि ; संगहि 'यःपुनः'क समरूप 'जओन' ओ 'जओ' दुहूक प्रयोग उपलब्ध अछि। डा० सक्सेना द्वारा सम्पादित कीर्तिलताक पाद-टिप्पणी मे एक गोट हस्तलेखक आधार पर 'जौन' पाठान्तर राखल अछि। एहि ठाम ई उल्लेख्य जे 'जवन' ओ 'जौन' सम्बन्धसूचक सर्वनाम नव्य प्राच्य हिन्दी ओ बिहारी उपवर्गक मगही एवं भोजपुरी मे प्रयुक्त होइछ। दोसर दिश डा० वीरेन्द्र श्रीवास्तवक धारणा अछि जे डा० सुभद्र झा कें जोनापुर अथवा जोनपुर कें दिल्ली प्रमाणित करबाक लेल जोइनीपुरक द्रविड़-प्राणायाम करबाक आवश्यकता नहि छलन्हि। जोनापुर, जोणपुर, यवनपुर सँ भाषिक दृष्टिएँ विकासक्रम राखि यवनक नगरी दिल्ली कहि सकैत छलाह। (डा० वीरेन्द्र श्रीवास्तव : अपभ्रंश भाषा का अध्ययन, पृ० २८७) डा० श्रीवास्तव कें आश्चर्यरूपें आलोच्य अंश मे पाठक स्पष्टीकरणक लेल संस्कृत छाया युक्त कीर्त्तिलताक स्तम्भतीर्थं हस्तलेखक वाक्य पँ डा० झाक निर्देशानुरूप 'यमुना'क संकेत भेटलन्हि :

जोणापुरं नाम तस्य नगरं प्रेक्षितं पट्टनं
चारुमेखलं यमुनानीरप्रक्षालितम्।
(तत्रैव, पृ० २८७)

तथापि डा० श्रीवास्तव ई यवनपुर उत्तर प्रदेशक जौनपुर थीक वा प्रसिद्ध दिल्ली नगर, एहि विवाद लय किछु निर्णय देबाक लेल प्रवृत्त नहि भेलाह। "हम एहि विवाद मे नहि पड़ब जे दिल्ली मे इब्राहिमशाह नामक कोनहु तेहन सुल्तान भेल वा नहि जे फिरोजशाहक वंशज होय, अथवा जे कखनो सहसा सेना कें पश्चिम दिश पठाय पुनः ओकरा पूर्वदिश विजयार्थ मोड़लक, अथवा कीर्त्ति-लताक इब्राहिमशाह जौनपुर (उत्तरप्रदेश)क प्रसिद्ध सुल्तान अछि"। (ओतहि, पृ० २८६-२८७)

किन्तु डा० शिवप्रसाद सिंह, डा० वासुदेव शरण अग्रवाल प्रभृति विद्वान् लौकनिक दृष्टिएँ जोणापुर कें दिल्ली मानब दूरारूढ़ कल्पना मात्र थीक। डा० सिंहक अभिमत अछि : "इब्राहिमशाहक जे निराधार कल्पना डा० सुभद्र झा कयलन्हि अछि, ओ तऽ हास्यास्पदकोटिक भय जाइछ। कीर्त्तिलता मे जाहि इब्राहिम

शाहक उल्लेख अछि ओ जौनपुर (उत्तरप्रदेश)क प्रसिद्ध इब्राहिमशाहे छल"। (द्रष्टव्य : डा० शिवप्रसाद सिंह, विद्यापति, पृ० ४२)।

उपर्युक्त प्रश्न लय वस्तुस्थितिक पर्य्यालोचन संक्षेपहुँ मे करब एतए आवश्यक अछि। तारीख-इ-मुबारकशाही (४-१३) सँ बुझना जाइछ जे इब्राहिम शाह सँ पूर्वं ख्वाजा जहाँ कन्नौज सँ आरम्भ कय बिहार धरिक भूभाग पर अपन आधिपत्य स्थापित कय अपना कें मलिक-उस्-शर्क (पूर्वक मालिक) घोषित कयलक। मध्ययुग मे जौनपुरक दोसर नाम मशरिक़ छल ; मशरिक़ अरबी शब्द थीक जकर अर्थं 'पूर्वं' होइछ। डा० अग्रवालक दृष्टिएं कीर्त्तिलता मे 'जोनापुर'क वर्णन पूर्वीय दिशाक प्रसिद्ध नगरक रूप मे भेल अछि। **वारिग्गह मण्डल दिग अखण्डल पट्टन परिठम भाणा** (कीर्त्तिलताः ४-१२१, पृ० २६०)। डा० अग्रवाल कतेको प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थसभ मे प्रयुक्त वारिग्गहक समरूपक अर्थंविज्ञान मूलक मीमांसा कय एहि वाक्यक अर्थं कयलन्हि : बारगाह ओ मण्डल नामक पैघ ओ सुन्दर शामियाना सँ पूर्वंदिशाक मुख्य नगर (जौनपुर)क यश प्रख्यात भेल अछि। एवंप्रकारें इब्राहिमशाह सँ संबद्ध एक आओर ऐतिहासिक तथ्य तारीख-इ-मुबारकशाही मे उल्लिखित अछि जे सन् १४०१ ई० मे दिल्लीक सुल्तान महमूद इब्राहिमशाहक उपर हमला कयलक, मुदा इब्राहिम कें पराजित नहि कय सकल, आओर स्वयं पराजित जकाँ प्रत्यावर्त्तन कयलक। एकर समर्थंन कीर्त्तिलता मे वर्णित वृत्तान्त सँ होइत अछि। कीर्त्तिलताक वाक्य अछि :

एथ्थन्तर वत्त विचित्त किछु सुरुतानहु पाइअ।
पुव्वे सेना सज्जिअइ पच्छिम हुअउँ पयान॥
(कीर्त्तिलता, पल्लव ३, ४५-४६)

सेना सजल पूर्व दिशाक लेल, मुदा प्रयाण कयलक पश्चिम दिशा मे। सुल्तानक संग दुहू भाइ विभिन्न स्थान मे घुमैत रहलाह। कतेको कष्ट भेल।

इम्हर डा० शिवप्रसाद सिंह कें 'सर्च रिपोर्ट'क अनुशीलन सँ एक गोट महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रमाण भेटलन्हि अछि। जौनपुरक बादशाह इब्राहिमशाहक समकालीन लखनसेनि कविक किछु पंक्ति उपलब्ध अछि जाहि मे बादशाहक प्रतापक प्रशंसा ओ तत्कालीन भारतीय अवस्थाक वर्णन आयल अछि। लखनसेनि ओ विद्यापति दुहूक वर्णन मे अद्भुत साम्य भेटैछ। उदाहरणार्थ :

भोंदु महंथ जे लागे काना, काज छाँड़ि अकाजे जाना
कपटी लोग सब भे धरमाधी षोट वइदि नहि चीन्हे वियाधी

कुंजर बाँधे भूखन मरई, आदर सो घर सेइ चराई
चन्दनकाटि करील जे लावा, आँब काटि बबूर बोआवा
कोकिल हंस मंजारहि मारो, बहुत जतन कागहि प्रतिपालो
सारोव पंख उपारि पाले तमचुर जग संसार।
लखनसेनि ताहने बसे काढ़ि जो खाँहि उधार ॥

जाहि सुल्तानक ओतए दुइ कुमार गेल छलाह, ओकर प्रतापें राज्य मे सब किछु होइत छल। एहि लय व्यंग्य सँ भरल विद्यापतिक वाक्य देखू :

हिन्दू तुरके मिलल वास एकक धम्मे अओक उपहास ॥
कतहु बाँग कतहु वेद कतहु मिसिमिल कतहु छेद ॥
कतहु ओझा कतहु षोजा कतहु नकत कतहु रोजा ॥
कतहु तम्बारु कतहु कूजा कतहु नीमाज कतहु पूजा ॥
कतहु तुरुक वरकर बाँट जाइते वेगार धर ॥
धरि आनए बाँभन बरुआ मथाँ चड़ावए गाइक चुडुआ ॥
फोट चाट जणेव तोर उपर चढ़ावए चाह घोर ॥
धोआ उरिधाने मदिरा साँध देउर भाँगि मसीद बांध ॥
गोरि गोमठ पुरिल मही पएरहु देना एक ठाम नहीं ॥
हिन्दु बोलि दुरहि निकार छोटेओ तुरुका भभकी मार ॥
हिन्दुहि गोट्टओ गिलिए हल तुरुक देखि होअ भान ॥
अइ सेओ जसु परतापे रह चिर जीअउ सुरतान ॥

तारीख-इ-मुबारकशाही ओ फेरिस्ताक वर्णन सँ स्पष्ट अछि जे ख्रीष्टीय चतुर्दश शताब्दक शेष चरण मे जौनपुरक प्रभुत्व प्रबल भय गेल छल, ओ दिल्ली साम्राज्यक आधिपत्य क्षीण भय गेल। सन् १३९४ ई० मे फिरोज शाहक पुत्र सुल्तान मुहम्मद-शाहक मृत्युक उपरान्त प्रथम पुत्र मात्र ४६ दिन राज्य कय मरि गेल। तदुपरान्त दोसर पुत्र महमूद 'नासिरुद्दीन महमूद'क खिताब लय सुल्तान बनल, किन्तु अमीर-उमरा सब मिलि फतेह खाँक पुत्र ओ फिरोज शाहक पौत्र नसरत खाँ कें सुल्तान घोषित कयलक। नसरत खाँक नाम भेल—सुल्तान नासिरुद्दीन नसरत शाह। तारीख-इ-मुबारकशाही मे उल्लिखित अछि जे नसरत खाँ दोआबक बृहदंश, एतबहि नहि, पानीपत, झामोर ओ रोहतक क्षेत्र पर प्रभुत्व स्थापित कय लेलक; परिणामस्वरूप

महमूदक आधिपत्य दिल्ली ओ ओकर निकटवर्ती भूमिखण्ड धरि सीमित रहि गेल। सन् १३९८ ई० मे तैमूरलंगक भारत-आक्रमणक फलस्वरूप महमूदक अवशिष्ट प्रभुत्वो विनष्टप्राय भय गेल। सन् १३९९ ई० मे तैमूरलंगक प्रत्यावर्त्तनक पश्चात् केन्द्रीय शक्तिक दुर्बलताक सुयोग लय गुजरात, मालवा ओ खानदेश दिल्लीक स्वाधीनताक त्याग कय देलक। गुजरात ओ तत्पार्श्ववर्त्ती अञ्चल मे जाफर खाँ वाजिबुल मुल्क, मुलतान, दीपलपुर ओ सिन्धुक किछु अंश मे मसनद अली खिजिर खाँ, महोबा ओ कालपी मे महमूद खाँ, कन्नौज-अयोध्या-आगरा-बिहार-जौनपुर मे ख्वाजा जहाँ, धार मे दिलावर खाँ, समाना मे खलिब खाँ एवं बियाना अञ्चल मे सामस खाँ प्रशासनिक आधिपत्य कय लेलक। एहि रूपक राजनैतिक अराजकता मे दिल्ली सँ मिथिला कें सहायता प्राप्त करबाक प्रश्ने नहि उठैछ। लगैछ, मिथिला ओ दिल्लीक राजनैतिक योगसूत्र आलोच्य काल मे विच्छिन्न जकाँ भय गेल छल।

कीर्त्तिलता मे वर्णित सांस्कृतिक ओ राजनैतिक विनिपात एहि विषय मे सर्वाधिक प्रबल प्रमाण अछि। गणेश्वरक हत्याक उपरान्त मिथिलाक जाहि चूड़ान्त अधोगतिक वर्णन प्राप्त अछि, ओकरा लेल पाँच दश वर्षक अवधि प्रर्याप्त नहि अछि। मिथिलाक जीवन-प्रसून सर्वांश रूपें कीटदष्ट जकाँ सौरभ-हीन ओ रंगहीन भय गेल। "ठाकुर ठक भय गेलाह। जे लोकनि पूर्व मे रक्षक छलाह, ओ लोकनि भक्षक भय गेलाह। चोर सब चपरि कय घर लूटय लागल। धर्म नहि रहल; काज धन्धा नष्ट भय गेल। दुर्जन सुजन कें सतबय लागल। केओ विचारक नहि रहल। जाति ओ अजाति मे विवाह होमय लागल। अधम उत्तमक उपर भय गेल। अक्षररस कें बुझनिहार नहि रहल। कवि लोकनि भिखारि बनि एम्हर ओम्हर घुमय लागल। तिरहुत मे सभ गुणक लोप भय गेल" (द्रष्टव्य : कीर्त्तिलता, द्वितीय पल्लव, पृ० ३९-४०)।

एहि दीर्घ मध्यान्तरित जागृति मे (उत्तरप्रदेशक) जौनपुरक शक्ति कें मिथिलाक उद्धारक प्रेरणारूपें स्वीकार्य संगत अछि। तैं मिथिलाक अधिकारी इतिहासशास्त्री डा० उपेन्द्र ठाकुर ओ प्रोफेसर राधाकृष्ण चौधरी दुहू विद्वान् कीर्त्तिलता मे उल्लिखित इब्राहिम शाह कें जौनपुरक शर्की सुल्तान प्रमाणित कयलन्हि अछि। दुहूक दृष्टिएं कीर्तिलताक जोणापुर कें योगिनीपुर (दिल्ली) प्रमाणित करबाक लेल जे तर्क डा० झा देलन्हि अछि, ओ विविध स्रोत सं प्राप्त ऐतिहासिक सत्यक मान्यताक विपरीत जाइत अछि (प्रो० चौधरी : हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत, पृ० ६९)। डा० ठाकुरक अभिमत अछि जे विद्यापति द्वारा देल जोनापुर-वर्णन ओ विद्यापतिक समकालिक मुसलमान इतिहासलेखक सभ सं प्राप्त विवरण मे पर्याप्त

साम्य अछि; संगहि, ई सहज सिद्ध अछि जे ओहि काल मे एतेक दूर प्रदेश मे सैन्य कें पठायब तुगलक साम्राज्यक लेल सम्भव नहि छल, कारण ओकरा अपने घर मे आगि लागल छलैक। तें डा० ठाकुरक शब्द मे डा० झाक निर्णय भारतक मध्ययुगीन इतिवृत्तक इतिहास-प्रसिद्ध तथ्यक विपाटन थीक। (डा० ठाकुर : हिस्ट्री आफ मिथिला, पृ० ३०१)।

उपर्युक्त विवेचनक आधार पर हमरा लोकनि निष्कर्षरूपें विक्रम सं० २५२ मे गणेश्वरक हत्याकाल मानि चालीस वर्षक राजनैतिक विलोड़नक पश्चात् वि० सं० ३९२ मे जौनपुरक इब्राहिम शाहक सहायता सं कीर्त्तिसिंह द्वारा मिथिलाक उद्धार कें ऐतिहासिक सत्य कही, तऽ कोनहुँ प्रकारक ऐतिहासिक असङ्गति नहि होयत।

खीष्टीय चतुर्दश शताब्दक उत्तरार्द्धक घटनाचक्र लय जाहि रूपें हमर विद्यापति एक गोट ऐतिहासिक ओ सामाजिक तथ्यावलित ग्रन्थ कीर्त्तिलता दयलन्हि अछि, ओहि सं हुनक व्यक्तित्वक एक गोट विलक्षण वैशिष्ट्यक उद्घाटन करब एतय संगत अछि। महामना विद्यापतिक किशोरावस्था उपर्युक्त दुर्योग मे कटल छल। कीर्त्तिसिंहक समवयस्क रूपें हुनकहुँ राष्ट्रसङ्कटक यातना भेल, ई सहज अनुमान हमरा लोकनि कय सकैत छी। हुनक पूर्वपुरुष-पिता, पितामह, प्रपितामह-सब लोकनि मिथिलाक राजवंशक भाग्यक संग घनिष्ठ भावें जोड़ल छलाह। प्रपितामह वीरेश्वर ठाकुर ओ पितामह जयदत्त ठाकुर मन्त्रिपद कें सुशोभित कय राज्य-सञ्चालन मे सक्रिय योग दयने छलाह, ई इतिहास प्रमित अछि। हुनक पिता गणपति ठाकुर महाराज गणेश्वरक जीवनकाल मे पूर्वपुरुष जकाँ राज्यसंसदक प्रभावशाली सदस्य छलाह। कुमार कीर्त्तिसिंह हुनक बालसखा छलथिन्ह। तें कीर्त्तिसिंहक दुर्भाग्य कविक अपन दुर्भाग्य छल। राष्ट्रविप्लव जखन भेल, तखन तऽ विद्यापतिक आयु प्रायः पन्द्रह वर्षक छल। अपन नायक कीर्त्तिसिंह जकाँ ओ वीरपुरुष छलाह। युग ओ अवस्थाक अनुरूप हुनका लेल वीर-पूजन धर्म छल। तें जखन 'कइ कुल भमि भिक्खरि भउँ', तखन वीरपुरुषक संग रहि जनशक्तिक पोषणक लेल सचेतन रहलाह।

तरुण विद्यापति मनोयोग लय ऐतिहासिक परिवर्त्तन सं उत्पन्न वात्याचक्र मे रहि युग सङ्कटक बोध कयलन्हि। वस्तुतः एहि बोध लय जे लोकसंसक्ति हुनक जीवन मे देखना जाइछ, तकरा देखि ई सहज कहल जा सकैछ जे विद्यापति मध्ययुगक प्रथम परिवेश-सचेतन साहित्यकार छलाह। डा० बिमान बिहारी मजुमदार सन् विवेकी आलोचकक मन्तव्य अछि : "कीर्त्तिलता, कीर्त्तिपताका तथा शिवसिंहक सिंहासनाधिरोहण विषयक पदसभ मे युद्धविग्रहक जीवन्त वर्णन पढ़ि

बुझना जाइछ जे विद्यापति मात्र लेखनी परिचालन नहि करैत छलाह; सम्भवतः ओ अपन प्रपितामहक अग्रज पुत्र चण्डेश्वर जकाँ युद्धहुँ मे सक्रिय भाग लेने होयताह'' (द्र० विद्यापति, भूमिका, पृ० १)। अनुमान असंगत नहि अछि।

अपन यौवन एवं तारुण्य मे हुनका युगक 'संग्राम-सूर' मेघनाद सदृश वीरकुमार-द्वय कीर्त्तिसिंह ओ शिवसिंहक 'सखा ओ सचिव' बनबाक सौभाग्य प्राप्त छलन्हि। युगक शक्ति-सञ्चालन आओर राजनीति-निर्धारण हुनक हाथ मे रहल। तँ ओ कीर्तिलताक ग्रन्थारम्भ मे कथावतारणक प्रसंग भृङ्ग-भृङ्गीक सम्वाद द्वारा युग-जीवन कें युगोचित प्रज्ञामन्त्र दयलन्हि।

भिंगी पुच्छइ भिंग सुन को संसारहि सार।
मानिनि जीवन मान सउं वीर पुरिस अवतार॥

भृङ्गी पूछैत अछि—हे भृङ्ग, कहू, संसार मे सार की थीक? भृङ्ग कहल—हे मानिनि, मानपूर्वक जीवन ओ वीरपुरुषक अवतार।

वीरपूजन लय विद्यापति कें ख्रीष्टीय चतुर्दश शताब्दक 'सैनिक-कवि' कही तऽ कोनहुँ प्रकारक अत्युक्ति नहि होयत। कोमलकान्तपदावलीकार विद्यापति जीवन-माधुर्य्य ओ प्रेमक अमर गायक छलाह, एकर प्रतिवाद हम नहि करैत छी। मुदा ई कहब जे हमर 'अभिनव जयदेव' मूलतः एवं मुख्यतः प्रेम ओ सौन्दर्यक कवि छलाह, सर्वथा असंगत ओ अतथ्यमूलक थीक। प्रसंगतः एतए ई ध्यातव्य जे संस्कृत कवि जयदेव लय साधारणतया हमरा लोकनिक जे धारणा बनल अछि, ताहू मे संशोधनक आवश्यकता उत्पन्न भय गेल अछि। इम्हर प्रसिद्ध इतिहासशास्त्री डा० नीहाररञ्जन राय अपन ग्रन्थ 'बांगालिर इतिहास' मे सदुक्तिकर्णामृत सँ प्रमाण संग्रह कय जयदेवक अन्य परिचय 'सैनिक कवि'क रूप मे उद्घाटित कयलन्हि अछि। "प्रस्तुत ग्रन्थ (सदुक्तिकर्णामृत) मे जयदेव रचित ३१ टा पद प्राप्त अछि, जाहि मे सँ मात्र पाँच टा गीतगोविन्दक अछि; किछु प्रकीर्ण श्लोक अछि—दूइ एकटा लक्ष्मण सेनक प्रशस्तिवाक्य अछि, अवशिष्ट सब पद युद्ध, शौर्य्यवीर्य, तूर्यनिनाद, संग्रामकीर्त्ति प्रभृति सँ संबद्ध अछि। एहि मे सन्देह नहि जे जयदेव वीररसहुक काव्य रचना कयलन्हि जाहि ग्रन्थ सँ ई श्लोक सब उद्धृत अछि। मुदा ओ काव्य हमरा सभक काल धरि नहि पहुँचल अछि''। (द्रष्टव्य : बाङ्गालिर इतिहास, पृ० ३९२)।

प्रसङ्गगत एहि ठाम ई कथा उल्लेख्य अछि जे गणेश्वर-असलानक आकस्मिक घटनाक पश्चात् मिथिला मे जखन राजनैतिक संकट उत्पन्न भेल, तऽ जनजीवन मे

वैप्लविक भावना एवं कर्मप्रचेस्टा कें नियोजित करबा मे हमर तरुण विद्यापति महाभारतक कृष्ण जकाँ लीला-पुरुष प्रमाणित भेलाह अछि। एहि संकटकाल मे विद्यापति अपन ओजोमय व्यक्तित्व एवं विशिष्ट प्रतिभा सँ मिथिलाक जीवनधारा मे एक गोट नव उद्वेलन प्रदान कयलन्हि, एहि मे रंचमात्र सन्देह नहि।

कीर्त्तिलताक आधार पर बुझना जाइछ जे ओइनीक श्रीविहीन भयलाक उपरान्त गणेश्वरक पुत्र वीरसिंह ओ कीर्त्तिसिंह तऽ पितृवैरक प्रतिशोधक लेल व्रती बनि देशदेशान्तर गेलाह, आओर तेसर पुत्र राजकुमार राजसिंह अपन माय कें लय सन्धिविग्रहिक मन्त्री आनन्द खाँ, गुणी मन्त्री गोविन्द दत्त, परशुराम सदृश पराक्रमी शङ्करभक्त हरदत्त, धर्माधिकारी हरिहर, नयनिपुण भवेश ओझा, विज्ञ न्यायसिंह राउत प्रभृति विश्वस्त परिजनक सङ्ग सुयोगक ताक मे अज्ञातवास करय लगलाह।

अम्हह एत्ता दुख्ख सुनि किमि जिव्विह मझु माए॥
अच्छे मन्ति विअक्खण तिरहुति केरा खंभ॥

तसु अछए मन्ति आनन्द खाण, जे सन्धि भेद विग्गहउ जाण॥
सुपवित्त मित्त सिरि हंसराज, सरवस्स उपेख्खइ अह्म काज॥

सिरि अह्म सहोअर राअसिंह, सङ्गाम परक्कम रुट्ठसिंह॥
गुणे गरुअ मन्ति गोविन्द दत्त, तसु वंश वडाइ कहब्बो कत्त॥

हर कउ भगत हरदत्त नाम, संगाम कज्ज जनि परसुराम॥
हेरेउ हरिहर धम्माधिकारि, जिसु पण अत्तिअ पुरसत्थ चारि॥

णय मग्ग चतुर ओज्झा भवेस, जसु पणाति न लग्गे कलुख लेस॥
अरु न्याय सिंघ राउत सुजाण, संगाम कज्ज अज्जुण समान॥

(द्रष्टव्य : कीर्त्तिलता, तृतीय पल्लव, पृ० १९४-१९९)

किन्तु विद्यापति सन् कर्मनिष्ठ ओ युगचेता पुरुषक लेल अज्ञातवास काम्य नहि छल। तैं ई सहज अनुमेय अछि जे ल० सं० २५२क पश्चात् ओ ओइनी कें त्यागि 'देवकुली' आबि गेलाह जतए देवसिंहक राजद्वार कविक लेल खुजल छल, कारण कविक बिसइवार वंशक सम्पर्क मिथिलाक राजवंश—प्रथमतः कर्णाट, तदनन्तर ओइनिवारक सङ्ग ऐतिहासिक रहल छल। ओतए कवि कें अन्तरङ्ग सुहृद रूप मे कीर्त्तिसिंह सदृश वीरकुमार शिवसिंह भेटलथिन्ह।

पुरुषपरीक्षाक शेषश्लोक मे देवसिंह कें 'रणजेता' कहल अछि। संगहिं, ओ गुणक राशि छलाह, 'जाचकजनगति' छलाह। प्रसिद्ध अछि जे ओ 'कनकमयतुलापुरुष'क दान कयने छलाह।

दत्तं येन द्विजेभ्यो द्विरदमथमहादानमन्यैरशक्यं
का वार्त्ता त्वन्यदाने कनकमयतुलापुरुषो येन दत्तः।

यस्य क्रोडातडागस्तुलयति सततं शासने वारिराशिं
देवेनऽसौ देवसिंहः क्षितिपतितिलकः कस्य न स्यान्नमस्यः ॥

(शैवसर्वस्वसार, भूमिका पृ० १)

किन्तु सामयिक राजनैतिक कुचक्र सभ सँ हुनका मे राजशासनक प्रति विराग उत्पन्न भेल। ओ वृद्धो भय गेल छलाह। तेँ 'निस्स्पृह' भय अपन जीवनकालहि मे ओ अपन पुत्र शिवसिंह कें राज्यभार दय धर्माचरण मे लागि गेलाह। मिथिला मे तथाविध परम्पराक प्रचलन प्राचीन कालहि सँ छल, कारण एकर निर्देश चण्डेश्वर ठाकुरक राजनीतिरत्नाकर मे उपलब्ध अछि। (द्रष्टव्य : राजनीतिरत्नाकर, राज्याभिषेकतरङ्ग, **अद्यारभ्य न मे राज्यं राजाऽयं रक्षतु प्रजाः**।)

शिवसिंह कीर्त्तिसिंह जकाँ कवि विद्यापतिक बालसखा छलाह। मिथिला मे जनश्रुति अछि जे विद्यापति शिवसिंह सँ दूइ वर्ष पैघ छलाह। वीर सभ मे मान्य, बुद्धिमानक बीच वरेण्य, विद्वान् लोकनि मे अग्रगण्य—वीर, सुधी ओ विद्वान् आदर्श मित्र कें पाबि कविक स्वप्न साकार भेल। ओ बुझलन्हि जे युगानुकूल वीर पूजनार्थ 'अक्खरखम्भारम्भ' सँ 'कव्वमंच' निर्माणक लेल आदर्श पुरुष प्राप्त भेल।

इम्हर शिवसिंहक यौवराज्याभिषेक कय देवसिंह कार्यभार सँ मुक्त भेलाह। वार्धक्य लय धर्माचरणक दिश ओ प्रवृत्त भेलाह। तखन नैमिषारण्यवास करबाक लेल ओ उद्यत भेलाह। पहुँचाबऽ मे विद्यापति संग देलथिन्ह। राज्याश्रय सँ कवि कें अनेक स्थान मे सुखेन भ्रमण करबाक सुअवसर भेटलन्हि। 'चरन् वै मधु विन्दति' कविक जीवन-दर्शन रहल छल। तेँ सतर्क मधुसञ्चयी भ्रमर जकाँ यात्राप्रसंग मार्गसभक महिमा ओ आकर्षणक सञ्चय कवि करैत गेलाह।

विद्यापतिक आयु पचीस सँ उपर ओहि समय रहल होयत। बाल्यावस्थहिं सँ शास्त्रादिक अभ्यास ओ कयने छलाह। पुराणनिगमादिशास्त्रक अध्ययन कय पण्डित भय गेल छलाह। जन्मजात काव्य प्रतिभा छल। नैमिषक एकान्त

तपोवन मे कविक वास वैदुष्यपूर्ण व्यक्तित्व एवं विमल कवित्वक प्रस्फुटन मे सहायक भेल। एतहिं देवसिंहक निदेश सँ अपन यात्रा-संस्मरण कें कलात्मक परिधान देबाक लेल भूपरिक्रमण नामक प्रथम रचना कयलन्हि जतए हुनक उन्नत एवं व्यापक मनोभावक दर्शन होइछ।

भूपरिक्रमण कवि पण्डित विद्यापतिक प्रथम संस्कृत रचना भेलहुँ एक गोट विशिष्ट कृति थीक। एहि सँ कविक जीवन-वृत्त, कविक मनोवृत्ति ओ साहित्य-दर्शन, तद्युगीन भौगोलिक ओ ऐतिहासिक स्थिति प्रभृति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ैछ।

सर्वप्रथम ई स्वीकार्य होयबाक चाही जे भूपरिक्रमण विद्यापतिक युवा-जीवनक प्रतिनिधित्व करैत अछि। ई आश्चर्यक विषय जे विद्यापति-वाङमयक लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान् डा० सुभद्र झा अपन शोधग्रन्थ 'विद्यापति-गीत- संग्रह'क गवेषणापूर्ण भूमिका मे एहि प्रसंग भ्रमवश निर्णय दयलन्हि अछि। हुनक मान्यता अछि जे विद्यापति भूपरिक्रमण (भूपरिक्रमा ?)क रचना शिवसिंहक आदेश सँ कयलन्हि (द्र० विद्यापति-गीत-संग्रह, भूमिका, पृ० ६१)। संभवतः डा० सुभद्र झाक वाक्य कें प्रामाणिक मानि विद्यापति काव्यक अधिकारी विद्वान् डा० शिवप्रसाद सिंहो दिग्भ्रमित भय गेलाह। (द्रष्टव्य : डा० शिवप्रसाद सिंह—विद्यापति, पृ० ५५) ग्रन्थप्रणयनक प्रेरणाक सम्बन्ध मे ग्रन्थारम्भ मे सुस्पष्टतः निर्देश अछि जे शिवसिंहक पिता देवसिंहक निदेश सँ ई ग्रन्थ लिखल जाइछ :

भूपरिक्रमणग्रन्थो लिख्यते च भुवि नैमिषे।
देवसिंहनिदेशाच्च नैमिषारण्यवासिनः॥

(द्र० भूपरिक्रमण, पृ० १)

'लिख्यते' वर्त्तमानकालिक क्रियापद सँ स्पष्ट अछि जे भूपरिक्रमणक रचना नैमिषारण्य मे रहि विद्यापति कयलन्हि।

प्रतिपाद्य विषय मे स्थानवर्णन-विद्या सँ सम्बद्ध तथ्यपरक आख्यानक वैशिष्ट्य सर्वोपरि अछि। वृद्धोपदेश अर्थात् दोसर सँ प्राप्त विवरण तथा शास्त्रानुमोदन अर्थात् अन्य ग्रन्थ मे उल्लिखित विवरण सँ अधिक महत्त्व 'स्वचक्षुषा दृष्ट्वा' चाक्षुष ज्ञान अर्थात् वर्णितदेशसभक प्रत्यक्ष दर्शन कें एहिठाम ग्रन्थकार देने छथि। फलतः एहि वर्णन मे चलन्त चित्रदर्शनक एकगोट अभिनव आकर्षण सर्वत्र उपलब्ध अछि। स्थान-वर्णन मे इतिहास-पुराण, लोकवृत्तक ओ मिथक कें समाविष्ट कय सन्तुलित परिचय प्रस्तुत कयल गेल अछि। शास्त्रीय कौशलक

बहिर्मुखता ओ ग्रन्थकारक प्रभावशाली व्यक्तित्वक बहुमुखताक दर्शन अथ सँ इति तक देखबा मे अबैछ। सामयिकताक आग्रह लय वीरपूजन कें आदर्श बनाय कलात्मकताक सङ्ग दानवीर, दयावीर, युद्धवीर आओर सत्यवीरक कथानियोजन भेल अछि। सर्वत्र विद्यापतिक उद्देश्य सक्रिय जीवनक गुणगाथा प्रस्तुत करब अछि।

किन्तु युगचेता विद्यापति कें एकान्त अरण्यवास मे बौद्धिक विलास काम्य नहि। तदर्थ युगक आवश्यकता लय मिथिला सँ बाहर रहब हुनका लेल सम्भव नहि रहल। तँ भूपरिक्रमणक रचना मे जे एक गोट बड़ पैघ योजना छल, ओ सम्पन्न नहि भय सकल। मिथिलाक राजनीतिक निर्धारण लेल विद्यापति शिवसिंहक ओतए घुरलाह।

इम्हर अराजकता-काल मे शिवसिंह तिरहुत उद्धारक लेल प्रयत्नशील छलाह। हुनका कवि सँ प्रेरणा ओ शक्तिक वाक्य भेटय लागल। विद्यापतिक प्राप्त पदक आधारपर ई प्रमाणित अछि जे शिवसिंहक प्रयास प्रथमतः प्रतिवेशी राज्य बङ्गालक सुल्तान गियासुद्दीन कें अनुकूल करबाक रहल। शिवसिंहक सङ्ग हुनक अन्तरङ्ग 'मित्र, सेनानी ओ निदेशक' विद्यापति सेहो छलथिन्ह। प्रसिद्ध अछि जे सुल्तानक सन्तुष्टिक लेल कवि 'उधसल केस कुसुम छिरिआयल, खण्डित दशन अधरे········महलम जुगपति चिरें जिवें जीवथु, ग्यासदीन सुरतान' सर्मपित कयलन्हि। नगेन्द्रबाबू स्टुअर्टक इतिहासक आधार लय गियासुद्दीनक मृत्यु सन् १३७३ ई० मानलन्हि। मुदा इम्हर डा० नलिनीकान्त भट्ट बङ्गालक स्वाधीन सुल्तान सभक विभिन्न मुद्राक परीक्षण कय प्रमाणित कयलन्हि अछि जे गियासुद्दीन सन् १३९२ ई० मे अपन पिता सिकन्दर कें युद्ध मे मारि 'गियासुद्दीन आजमशाह'क उपाधि धारण कय सन् १४१० ई० धरि बंगाल मे शासन कयलक। यदुनाथ सरकार गियासुद्दीनक शासन काल ई० सन् १३८९ सं० १४०९ मानैत छथि (द्रष्टव्य : हिस्ट्री ऑफ बङ्गाल, खण्ड २, पृ० ११६)। तँ शिवसिंहक बङ्गाल-यात्रा ख्रीष्टीय चतुर्दश शताब्दक अन्तिम दशकक घटना प्रमाणित होइछ। किन्तु ई सहज अनुमेय अछि जे हुनका गियासुद्दीनक ओतए सफलता नहि भेटलन्हि।

निराश भय शिवसिंह पश्चिमदिश प्रवृत्त भेलाह। जनश्रुति अछि, ओ दिल्लीक बादशाह द्वारा कैद कय लेल गेलाह, कारण बंगाल जाय मिथिला ओ दिल्लीक मैत्री परम्परा कें तोड़ने छलाह। ओहि विपत्काल मे कवि बादशाह नसीरुद्दीन महमूद नसरत शाह कें अपन दिव्य कवित्व-शक्ति सँ प्रसन्न कय शिवसिंह कें बन्धन

मुक्त करौलन्हि। ई घटना सन् १३९५ ई०क लगभगक होयत। एहि जनश्रुतिक ऐतिहासिकता सन्दिग्ध भय सकैछ। मुदा एहि सँ ई स्पष्ट अछि जे शिवसिंह कें दिल्ली-यात्राहुँ मे सफलता नहि भेटल। ओहि समय दिल्लीक तुगलक सल्तनत शक्तिहीन भय गेल छल। एहन परिस्थिति मे नसरतशाह सँ सैनिक सहाय्य दुराशा मात्र छल।

इतः पूर्व हमरालोकनि देखलहुँ अछि जे सन् १४०३ ई०क किछु आगू पाछू कीर्त्तिसिंह जौनपुरक सुलतान इब्राहिमशाह सँ सहायता पाबि तिरहुत उद्धार करबाक प्रयास मे सफल भेलाह। ई सुयोग देखि विद्यापतिओ कीर्त्तिसिंहक सान्निध्य मे पाछू नहि रहलाह, तकर अनुमान कीर्त्तिलताक वर्णन देखि प्रमाणसंगत बुझना जाइत अछि। जौनपुरक वीथी, गोपुर, वलभी, अट्टालिका, अरघट्ट, घाट-बाट आदिक जे शब्दचित्र कीर्त्तिलता मे प्राप्त अछि, ओकर अङ्कन चाक्षुष प्रत्यक्षक बिनु सम्भव नहि। खास दरबारक प्रकोष्ठक सङ्ग अन्दर दरबार मे स्थित शाही महलक दारिगह (स्कन्धावार), वारिगह (आस्थान-मण्डप) निमाज-गह (पूजागृह), षोआरगाह (भोजनागार) पोरमगह (शयनागार) आदिक विवरण एहि रूपक अछि, जाहि सँ स्पष्ट अछि जे कवि ओहि सभ कें अपन आँखि सँ देखने छथि। एवंप्रकारें युद्धवर्णनक प्रसङ्ग दृश्य-निरूपणक शब्दचित्र एवं अर्थ-चित्र मे कविक सैनिक मनोवृत्ति ओ युद्ध-संपृक्तिक स्पष्ट प्रमाण भेटैछ। उदाहरण-स्वरूप दुइ चारि वाक्य द्रष्टव्य अछि :

वाद्य-वाजु, सेना साजु ॥
करि तुरग पदाति संघल भेल, बाहर कए दहलेज देल ॥
सज्जह सज्जह रोल पलु, जानिअ इत्ति न मित्ति।
राय मनोरथ संपजअ कटकाबी तिरहुत्ति ॥

(कीर्त्तिलता, पृ० २१३-२१४)

तहिना—

हुङ्कारे वीरा गज्जन्ता, पाइक्का चक्का भज्जन्ता ॥
धावन्ते धारा टुट्टन्ता, सन्नाहा वाणे फुट्टन्ता ॥
राउत्ता रोसे लग्गीआ खग्गेही खग्गा भग्गीआ।
आरुठ्ठा सूरा आवन्ता ऊँमग्गे मग्गे धावन्ता।

(ओतहि, पृ० २८४-२८६)

असलान ओ कीर्त्तिसिंहक युद्धवर्णन—

तहि एक्कहि एक्क पहार पले, जहिं खग्गहि खग्गहि धार धरे।
हअ लंगिम चंगिम चारु कला, तरवारि चमक्कइ विज्जु भला ॥
टरि टोप्परि टुट्टि सरीर रहे, तनु सोणित धारहि धार बहे ॥
तनु रङ्ग तुरङ्ग तरङ्ग बसे, तनु छड्डइ लग्गइ रोस भरे।
सव्वउ जन पेक्खइ जुज्झु कहा, महभारह अज्जुन कन्न जहा ॥
(ओतहि पृ० ३०५-३०७)

उपर्युक्त युक्ति सभक आधार पर ई मानबाक अछि जे तिरहुत उद्धार कय कीर्त्तिसिंह विगत उपप्लव सँ रुग्ण मिथिला समाज कें स्वस्थ करबाक प्रचेष्टा मे विद्यापति कें आह्वान कयलन्हि। विद्यापति अपन वंशपरम्परा सँ स्मार्त्त छलाह। तैं हुनका सँ मिथिलाक समाजगठन मे स्मार्त्तसंस्कारक पुनः प्रचारक आशा कयल गेल।

विद्यापति बुझलन्हि जे समाज कें स्वस्थ एवं धर्मोन्मुख करबाक लेल समाज मे आत्मबल ओ शक्ति-सञ्चय चाही। राष्ट्रक लेल प्राणाहुति वीरपुरुषहि सँ संभव होइछ। तैं वीरभावनाक सञ्चारक लेल अपन चरितनायक कीर्त्तिसिंहक गुणगान अपेक्षित छल। तदर्थं ओ कीर्त्तिलता सन् जीवन्त ऐतिहासिक रचना कयलन्हि।

कीर्त्तिलताक रचना कीर्त्तिसिंहक शासनकाल मे भेल। तैं एकर रचनाकाल सन् १४०२ वा १४०३ ई० भेल। एकरा किशोरकविक रचना मानब असङ्गत होयत। ग्रन्थक समाप्तिवाक्य सँ स्पष्ट अछि जे एकर रचना कीर्त्तिसिंहक राजसिंहासनाधिरोहणक पश्चात् हुनक कीर्त्तिकें प्रोज्वल करबाक लेल भेल—

एवं सङ्गरसाहसप्रमथनप्रालब्धलब्धोदयां
पुष्णाति श्रियमाशशाङ्कतरणीं श्रीकीर्त्तिसिंहो नृपः।
माधुर्यप्रसवस्थलीगुरुयशोविस्तारशिक्षासखी
यावद् विश्वमिदञ्च खेलतु कवेर्विद्यापतेर्भारती ॥

नेपाल दरबार पुस्तकालय मे सुरक्षित हस्तलेख मे पाठोद्धार प्रसङ्ग उपर्युक्त श्लोकक 'खेलतु कवेर्विद्यापतेर्भारती'क स्थान मे भ्रमवश 'खेलनकवेर्विद्यापतेर्भारती' पढ़ल गेल। मुद्रित पुस्तकक अनुसरण कय अन्य सम्पादक लोकनिक संस्करण मे 'खेलन' पाठ रहल। 'खेलन'क आधार पर अनेक विद्वान् मानलन्हि जे विद्यापतिक

उपनाम खेलन छल, सङ्गहि ईहो धारणा बनल जे कीर्तिलताक रचनाक समय विद्यापति अल्पवयस्क छलाह। मुदा इम्हर अनूपसिंह लाइब्रेरी, बीकानेर, मे सुरक्षित हस्तलेखक आधार पर डा० वासुदेवशरण अग्रवाल मूल शुद्ध पाठ 'खेलतु कवेर्विद्यापतेर्भारती' राखि उपर्युक्त मान्यताक खण्डन कयलन्हि। (द्रष्टव्य : कीर्तिलता, पृ० ३१३) वस्तुतः कीर्तिलता कविक प्रौढ़ावस्थाक रचना थीक। पुस्तकक कोनहुँ वाक्य सं ई नहि बुझना जाइछ जे कीर्तिलता ग्रन्थकारक प्रारम्भिक रचना अछि। कतेको विद्वान् "बालचंद विज्जावइ भासा दुहु नहि लग्गइ दुज्जन हासा। ओ परमेसर सेहर सोहइ ई णिच्चइ णाअर मन मोहइ'क 'बालचन्द'क प्रमाण लय कीर्तिलता कें कविक किशोरावस्याक रचना मानलन्हि अछि। मुदा स्पष्ट अछि जे प्रस्तुत कथन मे 'बालचन्द' काव्यक लेल कहल अछि, एहि सँ काव्यक निष्कलंकता ओ पूजार्हता द्योतित अछि। कीर्तिलताकाव्य लय कविक विश्वास व्यक्त भेल अछि। आगू जाय कविक कथन अछि : "कोन प्रकारें बुझाउ ? कोन प्रकारें ककरो मनाउ ? कोन प्रकारें नीरस मन कें रसक लग लाउ ? हमर काव्यक भाषा उत्तम रस सँ युक्त होयत, तऽ जे एकरा बुझत से एकर प्रशंसा करत"।

का परबोधउँ कमन मनावउं, किमि नीरस मन रस लइ लावउँ ॥
जइ सुरसा होसइ मझु भासा जो बुज्झिहि सो करिहि पसंसा ॥

मुदा दुर्योग लय कीर्तिसिंहक शासनकाल एक आध वर्ष रहल। कीर्तिसिंहक नाम लय कोनहुँ पद अथवा कोनहुँ स्मृति ग्रन्थ प्रकाश मे नहि आयल अछि। युद्धोपरान्त ज्येष्ठ वीरसिंहक कोनहुँ उल्लेख नहि, तें सम्भवतः ओ युद्धहि मे वीरगति प्राप्त कयलन्हि, ई अनुमान युक्ति सङ्गत अछि। राजसिंह सेहो अज्ञाते रहलाह।

बलराम जकां राष्ट्रीय अभिशाप सं ग्रस्त नैमिषारण्यवासी महाराजा देवसिंह अनेक तीर्थक भ्रमण करैत वि० स० २९३ तदनुसार सन् १४०२ ई० मे गङ्गालाभ कयलन्हि, तऽ हुनक पुत्र शिवसिंह मिथिलाक अधिपति भेलाह। ल० सं० २९३, शक संवत् १३२४ अर्थात् सन् १४०२ ई०क चैत्रकृष्ण षष्ठी वृहस्पति दिनक सायंकाल देवसिंहक मृत्यु भेल। पिताक अन्त्येष्टि-महायज्ञ सम्पादित कय ओही वर्षक श्रावणशुक्ल सप्तमी वृहस्पति कऽ शिवसिंहक राज्याभिषेक विधिवत् भेल। राजधानी 'देवकुली' सं हटि कय वर्तमान दड़िभङ्गाक समीप दक्षिण-पूर्व दिशा मे वागवती सरिताक तट पर अवस्थित गजरथपुर मे स्थापित भेल। ओहि अवसर पर शिवसिंह अपन 'अन्तरङ्ग मित्र, परमोदार विद्वान् ओ सद्गुणी' विद्यापति कें 'अभिनव जयदेव'क विरुद ओ जरैल तप्पान्तर्गत बिसपी ग्रामक उपहार देलन्हि।

स्वस्ति श्री ।। गजरथपुरात् समस्तप्रक्रियाविराजमानश्रीमद्रामेश्वरीवरलब्धप्रसादभवानीभक्तिभावनापरायणरूपनारायणमहाराजाधिराज श्रीमच्छिवसिंहपादाः समरविजयिनो जरैलतप्पायां बिसपीग्रामवास्तव्यसकललोकान्भूकर्षकांश्च समादिशन्ति । ज्ञातमस्तु भवताम् । ग्रामोऽयमस्माभिः सप्रक्रियाभिनवजयदेवमहाराजपण्डितठक्कुरश्रीविद्यापतिभ्यः शासनीकृत्य प्रदत्तोऽतो यूयमेतेषां वचनकरीभूय भूकर्षणादिकर्म्म करिष्यथेति ल० सं० २९३ श्रावणसुदिसप्तम्यां गुरौ ।

शिवसिंहक यौवराज्य कालहि मे विद्यापति शताधिक पद रचना कय अपन मित्र कें अमर कयने रहथि । ल० सं० २९३—सन् १४०२ ई० मे वीरपुरुषक भाग्योदयक सङ्ग कविक प्रतिभाक समुचित प्रतिफलन भेल । जाहि ग्रन्थिलदण्डनीतिविषयक 'पुरुषपरीक्षा' ग्रन्थक प्रणयन देवसिंहक जीवनकाल मे ओ आरम्भ कयने छलाह, तकरा शिवसिंहक राजकाल मे पूर्ण कयलन्हि । कीर्त्तिलताक काव्यविधा लय कीर्त्तिपताका लिखबाक योजना बनौलन्हि । गोरक्षविजय नाटक ओ मणिमञ्जरी नाटिकाक रचना सेहो एही काल मे भेल ।

शिवसिंह विद्यानुरागी छलाह आओर छलाह पराक्रमी । हुनक विद्याप्रेम ओ शौर्य दुहू मध्ययुगीन मिथिलाक इतिहासक गौरवपूर्ण गाथा बनल अछि । "ई दुःखक विषय थीक जे हुनक शौर्य-वार्त्ता कें लेखबद्ध करबाक लेल कोनहु बारनी वा अफीफ नहि भेल" (प्रो० आर० के० चौधरी : हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत, पृ० ७४) ; तथापि विद्यापतिक पदावली, अवहट्ठ रचना ओ संस्कृत ग्रन्थ सँ हुनक व्यक्तित्व पर पर्याप्त प्रकाश पड़ैत अछि ।

देवसिंहक स्वर्गारोहण विषयक अवहट्ठ पद सँ बुझना जाइछ जे हुनक मृत्युक सङ्ग मिथिलाक उपर बाह्य आक्रमण—पूर्व ओ पश्चिम—दुहू दिशा सँ होमय लागल । एक तऽ यमराजक सैन्यबल आबि देवसिंह कें लय गेल ; दोसर यवन बल छल । शिवसिंह अपन अप्रतिम प्रतापक प्रदर्शन कय महिमा मण्डित भेलाह :

एक दिस जवन सकल बल चलिओ एक दिस जमराज चरु
दुहुए दलटि मनोरथ पूरओ गरुए दाप सिवसिंह करु ।
सुरतरु कुसुम घालि दिस पूरेओ दुन्दुहि सुन्दर साद धरु
वीर छत्र देखन को कारण सुरगण सोभैं गगन भरु ।।

(१३०७ सालक बङ्ग साहित्य परिषत्पत्रिका, विनोद विहारी काव्यतीर्थ, सँ उद्धृत) ।

राजा शिवसिंह शौर्य ओ रणविजय लय महावीरक रूप धारण कयलन्हि। पूर्व दिशा सँ झंझावात आयल, ताहि मे शिवसिंह उद्धारक प्रमाणित भेलाह ओ गौडेश्वर पराजित भेल। तत्पश्चात् पश्चिम सँ आक्रमण भेल, ताहू मे मिथिलाक महिमा कें शिवसिंह अक्षुण्ण रखलाह। एकर प्रमाण पुरुषपरीक्षाक समापन मे पुष्पिका श्लोक अछि :

यो गौडेश्वरगज्जनेश्वररणक्षौणीषु लब्धयशो
दिक्कान्ताकूचकुन्तलेषु नयते कुन्दस्रगामास्पदम्।

दिल्ली अथवा जौनपुर बादशाहक सामन्तराजाक रूप मे शासन करब शिवसिंह कें अपमान बुझना गेलन्हि। मिथिलाक संप्रभुता ओ स्वायत्तताक घोषणा ओ कय देलन्हि। ककरो कर देब मान्य नहि रहल। तें 'दनुजमर्दन'क रूप मे ओ अपन स्वर्णमुद्रा चलौलन्हि, जाहि मे सँ दुइ टा मुद्रा प्राप्त अछि। (द्रष्टव्य : भारतक पुरातत्त्व-सर्वेक्षणक वार्षिक प्रतिवेदन, १९१३-१४) ई काल मिथिलाक मध्ययुग मे सर्वाधिक गौरवकाल प्रमाणित भेल अछि।

मुदा शिवसिंहक तीनि वर्ष नौ मासक शासनकाल, बुझू, प्रचण्ड वातचक्रक शान्त उपक्रम मात्र रहल। चारूकात सँ मिथिलाक लेल राष्ट्रसंकटक घन उमड़ि पड़ल। एहि बेर राजलक्ष्मी शिवसिंहक संग नहि देलीह। रणभूमि सँ शिवसिंहक तिरोधान भेलाक बाद राजधानी गजरथपुर ध्वस्त भय गेल। मिथिला मे पुनः राष्ट्रविपर्यय उत्पन्न भेल।

विद्यापति जहिना असलानकर्तृक प्रथम राष्ट्रसंकट मे व्यक्तिगतभावें जोड़ल छलाह, तहिना एहि द्वितीय राष्ट्रसङ्कटक सम्मुखीन भेल छलाह, एकर प्रमाण हुनक अवहट्ठ भाषा मे लिखित दोसर ग्रन्थ कीर्त्तिपताका अछि।

कीर्त्तिलताक अतिरिक्त दोसरो एक गोट पोथी अवहट्ठ भाषा मे विद्यापति लिखलन्हि, एहि प्रकारक तत्त्वावधारण सर्वप्रथम महामहोपाध्याय हरप्रसादशास्त्री द्वारा कीर्त्तिलताक अनुसन्धानक्रम मे सन् १९२४ ई० मे भेल। ओना तऽ एहू सँ पूर्व १८८१ ई० मे तिरहुत मे प्रचलित विद्यापति पदावलीक संकलनक समय सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन साहब सुनने छलाह जे विद्यापति अपन युगक घटना लय दुइ गोट काव्य लिखने छथि ; एकटा कीर्त्तिलता ओ दोसर कीर्त्तिपताका। किन्तु शास्त्री महाशय द्वारा सम्पादित कीर्त्तिलता पोथीक भूमिका मे प्रत्यक्ष प्रमाणक आधार पर एहि लय युक्तिसंगत विवेचन भेटल। "कीर्त्तिलता एक रकम छपल गेल। किन्तु कीर्त्तिपताका लय किछु नहि कय सकलहुँ ; ई तऽ आओर एक सए वर्षक पूर्वक लेख जे तालपात पर टानल मैथिल अक्षर मे लिखल, तें पढ़ल

नहि गेल। ओहि मे आओर मुश्किल जे ८ सँ २१ पर्य्यन्तक पात नहि। फलतः असम्पूर्ण पोथीक उद्धार लेल विशेष उत्साह नहि भेल"। (भूमिका, पृ० २) आगू जाय म० म० शास्त्रीक मान्यता राखल अछि जे "हुनक (विद्यापतिक) इतिहासक गान सब, हुनक 'कीर्त्तिपताका' ओ 'कीर्त्तिलता', हुनका भारतवर्षक एकजन प्रधान इतिहासलेखक बना देलक अछि। भारतक जे इतिहास सम्पूर्ण भावें प्राप्त नहि अछि, अर्थात् हिन्दू समाजक इतिहास—हिन्दू पक्ष सँ इतिहास से हुनका सँ लिखित अछि। एतेक दिन लोकक विश्वास छल जे मुसलमान मात्र हमरा लोकनिक इतिहास लिखलन्हि अछि............एखन हमरा लोकनि देखलहुँ जे हिन्दू लोकनिओ इतिहास लिखने छथि, सत्यघटना लय विवरण लिखने छथि"। (द्रष्टव्य : हरप्रसाद रचनावली, विद्यापति, पृ० २२७)

कीर्त्तिपताका ग्रन्थरत्न कें उद्धार करबा मे मिथिलाक मान्य मनीषी डा० उमेश मिश्रक, ओ किछु अंश मे हुनक सुपुत्र डा० जयकान्त मिश्रक, सेवा स्तुत्य अछि। म० म० डा० उमेश मिश्र सन् १९३५ मे नेपाल नरेशक अनुकम्पा सँ काठमाण्डू स्थित वीरपुस्तकालयक तिरहुता लिपि मे विं० सं० ४२६ अर्थात् सन् १५३५ ई०क लिखित मूल कीर्त्तिपताकाक प्रतिलिपि देवनागरी मे उपलब्ध कयलन्हि। तत्पश्चात् ओकर आधार पर प्रयागस्थ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समितिक दिश सँ मैथिली साहित्यसमिति-ग्रन्थमालाक द्वितीय पुष्पक रूप मे कीर्त्तिपताकाक सम्पादन सन् १९६० ई० मे डा० मिश्र द्वारा भेल।

इतः पूर्व कीर्त्तिपताका लय कतेको विसंगतिक सृष्टि भेल छल। डा० सुभद्र झा सन् विशिष्ट विद्वान् अपन शोधग्रन्थ 'विद्यापति-गीत-संग्रह'क भूमिका मे एहि लय भ्रान्त मान्यता कें प्रसारित कयलन्हि। कीर्त्तिलता ओ कीर्त्तिपताका दुहू मे कीर्त्ति पद लय डा० सुभद्र झा कें धारणा भेलन्हि जे कीर्त्तिपताका कीर्त्तिलता जकाँ कीर्त्तिसिंहक ओ हुनक भाइ वीरसिंहक शौर्य गान सँ संबद्ध अछि। (द्रष्टव्य : विद्यापति-गीत-संग्रह, पृ० २४) तें हुनक निर्णय भेल जे कीर्त्तिपताकाक रचना कीर्त्तिसिंहक आदेश सँ भेल अछि। (ओतहि, पृ० ६१) डा० सुभद्र झाक पोथीक प्रकाशन सँ छए वर्ष पूर्वहु सन् १९४९ ई० मे डा० जयकान्त मिश्र प्रकाशित शोध प्रबंध 'ए हिस्ट्री आफ मैथिली लिटरेचर' खण्ड(१, पृ० १५१-१५३) मे दूइ गोट दीर्घ उद्धरण दय स्पष्टतः निर्देश कयने छलाह जे कीर्त्तिपताका महाराज शिवसिंहक प्रशस्ति ओ हुनक प्रेमगाथा लय रचित अछि। तें डा० सुभद्र झाक उपर्युक्त कथन 'हास्यास्पदकोटिक' भय जाइछ। एतबहि नहि। कीर्त्तिपताकाक प्रकाशनक पश्चातो कीर्त्तिलताक सञ्जीवनी व्याख्या कयनिहार पुरातत्त्ववेत्ता डा० वासुदेवशरण अग्रवालक तथाविध भ्रान्त मान्यता रहल अछि। डा० अग्रवालक

शब्द (रूपान्तर मैथिली) मे "हुनक (विद्यापतिक) 'कीर्त्तिलता' ओ 'कीर्त्तिपताका' जे अवहट्ठ भाषा मे लिखित अछि कीर्त्तिसिंहक कालक अछि। प्रथम मे हुनक युद्ध ओ द्वितीय मे हुनक अन्तःपुर जीवनक वर्णन अछि"। (द्रष्टव्य : कीर्त्तिलता, भूमिका पृ० ६)

किन्तु पोथीक मध्य खण्डित भेलहुँ वर्णित घटना-धाराक अनुसरण सँ ई स्वीकार्य होयत जे शिवसिंहक 'संग्राम-जात' कीर्तिक गान अछि। मूल पाण्डुलिपिक पृ० ३० सँ आरम्भ कय अन्तिम वाक्य धरि शिवसिंह देवनृपतिक संग्रामजात यश वर्णित अछि। कतेको ठाम शिवसिंह ओ रूपनारायणक नाम उल्लिखित अछि। प्रथम आठ पृष्ठ मे शृङ्गारक अनवरत धारा प्रवाहित अछि। ई शृङ्गार-केलि-वर्णन शिवसिंह सँ सम्बद्ध अछि अथवा अर्जुन सिंह सँ, तकर निर्णय लय विद्वान् सभक बीच मतवैविध्य संभव अछि, कारण ग्रन्थारम्भ मे गणेशवन्दनाक पश्चात् 'अज्जुनराअ'क अभूतपूर्व गाथाक गान प्राप्त अछि। मात्र आठम पृष्ठ मे शिवसिंहक नामोल्लेख युद्ध प्रसंगान्तर्गत अछि। मुदा पुस्तकक समापन वाक्य सँ स्पष्ट अछि जे ग्रन्थक आधिकारिक कथावस्तु शिवसिंह सँ संबद्ध अछि। पुष्पिका पद एहि लेल अकाट्य प्रमाण अछि :

एवं श्रीशिवसिंहदेवनृपतेः सङ्ग्रामजातं यशः
गायन्ति प्रतिपत्तनं प्रतिदिशं प्रत्यङ्गणं सुभ्रुवः।
एतत्कीर्त्ति (पताकया सुललिता) वाणी च विद्यापते-
राचन्द्रार्कमियं विराजितमुखाम्भोजेषु भू(तः) सदा ॥

उपर्युक्त पाठ डा० उमेश मिश्र द्वारा सम्पादित कीर्त्तिपताका पोथी सँ उद्धृत अछि। ई, जेना उपर कहल गेल अछि, तिरहुता लिपि मे लिखित हस्तलेखक आधार पर अछि। पटना कालेज पुस्तकालय मे मूल तिरहुता हस्तलेखक देवाक्षर मे रूपान्तरित दूइ गोट हस्तलिखित प्रति प्राप्त अछि। एतदतिरिक्त तिरहुता लिपिक फोटो कापी पटना कालेज मे अछि। उपर्युक्त पाठ सभ मे कोनहुँ विशेष अन्तर नहि, कारण सभक मूलाधार तिरहुता लिपि मे लिखित हस्तलेख रहल अछि। सुनबा मे आयल अछि जे कीर्त्तिपताकाक एक गोट प्राचीन हस्तलेख कवि-विद्यापतिक वंशज सौराठ निवासी श्री रामकृष्ण ठाकुरक ओतए अछि। संगहि, एकर तीन गोट छोट ताल पत्र, पात सं० ४, ५ ओ ७, मैथिलीक परम सेवी स्व० प्रोफेसर रमानाथ झाजीक संग मे छल, जे हुनक सुपुत्रक कथनानुसार कालक्रमे लुप्त भय गेल। श्रद्धेय रमानाथ बाबू अपन स्वर्गवास सँ किछु दिन पूर्व हमरा पत्रक सङ्ग तीनू पातक नकल कय पठौलन्हि। हुनक पत्रक किछु वाक्य कें

उद्धृत करब एहिठाम अप्रासङ्गिक नहि होयत : "हमरा संग तीन गोट छोट तालपत्र अछि, पत्र संख्या ४, ५ ओ ७ ओ तीनू कीटभक्षित जाहि सँ सब पात मे शतशः छिद्र छैक। परन्तु थिकैक ई ओही ग्रन्थक जकरा कीर्त्तिपताका कहल जाइत छैक। हमर एहि तीनू पात मे तकर कोनो उल्लेख नहि छैक मुदा नेपालक पोथी सँ ई पंक्ति सब मिलैत छैक। जयकान्त बाबू जे कीर्त्तिपताका छपओलैन्हि अछि तकर पृष्ठ ६, १० ओ १३ पर ई पंक्ति सब भेटत। परन्तु मिलाए कें देखबैक तँ स्पष्ट होएत जे ओकर पाठ केहन अशुद्ध छैक। हमर पाठ कतेक सुन्दर अछि। ई हम केवल अहोँटा कें पठाओल अछि। आइ बीस वर्ष सँ हम एहि तीनू पात कें जोगओने छी जे यदि आनो पात कतहु भेट जाए। आब एहि तीनू पात कें हम एहि ग्रन्थक प्रसङ्ग हमर अपन जे मत अछि ताहि सङ्ग छपाए देब। अहाँ कें जं एहि सं किछु काज भए जाए तं हम अपन जोगाएब सफल बुझब"।

उपर्युक्त हस्तलेख सभक आधार पर इम्हर किछु विद्वान् कीर्त्तिपताकाक पाठोद्धार करबाक लेल प्रयत्नशील भेल छथि। एहि प्रसंग डा० वीरेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा निबन्ध 'कीर्त्तिपताका : पाठसंशोधन एवं व्याख्या' (द्र० विद्यापति : अनुशीलन एवं मूल्यांकन, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी द्वारा प्रकाशित, पटना १९७३) मूल्यवान् अछि, यद्यपि मान्य विद्वान्क एहि पोथी लय कतिपय मान्यता सं सहमति संभव नहि। एकर विवेचन यथास्थान होयत।

संक्षेप मे कथासूत्र : शृङ्गारी नवचन्द्रचूड़ शिव, रसशीकरवर्षिणी भारती ओ समस्तविघ्नविनाशक गणेश—तीनूक वन्दना आरम्भ मे अछि। तत्पश्चात् चरितकाव्यक लक्षणानुरूप सुजन ओ दुर्जनक स्तुति ओ निन्दा कयल अछि। तत्पश्चात् पुनः गणेशवन्दनाक संग राजा अर्जुनरायक कीर्त्तिगुणगान अछि। राजा अर्जुन राय धर्म मे गुरु छथि, रसविवेकी छथि, दानी छथि, देवताक बाद जगदेव छथि, धर्मसहित शृङ्गार ओ बहुविध मल्लविद्याक व्यसनी छथि। हुनक राज्य मे सब किछु प्राप्त अछि। युद्धक सब साधन जेना शत्रु सेना कें नाश करबाक लेल हाथी, घोड़ा, रथ ओ पदाति चतुरङ्गी सेना साजल अछि। योग्य व्यक्ति कें दान देबाक लेल राजसम्पति सुरक्षित अछि। शासन मे धर्मक रक्षण अछि, अधर्माचरण लेल बन्धन। यश, पौरुष, ओ प्रताप लय राजा सकल महीमण्डल मे सुशोभित छथि। सभक घर मे उत्साह अछि। दान सँ दारिद्र्यदलन होइछ, तऽ खड्ग सं शत्रुखण्डन। बुझू, रामावतार भेल अछि। वीर अर्जुन रायक राज्य मे तिरहुतक मर्यादाक प्रवाह सर्वत्र प्रसृत अछि।

धम्म देखि बेवहार लोक नहि नहइ पराभव
सबका घर उव्वाहृ पलटि जनि जम्मिअ राहव
दाने दलइ दारिद्द खगो परिपण्डो खण्डिअ
जस पउरस पत्तापे सअल महिमण्डल मण्डिअ
वीरज्जुन राज विराज भइ तिरहुति मज्जादा बहि रहिअ।

तदनन्तर एक दिन आस्थानमण्डप मे राजाक समक्ष एकटा सिद्ध पुरुष अबैत छथि। राजाक जिज्ञासा भेल—तामस शृङ्गार असीम आनन्दक स्थान थीक वा नहि? उत्तर मे सिद्धपुरुष कहल : हरिश्चन्द्र, नल, रामराघव आदि संग्रामरते रहलाह, मुदा मथुरापुरीक गोपिकागण 'हरिकेलि' मे मग्न भय शृङ्गार रसक गान करैत छथि। तत्पश्चात् संस्कृत वाक्य मे व्याख्यारूपें कहल गेल—

सीताविश्लेषदुःखादिव रघुतनयो लब्धकृष्णावतारः।
पूर्वं कृष्णो यथाभूदरिकुलदमनः साम्प्रतं तादृशस्त्वम् ।।
तस्माद् भूपालमौले सुखमपि सुरतादेव देवानुभूयाः।
संसारे भोगसारे स्फुटमवनिभुजां श्रीफलं वा किमन्यत् ।।
संसाररत्नं मृगशावकाक्षी रत्नं च शृङ्गाररसो रसानाम्।
तच्चानुभूयाच्चिरमर्जुनेन्द्रः पुरानुभूतं मधुसूदनेन ।।

सीताक वियोगदुःख सँ, बुझू, रघुनन्दन राम कृष्णावतार लेलन्हि। प्राचीन काल मे जेना अरिकुलक दमन कयनिहार कृष्ण रहथि, तहिना अहाँ भेल छी। तेँ हे भूपालश्रेष्ठ, सुरतसमागमक सुख कें अनुभव करू। एहि भोग-संसार मे राजालोकनिक लेल राजलक्ष्मीफले स्पष्ट अछि। संसार मे रत्न मृगनयनी थीक, तहिना रस मे रत्न शृङ्गार। तकर अनुभव चिरकाल धरि राजा अर्जुन करथु, जेना मधुसूदन द्वारा प्राचीन काल मे कयल गेल।

तदनन्तर जाहि रूपें रामजन्म मे सीताक वियोग दावानल सँ दग्ध हृदय राम पूर्वखेद कें दूर करबाक लेल गोपकुमार कृष्णावतार लय सहस्रसुन्दरीक समुदायक संग सरस-लीला कयलन्हि, तकर विस्तार सँ बहुविध वर्णन राखल अछि। एहि ठाम एक गोट प्रयोजनीय अंशक उद्धृति पर्याप्त होयत :

चलन्त गोपकामिनी गअन्दमन्दगामिनी।
निरुथ्थसव्वभूषणा विलासहासदूषणा॥
सुवण्णकण्णकुण्डला (स्वामि) अङ्कमण्डला।
परक्खपातसङ्गिनी झणज्झणन्तकिङ्किणी॥
सुसोभसव्वलक्खणा विलासिनीविअक्खणा।
कलाकलाप्रसारिणी पिआनुरागशालिनी॥
कटक्खलक्खमोचणा सरोजपत्तलोचना।
विलासहासमण्डिआ मनोजतन्तपण्डिआ॥
दीघरकेसकपालकुटिलकोमलघनसामर।
दप्पमत्तकन्दप्पधनू जनि बान्धिअ चामर॥
निष्कलङ्कससिबिम्बसरिस सुन्दर मुखमण्डल।
पिअ अनुराग कहन्त स्रवण डोलइ वे कुण्डल॥
(स्व० प्रोफेसर रमानाथ झाजीक सौजन्य सँ प्राप्त हस्तलेख सँ उद्धृत)

शृङ्गारमूलक पूर्वपीठिकाक पश्चात् सहसा युद्धभूमिक दृश्य पूर्वदृष्ट रूप सँ उपस्थित कयल जाइछ।

वेणु-वीणाक मधुर मनोहर ध्वनिक स्थान मे रणभेरीक कर्णकटुशब्द आकाश-मण्डल मे गूँजि उठल। सेना सज्जित होमय लागल। वीरकेशरी शिवसिंह संग्राम मे सुशोभित भेलाह। कतेक शत्रुसैनिक घायल भेल; भीषण मुण्डरुण्ड सँ नर तर्पण होमय लागल। रणस्थल कम्पित भेल।

अपन सैनिक सभक दुर्गति सुनि सुल्तान उठि गेल जेना सूतल बिरनी खोधिओने जागल होय। खौंझा कय युद्धक लेल चलल। चतुरङ्ग सेना कें नदी पार करबाक हुक्म देल। पृथ्वीक चक्र काँपि उठल। शत्रुक सेना अपार छल, राजा शिवसिंहक सेना परिमित। तथापि राजाक आज्ञा भेल : पइसि कऽ मारह। थोर छह कि बहुत छह से जुनि बिचारह। बेर नहि बिसरतह। अधिक झंखने अधिक विपत्तिए होयतह। यशक लोभें बिनु क्षोभें शत्रुक सेना मे प्रवेश करह।

तखन सूरजू सेनापति सिंह जकाँ शत्रु सेना पर टूटि पड़ल। राउतपति भाऊराउत भीम जकाँ प्रहार करय लागल। 'खान' चौदन्त हाथीसभ कें चापि तरुआरि चलाय अश्वारोही सभ कें खेहारलक। धरमसिंहक सुत शत्रु कें रोकि

संग्राम कें रोकलक। रणकुशल राजपुत्र सुजनु, हरदत्ततनय हेरम्बु, बाहुबलभीषण भीषू, चोपगाह धनुर्वेदविचक्षण पुण्डमल्ल, बाणसन्धानी गोपाल मनिक, चन्दनकुल-कमल राजहंस, अरिमर्दक वीर जयसिंह, गोरखा सेनानी नगखान, प्रतापतनय अतुलपराक्रमी यशस्वी राजदेव, अन्य कतेको श्रेष्ठ राजपुत्र लोकनि लड़य लगलाह। शत्रुसेना मे खलबली मचि गेल। सातटा राउत ओ संगा, सुहन, केदार प्रभृति कतेको वीर सेनानी सद्गति प्राप्त कयलन्हि।

किन्तु तोरण टूटल। एक संगे सब दबाओल गेल। तखन क्रुद्ध भय रूपनारायण शिवसिंह सिंह जकाँ शत्रुक घोड़सवार कें धसबैत, समान रूपें बाण सं प्रहार कें निवारण करैत, खड्ग सं मुर्दा सभिक ढेरी लगबैत संग्राम मे सम्मुख भेलाह। कतेको राजकुमार हुनक सङ्ग दय नरसिंह कहबैत गेलाह। कुमार मुरारि ओ रामसिंह अपन अनुपम रणचातुरी सं शत्रुक गौरव कें खण्डित कयलन्हि। विदू, दामोदर, भीषू, राजवल्लभ, जनरञ्जन, मुद्राहस्तक सोने, विद्याधर, कमल सब गोटे शत्रुक सेना कें नाश कयलन्हि। जयसिंह हनुमान जकाँ रामचन्द्र-शिवसिंहक संग दय अरिमर्दन कयलाह। पछाति शिवसिंह सुल्तान सं युद्ध करय लगलाह, जेना ओ दशग्रीव रावण होय। एक पहर धरि सुल्तान रण कें सहन कयलक; गौड़ेश विनयभावें शिवसिंह दिश ताकल, किन्तु तकरा सफल नहि पओलक। शिवसिंह लड़ैत रहलाह। शत्रुसेना मे होहल्ला भेल—पड़ाय चल। शत्रुसेना छिन्न भिन्न भय गेल। मुदा अन्त दुःखद भेल। मिथिलाक राजलक्ष्मी आँखि मूँदि लेलीह। शिवसिंह शत्रुसेना कें खेहारैत वन मे भुतिआ गेलाह। श्रीसाखो ओ श्री सनेही झा हुनका खोजैत वन मे हेड़ाय गेलाह। एक गोट कापालिक शत्रु सँ मिलि गेल—ओहि दुहू वीर सैनिक कें पानिओ पीबक लेल नहि देल गेल। दुहू कें शत्रु सैनिक मारि देलकन्हि।

वीर शिवसिंह अज्ञाते रहलाह। वन मे कुसुमवर्षा भेल जेना केओ हुनका बाँहि पकड़ि उपर उठा लेलकन्हि।

उपर्युक्त कथासूत्रक अनुसरण सँ स्पस्ट अछि जे कीर्तिपताकाक पूर्वार्द्ध ओ उत्तरार्द्ध मे कथावस्तुक भिन्नता अछि; प्रथम मे प्रेमप्रसङ्ग राखल अछि तऽ द्वितीय मे युद्धप्रसंग। एक 'केलिकीर्त्तिपताका' अछि, दोसर 'संग्रामकीर्त्तिपताका'। प्रश्न अछि जे दुहू एकहि प्रधान चरित्रक गुणगान थीक वा दुइ भिन्न व्यक्तिक। म० म० डा० उमेश मिश्र मानलन्हि अछि जे पूर्वार्द्ध मे उपस्थापित कृष्णावतारक सम्पूर्ण कथा भगवान् कृष्णक अपेक्षा श्यामवर्ण महाराजा शिवसिंहक प्रणय-गान लय अछि। उत्तरार्द्ध मे राखल शिवसिंहक संग्रामजात यशक वर्णन कविक एहि

मनोभावक निदर्शन अछि जे समर्थ राजा ओएह छथि जे 'शृङ्गार ओ मल्ल' मे निपुण होथि। (द्र० कीर्त्तिपताका, भूमिका पृ० ८) एकर विपरीत डा० वीरेन्द्र श्रीवास्तवक धारणा अछि जे प्रथमार्द्ध 'अर्जुनकीर्त्तिगाथा' थीक, जकर निर्माण कवि शिवसिंहक तिरोधान भय गेलाक उपरान्त अथवा अन्य कोनहुँ समय अर्जुनक आश्रय मे रहि कयलन्हि। पूर्वार्द्ध ओ उत्तरार्द्ध दुहू पृथक्-पृथक् निर्मित भेल अछि, प्रथम शृङ्गाररससिद्ध अर्जुन सँ सम्बद्ध छल, आओर द्वितीय गौड़ेश सुल्तानक विजय सँ संग्राम मे यशस्वी वीररस सिद्ध शिवसिंहक चरित्र सँ। दुहू पोथी अपूर्ण रूपें प्राप्त भेल ओ दुहू कें एक पोथीक अंग बना देल गेल। (द्र० डा० श्रीवास्तव—विद्यापति; अनुशीलन एवं मूल्याङ्कनक अन्तर्गत निबन्ध 'कीर्त्तिपताका : पाठसंशोधन एवं व्याख्या' पृ० २६४) जाधरि कीर्त्तिपताकाक पाण्डुलिपि सम्पूर्ण रूप मे प्राप्त नहि भय जाइछ, ताधरि एहि विषय लय कोनहुँ निश्चयीकरण निरापद नहि। किन्तु ईहो सम्भावना सहज अनुमेय अछि जे शिवसिंहक राजकाल मे कवि हुनक प्रणयलीलाक वर्णन लिखने होथि, आओर तत्पश्चात् शिवसिंहक अन्तर्धान भेलाक उपरान्त अर्जुनक आश्रय मे अपन आश्रयदाताक मनस्तुष्टिक लेल मूल ग्रन्थक आरम्भिक अंश मे संशोधन कयलन्हि।

उत्तरार्द्ध मे ऐतिहासिक घटना कें कविदृष्टि जीवन्त रूप प्राप्त अछि। अपन तीनि वर्ष नौ मासक अल्पकालिक शासनकाल मे महाराजा शिवसिंह बंगालक हिन्दू वीर-सेनानी गणेशक सहयोग ओ मैत्री पाबि पूर्वाञ्चल मे एक गोट स्वतन्त्र हिन्दू साम्राज्यक स्थापना करबाक असामयिक साहस कयलन्हि, जाहि सँ बङ्गालक नवाब, जौनपुरक शर्की शाह, आओर किछु अंश मे दिल्लीक सल्तनत सभक कोप-भाजन भेलाह। कीर्त्तिपताका मे उल्लिखित विवेचन सँ स्पष्ट नहि जे शत्रुसेनाक सुल्तान के छल? इतिहासज्ञ लोकनिक मध्य एहि लय मतभेद अछि। डा० उपेन्द्र ठाकुरक धारणा छन्हि जे जखन शिवसिंह अपना कें 'अकर' घोषित कयलन्हि, तऽ दिल्ली सुल्तान रुष्ट भय गेल, आओर फलस्वरूप दुहूक मध्य भयंकर युद्ध भेल। (द्र० हिष्ट्री आफ मिथिला, पृ० ३१७) एकर विपरीत मान्यता प्रो० राधाकृष्ण चौधरीक छन्हि। हुनक दृष्टिएं युद्ध शिवसिंह आओर जौनपुरक इब्राहिमशाहक प्रतिनिधि सामन्तसेनानीक बीच भेल छल (द्र० हिस्ट्री आफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत, पृ० ७५) अस्तु, सम्भावना जौनपुरक दिश सं अधिक बुझना जाइछ। ओहि समय भारतक पूर्वाञ्चल दिल्लीसल्तनत सं बहुत किछु स्वतंत्र भय गेल छल; जौनपुरक शर्की शासनक प्रभाव अधिक छल। जाहि जौनपुरक सुल्तान सँ मिथिलाक उद्धार किछुए वर्ष पूर्व भेल छल, आओर जकर सान्निध्य पाबि भावावेश मे कविक नायक कीर्त्तिसिंह कहने छलाह—

अज्ज उच्छु व अज्ज कल्लानं।
अज्ज सुदिन सुमहुन्न, अज्ज माञो मभु पुत्त जाइअ।
अज्ज पुन्न पुरिसथ्थ पातिसाह पापोस पाइअ॥

(कीर्तिलता, पृ० १५७)

सङ्गहि, कविक धारणा छलन्हि—**एहु पातिसाह सब लोअ उप्परि तसु छप्परि करतार पए** (ओतहिं, पृ० १३२)—बादशाह सभक उपर छल, ओकर उपर केवल ओकर ईश्वर छलथिन्ह। ओकरे आततायी रूप मे देखि कवि कें नामोल्लेख करबा मे संकोच भेलन्हि, ई स्वाभाविक कल्प बुझना जाइछ। तथापि कोनहुँ निश्चित प्रमाणक अभाव मे एहि लय निश्चित धारणा बनायब निरापद नहि होयत। एतबा तऽ सहज अनुमेय जे एहि युद्ध मे मिथिला कें पूर्व, बङ्गाल सँ ओ पश्चिम, जौनपुर अथवा दिल्ली सँ सम्मिलित शत्रु सेनावाहिनीक सामना करय पड़ल छल।

युद्धक परिणाम मिथिलाक लेल बड़ दुःखद भेल। मिथिला मे पुनः राष्ट्रसंकट उत्पन्न भेल। भाग्यपुरुष शिवसिंह मिथिला कें छोड़ि दयलन्हि। किछु विद्वानक मतें ओ युद्ध मे परास्त भय नेपाल दिश पलायन कयलन्हि, तऽ किछु विद्वानक दृष्टिएं ओ युद्धक्षेत्रहि मे मारल गेलाह। कीर्त्तिपताका मे दुहूक सकेत अछि।

शिवसिंहक आश्रय सँ विहीन विद्यापतिक जीवनहुक भाग्यविपर्यय भेल। बारह वर्ष धरि स्वदेश तथा स्वसमाज सँ दूर रहि ओ प्रवास-जीवन नेपाल मे कहुना व्यतीत कयलन्हि। जनश्रुति सँ ज्ञात अछि जे कविवर महाराजा शिवसिंहक रानी लखिमा देवी अथवा लक्ष्मणा देवी कें अपन सङ्ग लय सप्तरि मे शिवसिंहक विश्वस्त मित्र द्रोणवारवंशी राजा पुरादित्य उपनाम 'गिरिनारायण'क आश्रय लेलन्हि। संभवतः किछु कालक लेल कवि शिवसिंहक पित्तीऔत भाइ अर्जुनक ओतए सेहो गेल होथि। किन्तु हुनक प्रवास-जीवनक अधिक समय पुरादित्यक शरणहि मे व्यतीत भेल। पुरादित्यक आदेश सँ लक्ष्मणाब्द २९९क लगभग व्यवहार सम्बन्धी पत्रावलीक आदर्शस्वरूप लिखनावलीक रचना कयलन्हि।

किन्तु ई प्रवासजीवन विद्यापतिक लेल तपस्याकाले छल। ओतए परिस्थिति-वश कवि अपन समय धर्मसाधना मे लगबय लगलाह। अपन हाथे ओ श्रीमद्-भागवतक प्रतिलिपि कयलन्हि जे दड़िभंगा राजपुस्तकालय मे प्राप्य अछि। ओहि हस्तलेखक शेषवाक्य अछि: "शुभमस्तु सर्व्वार्थिगता संख्या लं० स० ३०९ श्रावण शुदि १५ कुजे राजबनौलिग्रामे श्रीविद्यापतेर्लिपिरियमिति"। ओहि-ठाम बारह वर्ष धरि शास्त्रपण्डित तपस्वी विद्यापतिक आश्वासन वचन सुनि-सुनि

लखिमा महारानी कहुना अपन जोवन-यापन करैत गेलीह । तदनन्तर अपन पतिक कुशनिर्मित मूर्तिक सङ्ग चिता मे सती भय गेलीह ।

प्रिय मित्रक वियोग, लखिमा रानीक करुणा भावें निधन ओ चिरकालिक प्रवास—एहि सभ सँ कवि कँ जोवन मे अत्यधिक आत्ममन्थन करय पड़लन्हि । सभ दिश सँ आघात पाबि कविक जोवन निर्वेदमय भय गेल । कवि तखन साधक भय गेलाह । जीवनदर्शन आमूल परिवर्तित भय गेल । जाहि लोकवृत्तक गुण-गान भूपरिक्रमण ओ पुरुषपरीक्षा संस्कृतग्रन्थ आओर कीर्तिलता ओ कीर्त्तिपताका अवहट्ठग्रन्थ मे तरुण ओ लोकधर्मी विद्यापति कयने छलाह, ओकर निष्फलता हुनका बुझना गेलन्हि । जोवनक वार्धक्यक सङ्ग तखन ओ बुझलन्हि जे संसारक घटनाचक्र मनुष्यक इच्छा सँ स्वतन्त्र चलैत अछि । **'कालोऽस्मि लोकक्षय-कृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्त्तुमिहि प्रवृत्तः'** (गीता-११-३२) गीताक श्रीभगवान् कृष्णक वाक्य हुनका सार्थक बुझना गेलन्हि । लोकक उद्धार वीरपुरुष सँ संभव नहि । स्वयं सर्वशक्तिमान् भगवान् महाकाल छथि जे लोकक्षयक लेल समर्थ छथि । मानवनियति हिनकहिं अज्ञात शक्ति सँ सञ्चालित होइछ ; मनुष्य एकर प्रतिकूल नहि जा सकैछ । एकरा दैव कहो वा नियति, कोनहुँ अन्तर नहि अबैछ । तें—

> सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
> अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥
>
> (श्रीमद्भगवद्गीता—१८-६६)

महाकवि विद्यापति भगवत्-स्मरण ओ धर्माचरण लय तत्त्वालोचन जोवनक शेष चरण मे करैत रहलाह । बारह वर्षक प्रवासक बाद स्वदेश आबि राजकवि एवं राजपण्डित रूपें समादृत रहलाह अवश्य, मुदा सक्रिय राजनीति सँ दूर रहि धर्मकृत्य ओ लोकनीतिकृत्य लय शैवसर्वस्वसार, शैवसर्वस्वसारप्रमाणभूतसंग्रह, गङ्गावाक्यावली, विभागसार, वर्षकृत्य, गयापत्तलक ओ दुर्गाभक्तितरङ्गिणी ग्रन्थ सभक रचना कयलन्हि । राज्याश्रयक कारणें पद्मसिंह, हुनक पत्नी महारानी विश्वास देवी, हरिसिंह पुत्र नरसिंह 'दर्पनारायण', नरसिंहक पत्नी धीरमति, नरसिंहक पुत्र-त्रय धीरसिंह, भैरवसिंह ओ चन्द्रसिंह सभक नामोल्लेख मात्र उत्तरकालिक रचना सभक भूमिका ओ समाप्तिवाक्य मे कयलन्हि, किन्तु कीर्त्तिलता अथवा कीर्त्तिपताका मे उपलब्ध ऐतिहासिक आख्यान कें ओ कोनहुँ राजा वा रानीक जीवनगाथा लय प्रस्तुत करब हुनका अभीष्ट नहि रहलन्हि ।

वृद्ध ओ धर्मप्राण विद्यापति कें अपन तुरीयावस्था मे कीर्त्तिलता ओ कीर्त्ति-पताका सन् ग्रन्थरत्नक अनुपयोगिता बुझना गेल होन्हि, ताहि मे सन्देह नहि ।

किन्तु दुहूक महत्त्व ऐतिहासिकता लय अक्षुण्ण रहल अछि। एहि मे युगक वीर-पुरुषद्वयक माध्यमे कविक व्यक्तित्व, संगहि युगक व्यक्तित्व साकार भेल अछि। सांस्कृतिक संक्रान्ति उपस्थित भयला पर शाश्वत मानवीय मूल्यक रक्षणक लेल अर्थपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करब सचेतन आख्याताक धर्म होइछ। एतादृश साहित्यकार रागद्वेष सँ रहित युगसत्यक उद्घाटन करैछ।

श्लाघ्यः स एव गुणवान् रागद्वेषबहिष्कृतः।
भूतार्थकथने यस्य स्थेयस्येव सरस्वती॥

(द्र० कल्हण : राजतरङ्गिणी, प्रथम तरङ्ग, श्लोक ७)

तथाविध इतिवृत्तात्मक चमत्कार विद्यापतिक दुहू ऐतिहासिक आख्यान मे उपलब्ध अछि। जेना डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी कहलन्हि अछि : "एतए कविक लेखनी चित्रकारक ओ लेखनी नहि जे छाया आओर आलोकक सामञ्जस्य सँ चित्रसभ कें ग्राह्य बनवैत अछि; बलिक ओहि शिल्पीक छेनीक सदृश अछि जे मूर्तिसभ कें भित्तिगात्र मे उभारि दैछ, हमरालोकनि उत्कीर्ण मूर्तिक उचाइ-नीचाइक पूर्ण अनुभव करैत छी। ओहि समयक मुसलमानक, हिन्दूक, सामन्तक, नगरक, युद्धक, सेनासेनानी सभक एतेक जीवन्त ओ यथार्थ वर्णन भेटब कठिन अछि"। (द्र० हिन्दी साहित्य का आदिकाल, पृ० ७३)

तैं मध्ययुगक चरितकाव्यसभ मे कीर्त्तिलता ओ कीर्त्तिपताकाक महत्त्व अन्यतम अछि। ई सर्वथा स्वीकार्य होयत जे अपन आख्यान ग्रन्थ लय हमर विद्यापति स्मरणीय बनल रहताह। कीर्त्तिपताकाक पुष्पिका श्लोक :

एतत्कीर्त्ति(पताकया सुरञ्जिता)-वाणी च विद्यापते।
राचन्द्र कर्कामियं विराजितमुखाम्भोजेषु भूतः सदा॥

कविक गर्वोक्तिक अनुरूप विद्यापतिक कीर्तिपताका यावच्चन्द्रदिवाकर विराजित रहत।

काव्य

माधुर्यप्रसवस्थली गुरुयशोविस्तारशिक्षासखी ।
यावद्विश्वमिदञ्च खेलतु कवेर्विद्यापतेर्भारती ॥
(कीर्त्तिलता, पुष्पिकाश्लोक, पृ० ३१३-३१४)

जाधरि ई समग्र विश्व अछि, ताधरि माधुर्य रस कें उत्पन्न कयनिहारि ओ पैघ यशक विस्तारस्वरूप शिक्षा दयनिहारि सखी, कवि विद्यापतिक वाणी, क्रीड़ा करैत रहथु ।

वस्तुतः कविक उपर्युक्त कामना पदावली-काव्य लय चरितार्थ भेल अछि । ओना तऽ पूर्व विवेचनक आधार पर हमरा लोकनि देखलहुँ अछि जे स्मृतिशास्त्र-निबन्धन तथा ऐतिहासिक आख्यानक उत्कर्ष ओ उपलब्धि लय हमर विद्यापति सर्वभारतीय साहित्यकार रूपें चिरस्मरणीय रहताह । तैं हेतु म० म० हरप्रसाद शास्त्रीक मान्यता जे 'जाहि गीत सँ हुनक ख्याति अछि, जाहि गीत लय हुनक प्रतिष्ठा अछि, जाहि गान द्वारा ओ संसार कें मुग्ध कयलन्हि अछि, ओहि गीत सभ मे सँ एकोटा गीत ओ नहि लिखतथि ; केवल पण्डित रूपें स्मृति, पुराण, तीर्थ ओ स्थानविवरण प्रभृति संस्कृत ग्रन्थ लिखि सन्तुष्ट रहितथि, ततसत्तो कहल जाइत जे हुनक प्रतिभा उज्ज्वल आओर सर्वोन्मुखी छल," (हरप्रसादरचनावली, विद्यापति, पृ० २२२) सङ्गत आओर तथ्याश्रित बुझना गेल अछि । तथापि ई मानबाक थीक जे विद्यापति विद्यापति भेल छथि अपन पदावलीकाव्य लय ; विद्यापतिक प्रतिभाक पारस पत्थर हुनक पदावली अछि । पदावली लोक-गीतक अनुरूप मोहन काव्य थीक ; सङ्गहि, हम कहब, एहि गीत सभ मे विद्यापतिक धर्ममय व्यक्तित्वक दर्शन होइछ । कहबाक चाही जे कविक चमत्कारी व्यक्तित्वक निदर्शन हुनक पदावली काव्यहि सँ होइत अछि । कविक आन्तरिक जीवन ओ शिल्प-सौष्ठवक अभूतपूर्व परिचय पदावलीए मे उपलब्ध अछि ।

पदावली महाकवि विद्यापतिक सम्पूर्ण जीवनक साधना थीक । एहि ठाम कवि-व्यक्तित्वक आकर्षण सर्वोपरि रहल अछि । विद्यापति लोककवि छलाह । ओ बुझलन्हि जे वेदादि शास्त्र थीक, तऽ चित्र गीत, ओ काव्य उपविद्या । धर्मदर्शन ओ ज्ञानक लेल वेदादि शास्त्र उपयोगी भय सकैछ, मुदा लोकसिद्धिक लेल उपविद्या अधिक उपयुक्त होइत अछि । पुरुषपरीक्षाक वाक्य अछि—

जायते न भुवि विद्ययाऽपि या वेदशास्त्रविदुषां महेश्वरात् ।
चित्रगीतकविताकलाविदां सापि सिद्धिरूपविद्यया भवेत् ।।
(पुरुष-परीक्षा, चित्रविद्यकथा, पृ० ६१)

तैं एहि लोकसिद्धिक लेल विद्यापति लोकभाषा मे काव्यसाधना कयलन्हि।

फलतः पदावलीकाव्य लोकजीवनक आयतन बनल अछि। लोकमानसक स्थूल सँ आरम्भ कय सूक्ष्मतम भावना ओ अनुभूतिक निरूपण 'कोमलकान्त पदावली' द्वारा भेल अछि। जाहि मनोयोग आओर जाहि रागात्मकताक सङ्ग जनमानस कें जनभाषा द्वारा तृप्त ओ आह्लादित कयल गेल अछि; ओहि कारणें पदावली-काव्य भारतीयकाव्यसाहित्यक लेल एक गोट अनुपम अवदान-स्वरूप सिद्ध भेल अछि।

लोकभाषा मे लोकोपयोगी काव्यक रचना करब महाकविक प्रगतिशील प्रवृत्तिक परिचायक थीक। हुनक युग मे पण्डित लोकभाषा मे काव्य करथि, ई अमान्य छल। लोकभाषा गँमारू भाषाक रूप मे गृहीत छल, आओर अपभ्रंश एक गोट भ्रष्ट भाषाक रूप मे। बुधजनक सन्तुष्टिक लेल 'सक्कय-वाणी'क प्रयोग अपेक्षित छल। फलतः पण्डितवर्ग द्वारा हुनक उपहास खूब भेल। ओ हुनका सभ सँ तिरस्कृतो भेलाह। मुदा ओ कनिको विचलित नहि भेलाह। 'न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः'। ओ बड़ निर्भीक छलाह, तैं भाषा लय अपन अतुलनीय साहसक परिचय दयलन्हि। जनमानसक संप्रेषणीयताक लेल जतेक कथ्यवाणी उपयुक्त होइछ, ततेक प्राचीन साहित्यिक भाषा नहि। 'देसिल बयना सब्ब जन मिट्ठा'। परिणामतः 'देसिल बयना'क आकर्षण ओ लोकरुचिक संतुष्टि लय पदावलीकाव्य मे एक गोट अनुपम चमत्कार देखबा मे अबैछ।

मैथिली-भाषा-भाषीसमुदायक लेल पदावलीभाषा आत्मगौरवक एक गोट विषय थीक। विद्यापति सँ पूर्वहुँ नव्यभारतीय भाषाक काव्य उपलब्ध अवश्य अछि; मुदा पदावली मे जाहि सहज, किन्तु साहित्यिक भाषाक प्रयोग भेल अछि, काव्यभाषाक तथाविध रूप अन्य नव्यभारतीय भाषा मे ओहि काल धरि नहि आयल छल, ई विवेकी भाषाशास्त्री लोकनि एकस्वर सँ स्वीकार करैत छथि। तैं भाषिक दृष्टिएं पदावलीकाव्यक ऐतिहासिक महत्व अछि। पूर्ववर्त्ती नव्यभाषा परिनिष्ठित अपभ्रंशक यत्किञ्चित् नूतन भाषाप्रवृत्ति लय अर्द्धविकसित रूप मात्र रहल छल। एवंप्रकारें चर्य्यापद, डाकार्णव आदि प्राङ्मैथिली ग्रन्थ सभ मे अपभ्रंशक भाषिक विपाटन मात्र देखना जाइछ, तऽ ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा विरचित वर्णरत्नाकरक नव्यभाषा रूप मे संस्कृतभाषाक अनपेक्षित पुनरावर्त्तन। मुदा पदावली-भाषाक भंगिमा

भाषिक परिप्रेक्ष्य लय अनुपम अछि। एहि मे तत्कालीन मिथिलाक जनवाणी कें सहज, आकर्षक ओ जीवन्त रूप भेटल अछि। लोकजीवनक आवेश लय विज्ञ विद्यापति 'देसिल बयना' कें दुर्बोध नहि बनौलन्हि, मुदा अपन पाण्डित्य ओ नैसर्गिक प्रतिभा सँ ओकरा एहन मर्यादित रूप दयलन्हि जे परवर्ती तीनि शतक धरि मिथिला सँ बाहर कतेको विभिन्न भाषाभाषी क्षेत्रक शिक्षित समाज कें बोधगम्य रहल। इयह कारण थीक जे पदावलीकाव्य कालक्रमें भौगोलिक सीमा कें अतिक्रमण कय हिन्दी, नेपाली, बङ्गला, असमिया, उड़िया प्रभृति भाषासभक क्षेत्र मे लोकप्रियता प्राप्त कयलक अछि।

मुदा खेदक विषय थीक जे मैथिलीभाषाक प्रतिष्ठापक कविक पदावलीभाषा अपन मूल रूप मे सुरक्षित नहि अछि। पद बहुधा लोककण्ठ मे जीवित रहल अछि; लोकरसना पर निरन्तर नृत्य करैत पदावलीक भाषा अपन मूल रूप सँ बहुत किछु परिवर्तित अछि। संगहि, हिन्दी, बङ्गला, असमिया, नेपाली प्रभृति विभिन्न भाषाभाषीक सम्पर्क मे आबि विभिन्न भाषाक भाषिक तत्त्व सँ युक्त भय गेल अछि। तथापि कवि विद्यापतिक व्यक्तित्व काव्य मे एवंप्रकारें रूपायित भेल अछि जे पदावली-काव्यक यथार्थ परिचय प्राप्त करबा मे विशेष कष्ट नहि होइत अछि। वस्तुतः मध्ययुगक एकमात्र कवि विद्यापति छथि जनिक कविता 'भणिता'क अभावहु मे कविक परिचय दैछ। (द्रष्टव्य : अध्यापक शंकरी प्रसाद वसु : मध्ययुगेर कवि ओ काव्य, पृ० १३) फलतः पदावलीक प्रामाणिकता लय मूलतत्त्व सहज उपलब्ध अछि।

ई अनुमान करब असङ्गत नहि होयत जे विद्यापतिक जीवनकालहुँ मे पदसभ कें लिपिबद्ध करबाक प्रयास भेल। लोचनकृत रागतरङ्गिणी मे एकर संकेत भेटैछ। ओतए कहल गेल अछि जे स्वयं महाराजा शिवसिंह अपन प्रधान गायक (जयत ?) जयन्त कें पदावलीक सुरसन्धानक लेल विद्यापतिक सेवा मे नियुक्त कयने छलाह। तथापि पदावलीक कोनहुँ समकालिक हस्तलेख अद्यावधि उपलब्ध नहि भय सकल अछि। जे कोनहुँ हस्तलेख प्राप्त भेल अछि, ओ सब विद्यापतिक एक डेढ़ सए वर्ष पश्चात् लिखित अछि। ई हस्तलेख मिथिला, बंगाल ओ नेपाल तीनि स्रोत सँ उपलब्ध भेल अछि। संगहि, पद संकलनक दोसर प्रबल आधार लोककण्ठ रहल अछि। प्राप्त पद सभक भाषिक अध्ययन भेला सन्ताँ मूल भाषारूप निर्धारित भय सकैछ। तें एहि दिश अनुसन्धाता लोकनिक ध्यान जायब अपेक्षित अछि।

अस्तु। पदावलीकाव्य सम्पर्कित आलोचनाक लेल पद संग्रह लय स्रोत सभक अध्ययन वांछनीय अछि। एहि प्रसङ्ग मिथिला मे प्राप्त तीनि गोट पोथी

महत्त्वपूर्ण अछि। तरौनी तालपत्र पोथी, रामभद्रपुर पोथी आओर लोचनकृत राग-तरङ्गिणी। तरौनी मे तालपत्र पर लिखल एक गोट हस्तलेख महाशय नगेन्द्रनाथ गुप्त कें करगत भेलन्हि। ओकर उपयोग कय 'विद्यापति पदावली'क सम्पादन हुनका द्वारा बंगाब्द १३४२ मे भेल। पुस्तक प्रकाशित भेलाक बाद सम्पादक नगेन्द्रनाथ गुप्त हस्तलेख पोथी कें रक्षार्थ कलकत्ता विश्वविद्यालयक लेल सर आशुतोष मुखोपाध्याय कें दयलन्हि। एहि पोथीक प्रसङ्ग मान्य गुप्तक उक्ति मात्र प्रमाण ; कारण ओ पोथी हेराय गेल अछि। गुप्तक कथनानुसार तरौनी तालपत्र मे ३५० टा पद छल, जाहि मे सँ मात्र २३६ टा पद संकलन मे गृहीत अछि। १११ पद कें बाद करबाक कोनहुँ कारण हुनका सँ उल्लिखित नहि अछि। संभवतः ओहि पोथी मे विद्यापतिक पदक अतिरिक्त अन्य कविक पदो रहल होयत। तैं २३६ पद कें शुद्ध विद्यापति-पद मानि ओ सम्पादित पुस्तक मे स्थान दयलन्हि। एहि २३६ पद मे सँ ३१ टा पद मे विद्यापतिक भणिता नहि अछि। दोसर संकलन 'रामभद्रपुर पोथी'क नाम सँ प्रसिद्ध अछि। ई प्रति खण्डित अछि—पत्र संख्या १० सँ पूर्व अप्राप्त अछि ; अन्तिम पत्र संख्या १२१ थीक ओ सुरक्षित अन्तिम पद ४१८ अछि। पोथीक प्राप्ति दड़िभङ्गा जिलान्तर्गत रामभद्रपुर ग्राम निवासी पण्डित विष्णुलाल झा शास्त्रीक सौजन्य सँ भेल छल। एहि पोथीक अवलम्बन कय पण्डित शिवनन्दन ठाकुर ई० १६३६ साल मे 'विद्यापति विशुद्ध पदावली'क प्रकाशन कयलन्हि। हुनक मृत्युक पश्चात् हुनक 'महाकवि विद्यापति' नामक गवेषणापूर्ण पुस्तकक द्वितीय भाग मे उपर्युक्त पद कें पुनर्मुद्रित कयल गेल। प्राप्त ९३ मे सँ ६० पद विद्यापतिक भणिता सँ युक्त अछि ; दूइ टा पद मे अमिकरक भणिता अछि। अवशिष्ट ३१ पद मे विद्यापतिक कोनहुँ उल्लेख नहि अछि। एहि ३१ मे सँ ५ टा पद नेपाली पोथी मे विद्यापति नाम सँ उल्लिखित अछि। स्पष्टतः पाठशुद्धि लय ई हस्तलेख बड़ उपादेय अछि। तेसर प्रामाणिक स्रोत मिथिलाक ब्राह्मण कवि लोचनकृत 'रागतरङ्गिणी' सत्रहम शताब्दीक अछि जाहि मे विद्यापतिक ५१ टा पद सङ्कलित अछि। एहि मे सँ ३६ टा पद मे स्पष्टतः विद्यापतिक भणिता अछि ; तीनि पद मे भणिताक अभाव रहलहुँ सङ्कलक लोचन 'इति विद्यापतेः' लिखि विद्यापति-कर्तृक प्रमाणित कयने छथि। अन्य पद मे 'कविकण्ठहार' भणिता राखल अछि। एहि पुस्तक मे तात्कालिक तिरहुत मे प्रचलित विभिन्न राग-रागिनीक उदाहरणस्वरूप पदावली पद उपस्थित अछि। तैं भाषाक मूलरूपक सुरक्षण स्वाभाविक अछि।

विद्यापति कें बङ्गालक वैष्णव-भक्तकवि लोकनि द्वारा प्रस्तुत लीलागान काव्य मे बड़ पैघ अर्घ भेटल अछि। चैतन्यचरितामृत मे उल्लिखित अछि जे जयदेव, विद्यापति ओ चण्डीदास कृष्णचरित्र लय प्रकाश अपन गीत मे कयलन्हि :

"जयदेव विद्यापति आओर चण्डीदास ; श्रीकृष्णचरित्र तारा करिल प्रकाश।" 'श्री चैतन्यचरणामृत' सँ बुझना जाइछ जे चैतन्य माधवेन्द्रपुरी द्वारा रोपल प्रेमांकुरक वृक्ष छलाह : "पृथिवी ते रोपण करि गेला प्रेमांकुरक, सेई प्रेमेर वृक्ष चैतन्य ठाकुर"। माधवेन्द्रपुरी विद्यापतिक अल्पवयस्क समकालीन छलाह, कारण हुनक एक गोट प्रमुख शिष्य अद्वैताचार्य कें वयोवृद्ध विद्यापतिक सङ्ग साक्षात्कार भेल छलन्हि। ईशाननागर प्रणीत 'अद्वैतप्रकाश' मे एहि सम्मिलनक उल्लेख अछि। एकर ऐतिहासिकताक विषय मे कतिपय विद्वानूक असहमति रहितहुँ ई प्रमाणित अछि जे महाप्रभु चैतन्यक लेल विद्यापति जयदेव जकाँ पूज्य छलाह। चैतन्य देवक जीवनी लिखनिहार विद्वान् लोकनि एहि ऐतिहासिक तथ्य कें स्पष्टतः स्वीकार कयलन्हि अछि। "विद्यापति चण्डीदास श्रीगीतगोविन्द, ए तिन गीते कराय प्रभुर आनन्द"। महाप्रभु विद्यापतिक पद कें गाबि आत्मविभोर भय जाइत छलाह। तदुपरान्त विद्यापति पदावली कें गौड़ीय वैष्णवसम्प्रदाय मे अत्यधिक लोकप्रियता ओ श्रद्धा प्राप्त भेल। सत्रहम शताब्दक शेषार्ध मे रामगोपालदास द्वारा प्रस्तुत रसकल्पवल्ली पदसंकलन सर्वाधिक प्राचीन प्रमाणित भेल अछि, जाहि मे विद्यापति नाम सँ युक्त १२ टा पद संकलित अछि। तदुत्तर क्षणदा-गीतचिन्तामणि, पदामृतसमुद्र ओ पदकल्पतरु तीनि टा प्रामाणिक संग्रह अष्टादश शताब्दकालीन उपलब्ध अछि। एहि तीनूक अतिरिक्त यत्किञ्चित् अर्वाचीनकालक संकलन संकीर्त्तनामृत (सन् १६११ ई०) ओ कीर्त्तनानन्द (आओर किछु वर्ष पश्चात्) दूइ गोट आओर संकलन किछु पदक संग्रह लय उल्लेख्य अछि। १८म शताब्दीक प्रथम चरण मे श्री विश्वनाथ (हरिवल्लभ) चक्रवर्त्ती द्वारा संकलित ग्रन्थ 'क्षणदागीतचिन्तामणि'क ३१५ पद मे सँ २१ टा पद विद्यापतिक भणिता युक्त अछि ; ८ टा पद वल्लभभणिता युक्त, आओर ८ टा भणिताहीन पद विद्यापति रचित मानल जाइछ। एहि पद सभक ग्रहण नगेन्द्रगुप्त द्वारा सम्पादित 'महाकवि विद्यापति' मे भेल अछि। एवंप्रकारें अष्टादश शताब्दक मध्यक पदा-मृतसमुद्र श्री निवास आचार्यक वृद्ध प्रपौत्र ओ इतिहासप्रसिद्ध नन्दकुमारक गुरु श्रीराधामोहन ठाकुर द्वारा संकलित अछि, जतए विद्यापति भणिता युक्त ६४ टा पद संगृहीत अछि। 'पदकल्पतरु' वैष्णव पदक बृहत्तम संग्रह अछि जकर संकलन अष्टा-दश शताब्दक शेषार्द्ध मे गोकुलानन्द सेन द्वारा भेल। एहि मे एक सए तीस भक्त-कविक ३१०१ पद संगृहीत अछि जाहि मे १६१ पद विद्यापति भणिता सँ युक्त अछि। एहि विद्यापति पद सभ मे सँ १४ टा पद मिथिला एवं नेपालक पोथी सभ मे सेहो प्राप्त अछि। अन्य अप्रधान वैष्णव पद संकलन गौरपदतरंगिणी, पदरससार, पदरत्नावली प्रभृति मे सेहो विद्यापतिक पाँच-सात पद संकलित भेल अछि। संगहि, वैष्णव काव्यशास्त्रीय रसमञ्जरी, सिद्धान्तचन्द्रोदय प्रभृति कतिपय

ग्रन्थ मे उदाहरणस्वरूप विद्यापतिक किछु पद अनुलिखित अछि। पद-परिमाण ओ पद-भावगौरव दुहु लय बंगालक स्रोत महत्वपूर्ण अछि, मुदा सर्वत्र बंगला भाषाक मिश्रण सँ मूलभाषा परिवर्तित आ बहुत किछु विकृत भय गेल अछि। तथापि ई ध्यातव्य जे विद्यापतिक कतिपय सर्वोत्कृष्ट ओ मधुरतम पद 'तातल सैकत बारि-बिन्दु सम', 'सखि हे कि पुछसि अनुभव मोय' 'अनुखन माधव-माधव सुमरइत' प्रभृति पद सब बंगाल स्रोतहि सँ उपलब्ध अछि।

तेसर महत्वपूर्ण स्रोत नेपालक अछि। नेपाल ओ मिथिलाक बीच भौगोलिक सन्निकटताक संग धार्मिक, सांस्कृतिक ओ राजनैतिक मधुर सम्बन्ध अत्यन्त प्राचीन काल सँ रहल अछि। स्वयं विद्यापतिक बारह वर्ष धरि प्रवास नेपाल मे भेल छल। पछातिओ नेपालक विभिन्न राजदरबार मे मैथिली भाषा ओ मैथिल विद्वान् लोकनिक संरक्षण इतिहास प्रमाणित अछि। तैं नेपाल मे विद्यापतिक पदयुक्त संकलनक प्राप्ति स्वाभाविक कल्प थीक।

नेपाल राजदरबार-ग्रन्थागार मे विद्यापतिक पदयुक्त संकलन लय एक गोट पोथी सुरक्षित अछि। ई हस्तलेख प्राचीन मैथिली एवं प्राचीन बंगलाक्षरक सम्मिश्रण मे लिखित अछि। लिपि देखि अनुमान कयल जाइत अछि जे ई प्रायः चारि सए वर्ष पूर्वं अनुलिखित अछि। पोथीक उपर कोनहुँ नाम नहि छल। इम्हर कोनहुँ 'हिन्दीप्रेमो' देवनागरी मे 'विद्यापति का गीत' लिखि दयलन्हि अछि। ओना तऽ एहि पोथीक उपयोग नगेन्द्रनाथ गुप्त, खगेन्द्रनाथ मित्र ओ डा० विमान बिहारी मजुमदार विद्वान् सम्पादक लोकनि कयलन्हि, मुदा एकरा आधार बनाय स्वतन्त्र रूपें डा० सुभद्र झा 'विद्यापति-गीत-संग्रह' नाम सँ ग्रन्थ कें प्रकाशित कयलन्हि अछि। डा० झाक पदावलीसंस्करणक महत्व अङ्गरेजो मे लिखल पदावलीक भाषा ओ अन्य विषयक भूमिका लय अछि। पुनः 'शुद्ध पाठ ओ समीचोन अर्थ' उपस्थित करबाक उद्देश्य लय नेपालपोथीक नव संस्करण बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्क दिश सँ सन् १९६१ ई० मे 'विद्यापति-पदावली' नाम सँ प्रकाशित भेल अछि। दुहू संस्करण मे विद्यापतिक २६२ पद राखल गेल अछि, ओ परिशिष्ट रूपें नेपाल-पोथी मे प्राप्त अन्य कवि सभक पद ओ भणिताहीन पद सेहो देल अछि।

नेपाल पोथी मे सब मिलाय २८८ पद सङ्कलित अछि जाहि मे २६२ पद विद्यापतिक अछि। किछु पद मे विद्यापतिक संग 'कविकण्ठहार' उपाधिओ गौरवार्थं राखल अछि।

इम्हर नेपालस्रोत सँ पदावलीक तीनि गोट आओर उत्स प्रकाश मे आयल अछि। एक गोट सङ्कलन 'भाषागीतसंग्रह' नाम सँ नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालय

मे सुरक्षित अछि। ई हाथ सँ बनाओल नेपाली कागत पर सुस्पष्ट तिरहुता लिपि मे लिखित अछि। कागत कें देखि बुझना जाइछ जे ई कम सँ कम दुइ सए वर्ष प्राचीन अछि। 'भाषागीतसंग्रह' जेना कि नाम सँ स्पष्ट अछि, मिथिला ओ नेपालक विशिष्ट कवि लोकनिक भाषागीत सभक संकलन थीक। पद-संकलन महाराजा सिद्धि नरसिंह मल्लक प्रेरणा सँ भेल अछि। पोथीक नामकरण परकालिक थीक, कारण ई शीर्षक अज्ञातव्यक्ति द्वारा देवनागरी लिपि मे लिखित अछि। एहि मे १४६ गीत अछि जाहि मे एक गीत आवृत्तिरूप अछि। फलतः सब मिलाय १४५ गीत भेल। कवि-संख्या निर्धारित नहि भय सकैछ, कारण अनेको गीत मे भणिता नहि अछि। २४ कवि लोकनिक स्पष्ट उल्लेख अछि। रागतरङ्गिणीक पद्धति सँ एतहु गीत रागनिबद्ध अछि जाहि सँ संकलनकर्त्ताक संगीतमर्मज्ञता सिद्ध होइछ। विद्यापतिक ६८ गोट गीत संकलित अछि जाहि मे सँ ३० गीत भणिता सँ युक्त पूर्णतया सुरक्षित अछि। २० गोट गीत मे 'विद्यापति' अथवा 'भन विद्यापति' मात्र कथनक संग अन्तिम पंक्ति अपूर्ण रूपें राखल अछि। अवशिष्ट गीत सभ मे सँ छए मे विद्यापतिक नामोल्लेख नहि, यद्यपि सङ्कलक टिप्पणी मे 'इति विद्यापतेः' लिखि एहि पदसभक प्रामाणिकता सिद्ध कयलन्हि अछि। एक गीत मे 'अभिनव जयदेव' आओर अन्य एक मे 'कण्ठहार' नाम आयल अछि। ई दुनू विद्यापतिरचित गीत थीक, कारण दुहू मे लखिमाक संग शिवसिंहक अनुशंसन अछि। अवशिष्ट ८ गीत एहन अछि जाहि मे विद्यापतिक नाम तऽ नहि अछि, मुदा ई गीत सब विद्यापतिपदक अन्य संकलन सभ मे प्राप्त अछि।

एक आओर हस्तलिखित संग्रह नेपालक राष्ट्रीय अभिलेखालय मे सुरक्षित अछि। (अभिलेखालय हस्तलेख विवरण, क्रमसंख्या ३९१) एकर नाम 'नाना रागगीतम्' थीक। ई सुन्दर नेवारी लिपि मे लिखित अछि। एहि मे लिपिकारक ओ लिपिकालक निर्देश नहि अछि; किन्तु अनुमानतः हस्तलेख दुइ सए वर्ष सँ कम प्राचीन अछि। एहि मे विभिन्न रागक उदाहरणस्वरूप २५ विभिन्न कविक १९८ गोट गीत संकलित अछि, जाहि मे सँ सर्वाधिक गीत विद्यापति रचित अछि। विद्यापति-गीतक संख्या २९ अछि। एहि मे सँ ११ गोट गीत अन्य पदावली संग्रह मे अप्राप्त अछि। एहि एगारह गीत मे विद्यापतिक भणिता स्पष्टतः उल्लिखित अछि। अन्य चारि गीत मे कवि कण्ठहारक भणिता अछि। जाहि पद सभ मे कवि कण्ठहारक भणिता अछि, तकरा विद्यापति रचित मानबा मे संगति नहि बुझना जाइछ, कारण एहि ठाम श्रीरघुनाथ पद, श्रीजित मथुरापति तथा श्री रघुनाथ चरणक सहोल्लेख अछि। तथाविध प्रसंग विद्यापतिक पद मे अन्यत्र अनुपलब्ध अछि।

'नानागीतरागम्' मे संकलित गीत सभक भाषा पर प्रतिलिपिकारक नेवारी भाषाक प्रभाव सर्वत्र परिलक्षित अछि। 'र' क स्थान मे 'ल', 'ल'क स्थान मे 'र', टवर्गक लेल तवर्ग प्रयोग आदि एकर स्पष्ट प्रमाण अछि। संगहि, एतए मैथिली, सधुक्कड़ी ओ बंगला भाषा सभक स्थानिक विपाटन देखना जाइछ। फलतः विद्यापतिक एहि गीत सभक भाषा विकृत भय गेल अछि। तथापि एहि पद सभ मे स्वर संगीत ओ शब्द संगीतक संग भावक जे रमणीयता उपलब्ध अछि, से विद्यापतिक निजो वैशिष्ट्य रहल अछि।

तथाविध एक गोट नव स्रोत कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय पुस्तकालयक हस्तलेख-विवरण (हस्तलेख सं० १६६५) सँ प्राप्त भेल अछि। ई हस्तलेख नेवारी लिपि मे लिखित अछि, जे हिस्ट्री आफ नेपालक रचयिता डॉ० राइट महोदय कें नेपालयात्रा मे प्राप्त भेल छल। प्रसंगगत हस्तलेख जगज्ज्योतिर्म्मल्ल रचित 'हरगौरीविवाह' नाटकक थीक। जगज्ज्योतिर्मल्लक राज्यकाल सन् १६१३ ई० सँ १६३७ ई० धरि अछि। एहि हस्तलेखक लघु फिल्म प्रतिलिपिक आधार पर ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयक सुधी विद्वान् डा० रामदेव झा नाटकक मुद्रित संस्करण (द्रष्टव्य : मिथिला रिसर्च सोसाइटी प्रकाशन, लहेरियासराय, दरभंगा, १९७०) प्रस्तुत कयलन्हि अछि। एहि नाटक मे विद्यापतिक सात गोट गीतक अन्तर्निवेश नाटक मे गेयताक लेल भेल अछि। एहि ७ मे सं तीन गीत अन्य प्रकाशित विद्यापति पदावली मे अप्राप्त छल। सातो गीत हरगौरी विषयक अछि जे भक्तिभावित अछि।

उपर्युक्त तीनू स्रोत सं प्राप्त चालीसो नवीन पद कें हम कलकत्ता विश्वविद्यालयक हिन्दी विभाग दिश सं प्रकाशित शोधग्रन्थमाला 'संकल्प'क अन्तर्गत (सन् १९७३ ई०) प्रबन्ध 'कविविद्यापति' मे एक संग राखि प्रकाशित कयलहुँ, जतए एकमात्र उद्देश्य रहल अछि विद्यापतिक काव्यचेतनाक अभिनव मुक्ता सभ सं विद्यापतिकाव्य-प्रेमी लोकनि कें आकृष्ट करब।

विद्यापतिपदसंकलनक दोसर मूलाधार लोक-कण्ठ थीक। लोकप्रियता लय विद्यापतिक कतेको गीत मौखिक रूप सं आबि रहल अछि। लोककण्ठ सं गीत पद कें सुनि संकलयिता विद्यापतिक गीतसभक संग्रह कयलन्हि अछि। तथाविध प्रथम प्रयास सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन द्वारा भेल अछि। डा० ग्रियर्सन ४ दिसम्बर १८७७ सँ १३ जुलाई १८८० धरि मधुबनी-दरभंगा मे डिप्टी कलक्टर ओ कलक्टर दुहू पदाधिकारी छलाह। ओहि अवधि मे ओ मैथिली भाषा आओर साहित्य मे अभिरुचि राखि कतेको महत्त्वपूर्ण अनुसन्धान कयलन्हि। ओहि क्रम मे अन्धगायक ओ परम्परानिष्ठ वैष्णव-भजन मण्डलीक सहाय्य सँ लिखित अथवा

मुखस्थ प्राप्त ८२ विद्यापति-पदकें लिपिबद्ध कयलन्हि ; जाहि संग्रह कें सम्पादित एवं अनूदित कय सन् १८८१ ई० मे बंगाल एसियाटिक सोसाइटीक जर्नलक अन्तर्गत 'मैथिली क्रेस्टोमैथी' नाम सँ प्रकाशित करौलन्हि। ८२ पद मे सँ पचपन पद मिथिला, नेपाल अथवा बंगाल स्रोत सँ उपलब्ध पोथी सभ मे सँ कोनहुँ मे प्राप्त नहि अछि। पचपन मे सँ चारि गोट पद (सं० २३, २६, ४९ ओ ६९) अप्रामाणिक अछि, कारण चारू परवर्ती कालक 'मिथिलागीतसंग्रह' मे चारि भिन्न कवि चन्द्रनाथ, नन्दीपति, रुद्र झा, ओ धैर्यपतिक भणिता सँ युक्त प्राप्त अछि। एक गोट पद (सं० ३७) रागतरङ्गिणी ओ तरौनी तालपत्र मे 'अमिय-कर'क भणिताक संग उपलब्ध अछि। अवशिष्ट ७७ पदक प्रामाणिकता लय कोनहुँ विसंगति देखबा मे नहि अबैछ। हँ, ई स्वीकार्य्य अछि जे पदभाषाक आधुनिकीकरण लय मैथिली क्रिस्टोमैथी मे संकलित पदसभक भाषिक महत्त्व नहि रहि गेल अछि। भाषाविद् डा० ग्रियर्सन स्वयं एहि त्रुटि कें स्वीकार कयलन्हि अछि, कारण महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्रीक सौजन्य सँ प्राप्त नेपाली प्राचीन संग्रहक चर्चा करैत एकर उल्लेख कयने छथि। (द्र० ग्रियर्सन : आन सम मेडियेवल किंग्स आफ मिथिला, ई० १८९९, इण्डियन एण्टीक्वेरी, खण्ड २८ पृ० ५७) तथापि "तथ्य तऽ ई थीक जे एहि संग्रह द्वारा मैथिलीप्रेमी सभक ध्यान एहि दिश आकृष्ट करब हुनक प्रमुख उद्देश्य छल, आओर एहि मे ओ पूर्णतया सफल भेल छथि। एतदतिरिक्त ईहो विस्मृत नहि होयबाक अछि जे मैथिली क्रेस्टोमैथी मैथिली संस्करणक प्रथम प्रयास छल जे परवर्ती अनुसन्धाता लोकनिक लेल प्रेरणादायकें नहि, सुदृढ़ सोपानो बनि सकल"। (द्रष्टव्य : डा० आशा गुप्त—जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन और बिहारी भाषा साहित्य, पृ० ९०) ग्रियर्सन साहेबक पद्धति कें अनुसरण कय वर्त्तमान शताब्दीक आरम्भ मे भोला झा विद्यापतिक कतिपय गीतक सङ्कलन अपन 'मिथिलागीतसंग्रह' मे कयलन्हि। मूल भाषाक स्वरूप मे परिवर्तन लय मिथिलागीतसंग्रह मे सङ्कलित विद्यापतिगीत बहुत किछु उपेक्ष्य भय जाइछ।

उपर्य्युक्त 'ग्रन्थाकर'क आधार लय विद्यापतिक काव्यक उपर मिथिला ओ मिथिला सँ बाहर अध्ययन प्रस्तुत भेल अछि। बङ्गला, हिन्दी, असमिया, नेपाली प्रभृति भाषा-जगत् मे हिनक पदावली गम्भीर गवेषणाक विषय बनाओल गेल अछि। ओ सब अपन दृष्टिएँ मूल्यवान् अछि।

विद्यापति-काव्यक अनुरागी बंगाली समाज मे सन् १९५३ ई० मे बंगीय साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित ओ नगेन्द्रनाथ गुप्त द्वारा सम्पादित 'विद्यापति ठाकुरेर पदावली' बहुचर्चित ओ बहुसमादृत ग्रन्थ रहल अछि, जाहि मे विभिन्न

विषयक ६३५ गोट पद संगृहीत अछि। एहि सँ बहुत पूर्वहु १८७३ ई० मे कलकत्ता सँ जगद्बन्धु महाजन पदावलीक अन्तर्गत, १८७८ ई० मे सारदाचरण मित्र विद्यापति ओ म० म० हरप्रसाद शास्त्री नव आविष्कृत विद्यापतिर पदावली (कलकत्ता १९०० ई०) मे पद प्रस्तुत कयने छलाह। उन्नैसम शताब्दीक द्वितीयार्द्ध मे जखन अङ्गरेजी शिक्षित नवजाग्रत बङ्गाली युवा समाजक जिज्ञासा अपन प्राचीन बंगाली कवि ओ बंगाली भाषा लय उत्पन्न भेल, तऽ ओ लोकनि प्राचीन कविगणक जीवनवृत्त ओ काव्यक परिचय प्रस्तुत करय लगलाह। एहि अभियानक प्रथम पुरोहित छलाह स्व० राजेन्द्रलाल मित्र जे सन् १८५८-५९ ई० मे 'विविधार्थसंग्रह' मे 'बङ्गभाषार उत्पत्ति' शीर्षक निबन्ध प्रकाशित करौलन्हि। ओहि निबन्ध मे प्राचीन बंगाली वैष्णव कवि लोकनिक परिचय कें लिपिबद्ध करबाक प्रसंग विद्यापतिक एकाधिक पद कें उद्धृत कयलन्हि। तदुनर पदावलीसङ्कलन लय कालीप्रसन्न विद्याविशारद-कर्तृक 'विद्यापति-पदावली' (द्वितीय संस्करण, कलिकाता १८९८ ई०), अमूल्यचरण विद्याभूषण सम्पादित 'विद्यापति' (कलिकाता १९३४ ई०), चारुचन्द्र वन्द्योपाध्याय सँ निष्ठाक संग सम्पादित 'विद्यापति, चण्डीदास ओ अन्यान्य वैष्णव महाजन गीतिका' (सन् १९३५ ई०), डा० मुहम्मद शहिदुल्लाक 'विद्यापति शतक' (ढाका रेनासाँ प्रिन्टर्सँ १९५४ ई०) प्रभृति ग्रन्थ वड़ महत्वपूर्ण अछि।

संगहि विद्यापतिक साहित्यिक योगदान लय अनेको समीक्षात्मक ग्रन्थ लिखित अछि। उदाहरणस्वरूप, डा० दिनेशचन्द्र सेनक पोथी 'बङ्गभाषा ओ साहित्य' (कलिकाता १८९६ ई०), डा० सुकुमार सेनक पोथी 'बाङ्गला साहित्येर इतिहास' (प्रथम खण्ड, कलिकाता १९४० ई०), खगेन्द्रनाथ मित्रक 'वैष्णव रस साहित्य' (कलिकाता १९५३ ई०), श्रीकुमार बन्द्योपाध्याय लिखित बांगला साहित्येर कथा (कलिकाता, वंगाब्द १३५३), डा० शशिभूषण दास गुप्त विरचित 'श्रीराधार क्रमविकास' (कलिकाता, बंगाब्द १३५५) प्रभृति पुस्तक सभ मे विद्यापति ओ हिनक काव्य लय पर्याप्त प्रकाश प्राप्त अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री ओ बंगला साहित्यक मर्मज्ञ विद्वान् डा० सुकुमार सेन 'विद्यापति-गोष्ठी' (कलिकाता, १९३६ ई०), 'विचित्र साहित्य' (द्वितीय खण्ड, कलिकाता बंगाब्द १३६३) ओ 'विचित्र निबन्ध' (कलिकाता १९६१ ई०) मे विद्यापतिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व लय अनुण्ण, किन्तु तथ्यपरक अध्ययन प्रस्तुत कयलन्हि अछि। इम्हर काव्यालोचन ओ साहित्येतिहासक दृष्टि सँ अध्यापक शङ्करी प्रसाद बसुक 'चण्डीदास ओ विद्यापति' (बुकलैण्ड प्राइभेट लिमिटेड, बंगाब्द १३६७ ई०) आओर 'मध्ययुगेर कवि ओ काव्य' (कलिकात्ता बंगाब्द १३७२), दूइ गोट अधिकारी ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि। 'विद्यापति-समीक्षा तथा विद्यापति नामाङ्कित बांगाली कविसमाजेर

विश्लेषणात्मक आलोचना' शीर्षक शोधप्रबन्ध पर सन् १९६७ ई० मे अध्यापक निरञ्जन चक्रवर्ती कलिकाता विश्वविद्यालय द्वारा 'डाक्टर आफ फिलासफी' उपाधि सँ विभूषित भेलाह अछि, आओर एहि शोधपरक समीक्षा ग्रन्थक प्रकाशन टटकहि १९७० ई० मे नैशनल प्रिंटिङ्ग वर्क्स द्वारा भेल अछि।

मिथिलाञ्चल मे विद्यापतिक भाषापरिचय ओ काव्यानुराग कें उत्पन्न करबाक श्रेय सर्वप्रथम विदेशी मैथिलीभाषानुरागी डा० ग्रियर्सनक रहल अछि। ओना तऽ ग्रियर्सन सँ पूर्वहुँ कोलब्रुक, फैलोन, जार्ज कैम्पबैल, जान बीम्स प्रभृति विदेशी विद्वान् लोकनि मैथिली-कवि ओ हुनक कृतिक अध्ययन अथवा सङ्कलन मे प्रवृत्त अवश्य भेल छलाह, मुदा मैथिलीक अविच्छिन्न साहित्यिक परम्परा सँ पाठक वर्ग कें परिचित करबा लेल विद्यापतिक पदसंग्रह सँ कार्यक शुभारम्भ स्वनामधन्य ग्रियर्सन कयलन्हि। डा० ग्रियर्सनक एतादृश अनुसन्धान कार्य मे स्व० कवीश्वर चन्दा झाक सक्रिय सहयोग रहलन्हि अछि। परिणामस्वरूप 'एन इन्ट्रोडक्शन टू द मैथिली लैंग्वेज आफ नार्थ बिहार कन्टेनिङ् ए ग्रामर, क्रेस्टोमैथी एण्ड वोकैबुलरी' सन् १८८१ ई० मे प्रकाशित भेल जतए मिथिलाक जन-साधारण ओ भजन मण्डलीक मुखस्थ ८२ गोट विद्यापति पद कें अंग्रेजी अनुवाद ओ टीका-टिप्पणीक संग लिपिबद्ध कय एक गोट नवीन दिङ्निर्देश देल गेल अछि। मुदा खेदक विषय जे ग्रियर्सनक पद्धतिक अनुसरण नहि भेलाक कारणें कतेको दशक धरि मैथिली मे विद्यापति लय कोनहुँ तथ्यपरक विवेचन नहि भेल। डा० जनार्दन मिश्र, स्व० पण्डित शिवनन्दन ठाकुर, म० म० डा० उमेश मिश्र ओ डा० सुभद्र झा चारू अभिनिविष्ट विद्वान् मैथिली भाषाभाषी होइतहुँ विद्यापतिविषयक काव्यानुशीलन सयुक्ति भाषान्तर मे उपस्थित कयलन्हि। हिन्दी भाषा मे लिखित कविक धार्मिक मान्यता लय डा० जनार्दन मिश्रक 'विद्यापति' (पटना, १९३३ ई०), पदावलीक विशुद्ध पाठ लय पं० शिवनन्दन ठाकुरक 'महाकवि विद्यापति', (पटना, विक्रमाब्द १९९८) तथा कविक जीवनवृत्त प्रसंग लय डा० उमेश मिश्रक 'विद्यापति ठाकुर' (इलाहाबाद, १९३७ ई०) सुन्दर समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। डा० सुभद्र झा नेपाल पोथीक पाठ कें आधार बनाय सन् १९५४ ई० मे 'विद्यापति-गीत-संग्रह' (मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी) पद-संकलन प्रकाशित करौलन्हि; जकर अङ्गरेजी भूमिका मे डा० झा विद्यापति पदावलीक भाषागत वैशिष्ट्य ओ व्याकरणिक विवेचन रखबाक प्रयास कयने छथि। पदावलीक अङ्गरेजी रूपान्तर सेहो कयल गेल, जाहि मे पदावलीक मूल सौन्दर्य विनष्ट भय गेल अछि। डा० झा स्वयं एहि दोष सँ परिचित छथि; कारण हुनक आत्मनिर्णय अछि: "हमर अपेक्षा मजुमदार अर्थ कें अधिक स्पष्ट कयने छथि"। (प्राक्कथन; पृ० २) डा० जनार्दन मिश्र, प० शिवनन्दन ठाकुर

ओ डा० उमेश मिश्र तीनू पण्डित प्रवर हिन्दी भाषा मे लिखित ग्रन्थ सँ हिन्दी-भाषाभाषी सम्प्रदायक बीच विद्यापतिक प्रति जे अनुराग उत्पन्न करीलन्हि, तकरा लेल विद्यापतिप्रेमी सब समय कृतज्ञ रहत।

विगत दशक मे विश्वविद्यालयीय पीएच० डी० उपाधिक लेल पाँच सात महत्वपूर्ण शोध प्रबन्ध मैथिलीक विद्वान् प्राध्यापक लोकनि द्वारा लिखल गेल अछि, जाहि मे विद्यापतिक व्यक्तित्व ओ काव्यत्वक प्रसङ्ग कतेको नवीन तथ्यक उद्घाटन भेल अछि। द्रष्टव्य : डा० इन्द्रकान्त झाक 'विद्यापतिक रचनाक आधार पर तद्युगीन मिथिलाक सामाजिक जीवन' (पटना विश्वविद्यालय, १९६७ ई०), डा० वासुकीनाथ झाक 'विद्यापतिक गीतक काव्यशास्त्रीय अध्ययन' (बिहार वि० वि० १९६९ ई०) डा० देवेन्द्र झाक 'विद्यापतिक शृङ्गारिक पदक काव्यशास्त्रीय अध्ययन' (पटना वि० वि०, १९७२ ई०) ओ डा० अमरनाथ चौधरीक 'विद्यापतिक भक्तिदर्शन' (पटना विश्वविद्यालय १९७२ ई०); अन्तिम शोधप्रबन्ध किछु परिवर्त्तनक संग प्रकाशित अछि। (द्र० ज्योतिप्रकाशन, पनिचोभ, दड़िभङ्गा, सन् १९७३ ई०) एही कोटिक अंग्रेजी मे लिखल 'विद्यापति—द मैन एण्ड पोएट' (विद्यापति, व्यक्ति ओ कवि) शीर्षक तथाविध शोधप्रबन्धक लेल डा० नरनाथ झा बिहार विश्वविद्यालय सँ सन् १९७० मे पीएच्० डी० उपाधि प्राप्त कयलन्हि। तहिना स्वतन्त्र रूपें लिखल कतेक आओरो श्रेष्ठकोटिक गवेषणात्मक निबन्ध ओ ग्रन्थ एवं शोधमूलक संकलन समय-समय पर प्रकाश मे आयल अछि। उल्लेख्य अछि—स्वर्गीय प्रो० रमानाथ झाक प्रबन्धसंग्रहक अन्तर्गत 'विद्यापतिक शिवसिंह' (दड़िभंगा, १९६३ ई०) तथा 'भाषा-गीत-संग्रह'क सम्पादन (मैथिली डिवलपमेंट फण्ड, पटना विश्वविद्यालय, १९६९ ई०), प्रोफेसर विश्वेश्वर मिश्र लिखित 'विद्यापतिक काव्यसाधना' (विद्यापति प्रकाशन, दड़िभंगा, १९६५ ई०), डा० मुनीश्वर झा सम्पादित 'विद्यापति-वाङ्मय' (मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कलकत्ता, १९६८ई०), पं० दीनानाथ झा सम्पादित 'विद्यापति पुनर्मूल्याङ्कन' (पटना, १९६९ ई०), मिथिला-भारतीक अन्तर्गत डा० इन्द्रकान्त झाक 'विद्यापति-कालीन मिथिला मे कृषि' शीर्षक निबन्ध (मैथिली साहित्य संस्थान, पटना १९६९ ई०), प्रोफेसर उमानाथ झा सम्पादित 'स्मारिका—विद्यापति' (चेतना समिति, पटना १९७३ ई०), डा० अमरेश पाठक, डि० लिट्क निबंध संचयनक अन्तर्गत शोध निबन्ध 'विद्यापति पदावली एवं वैष्णव साहित्य' (आलोक प्रकाशन, पटना १९७३ ई०), श्रीमती रञ्जना झा, एम० ए०, लिखित दुइ शोध निबन्ध 'मिथिलाक प्रकाश—पदकार विद्यापति' (मैथिली प्रकाश, शोध विशेषाङ्क कलकत्ता १९७४ ई०) आओर 'मैथिलीक परवर्त्ती साहित्यकार ओ विद्यापतिक

प्रभाव' '(विद्यापति - स्मृति - पत्रिका, मिथिला सांस्कृतिक परिषत्, कलकत्ता १९७४-७६ ई०), डा० वासुकीनाथ झाक 'पूर्वाञ्चलीय भाषा, साहित्य एवं संस्कृति पर विद्यापतिक देसिल बअनाक प्रभाव' (पूर्वाञ्चल, भाषा साहित्य एवं संस्कृति, चेतना समिति, पटना १९७२ ई०) आदि।

विद्यापतिविषयक पर्यालोचनक इतिवृत्त हिन्दी जगतो मे पर्याप्त भेटैछ। ओना तऽ 'हिन्दी जगत्क प्रकाण्ड पण्डित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपन प्रसिद्ध ग्रन्थ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'क 'फुटकल रचनाएं' शीर्षक चतुर्थ प्रकरण मे खुसरोक संग 'मैथिल कोकिल' विद्यापति कें राखि समुचित न्याय नहि कयलन्हि, तथापि उत्तरकालिक हिन्दी साहित्येतिहासक लेखक डा० रामकुमार वर्मा, डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रभृति विद्वान् लोकनि हिनका मध्ययुगक विशिष्ट कवि मानि अपन ग्रन्थ मे समुचित स्थान दयलन्हि अछि। पछाति पदावली काव्य लय कतेको समीक्षात्मक ग्रन्थ प्राप्त भेल अछि; संगहि रसास्वादनक लेल अनुकूल पद-संकलन सेहो ओहि ग्रन्थ सभ मे राखल अछि। यथा—सूर्यबली सिंह ओ लालबहादुर सिंह सम्पादकद्वयक 'विद्यापति' (सरस्वती मन्दिर, बनारस १९५० ई०), श्यामलाल वशिष्ठक 'विद्यापति' (विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, १९५४ ई०), डा० जयनाथ नलिनक 'विद्यापति एक तुलनात्मक समीक्षा' (साहित्य संस्थान दिल्ली १९५९), राम वशिष्ठ प्रसादक पोथी 'गीतकार विद्यापति (वि० पु० मन्दिर, आगरा, १९६३ ई०), डा० गोविन्द शर्माक 'विद्यापति की काव्यसाधना' नवयुग प्रकाशन, दिल्ली १९६५ ई०), डा० देवराज सिंह भाटीक 'विद्यापति पदावली' (विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १९७० ई०), डा० शिवप्रसाद सिंहक 'विद्यापति' (लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, १९७३ई०) डा० वीरेन्द्र कुमार बड़सूवालाक 'विद्यापति विभा' (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली १९७१ ई०) आदि। दुइ चारि गोट शोधप्रबन्ध सेहो उल्लेख्य अछि—डा० अरविन्द नारायण सिंहाक 'विद्यापति युग और साहित्य' (विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा १९६६ ई०) ओ डा० वीरेन्द्र कुमार बड़सूवालाक 'रीतिकाल और विद्यापति' (एस० चन्द एण्ड कम्पनी, दिल्ली १९६७ ई०)। उपर्युक्त पोथी सभ मे विद्वान् लोकनि विद्यापति-काव्यक प्रभाव कें स्वसंस्कारानुरूप अध्ययन कयलन्हि अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे अधिकांश हिन्दी विद्वान् विद्यापति कें चपल शृङ्गारी ओ दरबारी कविक रूप मे देखि कविवर कें निरूपित करबा मे कटिबद्ध भेल छथि। फलतः हिनका लोकनि द्वारा प्रस्तुत समीक्षण मे उदासीनभाव सहज समाविष्ट भय गेल अछि। बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद्क 'विद्यापति पदावली' पूर्वप्रकाशनक क्रम मे आलोचना-परक निबन्ध-सङ्कलन, 'विद्यापति : अनुशीलन एवं मूल्याङ्कन' (बिहार हिन्दी ग्रन्थ

अकादमी सँ १९७३ ई०), इम्हर प्रत्येक गीतक पाठभेद, विद्वत्तापूर्ण शब्दार्थ-विवेचन ओ कविक व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व लय तथ्यपरक विवेचन-विश्लेषणक संग 'गीत : विद्यापति' शीर्षक सँ डा० महेन्द्रनाथ दूबेक एक गोट सुन्दर शोधप्रबन्ध प्रकाश मे आयल अछि। (हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी १९७६ ई०) संगहि, डा० बुद्धिनाथ झा द्वारा प्रस्तुत शोधप्रबन्ध 'विद्यापति पदावली को सौन्दर्यशास्त्रमूलक मीमांसा' पदावलीक शास्त्रीय मूल्यांकन मे एक गोट नवीन आयाम उपस्थित कयलक अछि। एहि महत्त्वपूर्ण अनुसन्धानक लेल डा० बुद्धिनाथ झा सन् १९७३ ई० मे कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा पीएच० डी० उपाधि सँ विभूषित भेलाह अछि।

'कोमलकान्त पदावली' द्वारा भाव-सौन्दर्यक जे रूपायण पदावली काव्य मे भेल अछि तकर काव्य-वैभव लय कतहुँ दुइ मत देखबा मे नहि अबैछ। मुदा पदावली मे जाहि विशिष्ट अथवा अनुपम 'कर्तृत्व'क परिचय हमर कवि विद्यापति दयलन्हि अछि, तकर स्वीकृति सभ सँ समान रूपें नहि देल गेल। केओ हुनका 'कवि सार्वभौम' कहैत छथि, तऽ केओ 'चपल शृङ्गारी' मानि हुनक काव्य कें 'दीपक-कज्जल' बुझैत छथि। केओ मानैत छथि जे पदावली मे 'कल्पनाक विशाल, विश्वव्यापी, असीमकाल मे प्रसारित, सृष्टिरहस्योद्भेदकारी परिधि प्राप्त अछि, संगहि प्रेमक चिरन्तन अतृप्ति, आदर्श ओ वास्तविकताक बीच अनतिक्रम्य व्यवधान, सौन्दर्यक खण्डित आंशिक आलोक द्वारा ओकर मूल प्रसवणक दिश दुरूह अभियान, रूप मे रूपातीतक व्यञ्जना, अनायत्तक लेल विकल हस्तप्रसारण, इत्यादि प्रेमक दुरवगाह महिमा आओर आकर्षणक सुर एहि कविता मे आश्चर्यकारी रूपें अभिव्यक्त अछि। (कीट्सक) सौन्दर्योपभोग मे अपरितृप्ति ओ (शेलीक) आदर्शसन्धान मे ऊर्ध्वाभियान पिपासी हृदयावेग जेना एहि महागीत मे निविड़ एकात्मकताक सङ्ग युक्त भेल अछि'' । (द्र० डा० श्रीकुमार वन्द्योपाध्याय : बाङ्गलार साहित्येर कथा, पृ० २२-२३) दोसर दिश सर्वथा विपरीत दृष्टिकोण सँ 'विद्यापतिक कवित्व-धारा कें तत्कालीन सभा साहित्यक परिमित नहरि सँ प्रवाहित' मानि डा० सुकुमार सेनक अभिमत अछि : ''हुनक रचनाक भावरस मे ओ सार्वभौमिकता, ओ प्राण-शक्ति नहि जे साहित्यरसिक लौकनिक कौतूहलक प्रसार नहि भय, भविष्य मे जीवनरसिक लोकनिक लेल पाथेय होयत''। (द्र० विद्यापति गोष्ठी, पृ० ६०) तें एहि मान्य आलोचकक मतें प्राचीन कवि लुइ-कान्हक, पञ्जाबक बाबा फरीद-उद्दीनक, काशीकोशलक कबीरक, राजस्थानक मीराक, बघेलखण्डक गोयिनदासक अथवा बङ्गालक बाउललोकनिक पदावली मे जे 'जीवन-स्पर्श' प्राप्त अछि, तथाविध 'कविहृदयक अकृत्रिम भावरस' ओ 'सार्वजनीन तथा सार्वकालिक महिमा' विद्यापतिक पदावली मे नहि अछि।

तेँ एतए ई प्रश्न सहज उठैछ जे विद्यापतिकाव्यक प्रसङ्ग एहि प्रकारक परस्पर विरोधी मान्यताक पाछू की कारण ? उत्तरो सहज अछि। कोनहुँ वस्तु अथवा व्यक्तिक मूल्यांकन मे मूल्यांकन-कर्त्ताक मानस-प्रवणता अथवा संस्कारक प्रभाव सर्वोपरि रहैछ। विद्यपति-मूल्यांकन लय मतवैविध्यक मूल कारण एहो लय अछि। विभिन्न स्रोत सँ संकलित पदावलीक मुख्य प्रतिपाद्य राधाकृष्ण-प्रेम रहल अछि, जाहि लय 'रुचिवैचित्र्य'क कारणेँ अर्थग्रहण मे विप्रतिपत्ति आयब स्वाभाविक अछि।

जनसाहित्य भेलाक कारणेँ पदावली मे विविधविषयक पद समाविष्ट भेल अछि। किछु पद 'खाँटी' शृङ्गार लय रचित अछि, जाहि मे मात्र मानवीय रस प्राप्त अछि ; किछु लौकिक आग्रह लय पार्थिव पद अछि जतए जीवनक विविध पक्षक अभिव्यक्ति अछि। मुदा अधिकांश देवी-देवता सम्पर्कित पद अछि। जाहि धार्मिक पद मे हरगौरी विषयक ओ राधाकृष्ण विषयक पद प्रधान ओ बहु-संख्यक, मात्र चारिटा पद काली-दुर्गा अथवा आदिशक्ति विषयक ओ तीनिटा गङ्गा विषयक अछि। दशाधिक प्रहेलिका पद अछि। किन्तु विभिन्न श्रेणीक पद सभ मे राधाकृष्ण विषयक पदसंख्या सर्वाधिक। नगेन्द्रनाथ गुप्तक संकलन मे संगृहीत ९२७ पद मे सँ ८३९ पद राधाकृष्णक प्रेम लय अछि। मित्र ओ मजुमदार सम्पादित 'विद्यापति पदावली' ग्रन्थक आधार पर कहल जायत— मिथिला, नेपाल ओ बङ्ग तीनू स्रोत सँ प्राप्त पद संकलन मे विद्यापति भणिता सँ युक्त पद सभ मे सँ कम सँ कम ५०० पद स्पष्टतः राधाकृष्ण-प्रेमक गुणगान थीक। (द्रष्टव्य : विद्यापति, भूमिका पृ० ८३) एतदतिरिक्त कतिपय एहनो पद अछि जाहि मे राधाकृष्णक प्रत्यक्ष उल्लेख नहि भेलहुँ राधाक अपूर्व रूपलावण्यक व्यञ्जना स्पष्ट अछि। एक गोट उदाहरण—

साजनि अकथ कहि न जाए।
अबल अरुन ससिक मण्डल भीतर रह नुकाए।।
कदलि उपर केसरि देखल केसरि मेरु चढ़ला।
ताहि उपर निशाकर देखल किरता उपर बइसला।।
कीर उपर कुरंगिनी देखल चकित भमए जनी।
कीर कुरंगिनी उपर देखल भमर उपर फणी।।
एक असम्भव आओर देखल जल बिना अरविन्दा।
वेबि सरोरुह उपर देखल जइसन दूतिअ चन्दा।।

भन विद्यापति अकथ कथा इ रस केओ केओ जान।
राजा शिवसिंह रुपनारायण लखिमा देइ रमान।।

(न० गु० तालपत्र-१८३, मि० मु० २६)

तैं कवि विद्यापति कोन भाव लय तथाविध बहुसंख्यक पद लिखलन्हि अछि से अध्ययनक विषय भय जाइछ। ई पद सब भगवत्परक थीक वा पार्थिव—एकटा विवादक विषय विद्वान् सभक बीच बनल अछि। जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन (द्र० मैथिली क्रेस्टोमैथी, पृ० ३६), डा० जनार्दन मिश्र (द्र० विद्यापति, पृ० ४७), कुमार स्वामी (द्र० सौंग्स आफ विद्यापति पृ० २०), बाबू ब्रजनन्दन सहाय (द्र० मैथिल कोकिल विद्यापति, भूमिका पृ० २) प्रभृति विद्वान् लोकनि कें पदावली मे दिव्यभावक दर्शन भेलन्हि। विनयकुमार सरकार (द्र० लव इन हिन्दू लिटरेचर, पृ० २१), आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (द्र० हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० ५७-५८), महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री (द्र० हरप्रसाद रचनावली-कीर्तिलता, भूमिका, पृ० २२८-२२९), डा० रामकुमार वर्मा (द्र० हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ० ५०९), डा० उमेश मिश्र (द्र० विद्यापति ठाकुर, पृ० १६५), पं० शिवनन्दन ठाकुर, (महाकवि विद्यापति, पृ० १९४), प्रो० रमानाथ झा (द्र० निबन्धमाला, पृ० ७८), डा० सुभद्र झा (द्र० सौंग्स आफ विद्यापति, भूमिका पृ० १८६), अध्यापक शंकरी प्रसाद बसु (द्र० चण्डीदास ओ विद्यापति, पृ० ११६), प्रभृति आलोचक लोकनि भक्तिवादक खण्डन कय राधाकृष्ण विषयक पदावली काव्य कें शत प्रतिशत श्रृंगारमूलक मानलन्हि अछि। एतए उपर्युक्त विद्वान् लोकनिक मान्यताक खण्डन वा मण्डन लय युक्ति वा प्रत्युक्ति देबाक विचार हमर नहि। तथापि संक्षेप मे एहि प्रसंग किछु निवेदन आवश्यक भय जाइछ।

कहल जाइछ जे कवि शैव छलाह ओ कविवंश शैव छल; संगहि मिथिलाक समाज शैव छल ओ राजवंश शैव छल। किन्तु 'शास्त्र' विवरण मे देखल गेल अछि जे तथाविध सामन्यीकरण संगत नहि। प्रागऐतिहासिक कालहि सँ मिथिला मे विभिन्न धर्ममत मधुरभावें एकसंग आदृत रहल अछि; कखनहुँ साम्प्रदायिकता लय विरोधी मनोभाव देखबा मे नहि आयल। विद्यापति सन् उदार ओ प्रज्ञा पण्डित कें कोनहुँ सीमा मे आबद्ध करब समुचित नहि होयत। ओ तऽ 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'—एहि परमार्थ कें माननिहार छलाह। डा० जनार्दन मिश्रक शब्द मे 'हुनक हृदय मे हठधर्मक स्थान नहि छल। समान श्रद्धा सँ ओ सभ देवी-देवताक उपासना करैत छलाह''। अपनहि हाथ सँ भागवतक नकल करब, हरिहरक अद्वैतस्थापन, शिव, विष्णु, गणेश, आद्यशक्ति प्रभृति देवी-देवताक प्रति समान भाव सँ विभिन्न पोथीक मंगलाचरण मे प्रणतिज्ञापन, प्रभृति एहि लय प्रबल

प्रमाण अछि। तथाविध धार्मिक उदारता राजवंशहुँ मे छल। भैरवसिंह वैष्णव छलाह, कारण हुनक सभासद धर्माधिकारी वर्द्धमान अपन कृत्यमहार्णव मे, 'श्रीवासुदेवभक्तः श्रीमानयं नरेन्द्रः' कहलन्हि अछि। पुनः दण्डविवेकक मंगलाचरण मे वर्द्धमानक राधिका ओ गोपालरूप कृष्णक वन्दनाविषयक पद प्राप्त अछि :

साद्धं राधिकया वनेषु विहरन्नस्याः कपोलस्तले
घर्माम्भोविसरं प्रसारिणमपकर्त्तुं करेण स्पृशन्।
तत्र प्रत्युत सात्त्विकाम्बुमिलनादौ जायमाने जवाद्
अव्याद् वो विफलप्रयासविकलो गोपालरूपो हरिः॥

तहिना भैरवसिंहक अन्य सभासद वाचस्पतिक 'महादाननिर्णय'क आरम्भ 'तमालश्यामल' गोपालक आराधना सँ भेल अछि। विद्यापति अपन दुर्गाभक्तितरङ्गिणी मे एहि राजकुमार भैरवसिंहक उल्लेख श्रद्धाभाव सँ कयलन्हि अछि। (द्रष्टव्य : प्रस्तुत पुस्तक, पृ० २७)

ईहो कहल जाइछ जे मिथिलाक जनसाधारण मे विद्यापतिक शिवदुर्गागानक अधिक प्रचलन अछि, राधाकृष्ण विषयक पद विशेष प्रचलित नहि। मुदा पदावली-सङ्कलनक स्रोत सभ सँ एकर समर्थन नहि होइत अछि। ध्यातव्य जे बंगाल सँ प्राप्त सब पद वैष्णवभावापन्ने अछि, ओ नेपाल पोथीक विद्यापति भणिता सँ युक्त २५६ पद मे सँ १३१ पद मे कृष्ण अथवा कृष्णक कोनहुँ प्रतिनाम व्यवहृत अछि। मिथिलाक प्राचीन पदसंग्रह रागतरङ्गिणीक ५१ विद्यापति पद मे सँ २६ टा पद मे राधाकृष्णक स्पष्ट उल्लेख अछि ; हँ, कृष्णक प्रतिनाम माधव, हरि मुरारि, कान्ह, काला आदि राखल गेल अछि। पुनः जाहि पद सभ मे कृष्णक प्रतिनाम नहि अछि, ओहि मे सँ कतेको मे राधाकृष्णभावक व्यञ्जना अप्रत्यक्ष रूप सँ प्राप्त अछि। रामभद्रपुरपोथीक ९३ पद मे सँ ३९ पद मे कृष्ण, हरि, कान्ह अथवा मुरारिक उल्लेख भेल अछि। तरौनी तालपत्रक २३९ पद मे सँ ९१ पद मे कृष्णक प्रतिनाम प्राप्त अछि। भाषागीत संग्रहक २६ नवपद मे सँ १९ मे राधाकृष्णक संकेत अछि, २ टा पद हरगौरी विषयक अछि आओर अवशिष्ट चारू मे राधाकृष्णभावक व्यञ्जना अछि। नानागीतरागक ११ नूतन पद मे सँ ६ टा पद मे कृष्णक प्रतिनाम प्राप्त अछि, ओतए एकटा मे दामोदर सेहो भेटैछ। हरगौरीविवाहक तीनू नव पद प्रसंगानुकूल हरगौरीविषयक अछि। ग्रियर्सन द्वारा लोककण्ठ सँ जे ८२ पद सङ्कलित भेल, ओहि मे सँ ६४ पद राधाकृष्णविषयक अछि, अवशिष्ट आठ मे गंगास्तुति, मैनाकृत शिववर्णन, उमासखीकृत शिववर्णन ओ विवाहमंगल वर्णित अछि। ग्रियर्सन द्वारा संगृहीत

पदसङ्कलन जनसाधारण मे राधाकृष्णविषयक पदसभक विशेष प्रचलन कें प्रमाणित करैछ। फलतः उपर्युक्त पदसङ्कलन सभक संकेत राधाकृष्णपदावलीक विशेष लोकप्रियताक दिश अछि, कारण गीत-संग्रहक आधार अन्धगायक ओ घुम्मन्त भजनमण्डली रहल अछि।

किन्तु ईहो स्वीकार्य अछि जे पदावलीक धर्मपरकता कें बुझबाक लेल भारतीय स्तोत्र-साहित्यक परिप्रेक्ष्य मे एकर परिशीलन संक्षेपहुँ मे प्रयोजनीय भय जाइछ। स्तुतिपरक गीतिकाव्यक एक गोट सुदीर्घ ओ पुष्ट परम्परा भारतीय साहित्य मे अत्यन्त प्राचीनकाल सँ रहल अछि। भक्ति एक गोट रागात्मक प्रवृत्ति थीक, जतए रतिभावक समावेश सहज भय जाइछ। भारतीय साहित्यक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद मे लावण्यवती, दिप्तमती उषाक जे स्तुति प्राप्त अछि ओहि मे शृंगार-रसक समुचित अभिव्यञ्जना भेल अछि। प्राची प्राङ्गण मे उषा सद्यःस्नाता सुन्दरी जकाँ उपस्थित भेलीह। आलोकवसना अपन सौन्दर्यक घोंघट हटौलीह; बुझू, अमरावतीक दुआरि कें खोलि बाहर अयलीह। चिरयौवना उषा अपन कुचमण्डलक अर्द्ध विवृत्त लावण्य कें नर्त्तकी जकाँ सभक समक्ष प्रदर्शन कयलीह। वैदिक कवि देखलन्हि : उषाक कमनीय केश काञ्चनक अछि। सूर्य प्रणयकामना लय हुनक पाछू दौड़ैत छथि जेना कोनो युवक उन्मत्त यौवनाक अनुसरण करैछ। रूपसुन्दरी उषा सौन्दर्यराशि कें विकीर्ण करैत अपन प्रेमीदेवताक लेल अभिसार करैत छथि। यौवनक आभा सँ दीप्त अरुणावसना आलोककन्या मुसकुराइत अपन अङ्ग-प्रत्यङ्ग कें देखबैत छथि।

एषा शुभ्रो न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नातो दृशये नो अस्थात्।
अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात्॥
एषा प्रतीची दुहितो दिवो नृन् योषेव भद्रा निरिणीते अप्सः।
व्यूर्ण्वती दाशुषे वार्याणि पुनर्ज्योति युवतिः पूर्वयाक्॥
—ऋग्वेद ५-८०-५-६

अधि पेशांसि वपते नृतुरिव
पोर्णुते वक्ष उस्रेव वर्जहम्॥
—ऋग्वेद १०-९२-४

सूर्योदेवीमुषसं रोचमानां मर्यो न योषामभ्येति पश्चात्।
यत्र नरो देवयन्तो युगानि वितन्वते प्रतिभद्राय भद्रम्॥
—ऋग्वेद १-११५-२

कन्येव तन्वा शाशदानां एषि देवि देवमियक्षमाणम्।
संस्मयमाना युवतिः पुरस्तादाविर्वक्षांसि कृणुते विभाती ॥

—ऋग्वेद १-१२३-१०

कवि मङ्गल आशीर्वादक अनुवर्त्तन करैत छथि : चिरयौवना उषा, अहाँ अपन माताक हाथें सुसज्जित भेल छी। अहाँ अपन कमनीय देहलता कें देखबैत जाउ, अपन दिव्य प्रकाशरूप आँचर कें फहरबैत जाउ।

सुसंकाशा मातृमृष्टेव योषा विस्तन्वं कृणुषे दृशे कम्
भद्रा त्वमुषो वितरं व्युच्छ न तत ते अन्या उषसो नशन्त ॥

—ऋग्वेद १-११५-१

तहिना माध्यन्दिनक (११-५६) सिनी देवी सुकेशी, सुवेणी ओ कमनीय-केशकुन्तला छथि। यजुर्वेदक ऋषिक कामना अछि : प्रिय कें प्रियवादी भेटथु। वसन्तऋतुक समागम होअ, सब पदार्थं रसमय भय जाय। वाजसनेय ऋषि कें अमृतत्वक पान करबाक कामना छन्हि। आइ, कालिह प्रतिदिन हुनका स्पृहनीय सुख भेटन्हि।

अमृतत्वमशीय। —यजुर्वेद ७-४५
प्रियाय प्रियवादिनम्। —यजुर्वेद ३०-१३
वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवे दिवे वाममस्मभ्यं सावीः।

—यजुर्वेद ८-६

परवर्त्ती साहित्यक भक्तिमूलक गीतिकाव्य मे वैदिक परम्परा जीवित रहल। आगू जाय ई धारा एतेक प्रबल भेल जे ख्रीष्टीय सप्तम शतक मे वेदान्त दार्शनिक भक्त शंकराचार्य भक्ति ओ उपासना लय प्रतिभाक मानस-सर सँ वाणीक एहन स्वच्छ गङ्गा कें प्रवाहित कयलन्हि जाहि मे अवगाहन कय मानव-जीवन कें अभिनव शान्ति भेटैछ। 'भज गोविन्दं भज गोविन्दं मूढ़मते' 'कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति' प्रभृति स्तोत्र-कविताक अतिरिक्त ओ 'सौन्दर्यलहरी'क रचना कयलन्हि जाहि मे शक्तिरूपा जगदीश्वरीक स्तुतिक प्रसङ्ग त्रिपुरसुन्दरीक श्रृङ्गारी नख-शिख वर्णन प्रमुख प्रतिपाद्य रहल। शंकरक समकाल अथवा एक आध शताब्दक पश्चात् लीलाशुक बिल्वमङ्गल 'कृष्णकर्णामृत'क रचना कयलन्हि। ई कृष्णलीलाक भावप्रवण गान थीक। एतए ११२ पद मे रासक्रीड़ा नृत्यक

राग ओ ताल पर आधृत पदलालित्य, संगीतमत्ता ओ भावसौन्दर्यक संग वर्णित अछि। सम्भवतः ओही काल मे अथवा एक शताब्दपूर्व श्रीमद्भागवतक रचना भेल। ओकर दशम स्कन्ध मे गोपिकासभक कृष्णप्रेम वर्णित अछि। उल्लिखित अछि जे व्रजवनिता गोपिका सभक संग रासलीला करैत श्री कृष्ण एकटा गोपिका कें लय अन्तर्धान भय गेलाह। विरहाकुल गोपिका सभक मार्मिक चित्रण ओतए प्राप्त अछि। जे गोपिका कृष्णक प्रियतमा बनलीह, हुनका लक्ष्य कय गोपिका लोकनि बजलीह :

अनयाराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः।
यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो याममनयद्रहः ।।

—श्रीमद्भागवत १०-२०-२४

एहि ठाम भक्त लोकनि कें 'राधा'क संकेत भेटैत छन्हि। राधा —राध् धातु 'परिचरण' ओ 'सेवन'क अर्थ मे गृहीत अछि। 'एकाकी न रमते स द्वितीया-मैच्छत्'—श्रुतिवाक्यक अनुरूप कृष्णक ई द्वितीया राधा भेलीह।

एहि प्रसंग ई ध्यातव्य जे राधाक अवलम्बन कय एहि सँ पूर्व कृष्णलीलाक उल्लेख अछि। ख्रीष्टीय प्रथम शताब्द मे हाल रचित प्राकृतकाव्य 'गाहा सत्तसई' मे राधा लौकिक स्तर पर अवतीर्ण भेलीह अछि :

मुहुमारुएण तं कण्ह गोरअं राहिआएं अवणेन्तो।
एताणं बलवीणां अण्णाणं वि गोरसं हरसि ।। १-८९

तहिना—

हत्थेसु अ पाएसु अजंगुलि गणणाह अइगआदिअहा।
एणाहि उणकेण गणिज्जउति मणिऊ रुअइ मुद्धा ।।४-७

किन्तु राधाक पार्थिव प्रेम परवर्तीकाल मे क्रमिक भक्तिभाव सँ संपृक्त भेल। रूपक-साहित्य मे सप्तम शताब्दक नाटककार भट्टनारायण रचित वेणीसंहारक नान्दीश्लोक मे राधिका ओ कृष्णक सरस भक्तिभावित उपस्थापन उपलब्ध अछि :

कालिन्द्याः पुलिनेषु केलिकुपितामुत्सृज्य रासे रसं
गच्छन्तीमनुगच्छतोऽश्रुकलुषां कंसद्विषो राधिकाम्।
तत्पादप्रतिमाभिनिवेशितपदस्योद्भूतरोमोद्गते-
रक्षुण्णोऽनुनयः प्रसन्नदयितादृष्टस्य पुष्णातु वः ।।

प्राकृतपिङ्गलक निम्न गाथा मे सेहो वैष्णव काव्यक वर्णन ओ स्वर साम्य देखबा मे अबैछ :

फुल्ला णीवा भम भमर दिट्ठा मेहा जले सामला ।
ठाच्चे णिज्जु पिय सहिया आवे कंता कहु कहिया ॥ वर्णवृत्त, ८१

पुनः राधाक मुखमधुक भ्रमरक रूप मे कंसविनाशक कृष्णक वर्णन कतेक आकर्षक भेल अछि—

जिणि कंस विणासिअ कित्ति पयासिअ
मुट्ठि अरिट्ठ विणास करे गिरिहत्थे धरे ।
जमलज्जुण भंजिय पय भर गंजिअ
कालिय कुल संहार करे जस भवण भरे ।
चाणूर विहंडिअ णिय कुल मंडिअ
राहो मुह पान करे जिमि भमर वरे ।
सो तुम्ह परायण विप्प परायण
चित्तह चिंतिय देउ वरा भयभोय हरा ॥ प्रा० पै० ३२४

ईहो ऐतिहासिक तथ्य प्रमाणित अछि जे ख्रिष्टीय सप्तम शताब्दक उत्तरार्द्ध सँ आरम्भ कय एकादश शतक धरि संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश वाङ्मय मे जतेक शृङ्गारमूलक भक्तिकाव्य रचना भेल अछि, ओतेक अन्यविषयक नहि । श्रीधर दास संकलित सदुक्तिकर्णामृत मे उद्धृत विभिन्न कवि लोकनिक काव्यरचना एकर प्रमाण थीक । पुराण-उपपुराण ग्रन्थादिक अतिरिक्त एहि रूपक विशुद्ध काव्यग्रन्थ पर्याप्त मात्रा मे प्राप्त अछि। एहि दिश संस्कृतसाहित्येतिहासक लिखनिहार लोकनिक यथेष्ट ध्यान नहि गेलन्हि अछि । एहि युगक काव्य मे राधाकृष्णविषयक रचनाक प्राधान्य अछि । एहि प्रकारक काव्यरचना मे कवि लोकनि भागवत-भाव लय आत्मतुष्टि प्राप्त करैत छलाह, संगहि एहि मे मानवो प्रेमक सूक्ष्मातिसूक्ष्म समस्त वैचित्र्य कें व्यक्त करबाक सुयोग हुनका लोकनि कें भेटैत छलन्हि । एहि लेल राधाकृष्णक लीलावर्णन मे भक्तिकाव्यक पूर्णतम विकास परवर्त्ती युग मे सहज स्वाभाविक छल ।

द्वादश शताब्द तक अबैत-अबैत संस्कृत कवि लोकनि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप सँ जनमानस कें राधाकृष्ण-लीलारस आस्वादन करायब कवि-कर्त्तव्य बुझय लगलाह । पूर्वहि सँ कृष्णकर्णामृतक भक्तिसरिता काव्योद्यान

मे प्रवाहित भय लोकमानस कें रस सँ प्लावित ओ तृप्त करैत आबि रहल छल। युगक कविलोकनि कें राजसंरक्षण प्राप्त भेलाक कारणें शृङ्गारपरक लीलावर्णनक लेल प्रेरणा भेटलन्हि। द्वादश शताब्दक उमापतिधर, शरण, धोयी, गोवर्धनाचार्य, जयदेव प्रभृति कवि लोकनि राधाकृष्णक प्रेमजीवनक काव्यमय चित्रण कयलन्हि। ई लोकनि बंगालक सेन राजा लक्ष्मण सेनक राजकवि छलाह। जयदेव छलाह युगक सर्वश्रेष्ठ कवि, मालाक प्रथम मणि। कविक पत्नी पद्मावती गीत सभक ताल पर नृत्य कय कवि कें प्रेरणा दैत छलथिन्ह।

वाग्देवताचरितचित्रितचित्रसद्मा
पद्मावतीचरणचारणचक्रवर्ती।
श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेत-
मेतं करोति जयदेवकविः प्रबन्धम्॥

—गीतगोविन्द; प्रथमसर्ग, पद २

जयदेव राधाकृष्णक प्रेम कें महाकाव्यात्मक रूप अपन रचना गीतगोविन्द मे दयलन्हि। कृष्णलीलाक ई कमनीय काव्य भक्त कविक सहज सशक्त उद्गार अछि। एहि मे कृष्ण ओ राधाक व्याज सँ शृङ्गारी विलासिताक प्रदर्शन, जेना कि किछु दुरालोचक लोकनिक मन्तव्य अछि, जयदेवक लक्ष्य नहि थीक। ओ अन्तस् सँ भक्त छलाह; हरिस्मरण हुनक कामना छल।

यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि विलासकलासु कुतूहलम्।
मधुरकोमलकान्तपदावलीं शृणु तदा जयदेव-सरस्वतीम्॥

—गीतगोविन्द, प्रथमसर्ग, पद ३

गीतगोविन्दक रसास्वादनक लेल कवि दूइ शर्त्त रखलन्हि, प्रथम हरिस्मरण मे सरस मन ओ द्वितीय विलासकला मे कुतूहल राखब। पुण्य ओ कोमल भावक सुकुमार एवं सरस अभिव्यञ्जना लय कवि जयदेव अद्वितीय छथि। हिनक भाव भागवत अछि, मुदा भावाभिव्यक्ति विलासकलाक अनुरूप प्रासादिक। तैं जयदेव कें शृङ्गारी कवि मात्र मानब हिनक प्रति घोर अन्याय होयत। शृंगार जखन वस्तुमूलक अथवा लोकविषयक होइछ, तखन ओ जड़ोन्मुख भय जाइत अछि। मुदा जखन ओ भगवद्विषयक अथवा पारमार्थिक रहैछ, तखन ओ चिन्मुख भय जाइछ। एकरे नाम उज्ज्वल रस थीक। ई मधुमय शृंगार शरीरक आवश्यकता नहि रहि शब्दलालित्य ओ भावौदात्य लय सुसंस्कृत ओ पवित्र मनक 'विलास'

भय जाइछ। एतए ई ध्यातव्य जे जयदेवक 'विलास' शब्द नव्य भारतीय भाषा सभ मे अर्थसंकोचक संग व्यवहृत होइत अछि। तैं जयदेव-काव्य मे उल्लिखित 'विलास' शब्द लय आइ एतेक बिसंगति सोचल जाइत अछि।

विद्यापति-पदावली मे वर्णित राधाकृष्णविषयक प्रेम गीतगोविन्दक परम्परहि मे अछि। भगवत्प्रेम कें ध्यान मे राखि राधाकृष्णक विलासलीलाक माध्यम सँ कवि अपार्थिव सम्बन्धक तत्त्वालोचन कयलन्हि अछि। एहि नित्य लीला कें रूपायित करबाक लेल ओ मानवीय भाषाक उपयोग कयलन्हि। लौकिक प्रतीकक माध्यम सँ भगवत्प्रेमक जागरण करायब विद्यापतिक लक्ष्य छल। तैं ओ राधाक वयःसन्धि सँ आरम्भ कय तरुणीक प्रेमचाञ्चल्य, मान-अभिमान, अभिसार, मिलन, विरह, आध्यात्मिक एकाकारता प्रभृति कें सरस शब्दावलि द्वारा क्रमानुगत अङ्कन कयलन्हि अछि। ऐन्द्रिय उल्लास सँ दीप्त होइतहुँ ई प्रेम कतहुँ स्थूल नहि भेल अछि, कारण वर्णन मे कविक प्रवृत्ति सर्वत्र चिन्मुख रहल अछि। पदावली मे वर्णित लीला-विलास सँ प्रेमक ऐश्वर्य ओ माधुर्यक पूर्णता सिद्ध अछि। फलतः परवर्ती युगक कवि ओ साधक लोकनि पदावली द्वारा अपन मानस मे भगवान्क अचिन्त्य प्रकाशक साक्षात्कार कयलन्हि।

तापस विद्यापतिक हृदय मे भक्ति भावना छलन्हि। मुदा ओ सर्वोपरि कवि छलाह। कविता करब हुनक धर्म छलन्हि। अपन लौकिक आओर अलौकिक भावानुभूति कें जीवन्त रूप मे जनसंवेद्य करब हुनक कवि कर्म छलन्हि। काव्य मे धर्मवाद उपस्थित करब हुनका अभीष्ट नहि छलन्हि। लौकिक मनोवृत्तिक उपरहि धर्मबोधक सार्थकता होइछ। कृष्णकाव्य मे एकर सम्यक् दर्शन होइत अछि। मध्यकालीन भारतीय काव्य मे एही रूपें दिव्य प्रेम व्यक्त भेल अछि। आदि-गुरु जयदेव छलाह, आओर हुनक प्रेरणा लय विद्यापति एवं चण्डीदास एहि काव्यतत्त्व कें प्रशस्त कयलन्हि। संकीर्णतावश हिनका सभ पर अश्लील रचनाक दोषारोपण सर्वथा उपहास्य होयत।

वस्तुतः कृष्णभक्ति लय जे प्रेमस्वरूप प्राचीन काव्य मे रूपायित भेल छल, तकरे विद्यापति नवीन वाणी ओ सुर दयलन्हि। पदावलीक समग्र राधाकृष्ण-विषयक काव्य आध्यात्मिक अनुभूतिए सँ प्रेरित अछि। ई कहब निराधार थीक जे कवि रूपें विद्यापति सम्पूर्ण जीवन मे मदनमञ्जुल गीतगान कयलन्हि; जे राष्ट्रक ध्वंसनिर्माणक स्रोत मध्य मे छलाह, जे तरुआरिक रक्तचुम्बन लय असंख्य प्रहार देखने छलाह, जे राष्ट्रविप्लवकाल मे वेश्याक स्तन कें संन्यासीक वक्ष पर विमर्दित देखि कौतुक-कारुण्यक बोध कयने छलाह, तिनकहि 'किन्तु' आजीवन स्तनचुम्बनक काव्य लिखऽ पड़लन्हि।"......दारिद्र्यक यममूर्ति कें देखिओ कय ओ जीवन मे

प्रभूत ऐश्वर्य सञ्चित कयने छलाह। सत्पथ पर रहि अथवा असत्पथ पर रहि (हुनक स्वीकारोक्ति कें मानला पर असत्पथे पर रहि, यदि ओ स्वीकारोक्ति विनयभाव सं अथवा आत्मकलङ्कज्ञापन नहि होय), किन्तु हठात् शेष जीवन मे ओ ऐश्वर्य हुनका लेल अभिशापस्वरूप भय गेल। अयोग्य परिजन ओहि धन सम्पत्ति कें भोग करैछ—ई यन्त्रणामय दृश्य हुनका देखऽ पड़लन्हि; तखन स्मृतिशास्त्रक अध्यापक ओ स्वयं विख्यात स्मृतिग्रन्थकार कनलन्हि, रसशास्त्रक अध्यापक ओ काव्यालङ्कारक श्रेष्ठ स्रष्टा होइतहुँ तखन ओ पण्डितगणक 'अनुभवहीन रसानुगमन' लय आर्त्तचित्त भेल छथि"। (द्र० अध्यापक शंकरीप्रसाद वसु—चण्डीदास ओ विद्यापति, पृ० १२८-१२९) वस्तुतः विद्यापति ओ हुनक काव्य लय अध्यापक वसु बड़ कटु ओ असंगत आलोचना कयने छथि।

'तातल सकैत वारि बिन्दु सम' अथवा 'जतने जतेक धन पापे बटोरल' आदि पंक्ति सभक अभिधेयार्थ लय सामान्यीकरण संकीर्ण बुद्धिक परिचायक थीक। भक्तिक आवेश मे अपन वैकल्य ओ अभाव कें अतिरंजित करबाक प्रवृत्ति मनुष्य मे स्वाभाविक थीक। भक्त-शिरोमणि ज्ञानी शङ्कराचार्य कहलन्हि—**'मत्समः पातकी नास्ति, पापघ्नी त्वत्समा नहि'**। तऽ की शङ्कराचार्य पापी छलाह? तुलसीदास सेहो कहलन्हि अछि: **'अब लौं नसानी अब न नसैहौं'**। ओ अपन आत्मपरक निवेदन पद मे कतेको बेर अपना कें अधम, कुटिल, अज्ञानी आदि विशेषण लय सम्बोधित कयलन्हि। तें उपर्युक्त विद्यापतिक पद-पंक्ति सभक आधार पर ई मानब जे विद्यापति जीवन भरि शृङ्गार रचना मे व्यस्त रहलाह आओर जीवनक सान्ध्यकाल मे हुनका मे विरक्ति-भाव आबि गेलन्हि, तखन शृंगार सं हटि ओ भक्तिकाव्यक रचना करय लगलाह, सर्वथा अस्वाभाविक एवं निराधार कल्पना थीक।

हम तऽ कहब जे विद्यापति आरम्भहि सं उच्चकोटिक भक्त कवि छलाह। देवसिंहक शासनकाल मे तरुण कविक लिखल स्तुति-महागीत:

> विदिता देवी विदिता हो अविरल केस सोहन्ती।
> ब्रह्मा घर ब्रह्मानी कहिए हरि घर कहि गोरी।
> नारायण घर कमला कहिए के जान उत्पत्ति तोरी॥

आदि एकर प्रमाण अछि।

आओर स्पष्टताक सङ्ग हम कहब। विद्यापति लोकरुचिक अनुरूप राधाकृष्ण-प्रेमलीला कें अपन काव्य मे विलक्षण सूक्ष्मता ओ अतीन्द्रियताक संग वर्णित कयलन्हि अछि। एहि सं हुनक काव्य भक्तिकाव्यक एकटा जीवन्त रूप भय

जाइछ। वस्तुतः ई प्रेमलीला एक गोट नूतन औदात्य ओ माधुर्य्य रूप परमार्थ मे दृष्ट विकिरणक पुनरावर्त्ती संघटनक समरूप थीक। इएह कारण थीक जे पदावलीक राधाकृष्णविषयक पदसभक भावतत्त्व भगवद्भजनक प्रतीक बनि गेल अछि। कहबाक चाही जे ई भारतीय सनातन भक्तिकाव्यक परिवेष्ठन मे अलौकिक सत्ताक प्रतीक भऽ जाइछ। बुझू, ई समुन्नत प्राणतत्त्वक एक गोट संघटनात्मक खण्ड थीक, जतए श्रोत्रादि इन्द्रियगत सुखक संग अतीन्द्रिय परमानन्द सन्निहित भऽ गेल अछि। मुदा एहि ठाम भावाभिव्यक्ति मे एतेक सहजता ओ हृदयस्पर्शिता विद्यमान अछि जे ई परिचित बुझना जाइछ। एकरा हम विद्यापतिकाव्यक सबलता ओ दुर्बलता दुनू कहब। सबलता एहि लेल जे ई भाव अलौकिक होइतहुँ लौकिक रूप धारण करैत अछि, तथा दुर्बलता एहि लेल जे लौकिक पक्ष कें प्रधान कय देला सन्तां आध्यात्मिक पक्ष गौण भऽ जाइछ।

विद्यापति विद्वान् छलाह। ओ दार्शनिको छलाह। तापसकवि विद्यापति कें जीवन मे एक गोट असाधारण उपलब्धि भेल छलन्हि, एहन उपलब्धि जे दर्शन अथवा शास्त्रादिक अनुगमन सँ संभव नहि। भारतीय आध्यात्मवादक दृष्टिएँ प्राकृत वस्तुओ मे ईश्वरक अचिन्त्य सत्ता ओ अनन्त लीला भासमान अछि। ई दृश्यलोक हिनक रसमय ओ व्यापक रूप थीक। एहि रसमयता ओ व्यापक रूपाकृति कें उपस्थित करब भारतीय भक्तिकाव्यक चिरन्तन अवदान थीक। इएह धारणा विद्यापति कें छलन्हि। एहि रसमयता सं स्वयं आह्लादित होयब, ओ संगहि अपन कलात्मक कृतिक माध्यम सं जनमानस कें आह्लादित करब भक्तिकाव्यक चरम निदर्शन हुनका बुझना गेलन्हि। पदावली मे राधाकृष्णक प्रेमगान एकर रूपायन थीक। एहि प्रेमगानक एकमात्र दार्शनिक व्याख्या कविक एहो मनोवृत्ति सं संभव। ई एकटा बड़ कठिन कार्य छल। वस्तुतः दार्शनिक भय दोसरक अनुभूति कें अपन बुझब कठिन व्रत थीक। मुदा विद्यापति एहि द्विविध साधना मे कृतकार्य्य भेलाह। एकर प्रमाण हुनक पदावली थीक। उदाहरणार्थ, एक गोट पदक पूर्वार्द्ध द्रष्टव्य अछि :

कतन दिवस लए अछल मनोरथ
हरि सओ लाओब नेहा।
से सबे सुफल भेल बिहि अभिमत
सहजहि आएल मोर गेहा ॥ ध्रु० ॥
सखि हे जनम कृतारथ भेला ॥

—नेपाल पोथी, विद्यापति पदावली प०२१६

एकरा शृङ्गारगीत कहब वा भक्तिगीत। जे कहो। मुदा ई मानबाक अछि जे एतए लौकिक जीवनक क्षणिक मिलनक सुख मात्र सँ 'जनम कृतारथ' नहि भेल अछि, आओर किछु विशेष उपलब्धि भेल अछि। इएह उपलब्धि थीक 'भक्ति'।

काव्यानुशीलन आत्मसंकोच नहि थीक। अविश्वासक अनुलम्बन मात्र सँ कवि अथवा हुनक काव्यक समुचित मूल्याङ्कन संभव नहि। कविक काव्य सँ कोन प्रकारक भाव मान्य अछि, काव्य सँ गृहीत भाव व्यापक समाजक लेल उपयोगी सिद्ध भेल वा नहि, एकर महत्त्व अधिक अछि। स्वीकार्य्य अछि जे काव्यक वास्तविक विभूति वस्तुनिष्ठता लय होइछ। कविक प्रतिभा द्वारा सम्पादित वस्तु-एकता अखण्ड होइत अछि जाहि ठाम नवीन ओ प्राचीन, परिचित ओ अपरिचित, लौकिक ओ अलौकिक, व्यक्ति ओ जाति आदि तत्त्व समन्वित भय कवि-सृष्टिक उन्मीलन करैछ। विद्यापतिक कृष्णलीलाविषयक काव्य एही कोटिक थीक। ओ एहन काव्य-प्रस्तरमूर्त्ति थीक जकर रहस्योद्‌घाटन तखने भय सकैछ जं हमरा सभक नेत्र अन्तर्दृष्टिक सहयोग सँ एकर चमत्कार कें देखय। ई चमत्कार भावक दृश्य स्तर सँ उत्तरोत्तर उठबाक थीक ; स्थूल सँ सूक्ष्मक दिश अग्रसर होयबाक थीक।

काव्य द्वारा कविक अन्तर्भाव बाह्यरूप धारण करैछ। कविक प्रभुत्व सँ ई सर्वसाधारणक चिन्तन ओ प्रसाधनक विषय बनैत अछि। ई एक गोट एहन अभिव्यक्ति ग्रहण करैछ जतए मानवीय भाषाक उपलब्ध सीमित साधन द्वारा अखण्ड ओ संश्लिष्ट रूप प्रदान कयल जाइछ। भक्तिकाव्य मे कवि सँ एहने अभिव्यक्तिक अपेक्षा कयल जाइछ जे आध्यात्मिकताक ग्रहण मे उपयोगी सिद्ध होइछ। पदावलीक राधाकृष्णलीलाविषयक पद सभ मे ई चमत्कार सर्वत्र उपलब्ध होइत अछि। कविक रहस्यमयी अन्तःशक्ति हुनक ऐच्छिक शिल्पकौशलक अनुशासन मे दृष्टिगोचर होइत अछि। फलतः हुनक एहि क्रिया मे शब्द ओ अर्थक कलात्मक सम्मिलन भेल अछि। लगैछ, भाव ओ भाषाशैली परिणयसूत्र मे आबद्ध भय अभिन्न भय गेल अछि। तैं हुनक काव्य मे दिव्यानुभूति ओ लोकानुभूति दुहू अपन व्यापारक लेल सक्षम ओ उन्मुक्त रहैछ। उदाहरणस्वरूप दुइ चारि गोट पद एतए द्रष्टव्य अछि।

भगवत्प्रेम मे स्वार्थत्याग परमावश्यक अछि। आत्मसुख कें प्रेम नहि कहल जाइछ। तैं एकमात्र 'कान्ह' कें सुख प्रदान करब राधाक कामना अछि। कवि एहि भाव कें कतेक निर्लिप्तताक संग वर्णन कयलन्हि अछि :

जखने जाइअ सयन पासे
मुख परेखए दरसि हासे।
तखने उपजु अहेन भाने
जगत भरल कुसुमबाने ॥

की सखि कहब केलि विलासे
निअ अनाइति पिआ हुलासे।
नीवि विघटए गहए हारे
सीमा लाघए मन विकारे ॥

सिनेह जाल बढ़ाबए जोबे
सङ्गहि सुधा अधर पीबे।
हरषि हृदय गहए चीरे
परसे अबस कर सरीरे ॥

तखने उपजु अइसन साधे
न दिअ समत न दिअ बाधे।
भने विद्यापति ओहे सयानी
अमिअ मिसल नागर बानी ॥

(नेपाल पोथी, विद्यापति पदावली, पद-संख्या २१२)

राधाक अङ्गछविक वर्णन लय कविक कलात्मक चमत्कार कें देखू :

माधव कि कहब सुन्दरि रूपे।
कतेक जतन विहि आनि समारल देखलि नयन सरूपे ॥
पल्लवराज चरण-युग शोभित गति गजराजक भाने।
कनक-कदलि पर सिंह समारल तापर मेरु समाने ॥
मेरु उपर दुइ कमल फुलायल नाल बिना रुचि पाई।
मनिमय हार धार बह सुरसरि तैं नहि कमल सुखाई ॥
अधर-बिम्ब सन दसन दाड़िम-बिजु रवि ससि उगथिक पासे।
राहु दूरि बसु नियरो न आबथि तैं नहि करथि गरासे ॥

सारंग नयन वचन पुन सारंग सारंग तसु समधाने।
सारंग उपर उगल दस सारंग केलि करथि मधुपाने ।।
भनइ विद्यापति सुन वर यौवति एहन जगत् नहि जाने।
राजा सिवसिंघ रुपनरायन लखिमादइ प्रति भाने ।।

(ग्रियर्सन १४; न० गु०१७ ; मि० म० २२५)

युगलप्रेमीक एकाकारता स्थायी भाव रतिक परिणति थीक। भागवतपुराण मे वर्णित कृष्ण-गोपीक प्रेमक पुनीतता विद्यापतिक निम्न पद मे प्राप्त अछि :

आसा मन्दिर बैस निसि गमाबए सुखे न सूत सयान।
जखने जतने जतने जाहि निहारए ताहि ताहि तुअ भान ।।
वन उपवन कुञ्ज कुटीरहि सबहि तोर निरूप।
तोहि बिनु पुनु पुनु मुरुछए अइसन प्रेम सरूप ।।
मालति सफल जोवन तोर।

वियोग मे कृष्णक विकलता कतेक मनोवैज्ञानिक अछि। पवित्र प्रेम वियोगक अग्नि मे तपि आओर पवित्र भय जाइछ।

स्नेहानाहुः किमपि विरहे ध्वंसिनस्त्वभोगा-
दिष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशीभवन्ति ।।

(कालिदास, उत्तरमेघ-४६)

ई प्रेम शरीरक भोग नहि थीक। ई तऽ आत्माक आकर्षण थीक। विप्रलम्भ मे ई उत्तरोत्तर विकसित होइछ। तखन प्राकृत प्रेम शरीर सम्पर्क के सर्वथा परिहार कय अप्राकृत ओ अलौकिक प्रेम मे परिणत भय जाइछ। सांसारिक भाव सर्वथा तिरोहित भय जाइछ। परिणामतः एकटा अलौकिक भावक आविर्भाव हृदय मे होइछ। प्रवृत्तिमूलक भोगक उन्नयन निवृत्तिमूलक प्रेम मे भय जाइछ।

विषिनि देखिल तुअ राहो।
तोहे बिसरलि संसार पड़लि हृदय कहत काहो ।।
देहरि बेसिल पथि निहारए तुअ दरसन आसे।
करतल गत आनने रोअए उठए तेजि निसासे ।।

धरनि धरिए उठिए चाहए मुरछि खसार ठाम।
पेम महारसें मातलि बाला सुमरि तोहरि नाम।।
पिअ वियोगिनि ओ जे अभागिनि करति की परकार।
विरहें दगधि तथिहुँ दारुण विषम सर पहार।।
भनइ विद्यापति.....................................।।

(भाषागीतसंग्रह : कवि विद्यापति, संकल्प शोध-पत्रिका, पृ० २३-२४)

तहिना—

अनुखन माधव माधव सोङरिते सुन्दरि भेलि मधाई।
ओ निज भाव सभावहि बिसरल आपन गुन लुबुधाई।।
माधव अपरूप तोहर सिनेह।
अपने विरह अपन तनु जरजर जिवइते भेल सन्देह।।
भोरहि सहचरि कातर दिठि हेरि छलछल लोचन पानि।
अनुखन राधा राधा रटइत आधा आधा कहु बानि।।
राधा सयँ जब पुनतहि माधव माधव सयँ जब राधा।
दारुन प्रेम तबहि नहि टूटत बाढ़त विरहक बाधा।।
दुहु दिशि दारु दहन जैसे दगधइ आकुल कीट परान।
ऐसन वल्लभ हेरि सुधामुखि कवि विद्यापति भान।।

स्पष्ट अछि जे उपर्युक्त पद सभ मे लौकिक परिप्रेक्ष्य लय अलौकिक माधुर्य्यक काव्यगान प्रस्तुत कयल गेल अछि। भारतीय भक्तकवि लोकनि चिर प्राचीनकाल सँ जीवन कें आधार बनाय परमार्थक उद्घाटन अपन काव्यमाध्यम सं कयलन्हि अछि। विद्यापतिक राधाकृष्णविषयक पदावली कें परम्पराप्राप्त स्तोत्र-काव्यशैली सँ पृथक् कय मूल्यांकन प्रयोजनीय नहि अछि। भारतीय संस्कृति ओ दर्शनक अनुरूप विद्यापतिक काव्यसाधना अछि। एहि काव्यसाधना मे जीवनक प्रबल आग्रह अछि। तैं कवि-मानसक आत्मद्रव होइतहुँ ई समष्टिगत आत्मप्रकाश थीक।

गीता मे कृष्णक वचन अछि :

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम्।। १०-४१

विभूति सँ युक्त सब तत्त्व दिव्य तेजक अंशे थीक। एहि चिन्तन कें कवि-विद्यापति अपन काव्य मे व्यक्त कयलन्हि अछि। हुनका ई एकटा दिव्य प्रेरणा प्राप्त छलन्हि जाहि कारणें हुनक काव्य दिव्यशक्तिक माध्यम बनि गेल अछि। हुनक दिव्य-प्रवणता भावक सान्द्रता मे सन्निहित अछि। विद्यापति लोककवि बनि लोकजीवन कें भक्तिक रसधारा सँ सिञ्चित कयलन्हि अछि। हुनक ओहि मधुरवाणी सँ मिथिलाक तद्युगीन जन-मानस उल्लसित ओ तृप्त भेल। तेँ अपन जीवनकाल मे ओ राजा सँ 'अभिनव जयदेब'क उपाधि पाबि समादृत भेलाह, आओर समग्र जनता सँ पूजित।

एतदर्थं निष्कर्षस्वरूप हम कहब जे विद्यापतिक राधाकृष्णविषयक पदसभक रहस्य दिव्यप्रेमक प्रतिमान कें ग्रहण कय मानव-भावोच्छलन थीक। एतए 'प्रेम आदि मे लौकिक रहितहुँ विकसित भय अन्त मे दिव्य ओ अलौकिक भय गेल अछि'। (द्र० नरेन्द्रनाथ : विद्यापति काव्यालोक, पृ० १८) साधारणतया एहि दुहू तत्त्व कें समन्वित करबाक क्षमता कवि-सृष्टि मे सर्वत्र परिलक्षित होइछ, जाहि सँ दुहूक बीच पार्थक्य-रेखा खीचब कठिन भय जाइत अछि। एहि द्विकता लय ई प्रेमगान एक गोट एहन पुष्प भय जाइछ, जे एकरा मन होय तऽ—देवताक माथ पर राखू, अथवा प्रणयक प्रसाधन बना लीअ। कविक प्रतिभा एहि दुहू-तत्त्वक एकत्रीकरण मे अप्रतिम अछि।

तें 'विद्यापतिक एहि बाह्य संसार मे भगवत् भजन कतए? एहि वयः-सन्धि मे सन्धि कतए? सद्यःस्नाता मे ईश्वर सँ नाता कतए? अभिसार मे भक्तिक सार कतए? हुनक कविता विलासक सामग्री थीक, उपासनाक साधना नहि'। (डा० रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृ०, ५०६) अथवा "राजसभाय खूब एकटा आमोद हइत, अनेक समय ताँहाके (विद्यापतिके) फरमास-कर्त्ताके श्याम सजाइते हइत एवं ताँहार सोहागिनीके राधा साजाइते हइत। ताइ करियाइ विद्यापतिर एतो आदिरसेर गान सृष्टि हइयाछे। तिनि कीर्त्तन लिखितेन बसेन नाइ, राधाकृष्णेर प्रेम लइया बइ लिखितेओ वसेन नाइ। गानगुलि भिन्न-भिन्न समये, भिन्न-भिन्न स्थाने, भिन्न-भिन्न लोकेर फरमास मत लेखा हइया छिल। ....आमरा वेश करिया पिंजिए-पिंजिए देखियाछि ये विद्यापतिर अनेक गाने राधाकृष्णेर नामओ नाइ, गन्धओ नाइ"। (द्र० हरप्रसाद रचनावली, विद्यापति, पृ० २२९) अथवा विद्यापतिक "गीतक रचना भक्तिक उद्रेक सँ नहि, शृङ्गार-रसक उद्रेक सँ भेल अछि तथा हुनक रचनाक एक गोट उद्देश्य आवश्यक कामशास्त्रीय शिक्षाक सम्पादन सेहो छलन्हि जकर प्रयोजन समाज मे सब दिन रहैत आयल अछि ओ रहत"। (प्रो० रमानाथ झा, निबन्ध-

माला, पृ० ७८) एतबे नहि, 'ई विश्वास करबाक कोनहुँ आधार नहि जे हुनक ललित पद सभ मे सँ सबटा राधा ओ कृष्ण विषयक अछि। किन्तु एहि लय हमरा लोकनि हुनक पद सभक साम्य बिहारीक दोहा सभक संग स्थापित करब जनिक दोहा सतसईक आरम्भिक दोहा सभ मे राधा ओ कृष्णक स्तुति रहितहुँ भक्तिरचना नहि मानल जाइत अछि"। (डा० सुभद्र झा, विद्यापति-गीत-संग्रहक अंगरेजी वाक्यक रूपान्तर, पृ० १८६) तथाविध मन्तव्य उपर्युक्त विवेचनक आधार पर निस्सार सिद्ध अछि। हिनका लोकनिक निर्णय कें मानब, तऽ विद्यापतिक काव्य काव्य नहि रहत। तखन तऽ ओकरा लेल 'कोकशास्त्र' संज्ञाक प्रयोग अधिक उपयुक्त होयत।

वस्तुतः पदावलीक राधाकृष्णविषयक पदसभ मे भागवत प्रेम असन्दिग्ध अछि। एकरा विद्वान् डा० ग्रियर्सनक शब्दावली मे 'वैष्णव-भजन' कही, अथवा कुमारस्वामी वा डा० जनार्दन मिश्र प्रभृति मनीषी लोकनिक मान्यताक अनुरूप 'रहस्यवादी' काव्य कही, कोनहुँ अन्तर नहि अबैछ। ई निस्सन्दिग्ध अछि जे एहि मे दिव्यप्रेमक अनुगान अछि। कवि ओ सहृदय विद्वत्समाज सँ विशेष अर्द्ध-शिक्षित अथवा अशिक्षित भक्त लोकनि विगत पाँच सए वर्ष सँ आत्मविभोर भय "इन्द्रियजनित कलुषित भाव सँ रहित भय एहि सुन्दर पद सभक गान ओहिना करैत आबि रहल छथि, जेना शुद्ध ओ मुक्तभावें अंग्रेजी पादरी सॉलमोनक गीत सभक गायन करैत छथि"। (द्र० मैथिल क्रेष्टोमैथी, पृ० ३६-३८)

विद्यापतिक ओ हुनक पदावलीक सर्वलोकप्रियताक पाछू लोकक जीवन-दर्शन अछि। एतदर्थ पदावलीक प्रेमकाव्य जीवनदर्शनक चिरन्तन सार्वजनीन लोकभाव लय अछि, आओर ओ लोकभाव विद्यापति सन् साधक कवि द्वारा राधाकृष्णक अलौकिक प्रेम मे न्यस्त कयल गेल। एतए म० म० डा० उमेश मिश्रक निबन्ध 'विद्यापति-पदावलीक दार्शनिक पृष्ठभूमि' सँ पर्याप्त प्रकाश संभव अछि। ई सर्वविदित अछि जे महामहोपाध्याय डा० मिश्र आरम्भ मे डा० ग्रियर्सन एवं अन्य विद्वान् सभक भागवतप्रेमविषयक मान्यता कें प्रबल खण्डन कयने छलाह। पूर्व मे हुनक निर्णय छल : 'हमरा ई प्रतीत होइछ जे आदि मे कवि केवल शृङ्गारिक छलाह, तथा हुनक जीवनो प्रायः तेहन लोकसभक संग राजसभा मे व्यतीत भेल जाहि सँ हुनक मन अधिकतर शृङ्गारहिक दिश प्रवृत्त रहब स्वाभाविक छल ... (यद्यपि) कवि राधा ओ कृष्णक परमार्थ स्वरूप सँ अपरिचित नहि छलाह, किन्तु वास्तविक प्रेम कें ओ अपन काव्य मे कतहुँ नहि रखलन्हि"। (डा० उमेश मिश्र : विद्यापति ठाकुर, पृ०१६५) मुदा जीवनक शेषचरण मे विद्यापतिक प्रेम-मान्यता लय हुनक विचार मे परिवर्त्तन देखल, तऽ हम 'विद्यापति-वाङ्मय'क सम्पादकरूपें हुनका सँ एतदर्थ लेख देबाक आग्रह कयलहुँ। ओहि लेखक प्रासङ्गिक वाक्य

एहि प्रकारक अछि : "विद्यापतिक हृदय मे भक्तिभावना तऽ अवश्य छलन्हि, अव्यक्तें रूप मे किएक नहि हो। तें ओ गान करक योग्य कविता द्वारा भगवत्प्रेमक परम्पराक रक्षा करबाक हेतु एवं सङ्गहि लोककल्याणक हेतु राधाकृष्ण कें लौकिक रूप दय सभ पद लिखने होथि। राजदरबारक लोक कें प्रसन्न करक हेतु लिखलन्हि वा रचलन्हि, तऽ सेहो कोने व्याजें लौकिक प्रतीकें द्वारा भगवत्प्रेमहि कें जागरित रखबाक हेतु तथा देशक विशुद्ध परम्पराक रक्षा करबाक अभिप्रायें कयलन्हि। हमरा तऽ भान होइछ जे मनुष्यलोकक जीवमात्रकेर प्रत्येक विशुद्ध एवं स्वाभाविक क्रियाकलापकेर पृष्ठभूमि मे अव्यक्त रूप मे आध्यात्मिकता छैक, भगवत्प्रेम छैक, जीवनक चरम लक्ष्यकेर प्राप्ति इच्छा छैक, संगहि भविष्यजीवनक कल्याणहुक निमित्त प्रयास छैक, आत्मविश्वास ओ भगवानक असीम अनुग्रहक भरोस छैक। एहि सभ सँ प्रेरित भय विद्यापति अपन पदक रचना कयने होथि से सम्भव"। (द्र० विद्यापति-पदावलीक दार्शनिक पृष्ठभूमि, विद्यापति-वाङ्मय सं उद्धृत, पृ० ४) साधारणतः लौकिक-प्रेमकविता जँ पन्द्रह वर्षक अवस्था मे मनःप्रसादन ओ आह्लादक विषय रहैछ, तऽ पचास वर्षक अवस्था मे ओ अपाठ्य जकाँ भय जाइत अछि। किन्तु विद्यापतिक राधाकृष्णविषयक पद सब एहि कोटिक काव्य नहि। एहि मे भागवतपुराण मे वर्णित पवित्र प्रेम प्राप्त अछि, जाहि प्रेमक अभिव्यक्ति मे कवि साधक विद्यापतिक कला अपन शिरोविन्दु धरि पहुँचि गेल अछि। फलतः ई जीवनकाव्य होइतहुँ अध्यात्मकाव्य बनल अछि। एहि मे लौकिक सहजताक संग दिव्यता प्राप्त अछि।

पदावली मे वर्णित दिव्य प्रेम समस्त पूर्वाञ्चल ओ पश्चिमी व्रजभाषा जगतक वैष्णव साहित्यक लेल प्रेरणास्वरूप प्रमाणित भेल अछि, एकरा केओ विवेकी इतिहासकार अस्वीकार नहि करताह। मान्य भाषाचार्य ओ साहित्यशास्त्री डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्याक मतानुसारें 'बङ्गाली शिक्षार्थी अपन अध्ययन कें समाप्त कय मिथिला सं मस्तिष्क मे मात्र संस्कृतभाषा-ज्ञान लय नहि लौटैत छलाह, बल्कि हुनका लोकनिक अधर पर विद्यापति द्वारा—ओ बहुत संभव हुनक पूर्ववर्त्ती एवं परवर्त्ती कविलोकनिक द्वारा रचित गीत पद रहैत छल'। (द्र० वर्णरत्नाकर, भूमिका, पृ० २२) ओतए महाप्रभु चैतन्यदेव विद्यापतिक गीत सँ अत्यधिक प्रभावित भेलाह। फलतः बङ्गाल मे विद्यापति-पदावलीक भाव, भाषा ओ अभिव्यञ्जना वैष्णव भक्त कवि लोकनिक लेल आदर्शरूप प्रमाणित भेल। परिणामस्वरूप एक गोट नवीन वैष्णव साहित्यक सृष्टि भेल, जकरा 'ब्रजबुलि' साहित्य कहल जाइछ। भक्ति-रत्नाकरक रचयिता नरहरि चक्रवर्त्तीक शब्द मे 'व्रजेर मधुर लीला या शुनि दरबे शिला, गाइतेन कवि विद्यापति'। एहि ब्रजबुलिक प्रभाव बङ्गाल धरि सीमित नहि रहल। असम, उत्कल ओ नेपाल सर्वत्र भक्तपण्डलोक

माध्यमें पदावलीक भगवत्प्रेम जनमानसक संबल बनल। आधुनिको काल मे स्वयं अरविन्द विद्यापति पदक आध्यात्मिक पक्ष कें समर्थन कयलन्हि। विद्यापतिक प्रति प्रेम लय कवीन्द्र रवीन्द्र प्रणीत 'भानुसिंह ठाकुरेर पदावली' काव्यरचना काव्य साहित्यक इतिहास मे एक गोट विशिष्ट उदाहरण अछि। 'चण्डीदास ओ विद्यापति' ओ 'विद्यापतिर राधा' निबन्धद्वय मे रवीन्द्र विद्यापतिक प्रति अपन श्रद्धाभाव पर्याप्त रूपें व्यक्त कयने छथि। सावित्री, आश्विन, बंगाब्द १२९३ क अङ्क सं बुझना गेल जे रवीन्द्र बाबू १० वर्ष धरि वैष्णव कवि लोकनिक पदावलीक अध्ययन कय सम्पादकीय कार्य मे प्रवृत्त भेलाह जाहि सं विद्यापति-पदावली निर्दोष ओ निर्मूल भय प्रकाशित भय जाय। 'प्रायः दशवत्सरकाल रवीन्द्र बाबू वैष्णव कविगणेर पदावली अध्ययन करिया एइ सम्पादकीय कार्ये प्रवृत्त हइया छेन। सुतरां विद्यापतिर पदावली यथासंभव निर्दोष ओ निर्मूल हइया प्रकाशित हइते छे''। मुदा दुर्भाग्यवश हुनका द्वारा सम्पादित ई कृति अद्यावधि प्रकाश मे नहि आयल अछि।

पश्चिम भाषाजगत्—विशेष रूपें हिन्दी-ब्रजभाषाक कृष्ण-काव्यधाराक लेल सेहो विद्यापतिक पदावली प्रधान उपजीव्य रहल अछि। हिन्दीक अष्टछापक कवि लोकनि पर विद्यापतिक प्रभाव एक गोट असन्दिग्ध ऐतिहासिक तथ्य थीक। अष्टछापक कविसम्राट् सूरदासक एहन कतिपय पद प्राप्त अछि जे विद्यापतिक पदक प्रतिविम्ब मात्र अछि। (विशेष द्रष्टव्य : विद्यापति-वाङ्मयक सम्पादकीय, पृ० ३२-३४) ई निर्विवाद तथ्य थीक जे सूर विद्यापतिक ऋणी छलाह। मुदा हिन्दीक कतेको विद्वान् एहि ऐतिहासिक तथ्य कें स्वीकार करबा मे प्रस्तुत नहि छथि। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्रक निर्णय अछि : 'एतबे वक्तव्य अछि जे विद्यापति हिन्दीक व्रजभाषा मे शृङ्गार क्षेत्रक लेल मर्यादा छोड़ि कृष्णभक्त कवि लोकनिक उपकार तऽ नहि कयलन्हि, मुदा शृङ्गार कालक कवि लोकनिक लेल हुनक बड़ उपकार रहलन्हि। विद्यापतिक काव्य भक्तिकाव्य थीक वा नहि, एहि लय बड़ वाद-विवाद भेल अछि। एहि सम्बन्ध मे एतबे कहब अछि जे विद्यापतिक कृष्णकाव्य सूरदासक अथवा अन्य कृष्णभक्त-कविक नहि अछि। यदि एकरा भक्ति-काव्य मानबो करब तऽ ई बिहारी, देव ओ पद्माकरक काव्य जकाँ अछि। विद्यापति सं सूरदास प्रभृति कविलोकनि कृष्णभक्ति नहि प्राप्त कयलन्हि, परञ्च गीत-शैली अवश्य पौलन्हि। सूरदास विद्यापतिक दृष्टिकूट सभक अनुमान खूब कयलन्हि। शृङ्गारकालक कवि लोकनि विद्यापति सं भलहिं गीतशैली नहि पौलन्हि, मुद्रा शृङ्गारक आलम्बन राधाकृष्ण कें अवश्य प्राप्त कयलन्हि। अर्थात् एक कें अलंकार प्राप्त भेल, शैली-दान भेटल, वर्णनविधि भेटल, तऽ दोसर कें अलंकार्य प्राप्त भेल, गाथा भेटल, वर्ण्य प्राप्त भेल। एवं प्रकारें विद्यापति परवर्ती

हिन्दी साहित्य कें एतए सँ ओतए धरि प्रभावित कयलन्हि अछि'' । (द्र० कुँवर सूर्यवली सिंह ओ लाल देवेन्द्र सिंह—विद्यापति, भूमिका, पृ० ८-६) किन्तु ई कहब जे हिन्दीक कृष्णभक्तकवि लोकनि कें मात्र शिल्प भेटल, ओ दुइ सए वर्षक अनन्तर रीतिकालीन कवि लोकनि कें काव्य-वस्तु भेटल, सर्वथा अस्वाभाविक परिकल्पना थीक । हमर तऽ धारणा अछि जे हिन्दीक कृष्णभक्तकवि लोकनि काव्य-वस्तु ओ काव्यशिल्प दुहू लय विद्यापतिक ऋणी छथि । एहि लेल पर्याप्त सामग्री उपलब्ध अछि, तकर ऐतिहासिक तथ्यानुशीलन पूर्वाग्रह कें छोड़ि आवश्यक अछि । कृष्ण-काव्य लय विद्यापति कें मध्ययुगक पुरोधा भक्तकवि कहब सर्वथा समीचीन अछि ।

हमर वक्तव्य ई कदापि नहि जे विद्यापति मात्र भागवत प्रेमक गान कयलन्हि । हुनक धर्ममय व्यक्तित्वक दर्शन शिवविषयक ओ आद्यशक्तिविषयक सेहो अछि । ई गीत सब अधिकांशतः 'रागतरङ्गिणी', नेपाल पोथी ओ मिथिला-तालपत्र पोथी सँ प्राप्त भेल अछि ; सब मिला कय ६२ टा पद संकलित छल । पुनः नव उत्स सँ प्राप्त पाँच टा मे दुइ टा भाषागीतसंग्रहक ओ तीन टा हरगौरीविवाह-नाटकक अछि । तदनुसार जोड़ संख्या ६७ भेल । एहि लय लोककण्ठ सँ आओर पद संगृहीत भेल अछि, जाहि मे सँ अनेक कें विद्यापतिक रचना मानबाक ठोस आधार नहि अछि । प्रकाशित स्रोत एवं लोककण्ठक आधार पर डा० सुधीरचन्द्र मजुमदार १६० गीत कें संकलित कय 'विद्यापतिर शिवगीत' कलकत्ता विश्वविद्यालय सँ प्रकाशित करौलन्हि । एहि मे प्राचीन ओ अर्वाचीन प्रख्यात कवि लोकनिक लिखल पद विद्यापतिरचित मानल अछि ।

अस्तु । विद्यापतिक ख्याति अपन युग मे ओ उत्तरकालिक युग मे शिव गीत-विषयक पद सँ रहल अछि । कविक समकालिक कवि लखनसेनिक वाक्य 'विद्यापति कइ गए लाचारी' पूर्वहि उद्धृत भेल अछि । तहिना कविक निधनक एक सए वर्ष पश्चात् सन् १५६८ ई०क आसपास लिखल आइन-इ-अकबरी मे अबुल फजल द्वारा संगीतप्रकम मे 'विद्यापतिक लचारी'क गौरवगान कयल गेल । मिथिला मे हरगौरीविषयक पद कें 'नचारी' एवं 'महेशवाणी' कहल जाइछ ।

शिवदर्शन अथवा शिवपूजन लय शास्त्रीय विवेचनक लेल शैवसर्वस्वसार ओ शैवसर्वस्व-प्रमाणभूतसंग्रहक रचना भेल । मुदा जनसाधारणक लेल शिवकाव्यक रूप मे 'देसिल बयना' मे लिखित नचारी अछि जाहि मे लोकमानसक अनुरूप सहज काव्य मे शिवगुणगान प्रस्तुत अछि । विद्यापतिक शिवगीत भक्तिनिवेदनक संग लोकायन रहल अछि । शिव सम्बन्धी दार्शनिक भाव तऽ भणिता मे प्राप्त अछि, मुदा पद सभक कलेवर मे हरगौरीक लीलागान लोकक मंगल गार्हस्थ्य जीवनक परिवेश मे भेल अछि । एहि ठाम शिवक स्वरूप, आचरण, स्वभाव माता मेनाक

मनोभाव, गौरीक पूर्वराग, गौरी लय सखीक चिन्तन, विधि-विवाह, परिणय, हरक श्वसुरालय-लीला, पारिवारिक चिन्ता, गार्हस्थजीवन आदि सब भाव लौकिक रस सँ परिसन्धित अछि। बानगीक रूप मे दूइ चारि उदाहरण एतए राखब प्रासङ्गिक भय जाइत अछि।

हरगौरीक पूर्वानुराग लय निम्नपद कतेक आकर्षक अछि।

ए माँ कहह मोय पुछों तोहो।
ओहि तपोवन तापसि भेटल कुसुम तोरए देल मोहो॥
आँजलि भरि कुसुम तोड़ल जे जत अछल जाँहा।
तीनि नयने खने मोहि निहारए बइसलि रहलि जाँहा॥
(मि० म०, विद्यापति, प० सं० ७८३)

पाणिग्रहणक मंगल-क्षण वर ओ वधूक लेल एक गोट अभूतपूर्व मनोभाव एवं सौन्दर्याकर्षण उत्पन्न करैछ, मुदा शिव ओ गौरीक विवाह तऽ समस्त विश्वक अनुपम सौन्दर्यक विषय बनि गेल अछि। कवि विद्यापति एहि सँ परिचित छथि। तें ओहि समय सब वैषम्य तिरोहित भय जाइछ। कविक शब्द मे—

जखने संकरे गौरिकरे धरे आनल मण्डप माझ।
सरद सँपुन जनि ससधर उगल समय सांझ॥
चौदह भुअन सिव सोहाओन गौरी राजकुमारि।
हेरि हरखित भेलि मदाइनि आएल जनि जभारि॥
हेमत सरिर पुलके पूरल सफल जनम मोरि।
हरि विरंचि दुहु जन वैसल हरके देल मोयँ गोरि॥
नारद तुम्बुर मंगल गावथि आओर कत न नारि।
कौतुके कोवर कौसले कामिनि सबे सबे देअ गारि॥
भन विद्यापति गौरि परीनय कौतुक कहए न जाए।
साप फुफकारे नारि पड़ाइलि वसन ठाम नड़ाए॥
(मि० म०, विद्यापति, प० सं० ७८८)

शिव ओ पार्वतीक गार्हस्थ्य-जीवन भारतीय गार्हस्थ्य-जीवनक प्रतीक अछि। लोक-जीवन मे जाहि सुख ओ दुःख, हर्ष ओ विशाद, आदिक अनुभव होइछ ओकर दर्शन शिव-पार्वतीक जीवन मे होइत अछि। संगहि लोकायनक संग

शिवायनक दर्शनहुँ नचारी मे होइत अछि। शिव अनादि, अनन्त ओ परम दैव थीकाह, जकर रूपायन विराट दर्शनक आवेष्टन मे भेल अछि। कवि तापस विद्यापतिक शिवत्व प्राप्ति लय किम्वदन्ती मिथिला मे प्रचलित अछि। कहल जाइछ जे हुनक भक्ति सँ अभिभूत भय शिव उगनाक रूप मे कविक सेवक बनल छलाह। कतेको विश्वास लोकमिथक बनल अछि। मुदा ई अवश्य कहल जा सकैछ जे विद्यापति कें शिव-चैतन्य प्राप्त छलन्हि। ओ शिवक परम दर्शनक निरूपण गौरीक माध्यम सँ निम्न प्रसिद्ध पद मे कयलन्हि अछि :

आजु नाथ एक व्रत महासुख लागत हे।
तोहें सिव धरु नट वेस डमरु बजाबहु रे॥
तोहें गौरी कहैछह नाचय हम कोना नाचव हे।
चारि सोच मोरा होइ कोने विधि बाँचत हे॥
अमिय चुविय भूमि खसत बघम्बर जागत हे।
होयत बघम्बर बाघ बसहा कें खायत हे॥
सिव सौं ससरत साँप दहो दिसि जाएत हे।
कार्तिक पोसल मयूर सेहो धरि खाएत हे॥
जटा सौं छिलकत गंग भूमि पर पाटत हे।
हैत सहस्र मुख धार समढ़िओन जाएत हे॥
रुण्डमाल टुटि खसत मसानी जागत हे।
तोहे गौरि जयबह पड़ाय नाच के देखत हे॥
भनहिं विद्यापति गाओल गाबि सुनाओल हे।
राखल गौरी केर मान चारु बचाओल हे।

(मि० म०, विद्यापति, प० सं० ८०२)

गौरीक प्रस्ताव कें सुनि महादेव चिन्ता मे पड़लाह जे जँ महानृत्य भेल, तऽ विघटन उत्पन्न होयत। एकर समाधान के करत ? विद्यापति अपन गीत गाबि एकर समाधान कयलन्हि। गौरीक मान-रक्षा भेल, संगहि नृत्य नहि भेलाक कारणें सभक रक्षा सेहो भेल।

ई स्वीकार्य अछि जे राधाकृष्ण विषयक पद ओ हरगौरी विषयक पद दुहू तापस कविक भक्तिमूलक काव्य थीक, मुदा दुहूक धरातल भिन्न-भिन्न अछि। राधाकृष्णविषयक पद सभ मे प्रेमक काव्यरूप चिर-परिचित काव्य-परम्पराक

अनुकूल राखल गेल अछि, दोसर दिश शिवविषयक पद सभ मे गार्हस्थ्य जीवनक लौकिकता ओ आध्यात्मिकता अछि। नचारी पद सभ मे ऐन्द्रिय उल्लासक उष्णता ओहि रूप मे प्राप्त नहि अछि, जाहि रूप मे ओ राधाकृष्णविषयक पद सभ मे भेटैछ। दुहूक निजो महत्व अछि। राधाकृष्ण लीलाक पद सभक आस्वादनक लेल प्रथम शर्त्त अछि 'सरस मन' होयब, कारण विषयवस्तु काव्यमूलक अछि। मुदा शिवविषयक पद सभक लेल लोकचित्त ओ आध्यात्मिकताक आग्रह अछि। दुहू प्रकारक पद आकर्षक ओ मोहक अछि। राधाकृष्णविषयक पद पारिजात पुष्पक सदृश कलात्मकताक संग पारमार्थिक अछि, तऽ नचारी पद 'धतूर फूल' जकाँ सहज दिव्य अछि। दुहू मे महाकवि विद्यापतिक 'लोकद्वयसाधनी' काव्य-चातुरीक दर्शन होइछ—एक कें बुझू कला, तऽ दोसर कें भाव।

दिव्यप्रेमगानक अतिरिक्त विशुद्ध लोकतत्त्वक प्रति आग्रह सेहो देखबा मे अबैछ। विद्यापति रससिद्ध कवि छलाह। रसग्रहणक अद्भुत शक्ति हुनका मे छलन्हि, जीवनक प्रति रागात्मक प्रवृत्ति प्रबल छल। तेँ जे कोनो पद विशुद्ध पार्थिव प्रेम लय लिखित अछि, ओहि सभ मे एक गोट चिरन्तन आकर्षण विद्यमान अछि। एतए उदाहरणस्वरूप दुइ टा पद उद्धरणीय अछि।

कामिनि करए सनाने, हेरतिहिं हृदय हन पंचवाने।।
चिकुर गरए जलधारा, मुखससि तरे जनि रोअए अधारा।।
तितल वसन तनु लागु, मुनिहुँक मानस मनमथ जागु।।
कुचयुग चारु चकेवा, निअकुल मिलत आनि कोने देवा।।
ते संकाए भुजपासे, बान्धि धरिअ उड़ि जाएत अकासे।।

इति विद्यापतेः।

(रागतरङ्गिणी पाठ, मि० म० विद्यापति सँ उद्धृत, पृ० सं० २३३)

तहिना भाषागीतसंग्रहक तथाविध एक गोट पद अछि :

हेमलता हिमकर उगि गेल। दुहु दिसँ सुके सेवा लेल।।
देखलि रमनि पुरुब पुने आज। रतिरस आँकुर पेलए लाज।।
बँवलओ राहु करए कत लोभ। ताहि उपरँ तारागन सोभ।।
हँसलि सुमुखि किछु भाव बुझाए। जनि नवदल हे कुसुम छिड़िआए।।
भावक मरमल भमरा बूल। कामक चातुरं के नहि भूल।।
भनइ विद्यापति.................................।।

(संकल्प पत्रिका सँ उद्धृत, पृ० २६)

विशुद्ध लोकतत्त्वक प्रति कविक आग्रह लय किछु प्रकीर्ण पद सेहो प्राप्त अछि। "पिया मोर बालक हम तरुनी, कौन तप चुकलौंह भेलौंह जननी" (मि० म०, पद संख्या ५९७) मे अनमेल विवाह लय तत्कालीन सामाजिक कुरीति सभक वर्णन मे कविक लोकधर्मिता ओ संवेदनशीलता स्पष्ट अछि। सङ्गहि, "हमें धनि कूटनि परिनत नारि, बैसहु बास न कहौं विचारि। काहु के पान काहु दिअ सान, कत न हकारि कएल अपमान" (मि० म०, पद सं० ६) प्रभृति पंक्ति सभ मे नागर लम्पट जन सभक कामवासनाक पूजा लय कुटिनी नारीक जे दुर्गति समाज मे होइछ, तकर वर्णन कवि कुटिनीक शब्द मे कतेक व्यंग्यात्मकताक सङ्ग कयलन्हि अछि।

तहिना पदावली मे असंख्य सूक्तिरत्न माला मे मणि जकाँ अन्तर्निविष्ट कयल गेल अछि, जकर अर्थवैभव चिरन्तन अछि। एहि सूक्ति सभ मे काव्यरस तऽ नहि अछि, मुदा एक प्रकारक प्राणरस एतए विद्यमान अछि। एहिठाम 'लोक-संग्रह'क आग्रह लय कविक उन्नत व्यक्तित्वक दर्शन होइत अछि। एतादृश सूक्तिरत्न जनमानसक अमूल्य निधि बनल अछि। उदाहरणस्वरूप किछु सूक्तिरत्न राखब सङ्गत होयत। सुपुरुषक प्रेम ओ वचन लय प्रसिद्ध सूक्ति अछि: "सुपुरुष प्रेम सुधनि अनुराग, दिने दिने बाढ़ अधिक दिन लाग" (मि० म०, पद संख्या ७); "सुजनक प्रेम हेम समतूल, दहइत कनक द्विगुन होय मूल" (मि० म० ६६९); "सुपुरुष-प्रेम कबहु नहि छाड़, दिने दिने चन्द्रकला सम बाढ़" (ओतहि, ६७१); "सुजन वचन खोटि न लाग, जनि दिढ़ कठु आलका दाग" (ओतहि, ४१२); "अधम पिरिति रहइ कत दिन। अधमक पिरिति ना करिय मान, सुजनक पिरिति काञ्चन समान" (मि० म० ७८); "सुजनक पिरीति पसानक रेहा" (ओतहि, ७१४); इत्यादि। लौकिक ज्ञानक संस्पर्श लय सूक्ति अछि: 'थिर जनु जानह इ संसार, एक पए थिर रह पर उपकार" (मि० म० ४०४); "बिनु साहसे सिधि आस न पूर" (ओतहि, ३११); "बिनु साहस अभिमत नहि पूर" (ओतहि, ३१२); "दिवस मन्द भल न रहए सब खन। विहि न दाहिन रह बाम लो" (ओतहि, ५०); "मरमक वेदन मरमहि जान, आनक दुख आन नहि जान" (ओतहि, ७३०); "दोप देले घर न रह अंधार" (ओतहि, १२९); "आस-भङ्ग दुख मरन समान" (ओतहि, ६५४); "जोवन माह जौवन दिन चारो" (ओतहि, २०९); "अवसर काल उचित नहि रोसे" (ओतहि, ३८८); "नूतन नेह संसारक सोमा' (ओतहि, ७९); "चोरी पेम चारि गुन रङ्ग" (ओतहि, ३१५); "कूप न आवए पथिकक पास" (ओतहि, १३४); "पुनफले गुनमति पिआ मन जाग" (ओतहि, २६०); "गेल जौवन पुनु पलटि न आवए, केवल रह पछतावे" (ओतहि, २६५); "सभ सयों बड़ थिक आँखिक लाज" (ओतहि, २८०);

"भनइ विद्यापति अनुपम रीति, दम्पति काँ हो अचल पिरीत" (ओतहि, ५७५) ; "धम्म सहित सिंगाररस कच्छकला बहु रङ्ग" (कीर्तिपताका, पृ० ६) ; "रस बुझए रसमन्त" (मि० म०, पद संख्या ५) ; "दुरजन वचन न लह सब ठाम, बुझए न रहए जावे परिनाम" (ओतहि, १२६) ; "बानर मुखे न सोभइ पान" "बानर गले काँहा मोतिम माल" (ओतहि, ७८) ; "कौआ मुह न भनिअए वेद" (ओतहि ३५६) ; "काक सबद जब गरुअ सोहाग, दूरे रह कोकिल पञ्चम राग" (ओतहि, ६५६) ; "समय पाए तरुवर फर रे, कतबो सिचु नीर" (ओतहि, ८६५) ; "जीवन जउवन धने" (ओतहि, ८४४) ; "कामातुर काँ नहि भय लाज" (भाषा-गीत-संग्रह, पद सं० ७६) ; "गुपुत कथा बुझ सयान" (भा० गी० सं०, १११) ; "थिर नहि रहए दिवस भल मन्दा" (भा० गी० सं० ; पद संख्या १) ; "हृदय वेदन राखिअ गोए" (मि० म०, पद संख्या ५२४) ; आदि।

उपर्युक्त सूक्ति सभ मे ललित काव्यानुरूप कल्पनाक विलास अथवा वैयक्तिक भावसंवेग नहि अछि, मुदा जनमानसक मूर्तचेतना ओ विश्वासवाणी वाग्वैभवक सङ्ग राखल अछि। लोककाव्यानुरूप जीवननीतिक व्यावहारिक ज्ञान अर्थोन्मेषक सङ्ग व्यक्त भेल अछि। एहन स्थल मे कविक वक्तव्य लोकरस सँ संपृक्त भय अत्यधिक आकर्षक अछि।

इतालियन काव्यशास्त्री क्रोचेक मन्तव्य अछि : "हमरा लोकनि कवि सँ कोनहुँ तत्त्वविषयक उपदेशक अपेक्षा नहि करब, ने हुनका सँ अत्यधिक कल्पनाक कामना करब। हम तऽ हुनका सँ एक गोट एहन भावाभिव्यञ्जक व्यक्तित्व चाहैत छी जकर संस्पर्श सँ पाठक ओ श्रोताक चित्तहुँ प्राणमय भय उठत।........कवि होय वा चित्रकार, हुनक रचना भावावेग सँ परिपूर्ण होइछ। एहि भाव-संवेगक आन्दोलनक तीव्रता ओ गम्भीरता मात्र कविक मानसस्वरूप कें प्रकट करैछ"। (द्र० सौन्दर्यशास्त्र, पृ० १२४), तात्पर्य, काव्य मे भावगत सौन्दर्य ओ रूपाकारगत सौन्दर्य दुहुक सृष्टि करब कविकर्म थीक। भारतीय काव्यशास्त्रक शब्दावली मे एकरा हम 'शब्दपाक' कहि सकैत छी :

सति वक्तरि सत्यर्थे सति शब्दानुशासने।
अस्ति तन्न विना येन परिस्रवति वाङ्मधु ॥

(द्र० वामन—काव्यालंकारसूत्रवृत्ति, पृ० ५)

शब्द ओ अर्थक मध्य प्राणप्रतिष्ठा करब काव्य थीक। ई तखने संभव, जखन कायान्विति भाव अथवा अनुभव सँ उद्भूत तत्व कें शब्द माध्यमें 'एकक' भय जाइछ। एतादृश शब्दपाक 'अनुकूलतम शब्द-प्रयोग ओ इष्टार्थत्व' सँ होइछ।

विद्यापतिक काव्यकौशल भावानुभूति ओ भावाभिव्यक्ति दुहू लय अछि। भावकल्पायन एवं भावासंवर्धन दुहूक चमत्कार पदावली मे सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ। कवि मे जन्मजात प्रतिभा छलन्हि। हुनका सहस्राधिवर्षक प्राचीनकाव्य परम्पराक अनुगमन छलन्हि। ओ संस्कृत-श्रेण्यकाव्य, विशेषत: वाल्मीकि ओ कालिदासक प्रबन्धकाव्य, अमरुकशतक, कृष्णकर्णामृत, श्रीमद्भागवत पुराण, जयदेवक गीतगोविन्द प्रभृतिक, संगहि प्राकृत-अपभ्रंश आओर देसिल बयनाक मुक्तक काव्य ग्रन्थ सभक पर्याप्त अध्ययन कयने छलाह। मुदा अपन प्रतिभा ओ अभियोगक बलें विद्यापति रूढ़ आ परम्परागत भाव कें मौलिक एवं स्फूर्त्त कयलन्हि अछि, जाहि सँ ओहि मे कविक मानसी-सृष्टि प्रतिभासित होइत अछि। फलत: काव्यमीमांसाक आचार्य राजशेखरक शब्दावलिक अनुसार हुनका हम एक संगहि उत्पादक ओ परिवर्त्तक कवि कहब। भ्रमर जकाँ विभिन्न पुष्प सँ रस-सञ्चय कय ओ अपन शक्ति सँ ओकरा मधुरस मे परिणत कयने छथि। परिवर्त्तक कविक रूप मे ओ बड़ निपुणताक संग प्राचीन भाव कें ग्रहण कयलन्हि, तत्पश्चात् उत्पादक बनि अपन मौलिक प्रतिभाक बल सँ उत्तम काव्यक निर्माण कयने छथि। तेँ कवि विद्यापतिक प्रतिभाक विरुद्ध अमौलिकताक जे आक्षेप कयल जाइछ, से स्वीकार्य नहि भय सकैछ।

पदावलीक प्रमुख आकर्षण शिल्पविधान लय अछि। पदावलीक पीयूषवर्षण भाववैभवक उपयुक्त सरस ओ मधुर शैली मे व्यक्त अछि। वक्रोक्तिकार कुन्तक द्वारा निर्दिष्टमाधुर्यादिगुण, अलङ्कार सभक सुन्दर विकास, शब्दक सरस शय्या, वक्राभिधान—समस्त वाणीचमत्कारक दर्शन एतए होइछ। रस-व्यञ्जना, सूक्ष्म भावानुभूति, निरीक्षण शक्ति, उच्चकोटिक आकर्षक कल्पना, व्यापक सहजानुभूति; कुशल अभिव्यक्ति जे सब गुण महाकवि सँ अपेक्षित अछि, पदावली मे ओ सब उपलब्ध अछि। फलत: पदावली मे भाव ओ भावाभिव्यक्ति दुहू सौन्दर्यक अवलम्बन अछि। ई कहब जे विद्यापतिक सौन्दर्य दर्शनक अवलम्बन अलङ्कारमात्र अछि; अलङ्कारक आलोकहि मे ओ सब किछु देत छथि, (द० डा० शङ्करी प्रसाद बसु : चण्डीदास ओ विद्यापति, पृ० ४५८) एक गोट चिन्त्य निर्णय अछि। ई स्वीकार्य अवश्य जे पदावलीक अनेक पद मे एकाधिक अलङ्कार समाविष्ट भय गेल अछि। मुदा विद्यापति कें आलङ्कारिक कवि मानि समुचित मूल्याङ्कन सम्भव नहि, हुनक काव्य एकसंगहि भावप्रधान ओ रूपप्रधान अछि। शब्द ओ अर्थ, ध्वनि ओ अलङ्कार, रस ओ रसाभिव्यक्ति—उभयविध सौन्दर्य जाहि रूपें हुनक पदावली कें काव्यसौन्दर्य ओ काव्यगौरव प्रदान कयने अछि, ओ तद्युगीन काव्य मे दुर्लभ। हुनक काव्य पर रीतिमत्ताक आरोप सर्वथा असङ्गत अछि। पदावली मे अलङ्कार सौन्दर्य-विच्छित्ति सँ भिन्न नहि अछि। भावावेग मे एकाधिक अलङ्कार

संसृष्टि भाव सँ गुम्फित भय गेल अछि। मुदा भाव जतए जतए सरल वा ऋजु अछि, ओतए कविक वाणी सहज ओ निराभरण होइतहुँ स्वभावोक्ति अलङ्कारक चमत्कार सँ युक्त अछि। उदाहरणस्वरूप एतए किछु पद राखब समीचीन होयत।

शिवक अनुपस्थिति लय दुखिता पार्वतीक चित्रण कतेक स्वाभाविक ओ सहज भेल अछि :

कतए गेला मोर बुढ़वा जती, पोसल भाँग रहल एहि गती॥
कथि लँइ मनाएब उमता जती॥
आन दिन निकहि रहथि मोर जती, आइ लगाइ देल कोन उदमती॥
एकसर जोहए जाएब कौन गती, ठेसि खसब मोरि होत दुरगती॥
नंदनवन बिच मिलल महेस, गौरी हरखित भेल छुटल कलेस॥
भनइ विद्यापति सुनु हे सती, इहो जोगिया थिका त्रिभुवन पती॥

तहिना विरहिणीक स्वाभाविक चित्रण देखू :

एहन करम मोर भेल रे, पहु दुर देश गेल रे॥
दय गेल वचनक आस रे, हमहु आएब तुअ पास रे॥
कतेक कएल अपराध रे, पहु सबे छुटल समाज रे॥
कवि विद्यापति भान रे, सुपुरुख न कर निदान रे॥

किन्तु रूपसौन्दर्यक वर्णन मे भावावेग लय पदक आदि सँ अन्त धरि विविध अलङ्कारक प्रयोग सँ काव्य मे इन्द्रधनुषी सौन्दर्य आबि गेल अछि :

माधव कि कहब सुन्दरि रूपे।
कतेक जतन विहि आनि समारल देखलि नयन सरूपे॥
पल्लवराज चरण-युग शोभित गति गजराजक भाने।
कनक-कदलि पर सिंह समारल तापर मेरु समाने॥
मेरु उपर दुइ कमल फुलायल नाल बिना रुचि पाई।
मनिमय हार धार बह सुरसरि तेँ नहि कमल सुखाई॥
अधर-बिम्ब सन दसन दाड़िम-विजु रविससि उगथिक पासे।
राहु दूरि बसु नियरो न आवथि तेँ नहि करथि गरासे॥

सारंग नयन वचन पुन सारंग सारंग तसु समधाने।
सारंग उपर उगल दस सारंग केलि करथि मधुपाने ।।
भनइ विद्यापति सुन वर यौवति एहन जगत् नहि जाने।
राजा सिवसिंघ रुपनरायन लखिमादइ प्रति भाने।

उपर्युक्त पदक प्रत्येक पाँती मे वर्ण साम्य सँ शब्दालङ्कार सभक सुललित शय्या बनाओल गेल अछि। नायिकाक अनुपम सौन्दर्यक उत्कृष्ट वर्णन सँ उदात्त अलङ्कार अछि। दुनू चरण कमल जकाँ सुशोभित अछि। नायिकाक गति गजराजक सदृश अछि। उपमान ओ उपमेय दुहूक साधर्म्य वर्णित अछि। तेँ उपमा अलङ्कार अछि। 'कनक कदलि ...... तापर मेरु समाने' आदि वाक्य मे जंघा, कटि ओ वक्षस्थल तीनू उपमेयक उपमान द्वारा निगरण भेला कारणेँ रूपकातिशयोक्ति अलङ्कार अछि। कमल बिनु नालहुँ सुखायल नहि अछि। कारणाभाव मे कार्यंक निर्देश सँ विभावना अलङ्कार अछि। अधर बिम्बफल सन् लाल अछि, ओ दन्तावलि दाड़िम बीज जकाँ अछि। तेँ उपमा-अलङ्कार अछि। माथ पर ठोप सँ लगैछ जे, बुझू, सूर्य ओ चन्द्र दुहू एक संग उदित छथि। एतए उत्प्रेक्षा अलङ्कारक चमत्कार तऽ अछिए, संगहि उपमान द्वारा उपमेयक निगरण सँ रूपकातिशयोक्ति अलङ्कार सेहो अछि। 'मनिमय हार...कमल नहि सुखाई' वाक्य मे सम्बन्धाभावहुँ मे सम्बन्धक कथन सँ सम्बन्धातिशयोक्ति अछि। 'राहु दूरि ......गरासे' मे कारण रहलहुँ कार्य्याभाव अछि, तेँ विशेषोक्ति अलंकार अछि। 'सारङ्ग नयन ...... मधुपाने' भिन्नार्थक सारंगक आवृत्ति सँ यमकालंकार सभक सङ्ग वस्तूत्प्रेक्षाक चमत्कार समान रूपेँ आकर्षक भेल अछि। अलङ्कार सभक सहावस्थिति लय भाव आओर दीप्त ओ प्राञ्जल भय गेल अछि। वस्तुतः कवि विद्यापतिक काव्य-वैशिष्ट्य इयह थीक जे भाव ओ कला दुहू मे समान महत्त्व राखल जाइछ।

जे पाँच सात दृष्टिकूट पदावली मे प्राप्त अछि, तकर प्रयोगहुँ चमत्कारक सङ्ग भेल अछि। एतहुँ शाब्दिक वक्रता अर्थगत होइत अछि। उदाहरणस्वरूप, निम्न पद मे रतिमिलनवेलाक सुखद अनुभव केँ प्राकृतिक प्रतीक द्वारा व्यक्त करबा मे अनुपम आकर्षण अछि :

कुवलय कुमुदिनि चउ दिश फूल, केरव कोकिल दह दिस भूल ।।
खने कर साद खनहि कर खेद, वेसन विषधर पठज निवेद।
आएल रे वसन्त रितुराज, भमरे बिरहे चलु भमरि समाज ।।

भारतीय काव्यशास्त्र मे प्रबन्ध केँ काव्यक श्रेष्ठ रूप मानल गेल अछि। पदावली गीतिकाव्यक अनुपम रूप थीक। एहि मे भावान्विति, गेयता,

प्रभावान्विति, सरस छन्दोविधान ओ सुबंद्धता गीतिकाव्यक सब प्रमुख लक्षण प्राप्त अछि। प्रत्येक पद प्रथम ओ चरम अछि, कारण ई एक गोट एहन महती काव्य-कृति थोक जाहि मे महान् आत्माक विशिष्ट कलात्मक जीवन-स्पन्दन प्राप्त अछि।

गीतकाव्य मुख्यतः भावचित्र होइत अछि। भावसृष्टिक लेल छन्द प्रथम आग्रह अछि। सुसंगति ओ भाव-सुषमा कें गेयताक अनुरूप कय लयक अभिव्यक्ति करब तऽ छन्दोविधान होइत अछि ; सङ्गहि कखनहुँ कथ्य भाव कें विशेष आकर्षक ओ बोधगम्य करबाक लेल विभिन्न रागक विधान सेहो अपेक्षित भय जाइछ।

एहि प्रसङ्ग ई ध्यातव्य जे छन्दोविधान लय विद्यापति मे अनुपम क्षमता छलन्हि। कीर्त्तिलता ओ कीर्त्तिपताका दुहू आख्यान ग्रन्थ मे परम्परानुरूप प्रिय छन्द दोहा रहल। कीर्त्तिलता मे प्रयुक्त ३१ छन्द मे दोहा सर्वाधिक प्रयुक्त अछि। मुदा पदावली मे लोकमानसक ओ गीतकाव्यक अनुरूप छन्द परिवृत्ति भेल। गेयताक लेल दोहा सन् विषमित छन्द अनुकूल नहि। तैं संगीतात्मकता ओ भावप्रवणताक लेल जयदेव सं प्रेरणा लय विद्यापति रूपमाला, सार, सरसी, विष्णु-पद, चौपइ आदि छन्द सभक प्रयोग मे लोकप्रियताक प्रमाण दयलन्हि अछि। एहि छन्द सभ मे आभ्यन्तरिक तुकक योजना कय 'धीर समीरे यमुना तीरे वसति वने वनमाली' गीतगोविन्दपरम्परा कें लोकप्रिय बनौलन्हि। उदाहरणार्थ, रूपमाल सौन्दर्य द्रष्टव्य अछि।

गेलि कामिनि गजहु गामिनि बिहसि पलटि नेहारि।
इन्द्रजालक कुसुम सायक कुहकि भेलि वर नारि॥

संगहि पदावली मे नाग, रजनी, गीता, रज्जन प्रभृति कतेको नवीन छन्द प्रयुक्त भेल अछि जे पूर्ववर्ती कालक काव्य मे प्राप्त नहि छल। कतेको पदक छन्द मे शास्त्रीयता गौण भेल अछि। लोकायनक आग्रह लय कतेको ठाम कवि लोक-प्रचलित गीतक आधार पर छन्दोनियोजन कयलन्हि अछि। यथा—

चानन भेल विषम सर रे भूसन भेल भारी।
सपनहुँ नहि हरि आयल रे गोकुल गिरधारी॥

स्पष्ट अछि, एहन स्थल मे कविक वाणी हुनक हृदय सं निर्झरिणी जकां स्वतः निस्सृत भेल अछि। सर्वत्र छन्दक प्रभाव एहन अछि जाहि सँ एक गोट झंकृति उत्पन्न होइछ।

निष्कर्ष, विद्यापतिक काव्य मे भावोल्लास ओ रूपोल्लास दुहू लय एक गोट अनुपम सौन्दर्यसृष्टि भेल अछि। भूमि, भाव भाषा, शैली सभ किछु लय पदावली एक गोट अनुपम काव्य थीक। एतए लौकिक एवं पारलौकिक दुहू पाथेय प्रस्तुत अछि ; भक्ति ओ प्रवृत्ति दुहूक प्रसार अछि। एतए शुद्ध काव्यरसक संग साध्य-भूमि दुहू लोकक जीवन रहल अछि। लोकद्वयक साधना करबाक वाणी एतए अछि। तैं 'सैसव जौवन दुहु मिलि गेल, स्रवनक पथ दुहु लोचन लेल'क चपल शृङ्गार काव्य एतए भेटैछ, 'प्रथमहि गेलि धनि प्रीतम पासे, हृदय अधिक भेल लाज तरासे' मे पार्थिव मधुरभावक रस-निर्झरिणी प्रवाहित अछि, 'अपना मन्दिर बेसलि अछलिहु घर नहि दोसर केवा' पार्थिव भाव मे दिव्यानुभव करबाक लोक-स्तोत्रकाव्य अछि, 'माधव, बहुत मिनति करि तोय' मे मध्ययुगक कृष्णभक्तिकाव्यक प्रेरणाक संग परिणति अछि, 'सिव हो, उतरब पार कवन विधि, लोढ़ब कुसुम तोरब बेलपात' महेशवानी मे लोकायनक सङ्ग अध्यात्म अछि, 'आजु नाथ एक व्रत मोहि लागत हे, तोहें सिव धरि नटवेष कि डमरु बजावत हे' मे विराट दर्शन अछि, 'कुञ्ज-भवन सं निकसलि रे, रोकल गिरधारी' वाक्य मे रहस्यानु-भूति अछि, 'विदिता देवी विदिता हो, अविरल केस सोहन्ती' मे शक्तिगान अछि ; 'पिया मोर बालक हम तरुनी, कोन तप चुकलौंह भेलौंह जननी' मे जर्जर समाजक वैषम्यक जीवन्त चित्र सँ वस्तुवादी काव्य अछि। पदावली काव्य मे जीवनक कोनहुँ पक्ष अस्पृष्ट नहि। एतए विस्तृत पटभूमि पर जाहि अनुपम काव्यतूलिका सँ चित्र पदावली मे अङ्कित अछि, ओहि मे कविक ज्ञान, तप ओ साधनाक बल निहित अछि। तैं ओहि चित्र सभक रङ्ग धूमिल नहि भय सकैछ, ने रेखा कखनहुँ मिटायत।

एहि तापस कविक प्रति अपन श्रद्धा ओ भक्ति कें परम भक्तकवि गोविन्ददास एहि प्रकारें व्यक्त कयलन्हि :

कविपति विद्यापति मतिमान।
जाक गीत जगचित्त चोरायल गोविन्द गौरिसरस रसगान ॥
भुवने अछय जत भारतिवाणी।
ताकर सार सार पद संचल बान्हल गीत कतहु परमाणी ॥

विद्यापतिक प्रशंसक विदेशी विद्वान् ग्रियर्सनहुक निर्णय अछि : हिन्दू धर्मक सूर्यास्त भय सकैछ, एहनो समय आबि सकैछ जखन कृष्णक प्रति विश्वास ओ श्रद्धाक अभाव भय जायत ; कृष्णक प्रेमगान जे हमरा लोकनिक एहि भवसागरक

रोगक निदान अछि तकरो लय विश्वास उठि जायत, तथापि विद्यापतिक जाहि गीत सभ मे राधा ओ कृष्णक प्रेम वर्णित अछि, ओकर आकर्षण लोक सभ मे कम नहि होयत। (द्रष्टव्य : ग्रियर्सन : मैथिली क्रेष्टोमैथी, पृ० ३४)

आधुनिक बंगला-आलोचनासाहित्यक अधिकारी विद्वान् अध्यापक डा० असितकुमार बन्द्योपाध्यायक सुचिन्तित अभिमत अछि : छन्देर अलङ्कारे शब्दविन्यासे वाग्वैदग्ध्ये ताँहार (विद्यापतिर) पद जेमन हीरकखण्डेर मतो आलोक विच्छुरणे सहस्रमुखो, तेमनि जीवनेर आलो ओ आँधार, विपुल पुलक ओ अशान्त वेदना, रूपोल्लास ओ भावोन्मादना, मिलन ओ विरह, माधुर ओ भाव सम्मेलने ताँहार पद अद्यापि तुलनारहित"। (द्र० बाङ्ला साहित्येर इतिवृत्त, प्रथम खण्ड, पृ० ४३२)

एही लेल तऽ भारतीय संस्कृतिक मर्मज्ञ मनीषी के० एम० पाणिक्करक मान्यता अछि : "वस्तुतः विद्यापति, कबीर, मीराबाई, तुलसीदास ओ नानक मात्र मैथिली, हिन्दी, राजस्थानी अथवा पञ्जाबीक कवि नहि रहि गेल छथि, अपितु, समग्र भारतक कवि बनल छथि"। (द्र० गोल्डेन बुक आफ टैगोर, पृ० १९४ सँ उद्धृत)

एतावता ई मानबाक अछि जे हमर कविकोकिल विद्यापति केलिकोकिल नहि छलाह, हुनक काव्य मात्र रजनी-सजनीक गीत नहि। महाकवि विद्यापति तऽ अपन ज्ञान, तप ओ साधना लय अपन काव्यवाणी मे प्रवृत्तिक बीच निवृत्तिक प्राप्तिक लेल चिरन्तन सन्देश दयलन्हि अछि। एतदर्थ हुनका कविक संग-संग तापस कहब युक्तिसंगत अछि। एहि मे कोनो प्रकारक व्यर्थ भावुकता नहि। मिथिला सँ बाहरो कतेको भाषा-भाषी सम्प्रदायक बीच सम्मान ओ श्रद्धा प्राप्त करबाक मूल कारण हुनक इयह रूप थीक, एकरा केओ विवेकी समालोचक अस्वीकार नहि करताह।